प्रकाशन-संख्या : १९४

बाँसुरी-शिक्षा

[बाँसुरी की तालीम देनेवाली एकमात्र सम्पूर्ण पुस्तक]

□

लेखक

सी० एल० श्रीवास्तव 'विजय'

संगीत-विशारद, संगीत-प्रवीण

[प्रवक्ता (बाँसुरी), काशी हिंदू विश्वविद्यालय]

□

संपादक

बालकृष्ण गर्ग

□

प्रकाशक

© संगीत कार्यालय, हाथरस (उ० प्र०)

प्रथम संस्करण
नवंबर, १९८३

मूल्य
साठ रुपए

Publication No. 194

BANSURI SHIKSHA
[A complete work on flute-teaching]

Written by
C. L. SRIVASTAVA 'VIJAY'

Edited by
B. K. GARG

1st. Edition
November, 1983

Rs. 60/-

Published by
SANGEET KARYALAYA
HATHRAS (INDIA)

Printed by
SANGEET PRESS
HATHRAS (INDIA)

आरम्भ

बाँसुरी-वादन के प्राचीन और अर्वाचीन प्रकारों में जो क्रमिक विकास एवं कलात्मक प्रगति हुई है और हो रही है, उसे ध्यान में रखते हुए अध्यापन-काल में इस विषय के सुबोध परिचयात्मक ग्रन्थ का अभाव अनुभव में आता रहा है। प्राय: विज्ञ जन एवं साधक गायकी के प्रकारों को, जो कि गीत-गायन की बन्दिशों या सितार-वादन की बन्दिशों में प्राप्त होते हैं, बाँसुरी-वादन की साधना का भी आधार मानते रहे हैं। किन्तु भारतीय शास्त्रों में सुषिर वाद्यों के वादन के प्रकार और उनकी साधन-क्रियाओं के रूप स्वतन्त्र ढंग से वर्णित हैं। प्रस्तुत ग्रंथ में हमने शास्त्रों में वर्णित सुषिर वाद्यों की प्रतिष्ठा एवं उनकी साधना और अभ्यास-क्रम में आ सकनेवाली सरल बन्दिशों के प्रारम्भिक रूप विद्यार्थी-जगत् के समक्ष रखने की चेष्टा की है।

आरंभ में विद्यार्थी का परिचय प्राय: (स्व०) पं० विष्णुनारायण भातखण्डे की स्वरलिपि एवं उनके ग्रन्थों में दी हुई शास्त्रीय जानकारी से होता है, अत: हमने भी उसी पद्धति का अनुसरण किया है। विद्यार्थियों को शास्त्रीय ज्ञान के साथ-साथ बाँसुरी-वादन की कला का परिचय, उसके सरल साधन और प्रयोग ज्ञात हों, साथ ही कॉलेज के शिक्षा-क्रम में उत्तर प्रदेश की माध्यमिक शिक्षा-परिषद् के हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट, विभिन्न विश्वविद्यालयों, प्रयाग संगीत-समिति तथा गान्धर्व महाविद्यालय-मण्डल के शिक्षा-क्रम को भी बाँसुरी-वादन के लिए सरल मार्ग-दर्शन प्राप्त हो, तो मैं अपने इस प्रयास को सफल मानूँगा। अंत में विज्ञ जनों एवं अध्यापक बन्धुओं से भी योग्य सुझावों की कामना करता हूँ, ताकि आगामी संस्करण में आवश्यक संशोधन हो सके।

एच/६, हैदराबाद कॉलोनी
काशी हिंदू विश्वविद्यालय
वाराणसी (उ० प्र०)

□ *सी० एल० श्रीवास्तव 'विजय'*

आभार

इस ग्रंथ को वर्तमान स्वरूप प्रदान करने में जिन महानुभावों का अमूल्य सहयोग मुझे उपलब्ध हुआ है, उनके प्रति हार्दिक आभार प्रदर्शित करना मैं अपना परम कर्तव्य समझता हूँ। पूज्य गुरुवर्य (अब स्वर्गीय) **डॉ० लालमणि मिश्र** (प्रोफेसर तथा वाद्य-संगीत-विभागाध्यक्ष, ललित कला संकाय, काशी हिंदू विश्वविद्यालय) की कृपा और मार्गदर्शन तथा अपना क्रियात्मक अभ्यास तो इस प्रयास में सहायक हैं ही, साथ-ही-साथ शास्त्रों के गंभीर चिंतनीय विषय सरल ढंग से छात्रों एवं साधक जिज्ञासुओं को बोधगम्य हो सकें और वे अधिक गंभीर अध्ययन की ओर प्रेरित हो सकें, इस उद्देश्य से मेरे मित्र **पं० गोपाल भट्ट** [सहायक, संगीत-शास्त्र (शोध)-विभाग, का० हिं० वि० वि०] ने शास्त्रीय जानकारी का अंग पूरा करके इस ग्रंथ की उपादेयता में जो वृद्धि की है, उसके लिए मैं उनका चिर-ऋणी हूँ। इसके अतिरिक्त **पं० माहेश्वर झा** (संगीत-शास्त्र-विभाग, का० हिं० वि० वि०), **श्री रणजीत सिंह** (वाद्य-संकाय, का० हिं० वि० वि०), **श्री प्रभाकर द्विवेदी, श्री आर० के० श्रीनिवास** (सांध्य विद्यालय, का० हिं० वि० वि०), **श्री डी० एल० बोरह** (ललित कला संकाय, का० हिं० वि० वि०), **श्री नवलकृष्ण** एवं परोक्ष-अपरोक्ष रूप से सहयोगी अन्य सभी विद्वज्जनों का भी मैं हृदय से कृतज्ञ हूँ।

अंत में, 'संगीत' मासिक के संपादक **श्री बालकृष्ण गर्ग** एवं प्रख्यात संगीत-प्रकाशन-संस्थान **संगीत कार्यालय** (हाथरस) का जो विशिष्ट सहयोग 'बाँसुरी-शिक्षा' के संपादन–प्रकाशन में मिला है, उनके प्रति अपना आभार मैं किन शब्दों में व्यक्त करूँ, नहीं समझ पा रहा। बस, इतना ही कह सकता हूँ कि अनेकों कठिनाइयों व असुविधाओं के होते हुए भी उन्होंने यथासंभव परिष्कृत एवं सुसंपादित रूप में इसे गुणग्राही संगीत-साधकों और शिक्षार्थियों के समक्ष प्रस्तुत करने की भरसक चेष्टा की है; जिसके बिना मेरा यह स्वप्न साकार होना संभव ही नहीं था।

☐ सी० एल० श्रीवास्तव 'विजय'

शुभाशंसा

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई है कि मेरे प्रिय शिष्य श्री सी० एल० श्रीवास्तव वंशी-वादन पर एक पुस्तक प्रकाशित कर रहे हैं। मुझे इनके अनुभव, इनकी लगन एवं योग्यता पर भरोसा है। मेरा विश्वास है, पुस्तक विद्यार्थियों के लिए उपयोगी एवं मार्गदर्शक होगी। मैं इनके परिश्रम की सफलता की कामना करता हूँ।

□ डॉ० लालमणि मिश्र, वाराणसी

आप बाँसुरी पर पुस्तक लिख रहे हैं, यह जानकर प्रसन्नता हुई। आपको इस कार्य में सब प्रकार की सफलता प्राप्त हो, ऐसी कामना है।

□ विजय राघव राव, बंबई

अत्यन्त हर्ष की बात है कि आपकी वंशी पर पुस्तक छपने जा रही है। वंशी पर अभी बहुत कम सामग्री उपलब्ध है। मेरी आकांक्षा है कि आपकी यह पुस्तक वंशी एवं संगीत-प्रेमियों के लिए अत्यन्त उपयोगी प्रमाणित हो। मेरी सद्भावनाएँ आपके साथ हैं।

□ रघुनाथ सेठ, बंबई

बाँसुरी पर एक अच्छे ग्रन्थ का नितान्त अभाव है। इस अभाव की श्री सी० एल० श्रीवास्तव ने 'बाँसुरी-शिक्षा' में सुन्दर रीति से पूर्ति की है। आपने इस ग्रन्थ में क्रियापक्ष और शास्त्रपक्ष, दोनों का यथेष्ट प्रतिपादन किया है। पाठ्यक्रम के विभिन्न रागों के निबन्धन आपने आवश्यक प्रचलित तालों में दिए हैं। साथ ही प्रत्येक राग के चलन का भी आपने विस्तृत वर्णन किया है। अतः सभी दृष्टियों से यह ग्रन्थ विद्यार्थियों के लिए बहुत ही उपादेय है।

मैं श्रीवास्तव जी की इस कृति की सफलता की हृदय से कामना करता हूँ।

□ ठा० जयदेवसिंह, वाराणसी

लेखक-परिचय

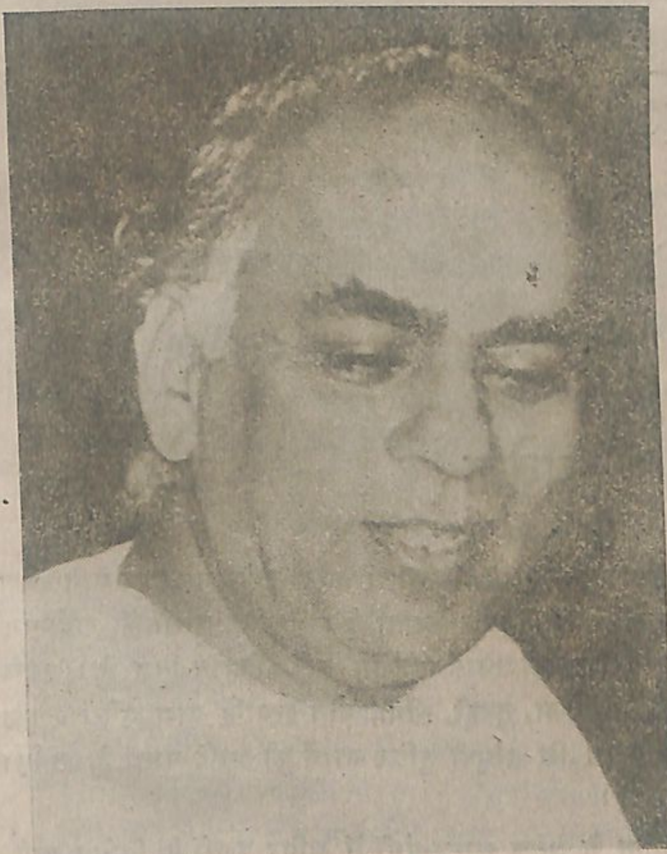
श्रीयुत सी० एल० श्रीवास्तव 'विजय' का जन्म २ मार्च, सन् १९३५ को फतेहपुर जिले में हुआ। यद्यपि आपके पिता गाते और मृदंग भी बजाते थे, किन्तु छोटी ही अवस्था में पितृहीन हो जाने से अपने बड़े भाई के साथ रहना पड़ा और अम्बाला (पंजाब) जाना पड़ा। शिक्षा-दीक्षा में अनेक अड़चनों के बावजूद भी संगीत का अंकुर विकास का अवसर खोजने लगा।

बाँसुरी-वादन की प्रारम्भिक शिक्षा मास्टर हरीराम जी द्वारा संपन्न हुई। कुछ दिनों के बाद सितार और वीणा की शिक्षा स्वामी बादलगिरि जी के शिष्य श्री जगन्नाथ महेन्द्र से मिली। सुषिर एवं तन्त्र-वाद्यों पर निरंतर अभ्यास करते हुए श्री श्रीवास्तव ने एक संगीत-विद्यालय की स्थापना की, जिसका नाम 'श्री सरस्वती संगीत-विद्यालय' रखा। संगीत-विद्यालय में शिक्षण-कार्य के साथ-साथ पंजाब के अनेक स्थानों में घूम-घूमकर प्रचार-कार्य भी प्रारम्भ किया, जिससे जनता को आनन्द प्राप्त हुआ। अपने बड़े भाई की मृत्यु के पश्चात् आप दिल्ली चले गए। वहाँ आपने पं० रविशंकर एवं पं० उमाशंकर मिश्र से सितार-वादन में उच्चस्तरीय शिक्षा ली। कानपुर में यह शिक्षा-क्रम डॉ० लालमणि मिश्र के निर्देशन में सम्पूर्ण हुआ। इनके प्रभाव से तबला, जलतरंग, विचित्रवीणा आदि अनेक वाद्यों में आपकी अभिरुचि बढ़ने लगी। डॉ० मिश्र की कृपा से आप गांधी संगीत-महाविद्यालय में कुछ दिनों कार्य करने के बाद काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में बाँसुरी-वादन के शिक्षक नियुक्त हुए। आजकल आप काशी हिंदू विश्वविद्यालय के संगीत एवं मंच कला संकाय में बाँसुरी-वादन के शिक्षक का कार्य ही कर रहे हैं।

□ गोपाल भट्ट



इस ग्रंथ के लेखक श्री सी० एल० श्रीवास्तव 'विजय'



पूज्य गुरुवर्य (स्व०) डॉ० लालमणि मिश्र

जिन गुरु की कृपा से
मुझे रसमय कण और प्रकाश मिला,
उन्हीं महान् गुरु के चरणकमलों में
यह 'बाँसुरी-शिक्षा' नामक ग्रंथ
सादर समर्पित है !

□ सी० एल० श्रीवास्तव 'विजय'



प्रवेश

वैदिककालीन प्रमुख वाद्यों में वीणा और मृदंग के साथ-साथ वेणु (वंशी) का नाम भी सम्मानपूर्वक आता है। सुषिर वाद्यों में सर्वप्रथम बाँस के द्वारा बाँसुरी का ही निर्माण हुआ, यह इतिहास-सिद्ध है। इसके बाद ही शहनाई, अलगोजा, तुरही, सींगी, बीन इत्यादि वाद्य बने। कुछ ग्रंथकारों का यह कथन कि बाँसुरी सुषिर वाद्यों की आदि-माता है, सर्वथा सत्य प्रतीत होता है।

भारतीय संगीत के अनेक शास्त्र-ग्रंथों में सुषिर वाद्यों के विविध रूपों, उनकी वादन-क्रिया और प्रयोग की विस्तृत चर्चा की गई है। चारों प्रकार के वाद्यों—तत, वितत, घन और सुषिर में सुषिर वाद्य भी अपनी निजी प्रतिष्ठा रखते हैं। जब दो वीणाओं पर श्रुतियों की स्थापना करते समय ग्रामादि के अनुसार शुद्ध स्वरों की मान्यता में मतैक्य न हो, तब आचार्यों ने वेणु के स्वर को प्रामाणिक मानने का निर्देश किया है—"तंत्रिकोणादि-वैगुण्ये प्रमाणं वंशजाः स्वराः।" ('संगीतराजः', द्वितीयो गीतरत्नकोशः, स्वरोल्लासः १, स्थानादि परीक्षणम् १, श्लोक १६)

उत्तम वृंदों की चर्चा करते समय भरत मुनि ने नाट्य कुतप का उल्लेख किया है। अभिनवगुप्त की टीकानुसार "उत्तमादि उचितपात्रसमूहः।" "उत्तमाधममध्याभिस्तथा प्रकृतिभिर्युतः। कुतपो नाट्ययोगे तु नानादेश-समुद्भवः।" (रत्नाकरः) "गातृवादकसंघातो वृंदमित्यभिधीयते उत्तमं मध्यममथो कनिष्ठमिति तत्त्रिधा। उत्तमे गायनीवृंदे मुख्य गायनिकाद्वयम्।

दशस्युः समगायिन्यो वांशिकद्वितयं तथा।'' और 'संगीतराज' के अनुसार—''गायिकासमतया निवेदिता वंशमर्दलभृतोः पृथग्द्विकम्।'' (द्वितीयो गीतरत्नकोशः, प्रकीर्णोल्लासः ३, स्थायवागपरीक्षणम् ४, श्लोक १५१)—इत्यादि प्रमाणों से वेणु, वंशी या बाँसुरी की प्रतिष्ठा को ग्रंथों में स्वीकारा गया है।

बौद्धकालीन भारत में, धार्मिक संगीत के अंतर्गत वंशी का प्रयोग व्यापक रूप में था। अजंता-एलोरा की कलाकृतियों में भी बाँसुरी को प्रमुख स्थान दिया गया है। अतः सिद्ध होता है कि भारत में अति प्राचीन काल से लेकर वर्तमान तक बाँसुरी का प्रयोग होता आया है और यह वाद्य भारतीय संगीत-प्रेमियों का विशिष्ट वाद्य है। बाँसुरी की लोकप्रियता का इससे बड़ा प्रमाण और क्या हो सकता है कि मेले-दशहरे के अवसरों पर छोटे-छोटे बालक भी बाँसुरी खरीदते और फूँक भरकर उसे बजाने का प्रयत्न करते देखे जाते हैं।

भगवान् विष्णु के अवतार श्रीकृष्ण के अधरों पर तो वंशी सदैव विराजती थी। इसी लिए उन्हें वंशीधर, वेणुगोपाल, मुरलीमनोहर आदि नामों से पुकारा जाता है। कृष्ण की वंशी का नाद गोपीजनों, गायों, खगों, मृगों—यहाँ तक कि समस्त जड़-चेतन को मुग्ध कर देता था। चर-अचरविमोहिनी कृष्ण की बाँसुरी का वर्णन जहाँ हमारे 'श्रीमद्भागवत' आदि धर्मग्रंथों में विस्तृत रूप से मिलता है, वहीं भक्तिकालीन कवियों ने भी इसकी भूरि-भूरि प्रशस्ति की है। 'बाँसुरी बजाई आज रंग सौं मुरारी', 'बाँसुरी माई बिधि हू ते परम प्रबीन', 'बंसी, तू गुमान-भरी.....', 'आज मुरली की धुन सुनी' आदि असंख्य पद वंशी के गुणगान से पूरित हैं।

वर्तमान काल में नवजागरण के साथ-साथ अनेक सहायक वाद्यों को स्वतंत्र वादन की प्रतिष्ठा प्राप्त हुई है। जिस प्रकार शहनाई-वादन में संपूर्ण शास्त्रीय गायकी को प्रस्तुत करने के सफल प्रयास हुए हैं, उसी प्रकार बाँसुरी में भी समस्त गायकी को स्वतंत्र रूप से पेश करने की कामयाब कोशिशें हुई हैं। (स्वर्गीय) पन्नालाल घोष का व्यक्तित्व इस प्रयत्न में अग्रगण्य माननीय है। वंशी के छह, सात या आठ छिद्रों पर संपूर्ण कलात्मक वादन-चातुर्य का प्रस्तुतीकरण अथवा योग्य शिक्षा दे पाना आसान कार्य नहीं है। इसमें फूत्कार के ढंग और तत्कार के प्रकार अपना विशेष कलात्मक चातुर्य रखते हैं। इसी कलात्मक शिक्षण के अभाव की पूर्ति-हेतु इस ग्रंथ की रचना की गई है, जिसे संभवतः प्रथम प्रयास कहा जा सकता है।

फिल्मी ऑर्केस्ट्रा के सदस्य रहते हुए श्री घोष ने इस वाद्य को स्वतंत्र वाद्य की जो प्रतिष्ठा दी एवं आकाशवाणी के उच्चस्तरीय गंभीर कार्यक्रमों के बीच बाँसुरी के स्वतंत्र वादन-कार्यक्रमों को सम्मानित किया, वह इस वाद्य की निजी सामर्थ्य तो है ही, साथ ही कलाकार की हिम्मत और अनवरत प्रयत्न भी हैं। आज, उन्हीं की स्थापित परंपरा को आगे बढ़ाने का उद्देश्य इस ग्रंथ के प्रणयन की प्रेरणा का स्रोत है। काशी हिंदू विश्वविद्यालयांतर्गत श्री कला संगीत भारती (कॉलेज ऑफ म्यूजिक) में बाँसुरी-वादन के प्राध्यापक श्री सी० एल० श्रीवास्तव 'विजय' ने अध्यापन-कार्य के मध्य बाँसुरी-शिक्षण में अनेक अभावों का अनुभव किया और इसी लिए उन्होंने इस ग्रंथ की रचना की। जैसे-जैसे प्रयोग में कठिनाइयाँ पार करके सुगमता दृष्टिगोचर होगी, वादन में आकर्षण एवं माधुर्य बढ़ेगा तथा मनोरंजन के साथ-साथ कलात्मक रुचि बढ़ेगी। 'बाँसुरी-शिक्षा' की सामग्री परिष्कार एवं परिवर्द्धन के प्रति आकर्षित करेगी और नए-नए अनुभव सामने आएँगे, ऐसी आशा है।

विद्यार्थी-वर्ग एवं कलाकारों की कलात्मक अभिरुचि के संवर्धन-हेतु यह ग्रंथ सहायक सिद्ध हो, इसी शुभाकांक्षा के साथ—

संगीत कार्यालय
हाथरस (उ० प्र०)

बालकृष्ण गर्ग

निर्देश

बाँसुरी सीखने-सिखाने के पूर्व निम्नांकित निर्देशों को ध्यानपूर्वक हृदयंगम कर लिया जाए तो शिक्षक और शिक्षार्थी, दोनों को ही विशेष लाभ होगा :—

१. सर्वप्रथम बाँसुरी को सही ढंग से पकड़ना एवं मुखरन्ध्र को होंठों पर सही स्थान पर रखकर स्वरित करना।

२. स्वररन्ध्रों पर अँगुलियों के रखने व उठाने की क्रिया का ध्यान।

३. मुख की मुद्रा पर विशेष ध्यान रखते हुए फूंक (तत्कार–तुत्कार) पर अधिकार एवं मिठास उत्पन्न करना।

४. अँगुलियों से स्वररंध्रों को अच्छी तरह बन्द करने तथा द्रुत गति में सरलता और मधुरता का अभ्यास।

५. मन्द्र, मध्य एवं तार-सप्तक के स्वरों को बजाने के लिए फूंक पर अधिकाधिक नियन्त्रण।

६. राग व गत बजाते समय फूंक, तत्कार तथा स्वरों के उतार-चढ़ाव आदि पर पूरा-पूरा ध्यान देना।

७. मीड़, गमक, जमजमा, कण, मुर्की इत्यादि को सफाई से बजाने की क्षमता।

८. बैठक व मुख-मुद्रा पर विशेष ध्यान।

९. स्वर, लय, ताल, सम, विषम, ताली, खाली इत्यादि सभी बातों का विशेष ध्यान।

१०. अधिक देर तक वादन करने का अभ्यास।

११. बाँसुरी में शुद्ध एवं कोमल स्वरों के सही स्थान व सही स्वर के लगाव का पूर्ण ज्ञान।

१२. बाँसुरी को समय-समय पर हिला-हिलाकर भी वादन करने का अभ्यास।

१३. तीनों सप्तकों में द्रुत गति व सफाई से वादन करने का अभ्यास।

१४. छोटी-से-छोटी एवं बड़ी-से-बड़ी बाँसुरी बजाने की क्षमता।

१५. बाँसुरी के बाँस, छिद्रों के आकार, स्वर इत्यादि देखने व परखने का ज्ञान।

१६. बाँसुरी को स्वच्छ रखने की तकनीक का ज्ञान; जैसे गाय के दूध से साफ करके तेल इत्यादि लगाना।

१७. बाँसुरी की सुरक्षा का ठीक-ठीक ज्ञान।

१८. विभिन्न प्रकारों की फूँक तथा तत्कारों के प्रयोगों का अभ्यास।

१९. खड़े होकर और बैठकर, दोनों प्रकार से बाँसुरी बजाने का अभ्यास।

२०. विभिन्न प्रकार की बाँसुरियों के स्वर, आकार इत्यादि तथा गुण-दोष परखने की क्षमता।

२१. दूध अथवा जल का पान करके स्वरों को लंबे समय तक स्वरित करने का अभ्यास। □□□

संगीतलिपि-परिचय

प	जिन स्वरों के ऊपर-नीचे कोई चिह्न नहीं है, वे मध्य(बीच की)-सप्तक के शुद्ध स्वर हैं।
ध॒	जिन स्वरों के नीचे पड़ी लकीर है, वे कोमल स्वर हैं; किंतु कोमल मध्यम पर कोई चिह्न नहीं होता, क्योंकि कोमल मध्यम को शुद्ध मध्यम भी कहते हैं।
मं	यह तीव्र मध्यम है।
प़/ध़.	जिन स्वरों के नीचे एक बिंदी है, वे मंद्र(पहली)-सप्तक के स्वर हैं। इसी प्रकार नीचे दो बिंदीवाले स्वर अतिमंद्र-सप्तक के हैं।
सां/पं˙	ऊपर एक बिंदीवाले स्वर तार(तीसरी)-सप्तक के स्वर हैं; इसी प्रकार ऊपर दो बिंदीवाले स्वर अतितार-सप्तक के हैं।
प–	जिस स्वर के आगे जितनी लकीरें (–) हैं, उसे उतनी ही मात्रा तक और बजाइए।
रा ऽ	जिस अक्षर के आगे जितने अवग्रह (ऽ) के चिह्न हैं, उसे उतनी ही मात्रा तक और गाइए।
ध॒प	इस प्रकार जितने भी स्वर मिले हुए (सटे हुए) हों, उन सबको एक मात्रा में बजाइए।
⌣	इस प्रकार का कोष्ठक (ब्रैकिट) दो मात्राओं में तीन बराबर मात्राओं को प्रकट करता है।
× ० ।	'×' सम का, '०' खाली का तथा '।' ताली का चिह्न है।
,	सारे,सा इस प्रकार एक ही मात्रा के (सभी आपस में सटे हुए) स्वरों के बीच में लगा हुआ कौमा एक मात्रा को आधी-आधी मात्रा के दो खंडों में विभाजित करता है।
❁	जहाँ ऐसा फूल दिया है, वहाँ एक मात्रा चुप रहिए।
⌒	स्वरों के ऊपर यह चिह्न मींड़ देने के लिए होता है।
ग प	इस प्रकार किसी स्वर के ऊपर कोई स्वर हो, तो ऊपरवाले स्वर को जरा-सा छूते हुए नीचे के स्वर को बजाइए। ऊपरवाला स्वर 'कण-स्वर' कहलाता है।
(म)	इस प्रकार कोई स्वर कोष्ठक में बंद हो, तो उसके आगे का स्वर, वह स्वर, उससे पहले का स्वर तथा फिर वही स्वर लेकर एक मात्रा में ही बजाइए; जैसे (म)=पमगम।
〰	यह चिह्न स्वरों के ऊपर ज़मज़मा देने के लिए होता है; अर्थात् जिन स्वरों के ऊपर यह चिह्न है, उन स्वरों को हिलाइए।

(इस ग्रंथ की दृष्टि से उपयोगी 'स्वर-चिह्न-परिचय' पृष्ठ ९७ पर भी द्रष्टव्य है।)



अनुक्रम

□ शास्त्र-पक्ष

□ ताल-पक्ष

□ बाँसुरी पर बजाने के लिए क्रियात्मक सामग्री

• राग भूपाली

• राग दुर्गा

• राग भिन्नषड्ज

• राग हंसध्वनि

• राग तिलंग

• राग देश

● राग अल्हैयाबिलावल

□ □ □

बाँस की उत्पत्ति पर भौतिक एवं अध्यात्मवादी विचार

विश्व की किसी भी वस्तु को देखने, सुनने और उसका ज्ञान प्राप्त करने के लिए पहले अपना दृष्टिकोण निश्चित करना होता है। विश्व में केवल दो ही दृष्टिकोण हैं—१. भौतिकवादी और २. अध्यात्मवादी।

१. भौतिकवादी दृष्टिकोण

वस्तु को उसके क्रमिक विकास के रूप में देखता है। अर्थात् वस्तु प्रारंभ में अपने किस मूल रूप में थी और किन परिस्थितियों तथा भौगोलिक वातावरण में पड़कर प्राकृतिक क्रियाओं और प्रतिक्रियाओं के लंबे संघर्ष के बाद किस रूप में परिवर्तित हो गई।

२. अध्यात्मवादी दृष्टिकोण

वस्तु को आकस्मिक विकास के रूप में देखता है। अर्थात् किसी अलौकिक शक्ति ने वस्तु को वर्तमान रूप में ही उत्पन्न किया है।

अब हम बाँस की उत्पत्ति के बारे में दोनों दृष्टिकोण क्रमशः प्रस्तुत करते हैं।

भौतिकवादी दृष्टिकोण

बाँस व बाँस से मिलती-जुलती वनस्पतियों का सूक्ष्मता से अध्ययन किया जाए तो हमें बाँस से बहुत-से गुणों में समानता रखनेवाली एक वनस्पति (पौधा) मिलती है, जिसे 'सरपत' कहते हैं। सरपत झुरमुटों के रूप में पैदा होता है, बाँस भी झुरमुटों के रूप में पैदा होता है। सरपत में थोड़ी-थोड़ी दूरी पर गाँठें होती हैं, बाँस में भी थोड़ी-थोड़ी दूर पर गाँठें होती हैं। सरपत में बीच में गूदा होता है और उसके ऊपर कठोर व चिकना छिलका चढ़ा होता है, बाँस में भी बीच में गूदा होता है और उसके ऊपर कठोर तथा चिकना छिलका चढ़ा होता है। सरपत सीधा, लम्बा और गोल

होता है, बाँस भी सीधा लम्बा और गोल होता है। सरपत को काट देने से उसकी जड़ से पुनः किल्ले फूटते हैं और सरपत को जन्म देते हैं। बाँस को भी काट देने से उसकी जड़ से पुनः किल्ले फूटते हैं और नए बाँस को जन्म देते हैं।

इन समानताओं के आधार पर हम कह सकते हैं कि बाँस किसी समय अपने मूल रूप सरपत के रूप में था, जो भिन्न-भिन्न परिस्थितियों, भौगोलिक वातावरण और प्रकृति की निरन्तर क्रियाओं-प्रतिक्रियाओं के लम्बे संघर्ष के परिणाम-स्वरूप अपने इस विकसित रूप (बाँस) को प्राप्त हो सका।

अध्यात्मवादी दृष्टिकोण

एक पौराणिक कथा के अनुसार एक ऋषि यज्ञ कर रहे थे, काफी परिश्रम से उन्होंने यज्ञ-सामग्री एकत्र की थी। कई वर्षों तक उनका यज्ञ चलता रहा, चारों दिशाओं में उनकी जय-जयकार हो रही थी। उन्होंने यह यज्ञ इन्द्र को प्रसन्न करने के लिए किया था, क्योंकि इन्द्र-प्रकोप के कारण देश में वर्षा नहीं हो रही थी, सारा देश सूखा से ग्रस्त था, चारों ओर हाहाकार मचा हुआ था, मृत्यु के बादल मँडरा रहे थे। परन्तु जैसे-जैसे यज्ञ समाप्ति की ओर अग्रसर हो रहा था, वैसे-वैसे आकाश में बादल दिखाई देने लगे थे। किंतु अंतिम समय में जब यज्ञ समाप्त होने में कुछ ही दिन रह गए तो यज्ञ-सामग्रियों में शहद समाप्त हो गया। ऋषि ने अपने सभी शिष्यों को और उपस्थित लोगों को चारों दिशाओं की ओर जाने की आज्ञा दी और कहा कि किसी प्रकार से शहद लाओ, अन्यथा यज्ञ पूर्ण न होगा, जिसका परिणाम भयंकर होगा। परन्तु शीघ्र ही सब लोग लौट आए और कहा—गुरु महाराज, कहीं भी शहद नहीं मिलता। यह सुनकर गुरुजी बहुत दुखी हुए। उन्होंने सोचा, ब्रह्मा जी से कोई ऐसी वस्तु प्राप्त की जाए कि जिससे धरती पर कभी शहद की कमी न पड़े। इस विचार से वे हिमालय पर्वत पर चले गए और ब्रह्मा जी की आराधना करने लगे। कुछ समय बाद ब्रह्मा जी प्रकट हुए और उन्होंने प्रसन्न होकर कहा—माँगो, क्या माँगते हो। ऋषि ने कहा—प्रभु हमारा देश आकाल से ग्रसित है, हमने इन्द्र को प्रसन्न करने के लिए यज्ञानुष्ठान किया, परंतु दुर्भाग्य से अंतिम समय शहद समाप्त हो जाने के कारण यज्ञ पूर्ण न हो सका।

अतः हे स्वामी, आप कृपा करके ऐसा शहद दें, जिससे इस पृथ्वी पर अब से किसी का यज्ञ शहद के कारण भंग न हो। ब्रह्मा जी ने उन्हें एक लम्बा-सा बिना डालोंवाला पौधा दिया और कहा—यह गन्ना है, इसे अपने आश्रम में लगा लेना और धीरे-धीरे इसकी जड़ को चारों ओर लोगों में बाँट देना, इसके रस से शहद के समान ही मीठा पदार्थ निकलेगा। पौधा पाकर ऋषि जी अत्यन्त प्रसन्न हुए और हिमालय से उतरने लगे। वे उतरते जाते और विचार करते जाते कि अब तो शहद-ही-शहद मिल गया, चाहे जितना खाएँ कम न होगा। प्रसन्नतापूर्वक उन्होंने उसे लाकर अपने आश्रम में लगा दिया। जब एक पेड़ के बहुत-से पेड़ हो गए तो एक दिन उन्होंने सोचा कि अब इनसे शहद निकाला जाए, परंतु शीघ्र ही उन्होंने पाया कि उसमें रस ही नहीं है। सभी पौधे उसी प्रकार चिकने लंबे और गाँठदार थे, परंतु रस नहीं था, वह सरपत हो गया था। यह देखकर ऋषि जी बहुत दुःखी हुए। अतः उन्होंने फिर हिमालय में जाकर ब्रह्मा जी की आराधना प्रारंभ की। कुछ समय के बाद ब्रह्मा जी प्रकट हुए तो ऋषि जी ने कहा—प्रभु, उस वृक्ष से तो रस बिलकुल ही नहीं निकला। इस प्रश्न पर ब्रह्मा जी ने कहा कि वत्स, तुम्हारे मन में मोह आ गया था कि स्वयं ही उसका उपभोग करूँगा। मैंने तो जन-कल्याण के लिए तुम्हारे द्वारा गन्ने का पौधा पृथ्वी पर भेजा। ऋषि ने कहा—प्रभु मुझे क्षमा करें, मैं अवश्य ही इस पौधे को जन-कल्याण के लिए चारों ओर सभी लोगों में फैलाऊँगा। ब्रह्मा जी ने प्रसन्न होकर फिर एक गन्ने का पौधा ऋषि को दे दिया और अंतर्धान हो गए। ऋषि प्रसन्नतापूर्वक हिमालय से उतरने लगे और सोचते जाते थे कि इस बार अवश्य ही पौधे को अपने संपूर्ण ऋषि-कुल में वितरित करूँगा। अतः आश्रम में आकर उन्होंने उस पौधे को संपूर्ण ऋषिकुल में वितरित कर दिया। सभी लोगों ने प्रसन्नतापूर्वक उसे लगाया। कुछ समय के बाद जब वह पौधा पूर्ण विकसित हो घने कुंजों के रूप में फैल गया तो एक दिन ऋषि ने कहा कि अब इसके अंदर का मीठा पदार्थ निकालना चाहिए। परंतु बहुत प्रयास के बाद भी उसमें से कुछ भी नहीं निकला। ऋषि जी अत्यंत दुःखी हुए। वे सभी पौधा गन्ने के बजाए बाँसों के रूप में विकसित हो गए थे।

अत्यन्त दु:खी हृदय से वे फिर हिमालय की ओर चल दिए और उन्होंने प्रतिज्ञा की कि इस बार अवश्य ही उस पौधे को जन-साधारण में बाँटेंगे। सभी वर्गों के लोगों को उस पौधे की जड़ें देंगे और स्वयं प्रयत्न करेंगे कि वे सभी पूर्ण विकसित हों।

ऋषि के इस दृढ़ निश्चय को देखकर ब्रह्मा जी शीघ्र प्रकट हो गए और हँसते हुए बोले कि जैसा कहा था, वैसा ही किया था। ऋषि ने लज्जा से अपना शीश झुका लिया एवं कहा—प्रभु मुझे क्षमा करें, मेरे मन में जो मोह आया था, मैंने उसे नष्ट कर दिया है। ब्रह्मा जी ने प्रसन्न होकर गन्ने का पौधा ऋषि जी को दिया और आशीर्वाद देकर अन्तर्धान हो गए। ऋषि ने आते ही उस पौधे को सभी वर्गों के लोगों में वितरित कर दिया और उनकी देख-रेख करने लगे। शीघ्र ही वे पौधे पूर्ण विकसित हो गए तथा ऋषि ने उनमें से रस निकाला, जो वास्तव में शहद के समान ही मीठा था। और उसी पदार्थ से अपना यज्ञ पूर्ण किया, जिससे प्रसन्न होकर इन्द्र ने वर्षा की। चारों दिशाओं में प्रसन्नता और उत्साह की लहर फैल गई। सभी ऋषि की जयजयकार करने लगे।

इस प्रकार पृथ्वी पर क्रमशः तीन पौधे आए। सरपत, बाँस और गन्ना।

बाँस की उत्पत्ति का यह अध्यात्मवादी दृष्टिकोण है।

बाँस तथा उसके प्रकार

बाँस प्राय: प्रत्येक देश और उसके प्रान्तों में पाया जाता है। हिंदुओं की परम्पराओं में बाँस शुभ-अशुभ सभी कार्यों के प्रयोग में आता है। बाँस की पाटी की खाट पवित्र मानी जाती है। कुल में बालक के जन्म के समय बाँस की पूजा वंश-वृद्धि के लिए की जाती है। षोडश संस्कार एवं यज्ञ-पूजाओं आदि में बाँस का मण्डप, बाँस के माँडे तथा मरने के पश्चात् शव को बाँस पर ले जाने की प्रथा है। बाँस शुद्ध वनस्पति होने के कारण पूज्य है, पवित्र है तथा विष्णु-स्वरूप माना जाता है। कुछ लोग वृद्धावस्था

में चलने-फिरने के लिए बाँस की छड़ी का प्रयोग करते हैं। अपने बचाव एवं सुरक्षा के लिए बाँस का डन्डा भी रखा जाता है। बाँस की बाँसुरी बनाते समय यह देख लेना चाहिए कि बाँस के टुकड़े में गाँठें दूर-दूर हों और आकार मोटा, दल पतला तथा पोला हो। बाँस हलकी जाति का होना चाहिए। हलका बाँस, जिसका दल पतला हो, साथ ही मोटाई भी हो तथा गाँठें दूर-दूर हों, वह आवाज को प्रतिध्वनित करेगा। इस जाति का बाँस प्रायः आसाम, बंगाल, मुंगेर तथा पाकिस्तान में पाया जाता है। इन बाँसों में नरकुल नामक जाति के बाँस भी बाँसुरी के लिए उपयुक्त माने जाते हैं। कहीं-कहीं साधारण लकड़ी की भी बाँसुरी बनाई जाती है। स्यालकोट (पंजाब) में अभी भी लकड़ी को खराद कर बाँसुरी बनाते और बजाते हैं, किन्तु बाँस की बाँसुरी सर्वोत्कृष्ट होती है।

बाँस एवं बाँसुरी का दल

बाँसुरी में निकलनेवाली ध्वनि मधुर एवं आकर्षक होती है, किन्तु यह बाँस के मोटे तथा पतले छिलकेवाले बाँस की जाति पर निर्भर करती है। बाँस यदि मोटे दल का होगा तो प्रथम तो बाँसुरी भारी हो जाएगी। दूसरे, उसमें अपेक्षित पोल न होने पर स्वर की गूँज मधुर नहीं हो सकेगी, इस कारण बाँस का दल देखकर ही उसका प्रयोग करना चाहिए। दल की मोटाई लगभग ½ सूत से लेकर १½ सूत तक हो सकती है। आजकल प्रचार में आनेवाली बाँसुरियों में प्रायः एक सूत से लेकर १½ सूत मोटे दल वाले बाँस लिए जाते हैं। कभी-कभी इस दल को कम करते समय तथा छिद्र बनाते समय बाँस फट भी जाता है, ऐसा नहीं होना चाहिए। बाँस पतले दल का मजबूत लेना चाहिए। इन्हीं गुणों पर बाँस की बाँसुरी का सुरीलापन निर्भर रहता है।

सीधी बाँसुरी की निर्माण-विधि

बाँसुरी शब्द कहने से स्पष्टतया यह ज्ञात होता है कि यह बाँसुरी बाँस के टुकड़ों पर बनती है। सीधी बाँसुरी प्रायः छह

से लेकर नौ छेदों की बनाई जाती थी, किन्तु आजकल प्रचार में केवल छह छिद्रोंवाली ही बनाई जाती है। इस बाँसुरी में फूँक भरने की जगह जीभ के आकार की काटकर बनाई जाती है। आड़ी बाँसुरी की तरह छिद्र नहीं होते। बाँस की मोटाई के अनुसार ही यह जीभ बनाई जाती है। इस जीभ की यह उपयोगिता है कि बाँसुरी-वादन में जो ततकार विशेष ध्वनियाँ हैं, वे इसी जीभ पर निकाल पाना सम्भव होता है, जो कि आड़ी बाँसुरी में नहीं निकाला जा सकता।

बाँसुरी की निर्माण-विधि

बाँस का टुकड़ा कितना भी बड़ा या छोटा हो, उसे भली प्रकार साफ कर लेना चाहिए। अग्र एवं पीछे भाग की तरफ चार इंच छोड़ दीजिए। बाँस की मोटाई के अनुसार दो लोहे की छड़ें लीजिए, जलती अँगीठी में उन्हें लाल गर्म कीजिए। पकड़ने की जगह अधिक गर्म न हो जाए, यह ध्यान रहे। बाँस में जहाँ-जहाँ स्वरों के छिद्र बनाने हों स्केल के अनुसार निशान लगा दीजिए। आगे और पीछे छोड़ी गई चार-चार इंच बाँस की लम्बाई के बीच के स्थान में ही इन निशानों की स्थापना करनी चाहिए। इस बीच की पूरी लंबाई को नापकर आधे हिस्सों में षड्ज का स्थान तथा पूर्वार्द्ध के ऊपर के भाग पर मुख रन्ध्र की स्थापना करनी चाहिए, जिसका आकार शेष छिद्रों से बड़ा रहना चाहिए। उत्तरार्द्ध के अन्तिम भाग पर लगाए चिह्न पर पंचम स्वर की स्थापना करनी चाहिए। इसी उत्तरार्द्ध को नीचे से तिहाई हिस्सा छोड़कर शेष हिस्से पर दो छिद्र करने चाहिए। ये छिद्र धैवत और निषाद के स्थान पर स्थापित करने चाहिए। बचे हुए बीच के भाग में नीचे की ओर बराबर दो भागों पर दो छिद्रों पर षड्ज, ऋषभ और गांधार स्वर-स्थान कायम कीजिए। इस प्रकार स्वर-स्थापित हो जाने के अनन्तर अँगीठी पर गरम की हुई शलाकाओं से निशानों पर छेद कर लीजिए। बाँस पर फूँक मारकर देखिए कि अभीष्ट स्वर प्राप्त हैं या नहीं। यदि स्वरों में शुद्धता नहीं है तो उनकी शुद्धि के लिए छिद्रों के आकार में यथोचित घटाबढ़ी करनी चाहिए, इस प्रक्रिया के लिए ध्यान

रहे कि स्वर-ज्ञान कितना आत्म-निर्भर होना चाहिए। छिद्रों को ठीक करने के लिए रेगमाल आदि का प्रयोग करना चाहिए। साफ की हुई बाँसुरी के भीतर तथा ऊपर शुद्ध सरसों का तेल थोड़ा लगाना चाहिए, ताकि बाँस चिकना (अरुदा) बन जाए। इस प्रकार स्वयं-निर्मित अभीष्ट स्वर - प्राप्ति - सम्पन्न बाँसुरी व्यावसायिक बाँसुरियों की अपेक्षा अधिक शुद्ध और प्रामाणिक होगी।

स्वरों का रूप जैसे मानव-कंठ या वाद्य-विशेष के द्वारा प्रकट होता है, वह केवल मात्र एक ध्वनि है। श्रवणेन्द्रिय से श्रव्य और कर्णप्रिय मधुर ध्वनियों के स्थिर और आकर्षक रूप को स्वर कहते हैं। इन स्वरों के पृथक्-पृथक् देव, पृथक्-पृथक् रूप-रंग-गुण-स्थान एवं वर्ण-जाति-छन्द और सिद्धियाँ शास्त्रों में वर्णित की गई हैं। प्राचीनतम ग्रंथ शार्ङ्गदेव-कृत 'संगीत-रत्नाकर' एवं अन्य परवर्ती आचार्यों ने यत्र-तत्र इनका वर्णन किया है। संलग्न तालिका में इन सभी तत्त्वों को एकसाथ दिखलाया गया है।

बाँसुरी बनाने के ढंग और उसे बनाने के लिए आवश्यकीय उपकरण

व्यापार के लिए बनाकर बेचनेवाले बाँसुरी - विक्रेता सुरीली एवं संभव गायकियों के अनुकूल निर्दोष बाँसुरियाँ नहीं बना पाते। अपनी मनचाही बाँसुरी और सभी संभव गायकी के लिए उपयोगी बाँसुरी प्राप्त कर पाने के लिए उसके स्वयं बनाने के ढंग और साधन जानना बहुत आवश्यक है। बनी हुई बाँसुरियाँ प्रायः बेसुरी रह जाती हैं, क्योंकि बनानेवाले को स्वर-ज्ञान होना बहुत आवश्यक है, जिसका प्रायः अभाव ही पाया जाता है। बाँसुरी पर पंचम और निषाद के स्वर बनी हुई बाँसुरियों में प्रायः बेसुरे रह जाते हैं, इसलिए अच्छे वादक बाँसुरी स्वयं बनाते हैं। बाँसुरी बनाने से पूर्व उपयुक्त बाँस की खोज करते समय उसका फटना न हो, छेद करते समय सावधानी का रहना, छिद्रों के आकार की शुद्धता, स्वर-स्थान आदि पर ध्यान देना चाहिए। यथोचित रीति

से बनी हुई निर्दोष बाँसुरी पर किया हुआ अभ्यास-क्रम सफल साधना का आधार है। निर्दोष बाँसुरियों का प्राप्त कर पाना वादकों से ही संभव हो पाता है, क्योंकि निर्माण के पूर्व और पश्चात् वे स्वरों की शुद्धता में आवश्यक उपचार करते हैं।

निर्माण-विधि बतलाने से पूर्व बाँस की जाति, उसके दल की मोटाई-लम्बाई तथा गोलाई के अनुसार उसपर छिद्र करने, उनकी परस्पर दूरी स्वरों की शुद्धता के लिए निर्धारित करने के लिए कुछ स्केल दिए जा रहे हैं, उनसे बनाने में छिद्र-स्थापना की क्रिया निर्दोष और सुरीले स्वरों की बाँसुरी प्राप्त हो सकती है।

बाँसुरी बनाने के लिए आवश्यक उपकरण

१. एक पतली छोटी आरी। २. रेगमाल या बालूकागज। ३. बाँस (बिना गाँठवाला या एक पोर का बाँस का टुकड़ा) ४. बाँस की मोटाई-चौड़ाई के अनुसार छेद करने के लिए लोहे की छड़ या सरिया। ५. एक लंबा ब्रुश। ६. एक इंचीटेप या पैमाना। ७. हँसियानुमा तेज लोहे का हथियार। ८. एक पैंसिल। ९. नारियल या सरसों का तेल। १०. पत्थर के कोयले की अँगीठी। ११. आड़ी बाँसुरी के लिए एक कार्क। १२. सीधी बाँसुरी के लिए काठ की एक जीभ।

बाँसुरी के लिए उपयुक्त बाँस की लंबाई

उपर्युक्त कथन में यह पहले ही कहा जा चुका है कि बाँसुरी बाँस की बनाई जाती है। पतले छिलके या दलवाला बाँस, जिसकी गाँठ दूर-दूर पर हों, बाँसुरी के लिए उपयुक्त माना जाता है। बाँसुरी में उत्पन्न स्वरों की गम्भीरता बाँस की लंबाई पर निर्भर करती है। बाँस की भीतरी गोलाई एक इंच तथा लंबाई २६ इंच आधुनिक बाँसुरी के लिए एक प्रामाणिक रूप माना गया है। इस परिमाण की बाँसुरी डबल सी की बाँसुरी के नाम से पहचानी जाती है। यदि बाँस की लंबाई वही २६ इंच रहे और गोलाई एक इंच से डेढ़ इंच या दो इंच हो जाए तो बाँसुरी डबल सी से एक

या डेढ़ स्वर नीची हो जाएगी। इसलिए बाँस की लंबाई तथा गोलाई के आधार पर उपयुक्त स्वरों की बाँसुरी निश्चित की जाती है। बाँस की लम्बाई और मोटाई के आधार पर ही गुणीजन बाँसुरी के स्केल को घटा-बढ़ा लेते हैं।

बाँस की लम्बाई के साथ-साथ बाँस की गोलाई भी महत्त्वपूर्ण अंग है। जिस प्रकार की गोलाई और बाँस के अन्दर का पोल होगा, स्वरों का उत्पादन उतनी ही गंभीरता तथा मधुरता से होगा। आपेक्षित गोलाई न होने पर बाँसुरी को पकड़ पाना, उँगलियों को आसानी से घुमापाना, फूँक मारकर स्वरों का मधुर संयोजन कर पाना कठिन हो सकता है। साथ ही बाँस की गोलाई तार-सप्तक के स्वरों को स्पष्ट निकाल पाने में सहायक होती है। यह भी अनुभव में आया है कि बाँसुरी-वादक कम चौड़ी या मोटी बाँसुरी पर जब तार-सप्तक के स्वरों का प्रयोग करते हैं तब उन्हें स्वरों के बेसुरे होने का अनुभव होता है। निदान यह विचार प्रशस्त पाया गया है कि स्वरों को आसानी से निकाल पाने तथा मधुर स्वर-संयोजन के लिए बाँस की लंबाई के साथ-साथ उसकी गोलाई को ध्यान में रखना भी आवश्यक तत्त्व है।

बाँसुरी में छिद्र करने की क्रिया

बाँस में छिद्र करना कोई बड़ी चतुराई की बात नहीं है। किंतु बाँस के उस टुकड़े में जिसकी बाँसुरी बनानी है, छिद्र करते समय विशेष सावधानी रखनी पड़ती है। प्रथम तो यह है कि छिद्रों की दूरी कितनी हो ? दूसरी, कितने आकार के छिद्र (गोल छिद्र) करने हैं। बाँस की लंबाई एवं मोटाई तथा भीतरी खोखलापन कितना है ? इन आवश्यकीय तत्त्वों को ध्यान में रखते हुए बाँसुरी-वादक या निर्माता बाँस पर स्वरों के निकाले जाने की क्षमतानुसार छिद्र-स्थानों में चिह्न लगा लेता है। तथा दो समानाकार की लोहे की छड़ें, जिनकी क्रमशः मोटाई २ सूत या तीन सूत या चार सूत तक होती है, प्रयोग में लेता है। तीन सूतवाली छड़ बाँसुरी के छह स्वरों के छिद्र बनाने के काम में ली जाती है तथा दूसरी चार सूतवाली, पाँच सूतवाली फूँक मारने वाली छिद्र के निर्माण में ली जाती हैं। इन दोनों छड़ों को प्रारंभ

में आग में तपाकर पर्याप्त लाल (रक्त लाल) कर लेते हैं और लगे हुए चिह्नित स्थानों पर इन छड़ों से छिद्र करते हैं। ध्यान रखना चाहिए कि छिद्र करते समय छड़ की लंबाई कम नहीं होनी चाहिए यानी छड़ें पर्याप्त मात्रा में रक्त तप्त रहनी चाहिए। छड़ के पर्याप्त मात्रा में तप्त होने से बाँस के फटने का भय नहीं रहता। छिद्र बना लेने के बाद गोल छिद्रों को चिकना करने के लिए रेगमाल (बालू कागज) तथा ब्रुश का प्रयोग करते हैं। इस क्रिया के बाद निर्माणकर्ता किए हुए छिद्रों के आधार पर बाँसुरी के स्वरों की परीक्षा करता है। परीक्षा के द्वारा स्वर की कमी या अधिकता के लिए छिद्र के आकार में संशोधन करता है। यह सारी प्रक्रिया उत्तम कोटि की बाँसुरियों के निर्माण-कार्य में ही की जाती है, अन्यथा साधारण बाजारू बाँसुरियों में छिद्र करने के लिए इस साधना की आवश्यकता नहीं पड़ती। गायकी-अंग बजाने एवं सफल अंग बजाने (अवतरण) के लिए बाँसुरी-निर्माण में अधिक सावधानी रखनी चाहिए।

बाँसुरी पर छिद्रों की संख्या

यों तो लोग बाँसुरी में छह से नौ तक छिद्र बना लेते हैं और उनका प्रयोग आवश्यकतानुसार करते हैं, किंतु बाजारों में साधारणतया बिकनेवाली या अपने मनोविनोद के लिए कुछ भी धुन निकालते हुए प्रयोगों में ली जानेवाली बाँसुरियों की चर्चा हम नहीं कर रहे हैं; हमारा विचार उन बाँसुरियों के विषय में है, जिन्हें सिद्ध-हस्त कलाकार अपनी साधना के लिए उठाते हैं तथा जिसपर सभी सम्भव कलागत चातुर्य का प्रदर्शन करते हैं और साधकों को अभ्यास कराते हुए उनके विभिन्न अंगों की उपयोगिता तथा प्रयोग की विशेषता का परिचय कराते हैं। साथ ही उनमें हो सकनेवाले सुधारों की भी चर्चा करते हैं। अनेक प्रकार की बाँसुरियों के रूप, उनके प्रयोग और उपयोगों पर विचार करने पर ज्ञात होगा कि बाँसुरियों के अनेक रूप अनेकानेक जन-समुदायों के बीच प्रयोग में आए और आ रहे हैं। सीधी बाँसुरी का एक प्रकार प्रचलन में था, जिसमें ऊपर की ओर सात छिद्र तथा नीचे की ओर एक छिद्र होता था। इसमें नीचेवाले छिद्र से साधक, कलाकार

तीव्र मध्यम और पंचम का मीड़ से स्वर निकालते थे। इस बाँसुरी का कुछ दिनों प्रयोग रहा, परंतु अब इसका प्रयोग बहुत कम, लगभग नहीं के बराबर रह गया है। किंतु कर्नाटकी एवं त्रिपुरा की बाँसुरी में अभी भी आठ-आठ छिद्रों का प्रयोग करते हैं। आड़ी बाँसुरी में केवल छह छिद्रों से ही सारे कलात्मक साधनों को प्रदर्शित करते हैं। आवश्यकता होने पर वादक कभी-कभी दाहिने हाथ की ओर एक छिद्र बना लेते हैं। इस प्रकार के छिद्रवाली बाँसुरी को लोग गांधार की बाँसुरी कहकर पुकारते हैं। बाँसुरी में इस छिद्र के होने से अनुभव में यह आता है कि मन्द्र-सप्तक के दो और विशेष स्वरों के निकालपाने की सुलभता भी प्राप्त हो जाती है। बाँसुरी-वादन के क्षेत्र में इस नवीन छिद्र के प्रयोग से तीनों सप्तकों की उपलब्धि गुणीजनों को हुई है, अतः आड़ी बाँसुरियों में यह रूप आजकल प्रायः सर्वमान्य है। विदेशों में प्रयोग की जानेवाली बाँसुरी या तो चार छिद्रवाले प्रकार की होती हैं या क्लारनेट ढंग की उतनी ही छिद्रोंवाली होती हैं। विदेशी बाँसुरी का प्रकार प्रायः धातु-निर्मित होता है, उसमें चाभियाँ होती हैं, इसमें बारह या बारह से भी ज्यादा छिद्र होते हैं। छोटी या बड़ी बाँसुरी के प्रकारों में आठ छिद्र से लेकर बारह, चौदह, सोलह, अठारह तक छिद्र पाए जाते हैं। चार छिद्रोंवाली विदेशी बाँसुरी केवल रिद्म के प्रदर्शन में काम आती है, मेलोडियस प्रयोग के लिए अनुपयुक्त रहती है। भारतवर्ष में वर्तमान प्रचार में आड़ी बाँसुरी में छह से आठ छिद्र तक प्रयोग करते हैं। दाहिनी ओर के नीचे के इस छिद्र के प्रयोग से मंद्र-सप्तक के स्वरों की उपलब्धि तो अवश्य हो जाती है, किंतु तार-सप्तक के स्वरों में यथानुकूल स्वरोपलब्धि कुछ कम हो जाती है। और ऐसा भी अनुभव में आता है कि स्वर-विधान में कुछ बेसुरापन भी आ जाता है। अतः नीचे के इस छिद्र को यदि तीव्र मध्यम बनाया जाए तो निःसंदेह अभीष्ट साधना अनायास ही प्राप्त हो सकेगी, ऐसा गुणीजनों एवं कलाकारों का मत है।

फूँक के छिद्र से अन्य छिद्रों की दूरी

सितार पर बँधे पर्दे या सुंदरियों की स्थापना सितार की लंबाई के अनुसार तारों की झंकारों के केन्द्र के अनुपात से रखी जाती है।

स्वरों का मधुर संयोजन ही वाद्य की उत्कृष्ट उपयोगिता है। इसी प्रकार बाँसुरी-निर्माण में फूँक के छिद्र की स्थिति तथा अन्य पाँच या सात छिद्रों की परस्पर दूरी या फूँकवाले छिद्र से उनकी दूरी स्वर-संवाद के गंभीर शास्त्रीय आधार पर व्यवस्थित की जाती है। यह साधारण काम नहीं कि हम कहीं भी कैसा भी, छिद्र कर लें एवं अभ्यास प्रारम्भ कर दें। बाँसुरी में फूँक मारने का स्थान एक निश्चित जगह पर होता है, इसी के आधार पर अन्य छिद्रों की दूरी स्वर-संवाद को ध्यान में रखते हुए तय की जाती है। स्वर-संवाद की यह योजना यदि ठीक-ठीक होगी तो स्वर-समुदाय मधुर एवं अभीष्ट आनंदोत्पादक होगा। शास्त्रीय गायन-वादन में सभी सम्भव गायकी के लिए प्रायः बाँसुरी बड़े आकार की होती है। उसके आकार के अनुसार ही इन छिद्रों की व्यवस्था की जाती है। बाँस के आकार अर्थात् लंबाई व मोटाई के अनुसार इसका स्केल निश्चित करते हुए छिद्रों की व्यवस्था करते हैं। बाँस की गोलाई (वृत्त) पर भी स्वरों के घटने-बढ़ने की संभावना रहती है। जितनी बाँस की गोलाई (परधि) बढ़ती जाएगी, बाँसुरी के स्वरों की व्यवस्था उतनी ही उतर जाएगी और बाँस की गोलाई (भीतरी परिधि) जितनी ही कम होगी, बाँसुरी उतने ही ऊँचे स्वरोंवाली होगी। गोलाई (भीतरी परिधि) के कारण ही फूँकवाला छिद्र और उसका आकार तथा अन्यान्य छिद्रों की परस्पर दूरी घटती या बढ़ती जाएगी। इससे यह भी आवश्यक तत्त्व समझ में आया कि बाँस की गोलाई (भीतरी परिधि) के अनुसार ही स्वरों के मधुर संवाद उत्पन्न कर सकनेवाले अन्यान्य छिद्रों की व्यवस्था करनी चाहिए। परिशिष्ट तालिका में अनेक अवस्थाओं के बाँसों की योजना या कैपेसिटी के अनुसार अनेक स्केल्स में छिद्रों की व्यवस्था को दिखाया गया है। गोलाई पर ही बाँसुरी का स्केल निर्भर करता है।

बाँसुरी में छिद्रों की परस्पर दूरी

बाँसुरी-निर्माण में छिद्रों की संख्या, उसकी लंबाई, बाँस की मोटाई तथा पोलेपन का विचार करते हुए छिद्रों को कितनी दूर पर रखा जाए कि उनपर सभी सम्भव स्वर-योजना सफलतापूर्वक

की जा सके तथा उँगलियों का प्रचलन अबाध गति से हो सके। बाँसुरी के आकार के अनुसार छिद्रों की दूरी घट-बढ़ जाती है। बाँसुरी का आकार जितना छोटा होगा, उसी स्केल के अनुपात से छिद्रों की दूरी घट जाएगी। छिद्रों के अनुपातत: अवस्थित होने पर ही अभीष्ट स्वरों की प्राप्ति हो सकेगी। आगे के परिशिष्ट क्रम में विभिन्न स्केल की बाँसुरियों में छिद्रों की संख्या एवं उनके की परस्पर दूरी का विचार स्पष्ट किया जाता है।

बाँसुरी में छिद्रों के आकार

बाँसुरी के निर्माण एवं प्रयुक्त करते समय बाँस की लंबाई-मोटाई एवं पोलेपन का विचार करते हुए जिन छिद्रों से हम फूँक भरते और ध्वनि निकालते हैं, उन छिद्रों के आकार पर भी हमें ध्यान देना चाहिए। सम्भवतया छिद्रों के आकार ऐसे होने चाहिए, जो कि उँगलियों के पोरों से ढके जा सकें तथा अपेक्षित स्वर-साधना में रुकावट न उत्पन्न करें। देखने में यह आया है कि छिद्र यदि छोटे या बड़े होंगे तो बजते समय ऊपर से उँगलियाँ रखने एवं ध्वनि निकालने में कठिनाई का अनुभव होगा। बाजारों में बिकनेवाली साधारण बाँसुरियों पर अभ्यास करने में इस कठिनाई का अनुभव होता है, अत: साधक को अपनी साधना के अनुकूल ही बाँसुरी या तो स्वयं बनानी चाहिए या कारीगर से बनवानी चाहिए। सर्वप्रथम नीचे के छिद्र को लगभग तीन सूत चौड़ा, दूसरा भी तीन सूत, तीसरा दो सूत या २½ सूत, चौथा तथा पाँचवाँ तीन-तीन सूत के तथा छठा छिद्र दो या ढाई सूत चौड़ा रखना होता है। छिद्रों के आकार तथा उनकी परस्पर दूरी का चित्र गणितानुसार परिशिष्ट क्रम में दिया गया है। फिर बाँस की बाँसुरियों के छिद्र बाँस पर ही निर्भर करते हैं। बाँस के अनुसार ही बाँसुरी पर छिद्र करने आवश्यक हैं।

त्रिपुरा बाँसुरी के लिए माप

दूसरे काले की बाँसुरी की लंबाई	२२–५ इंच
बाँसुरी के बाँस की परिधि (भीतरी व्यास)	०–७५ "
अंतिम छिद्र का व्यास	०–०३ "

अंतिम छिद्र से पहले छिद्र की दूरी	२–०५ इंच
पहले छिद्र का व्यास	०–३५ "
पहले छिद्र से दूसरे छिद्र की दूरी	०–०७ "
दूसरे छिद्र का व्यास (गोलाई)	०–०३ "
दूसरे छिद्र से तीसरे छिद्र की दूरी	०–६५ "
तीसरे छिद्र का व्यास	०–०३ "
तीसरे छिद्र से चौथे छिद्र की दूरी	०–०७ "
चौथे छिद्र का व्यास	०–३२५ "
चौथे छिद्र से पाँचवें छिद्र की दूरी	२–०५ "
पाँचवें छिद्र का व्यास	०–३२५ "
पाँचवें छिद्र से छठे छिद्र की दूरी	०–६५ "
छठे छिद्र का व्यास	०–०३ "
छठे छिद्र से सातवें छिद्र की दूरी	०–०७ "
सातवें छिद्र का व्यास	०–०३ "
अंत से निचले (अँगूठे के छिद्र की दूरी)	१२–३५ "
निचले (या अँगूठे के) छिद्र का व्यास	०–०३ "

सीधी बाँसुरी

बाँसुरी की पूरी लंबाई	१४–०६ इंच
बाँसुरी की भीतरी गोलाई	०–०५ "
अन्त से पहले छिद्र की दूरी	१–०५ "
पहले छिद्र का व्यास	०–३२५ "
पहले छिद्र से दूसरे छिद्र की दूरी	०–७७५ "
दूसरे छिद्र का व्यास	०–३२५ "
दूसरे छिद्र से तीसरे छिद्र की दूरी	०–०४ "
तीसरे छिद्र का व्यास	०–०३ "
तीसरे छिद्र से चौथे छिद्र की दूरी	०–०६ "
चौथे छिद्र का व्यास	०–०३ "
चौथे छिद्र से पाँचवें छिद्र की दूरी	०–०६ "
पाँचवें छिद्र का व्यास	....
पाँचवें छिद्र से छठे छिद्र की दूरी	....
छठे छिद्र का व्यास	....

छठे छिद्र से सातवें छिद्र की दूरी	....
सातवें छिद्र का व्यास	....

बाँसुरी आड़ी नं० FF

	इंच	सूत
बाँसुरी की पूरी लंबाई	१६	४
बाँसुरी का बोर (गोलाई)	०	५¾
अन्त से पहले छिद्र की दूरी	१	½
पहले छिद्र का व्यास	०	३¼
पहले छिद्र से दूसरे छिद्र की दूरी	१	½
दूसरे छिद्र का व्यास	०	३½
दूसरे छिद्र से तीसरे छिद्र की दूरी	०	५
तीसरे छिद्र का व्यास	०	३
तीसरे छिद्र से चौथे छिद्र की दूरी	१	½
चौथे छिद्र का व्यास	०	३½
चौथे छिद्र से पाँचवें छिद्र की दूरी	१	½
पाँचवें छिद्र का व्यास	०	३¼
पाँचवें छिद्र से छठे छिद्र की दूरी	०	२
छठे छिद्र का व्यास	०	३
छठे छिद्र से सातवें छिद्र की दूरी	६	६¼
सातवें छिद्र का व्यास	०	३¾

सीधी बाँसुरी FF की लंबाई १८ इंच ५ सूत, गोलाई ५½ सूत छठे छेद से सातवें छेद की दूरी ७ इंच ½ सूत सातवें छेद का व्यास तथा चौड़ाई २×२ सूत बाकी नाप ऊपर वर्णित है।

बाँसुरी सीधी नं० G

	इंच	सूत
बाँसुरी की पूरी लंबाई	१६	४½
बाँसुरी का बोर (गोलाई)	०	५½
अंत से पहले छेद की दूरी	२	१½
पहले छेद का व्यास	०	१½
पहले छेद से दूसरे छेद की दूरी	०	७½

दूसरे छेद का व्यास	०	२½
दूसरे छिद्र से तीसरे छिद्र की दूरी	०	५
तीसरे छिद्र का व्यास	०	२
तीसरे छिद्र से चौथे छिद्र की दूरी	०	७
चौथे छिद्र का व्यास	०	३¼
चौथे छिद्र से पाँचवें छिद्र की दूरी	०	६½
पाँचवें छिद्र का व्यास	०	३¼
पाँचवें छिद्र से छठे छिद्र की दूरी	०	७½
छठे छिद्र का व्यास	०	२½
छठे छिद्र से सातवें छिद्र की दूरी	६	५
सातवें छिद्र का व्यास	०	२½×२½

दूसरे काले की बाँसुरी

	इंच	सूत
बाँसुरी की पूरी पूरी लंबाई	३१	०
बाँस का बोर	०	७¼
अंत से पहले छिद्र की लंबाई	४	६½
पहले छिद्र का व्यास	०	२
पहले छिद्र से दूसरे छिद्र की दूरी	१	३¼
दूसरे छिद्र का व्यास	०	३½
दूसरे छिद्र से तीसरे छिद्र की दूरी	१	२½
तीसरे छिद्र का व्यास	०	३½
तीसरे छिद्र से चौथे छिद्र की दूरी	१	१½
चौथे छिद्र का व्यास	०	३½
चौथे छिद्र से पाँचवें छिद्र की दूरी	१	७
पाँचवें छिद्र का व्यास	०	३½
पाँचवें छिद्र से छठे छिद्र की दूरी	१	३½
छठे छिद्र का व्यास	०	४½
छठे छिद्र से सातवें छिद्र की दूरी	१	३½
सातवें छिद्र का व्यास	०	३½
सातवें छिद्र से आठवें छिद्र की दूरी	१०	१½
आठवें छिद्र का व्यास	०	४½

बड़ी बाँसुरी नं० GGG गांधार की

	इंच	सूत
बाँसुरी की पूरी लंबाई	३२	५½
बाँसुरी का बोर	१	२
अंत से पहले छिद्र की दूरी	६	७
पहले छिद्र का व्यास	०	२½
पहले छिद्र से दूसरे छिद्र की दूरी	१	७½
दूसरे छिद्र का व्यास	०	३½
दूसरे छिद्र से तीसरे छिद्र की दूरी	१	४½
तीसरे छिद्र का व्यास	०	४½
तीसरे छिद्र से चौथे छिद्र की दूरी	१	१¼
चौथे छिद्र का व्यास	०	३
चौथे छिद्र से पाँचवें छिद्र की दूरी	१	३¼
पाँचवें छिद्र का व्यास	०	३½
पाँचवें छिद्र से छठे छिद्र की दूरी	१	३¼
छठे छिद्र का व्यास	०	४
छठे छिद्र से सातवें छिद्र की दूरी	१	¼
सातवें छिद्र का व्यास	०	३¾
सातवें छिद्र से आठवें छिद्र की दूरी	१०	२½
आठवें छिद्र का व्यास	०	४½

आड़ी बाँसुरी चौथा सफेद गांधार

	इंच	सूत
बाँसुरी की पूरी लंबाई	२९	०
बाँसुरी का बोर	१	½
अंत से पहले छिद्र की दूरी	४	३½
पहले छिद्र का व्यास	०	३½
पहले छिद्र से दूसरे छिद्र की दूरी	१	५
दूसरे छिद्र का व्यास	०	३
दूसरे छिद्र से तीसरे छिद्र की दूरी	१	३
तीसरे छिद्र का व्यास	०	३½
तीसरे छिद्र से चौथे छिद्र की दूरी	१	½

	इंच	सूत
चौथे छिद्र का व्यास	०	३
चौथे छिद्र से पाँचवें छिद्र की दूरी	१	३
पाँचवें छिद्र का व्यास	०	४
पाँचवें छिद्र से छठे छिद्र की दूरी	१	१$\frac{३}{४}$
छठे छिद्र का व्यास	०	४
छठे छिद्र से सातवें छिद्र की दूरी	१	१$\frac{३}{४}$
सातवें छिद्र का व्यास	०	४
सातवें छिद्र से आठवें छिद्र की दूरी	६	३
आठवें छिद्र का व्यास	०	४

बाँसुरी पर रंग

बाँस प्रकृति से ही खुरखुरा और फाँसयुक्त होता है। जब उसे बाँसुरी योग्य उपयुक्त बनाते हैं तो निःसंदेह उसमें चिकना होते हुए भी खुरदरापन आ जाएगा। अतः बाँस को बाँसुरी योग्य बनाते हुए उसको आकर्षक एवं दर्शनीय बनाने के लिए कारीगर उसपर रंग लगाते हैं, यानी बाँसुरी पर रंग कर देते हैं। बनाने की प्रक्रिया में आए दोष प्रथम तो इस रंग करने की क्रिया से दब जाते हैं। बाँस फट जाने का दोष भी ढक जाता है। फूँक मारने से जिस मधुर स्वर-संयोजना की प्रक्रिया कलाकार करता है, रंग होने से बाँसुरी के स्वर का स्खलन नहीं हो पाता। बाँसुरी बनाते समय अपेक्षित बाँस के टुकड़े को छीलकर उसे आग में सेक लेते हैं, ताकि बाँस की नरमाहट निकल जाए। बाँस के ऊपरी भाग को रेगमाल (बालू कागज) से रगड़कर साफ करते हैं। चपड़ा और स्प्रिट की सहायता से बाँस को चिकना बनाते हैं। रंग करते समय वार्निश आदि से उसे चमका लेते हैं। धागा लपेटे जाने एवं बाँसुरी पर दर्शनीय आकर्षक रंग देने की प्रक्रिया का मूल कारण बाँसुरी को दृढ़ बनाना एवं उसके रूखेपन के दोष को मिटाना है। साथ ही ये दोनों क्रियाएँ बाँस के दोषों को ढककर स्वर-प्रक्रिया में भी सहायक होती हैं।

ज्ञातव्य : बाँसुरी में रंग लगाने की क्रिया प्रायः बाजार में बिकनेवाली बाँसुरियों पर ही होती है। किन्तु अच्छे कलाकार

अपनी बाँसुरी में केवल धागा बाँधने की क्रिया ही करते हैं, रंग लगाने की क्रिया नहीं करते ।

बाँसुरी में धागा लपेटना

बाँसुरी-वादन प्रक्रिया में उसके कलात्मक विकास एवं निर्माण-विधि, समय-समय पर जिन-जिन आवश्यक तत्त्वों की आवश्यकता और उपादेयता पाई जाती रही है, उन-उन तत्त्वों का समावेश गुणीजन करते गए हैं। इन तत्त्वों के बीच बाँसुरी पर धागा लपेटने की उपादेयता भी अपना एक विशिष्ट स्थान रखती है। यद्यपि यह आधुनिक प्रयोग है और इसकी उपादेयता का अनुभव गुणीजनों को अनेकविधि प्रयोगों के बीच हुआ। प्रथम तो बाँस पतले दल का होना और उसमें फूँक भरकर बजाने की क्रिया में बाँस के फट जाने का अनुभव गुणीजनों को हुआ। बाँसुरी के फट जाने पर भी धागे के द्वारा कसे रहने पर स्वर अपने स्थान पर अपेक्षित मधुर ध्वनि करता रहेगा और वादन-प्रक्रिया में कोई निस्वरता (बेसुरापन) नहीं आएगी। किन्तु यह क्रिया (धागा लपेटने की) केवल बड़े आकार की, विशेषकर आड़ी बाँसुरी के प्रयोग में देखने में आती है, सीधी या आड़ी छोटे आकार की बाँसुरी में धागा लपेटने की आवश्यकता नहीं पाई जाती।

कभी-कभी बाँस बाँसुरी के अनुकूल बनाते समय या छिद्र करते समय भी फट जाते हैं। अतः इस धागे का प्रयोग उसे बनाए रखने के लिए भी करते हैं। बाँस की छिलाई करते समय उसमें रूखापन देखने में आता है। अतः कुछ लोग या तो उसपर रंग कर देते हैं या केवल तेल लगाकर ही उसके बाह्य रूप को चिकना बनाते हैं। यदि उसे धूप में रख दें तो निःसंदेह बाँस के फट जाने का भय रहता है। अतः इस प्रकार धागा लपेटने की क्रिया किसी भी अनभीष्ट तत्त्व से बाँसुरी की रक्षा करती है। धागा लपेटते समय बनाने या प्रयोग करनेवाले को देख लेना चाहिए कि धागा उसकी सुन्दरता को बढ़ाए तथा फूँक मारने या उँगलियों को चलाने की प्रक्रिया में कहीं हाथ की गति क्रिया को रोके नहीं। धागा लपेटने से पूर्व यह देख लेना चाहिए कि धागा पतला एवं दृढ़ हो। साथ ही धागा चिकना न हो, जिसकी गाँठ न लगाई जा सके,

या उँगलियों के चलाए जाने से खुल न जाए। धागा लपेटने में ध्यान यह रहे कि धागा बाँसुरी की दृढ़ता के लिए लपेटा जा रहा है, साथ ही साथ उसकी सुन्दरता भी बढ़ा रहा है।

बाँसुरी के लिए उपयुक्त तेल का प्रयोग

बाँसुरी के लिए सरसों (कड़ुआ तेल) का तेल बहुत उपयुक्त होता है। इसके साथ ही अन्य तेलों का प्रयोग भी किया जा सकता है, जैसे—नारियल का तेल, चंदन का तेल। कुछ गुणीजन बकरी के दूध का भी प्रयोग करते हैं।

बाँसुरी के अन्यान्य उपादेय अंग

सीधी बाँसुरी में फूँक मारने के स्थान पर लगे लकड़ी के एक टुकड़े का उसके रचना-विधान में महत्त्वपूर्ण स्थान है, इसे जीभ कहते हैं। सीधी बाँसुरी में उत्पन्न होनेवाले स्वर इसी जीभ के आधार पर निकलते हैं। इस जीभ को इस बाँसुरी का प्रधान ध्वनि-उत्पादक तत्त्व कहते हैं। यदि इस जीभ को इस बाँसुरी में से निकाल दिया जाए तो बाँसुरी निर्जीव या मृत हो जाएगी, यानी उसमें से कोई स्वर या ध्वनि नहीं निकल पाएगी। ध्वनि-उत्पादक इस तत्त्व के महत्त्व को जानने के अतिरिक्त यह जानना आवश्यक है कि लकड़ी का यह टुकड़ा किस जाति की लकड़ी का होना चाहिए और किस प्रकार उसे लगाना चाहिए।

लकड़ी का यह टुकड़ा जीभ के समान ढालदार नर्म लकड़ी का बनाना चाहिए, जो आम या चीड़ की लकड़ी के टुकड़ों में से लिया जा सकता है। कहीं-कहीं, जैसे पटना आदि में अरहर के डंठल का टुकड़ा ही इस कार्य के लिए लेते हैं।

इस प्रकार की बाँसुरी बनाते समय बाँस के टुकड़े और बनी हुई जीभ की लकड़ी को भिगोते हैं और बाँस की गोलाई के अनुसार ही जीभ को काट-छाँटकर फूँक मारनेवाले छिद्र पर लगा देते हैं। यहाँ यह ध्यान रखना चाहिए कि जीभ और बाँस की गोलाई के नीचे के भाग के बीच डेढ़ सूत का अन्तर रहे, ताकि मुँह

से निकली हुई हवा उस मध्य गति रन्ध्र से बाँसुरी में प्रविष्ट होकर ध्वनि-उत्पादन कर सके। जीभ के लिए लगाया हुआ यह टुकड़ा लगभग आधा इंच या एक इंच का होता है। ज्यादा-से-ज्यादा स्वर निकाल पाने या कम-से-कम स्वर निकाल पाने की सारी कारीगरी इसी जीभ पर निर्भर होती है। बाँसुरी बनानेवाले ऐसी चतुराई से बाँसुरी का निर्माण करते हैं, जिसमें फूँक भी कम भरनी पड़े और स्वर भी मधुर एवं अभीष्ट निकल सके। इस प्रकार की सीधी बाँसुरी का सारा कला-वैचित्र्य इस जीभ पर ही आधारित है, अतः बनाते समय इस आवश्यकीय अंग को उचित रीति से ही लगाना चाहिए। इस जीभ के लिए उपयुक्त लकड़ी की खोज करते-करते गुणीजनों ने उस लकड़ी का प्रयोग सार्थक माना है, जो पतली और नर्म हो। प्रायः दियासलाई बनाए जाने वाले कारखानों में प्रयुक्त लकड़ी की जाति उपयुक्त मानी गई है।

बाँसुरी में नए प्रयोग

विज्ञान की प्रगति ने मानव-बुद्धि में एक नई स्फूर्ति पैदा की है। वह साधारण-सी-साधारण वस्तु में विशिष्ट-से-विशिष्ट गुणों की कल्पना को साकार करने की चेष्टा में लगा है। कम-से-कम समय और शक्ति-प्रयोग से अधिकतम लाभ और आनंद तथा मानव-सौख्य प्राप्त हो, यह उसका उद्देश्य है। प्रत्येक क्षेत्र में प्रगति का प्रेरक यही मंत्र रहा है। भारतीय वाद्यों के अनेक रूप, उनके प्रकार और प्रयोग इस दृष्टिकोण से अनेक विकसित रूपों का वह जन्मदाता हुआ। बाँसुरियाँ अनेक प्रकार से प्रयोग में आती थीं, उनमें परिष्कार-परिवर्धन हुए। छोटी बाँसुरियों में राग-विस्तार की अधिक क्षमता न होने का अनुभव हुआ। निदान, बाँस के बड़े टुकड़ों में यथानुकूल छिद्रों की कल्पना आई। परिणाम-स्वरूप आज के सिद्ध वादक बड़ी बाँसुरियों पर ही आज की गायकियों की सभी संभव कलात्मकताएँ दिखलाते दीख पड़ते हैं। बाँसुरी-वादकों में वर्तमान युग के युग-निर्माता सिद्ध कलाकार स्व० श्री पन्नालाल घोष थे। उन्होंने बाँसुरी के आकार, लंबाई, छिद्रों के स्थान, उनकी आपसी दूरी, उनपर स्वरों के निकालने के प्रकार आदि का शास्त्रों में वर्णित प्रकारादि

के आधार पर अनेक प्रयोगसिद्ध ढंग प्रशस्त किए। वादन - क्रम में नवीन-नवीन प्रयोगों से सभी संभव गायकियों की साधना मानो उनके युग-निर्माता होने के विचार को सिद्ध करती है। स्व० श्री पन्नालाल ने वादन-क्रम में नई अनुभूतियाँ पाईं। बाँसुरियों के आकार, ढंग, छिद्रों की संख्या, उनपर उँगलियों के संचलन, स्वरों का निकालना, फूत्कार के प्रयोग आदि-आदि सभी विषयों में गंभीर विचार करते हुए नवीन प्रयोग किए। उदाहरणार्थ पंचम स्वर से तार सप्तक में ऋषभ निकालना तथा प ध नि सां रें गं रें सां निकालना भी आज के युग की विशेषता है।

बाँसुरी पकड़ने का ढंग

चाहे वाद्य भारतीय हो या विदेशी, उसके पकड़ने और उस पर स्वर-साधन का एक विशेष ढंग होता है। वाद्य का ठीक-ठीक पकड़ना उसपर अभ्यास करना तथा उस ढंग से जन-साधारण के बीच गायकी की अवतारणा करना एक खास परंपरा का द्योतक है और यह ढंग किसी शिष्ट गुरू की परम्परा से ही प्राप्त होता है। वाद्य पर स्वर-साधक प्रगतिपरक हो सके, इस दृष्टि से शिष्ट कलाकारों का ढंग देखना और सीखना चाहिए। बाँसुरी पर उलटे-सीधे हाथ रखने के मनमाने ढंग पर अभ्यास हो जाने से आगे चलकर द्रुत गति में गायकी निकाल पाना कठिन होता है। अतः ठीक ढंग से हाथ रखना लाभदायक होता है। विदेशों में भी वाद्य-वादन में सभी वाद्यों के कुशलवापूर्वक बजाने के ढंग होते हैं, जिनकी शिक्षा वादकों को लेनी पड़ती है।

बाँसुरी में प्रायः बायाँ हाथ नीचे और दाहिना हाथ ऊपर रखते हुए देखे जाते हैं, जो आड़ी बाँसुरी में कुशलतापूर्वक बजा पाने में कठिनाई उत्पन्न करता है। परन्तु कुशलतापूर्वक सभी संभव गायकियों की अवतारणा की क्षमता के लिए साधक को दाहिना हाथ नीचे रखना ही उत्तम प्रकार है। प्राचीन चित्रों में श्रीकृष्ण के हाथ में दिखलाई गई बाँसुरी और उनपर उँगलियों की स्थिति ऐसी है, जिनमें दाहिना हाथ नीचे की ओर होता है। विदेशों में बाँसुरी के प्रकार चाबीदार होते हैं, जिनपर हाथ रखने और कुशलतापूर्वक बजाने का एक खास तरीका होता है। भारतीय

प्रकारों में भी सीधी, आड़ी, कर्नाटकी, त्रिपुरा सभी बाँसुरियों के पकड़ने के अलग प्रकार हैं। प्रस्तुत विवेचना में हम केवल आड़ी बाँसुरी के पकड़ने और उसपर हाथ रखने के प्रकार को ही प्रस्तुत कर रहे।

सीधी बाँसुरी को कुछ वादक अपनी उँगली के पहले पोर से ही पकड़ते हैं, कुछ मध्य और अंतिम पोर से, किन्तु पहले पोर से छिद्राच्छादन का प्रकार ही सरल ढंग है, क्योंकि इससे कोमल स्वरों के निकाल पाने में सरलता होती है। यही क्रिया आड़ी बाँसुरी के वादन में करनी चाहिए। परन्तु आड़ी बाँसुरी में दूसरे पोर से स्वरोत्पादन करते हुए छिद्र दबाने और कोमल एवं शुद्ध स्वर प्राप्त करने में सरलता होती है।

इस चित्र में बाँसुरी पकड़ने की विधि एवं बाँसुरी के मुखारन्ध्र के छिद्र में बारीक फूँक भरने की विधि दर्शायी गई है।



बाँसुरी पकड़ने का चित्र

बाँसुरी पकड़कर बैठने का ढंग

प्रायः ऐसा देखा गया है कि नौसिखिए बाँसुरी-वादक बाँसुरी को गलत ढंग से पकड़कर कैसे भी बैठ जाते हैं और बजाने लगते हैं। इससे हाथ एवं उँगलियों का गलत ढंग से अभ्यास हो जाता है, जिसके कारण अच्छे गुरुओं के पास जाकर सीखने में (शिक्षा लेने में) बहुत ही कठिनाई होती है। ऐसे लोग अच्छे बाँसुरी-वादक नहीं बन पाते। कोई भी वाद्य हो, उसे बजाते

समय हाथ एवम् उँगलियों का रखाव बहुत ही अच्छे ढंग से अपने गुरू से ज्ञात कर लेना चाहिए। इसी प्रकार से बाँसुरी या किसी भी वाद्य को हाथ व उँगलियों के रखाव के अलावा उसे लेकर बैठने पर भी विशेष ध्यान देना चाहिए। मुद्रा-दोष का भी विशेष ध्यान रखना चाहिए, जिससे कि वादन करते समय किसी भी प्रकार की कठिनाई न हो सके। खासकर बाँसुरी में बैठक का विशेष ध्यान रखना चाहिए। प्रायः देखा जाता है कि घुटने को मोड़कर और हाथ को घुटने से टेककर या दोनों पैरों को बायीं ओर मोड़ करके भी अनेकों ढंग से बैठकर बजाते रहते हैं, जिससे कि साँस लेने में बहुत शीघ्र ही थक जाते हैं। इससे काफी कष्ट महसूस करते हैं, फलतः अधिक समय तक अभ्यास नहीं कर पाते। विदेशों में प्रायः आर्केस्ट्रा या किसी संस्था में लोग खड़े होकर बजाते हैं या कुर्सियों पर बैठकर बजाते हैं। उनका यह एक अपना ढंग है, जो कि भारतीय पद्धति से अलग है। यह पद्धति उनके लिए ही ठीक है।

हमारे खयाल से बाँसुरी को दाहिना हाथ नीचे एवं बायाँ हाथ ऊपर तथा बाएँ पैर के ऊपर दाहिना पैर रखकर या फिर पालथी मारकर सामने की ओर झुके बिना, सीधा होकर बजाना चाहिए। एक बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि रीढ़ की हड्डी बिलकुल सीधी रहे एवम् मुख प्रसन्न मुद्रा में श्रोताओं के सम्मुख रहे। इससे साँस लेने में, फूँक भरने में तनिक भी कठिनाई नहीं प्रतीत होगी। काफी समय तक अभ्यास करने में थकावट भी नहीं महसूस होगी। इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए जो भी वादक या साधक अभ्यास करेगा, उसकी प्रगति व वादन में निखार अवश्य होता रहेगा, ऐसा अनेक वादकों एवं साधकों का विचार है।

प्रस्तुत चित्र में बाँसुरी पकड़कर बैठने का उचित ढंग बताया गया है।



बाँसुरी पकड़कर बैठने का उचित ढंग

बाँसुरी में फूँक भरने की विधि

बाँसुरी-वादन की सारी कला उसमें भरी जानेवाली फूँक की मात्रा, उसके ढंग तथा अन्य छिद्रों पर रखी जानेवाली उँगलियों की स्थिति पर निर्भर करती है। फूँक भरने पर छिद्रों से मधुर ध्वनि निकले, यही वंशी-वादक की कुशलता है। फूँक से मधुर स्वर और माधुर्यपूर्ण स्वर-संयोजन का उत्पन्न हो पाना ही वंशी-वादन की सफलता है। प्रायः कौतुकवश सभी कुछ-न-कुछ स्वर निकालने की चेष्टा में रहते हैं, किंतु देखा गया है कि कुछेक कुशल कलाकारों को छोड़कर प्रायः मधुर स्वर निकाल पाने में

वादकों का अभाव ही पाया जाता है। अतः कुछेक नियमों की ओर प्रारंभिक साधकों को ध्यान देना चाहिए, विशेषकर ध्यान देने योग्य नियम आड़ी बाँसुरी के वादन-क्रम में सावधानी से समझ लेना चाहिए।

सर्वप्रथम आड़ी बाँसुरी को अधर पर इस प्रकार रखना चाहिए कि फूँक मुख रन्ध्र के छिद्र पर जाए। फूँक देते समय बाँसुरी से सुरसुराहट की आवाज प्रकट न होने पाए। सभी स्वरों से निकलनेवाली आवाज एक-सी होनी चाहिए। स्वर-पेटी या तानपूरे के स्वर के साथ बाँसुरी का स्वर एक-सा मिला होना चाहिए। स्वरों में यदि बेसुरापन होगा तो सारी बाँसुरी-वादन की विशेषता नष्ट हो जाएगी। वह वादन आकर्षक एवं मनोहर नहीं होगा। बाँसुरी-वादन की सारी कुशलता उसके मधुर स्वरों पर निर्भर करती है। ध्यान रहे कि सभी सप्तकों के स्वर शुद्ध एवं मधुर निकलें। आड़ी बाँसुरी को घुमा-फिराकर मन्द्र-सप्तक में आधे स्वर से लेकर एक स्वर बना सकने की क्षमता होनी चाहिए। बाँसुरी में कोमल स्वरों के निकालने की विधि व फूँक द्वारा शुद्ध और मधुर स्वर निकाल पाने के लिए कुशल बाँसुरी-वादक से प्रारंभिक शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए।

बाँसुरी-वादन के समय वादकों को अपना मुँह नहीं बिगाड़ना चाहिए। बाँसुरी-वादक को बाँसुरी इस प्रकार बजानी और बाँसुरी की स्थिति ऐसी रखनी चाहिए कि देखने में सुन्दर प्रतीत हो।

ज्ञातव्य : बाँसुरी बजाने से पहले हो सके तो गर्म दूध पीकर बाँसुरी-वादन करें। यदि दूध न प्राप्त हो तो शीतल जल का प्रयोग करना चाहिए।

बाँसुरी के छिद्रों पर स्वर-संस्थान

कुछ बाँसुरियाँ सीधी बजाई जाती हैं और कुछ आड़ी तथा कुछों में मुख रन्ध्र परिधि से ही बजाते हैं। कुछ में नीचे भी छिद्र होते हैं। ऊपर छिद्रवाली बाँसुरी प्रायः उत्तर-भारत में सीधी और आड़ी के रूप में प्रयुक्त होती है तथा जिनमें नीचे छिद्र होते हैं, वे त्रिपुरा और अन्य प्रान्तों में प्रचार में आती हैं। कुछ

समय पूर्व सीधी बाँसुरी प्रयोग में आती थीं, जिनमें नीचे भी छिद्र होता था। किन्तु अब सीधी क्या, आड़ी क्या, सभी प्रकार की बाँसुरियों में ऊपर के छिद्रों से ही सारी अपेक्षित कला का विस्तार किया जाता है। फिर भी इसका यह अर्थ नहीं कि इस विकास में ही बाँसुरी का सारा विकास रुक गया है। गुणी लोग या वादक कलाकार जैसी-जैसी आवश्यकताएँ अनुभव करेंगे, इसके निर्माण एवं वादन-प्रकार में संशोधन, परिवर्धन एवं परिष्कार करते रहेंगे और भविष्य में भी होता रहेगा।

बाँसुरी पर स्वर एवं सप्तक निकालने की विधि

बाँसुरी में किसी भी स्वर को षड्ज मानकर सरगम बजाने की सुविधा है, किंतु प्रायः देखा जाता है कि साधक दाहिने हाथ के सबसे नीचे स्वर पंचम को बन्द करके ही 'सा' मानते हैं और तदनुसार ही अलंकारों का आरोहण करते हैं। किंतु इस प्रक्रिया में साधक को आगे चलकर मन्द्र-सप्तक के स्वर प्राप्त नहीं हो पाते, साथ ही अभ्यासक्रम में भी कठिनाई हो जाती है। अतः सरल ढंग हम यहाँ दे रहे हैं।

सर्वप्रथम बाएँ हाथ की पहली, दूसरी और तीसरी उँगलियों को रखना चाहिए। फिर दाहिने हाथ की पहली अँगुली को रखना चाहिए, जिससे बाँसुरी हाथ से गिरने का भय नहीं रहता। ध्यान रहे कि दाहिने हाथ की दूसरी तथा तीसरी उँगली हमेशा खुली रहें क्योंकि इनका प्रयोग केवल पंचम स्वर बजाते समय किया जाता है। उँगलियों के पोरों से छिद्रों को इस प्रकार दबाया जाना चाहिए कि छिद्र खुला न रहे, यदि खुला रहेगा तो स्वर ठीक और शुद्ध प्राप्त नहीं होंगे।

दाहिने हाथ से निकलनेवाले स्वरों की जानकारी के पश्चात् बाएँ हाथ की दूसरी उँगली उठाने से हमें ऋषभ, तीसरी आधी उँगली उठाने (खोलने) से शुद्ध मध्यम एवं पूरी उँगली उठाने से तीव्र मध्यम तथा सारे छिद्रों को बन्द करने से मध्य-सप्तक का पंचम स्वर प्राप्त होगा। इसके अनन्तर दाहिने हाथ की पहली उँगली उठाने से हमें मध्य-सप्तक का धैवत, दूसरी उँगली उठाने से

शुद्ध निषाद और तीसरी उठाने से मध्यम षड्ज के लिए ली जाने वाली फूँक से दूनी फूँक मारने से हमें तार-षड्ज का स्वर प्राप्त होगा। यहाँ यह बात विशेष ध्यान देने योग्य है कि षड्ज से लेकर मध्यम तक एक ही जैसी फूँक रखनी चाहिए। इसके अनन्तर पंचम और तार-षड्ज तक के स्वरों के लिए फूँक उत्तरोत्तर जोर की होती जाएगी। इसी अनुक्रम से अवरोह पर भी ध्यान रखना चाहिए। स्वरों के आरोह में अंतिम षड्ज तार-सप्तक का 'सां' होगा। अवरोह करते समय एक फूँक षड्ज को बजाकर दाहिने हाथ की तीसरी उँगली रखने से निषाद और दूसरी उँगली रखने से धैवत, तीसरी उँगली रखने से पंचम तथा सारी उँगलियों को उठा लेने से तीव्र मध्यम तथा ऊपर से बाएँ हाथ की पहली उँगली से शुद्ध गांधार, दूसरी से शुद्ध ऋषभ, तीसरी से मध्य-षड्ज स्वर उपलब्ध होंगे।

स्वरों की उपलब्धि के बाद सप्तक निकालने की विधि का विशेष ढंग देने की आवश्यकता इसी लिए उपस्थित होती है कि छह ही छिद्रों पर तीनों सप्तकों की प्राप्ति एक आश्चर्य की बात दिखलाई देती है, परन्तु अभ्यासक्रम का एवं फूँक के प्रकार का एक ऐसा विधान गुणीजनों एवं सिद्ध कलाकारों ने अपने अभ्यास-कौशल से खोज निकाला है। उसी साधनक्रम को हम नीचे की पंक्तियों में दे रहे हैं, ताकि प्रारंभिक साधक लाभान्वित हो सकें।

यदि सारे छिद्रों को ढककर धीरे-से फूँक मारी जाए तो यहाँ मंद्र-सप्तक के पंचम की प्राप्ति होगी। इसके अनन्तर दाहिने हाथ की दूसरी उँगली उठाने से मंद्र निषाद, तीसरी उँगली उठाने से मध्य-सप्तक का षड्ज प्राप्त हो जाता है। अच्छे कलाकार मन्द्र-सप्तक में और अधिक स्वरों को प्राप्त करने के लिए दाहिने हाथ की अंतिम उँगली के पास एक और छिद्र कर देते हैं, इसमें वे तीव्र मध्यम और शुद्ध मध्यम की प्राप्ति कर लेते हैं। हमारी सम्मति से इस छिद्र का स्वर तीव्र मध्यम देनेवाला बनाया जाना चाहिए, जिससे तार-सप्तक और अतितार-सप्तक के स्वरों के निकाल पाने में सहायता हो सकती है। यदि शुद्ध मध्यम का यह स्वर माना जाए तो तार-सप्तक और अतितार-सप्तक के स्वरों में

बेसुरापन दीख पड़ेगा। इस प्रक्रिया में मंद्र पंचम से लेकर तार-षड्ज तक स्वरों को प्राप्त कर लेने के पश्चात् अति तार-सप्तक के स्वरों को उपलब्ध करने की क्रिया जाननी आवश्यक होगी।

अति तार-सप्तक के स्वरों को प्राप्त करने के लिए उँगलियों की स्थिति बदलनी पड़ती है। अति तार-सप्तक में तार-षड्ज से लेकर तार-पंचम तक उपलब्ध करने के लिए पहला ही ढंग अपनाना पड़ेगा; किंतु धैवत, निषाद और अति तार-षड्ज प्राप्त करने के लिए उँगलियों के क्रम को बदलकर दाहिने हाथ की पहली उँगली और बाएँ हाथ की पहली उँगली उठाने से तार-सप्तक का धैवत तथा दाहिने हाथ की दूसरी उँगली और बाएँ हाथ की दूसरी उँगली उठाने से तार-सप्तक का निषाद प्राप्त होगा। अति तार-सप्तक के षड्ज को प्राप्त करने के लिए दाहिने हाथ की तीसरी उँगली उठा लेने से यह स्वर प्राप्य होगा। यह बात ध्यान देने योग्य है कि मध्य-षड्ज से दुगुनी ऊँची फूँक तार-षड्ज की होगी तथा तार-षड्ज से लेकर शुद्ध एवं तीव्र मध्यम तक यही फूँक की मात्रा या क्रम रहेगा। इसके अनन्तर तार-पंचम से लेकर अतितार-षड्ज तक के लिए तार-षड्ज से दूनी फूँक देनी चाहिए, यही क्रम अवरोह करते समय भी ध्यान में रखना चाहिए। इस प्रकार तीनों सप्तकों को सुलभता से प्राप्त कर साधक कुशलता से सभी संभव गायकी की अवतारणा में सिद्ध हो सकते हैं।

बाँसुरी में स्वरोत्पत्ति की विधि

मध्य-सा बजाने के लिए दाहिने हाथ की तीनों उँगलियाँ उठी रहेंगी तथा बाएँ हाथ की तीनों उँगलियाँ रखी रहेंगी। टेकने के लिए दाहिने हाथ की कनिष्ठका उँगली रखी रहेगी। इस प्रकार हमें मध्य-सा की प्राप्ति होगी।

दूसरी विधि

कुछ बाँसुरी-साधक दाहिने हाथ की कनिष्ठका की बाद वाली अनामिका उँगली एवं कनिष्ठका भी रखते हैं। इससे बाँसुरी की पकड़ और भी सुन्दर हो जाती है।

ऋषभ (रे) स्वर-प्राप्ति के लिए बाएँ हाथ की कनिष्ठका तो उठी ही रहती है। ऋषभ के लिए हमें अनामिका उँगली उठाने से ऋषभ प्राप्त होगा।

गांधार (गा) के लिए बाएँ हाथ की ही मध्यमा उँगली यानी दूसरी उँगली उठाने से हमें गांधार की प्राप्ति होगी।

शुद्ध मध्यम (म) के लिए तर्जनी उँगली को ही आधा खोलने से हमें शुद्ध मध्यम की प्राप्ति होगी। और तीव्र मध्यम की प्राप्ति के लिए तर्जनी को पूरा उठाने से तीव्र मध्यम प्राप्त होगा।

पंचम (पा) को प्राप्त करने के लिए तीनों उँगली दाहिने हाथ की एवं बाएँ हाथ की तीनों उँगली बन्द कर बजाने से (यानी छह उँगली बन्द कर बजाने से) हमें पंचम की प्राप्ति होगी। इसमें दोनों हाथ की कनिष्ठका उँगली उठी रहेगी। कुछ बाँसुरी-वादक रखे भी रहते हैं। हमें धैवत (ध) की प्राप्ति के लिए दाहिने हाथ की कनिष्ठका एवं अनामिका उँगली उठाने से धैवत की प्राप्ति होगी। शेष दाहिने हाथ की दो उँगली, बाएँ हाथ की तीन उँगली बन्द रहेंगी। निषाद (नि) के लिए कनिष्ठका, मध्यमा एवं अनामिका (बाएँ हाथ की) उँगली उठाने से निषाद स्वर की प्राप्ति होगी।

इसी तरह तार-सप्तक के षड्ज की प्राप्ति हेतु बाएँ हाथ की तर्जनी उँगली उठाने से एवं फूँक तेज मारने से षड्ज प्राप्त होगा। इसी प्रकार तार-सप्तक के स से पंचम तक यही क्रिया रहेगी। लेकिन फूँक तेज करनी पड़ेगी, किंतु धैवत (तार-सप्तक), निषाद (तार-सप्तक) एवं अतितार सप्तक का ऋषभ बजाने के लिए उँगलियों को बदलना पड़ता है। इसपर दूसरे भाग में प्रकाश डाला जाएगा। यह तो शुद्ध स्वरों की उत्पत्ति - संबंधी तथ्य था। अब कोमल स्वरों के लिए जैसे ऊपर बताया गया है, षड्ज की प्राप्ति इसी प्रकार होगी। कोमल ऋषभ की प्राप्ति के लिए हमें बाएँ हाथ की षड्ज वाली उँगली अनामिका को आधा खोलने से कोमल ऋषभ की प्राप्ति होगी। इसी प्रकार बाएँ हाथ की मध्यमा उँगली को आधा खोलने से एवं अनामिका उँगली को पूरा उठा लेने से

कोमल गांधार की प्राप्ति होगी। शुद्ध मध्यम एवं तीव्र मध्यम हेतु ऊपर बताया जा चुका है। कोमल धैवत हमें ऊपर बताए हुए पंचम स्वर की विधि के अनुसार दाहिने हाथ की कनिष्ठका एवं अनामिका उँगली को आधा खोलने से प्राप्त होगा। इसी प्रकार कोमल निषाद के लिए कनिष्ठका अनामिका तो उठी ही रहेंगी, मध्यमा उँगली को आधा खोलने से हमें कोमल निषाद की प्राप्ति होगी। इस प्रकार से हमें बाँसुरी में बारहों स्वरों की प्राप्ति होगी। मन्द्र, मध्य एवं तार-सप्तक में यही क्रिया होगी। शुद्ध एवं कोमल स्वरों को पीछे भलीभाँति समझाया गया है, किंतु अति तार-सप्तक में कोमल स्वरों को बजाने के लिए उँगलियों का प्रयोग उठाने व रखने की क्रिया भिन्न है। मध्य-षड्ज से लेकर मध्यम तक (शुद्ध या तीव्र) एक जैसी फूँक रहेगी, किंतु पंचम, धैवत, निषाद एवं षड्ज के लिए थोड़ी-सी फूँक को तेज करना पड़ेगा; इसी प्रकार तार-सप्तक के लिए फूँक तेज होगी।

बाँसुरी में शुद्ध और कोमल स्वर

बाँसुरी पर शुद्ध और कोमल स्वरों के निकालने के दो प्रकार हैं। एक भारतीय, दूसरा अन्यान्य देशीय प्रकार। भारतीय प्रकार में सर्वप्रथम बाएँ हाथ की तीनों उँगलियों से छिद्रों को पूरी तरह ढँकना चाहिए, छिद्र खुला न रहे और अन्य स्वरोत्पादन क्रिया के लिए उन स्वर-छिद्रों से हवा न निकले। बाएँ हाथ की पहली उँगली को रखने से षड्ज और उसी उँगली को आधा खोलने से कोमल ऋषभ तथा पूरी उँगली खोलने से शुद्ध ऋषभ प्राप्त होगा। इसी प्रकार बाएँ हाथ की दूसरी उँगली को आधा खोलने से कोमल गांधार तथा पूरी उँगली को उठाने से शुद्ध गांधार प्राप्त होगा। इसी प्रकार बाएँ हाथ की तीसरी उँगली को आधा खोलने से शुद्ध मध्यम (कुछ गुणीजन शुद्ध मध्यम को कोमल मध्यम या उतरी हुई मध्यम भी कहा करते हैं) तथा पूरी उँगली उठाकर तीव्र मध्यम को प्राप्त करते हैं। सारे छिद्रों को ढककर फूँक देने से पंचम स्वर प्राप्त करते हैं। (याद रखना चाहिए कि षड्ज और पंचम अविकारी स्वर है, इनके शुद्ध या कोमल होने की कल्पना नहीं

करनी चाहिए) इसी प्रकार दाहिने हाथ की पहली उँगली को आधा खोलने से कोमल धैवत तथा पूरी उठा लेने से शुद्ध धैवत और दाहिने हाथ की दूसरी उँगली को आधी खोलने से कोमल निषाद तथा पूरी खोलने पर शुद्ध निषाद की प्राप्ति होगी। दाहिने हाथ की तीसरी उँगली के आधे या पूरे खोलने से भारतीय गायन या वादनोपयोगी कोई स्वर प्राप्त नहीं होगा, बल्कि कर्णाटकीय स्वर-व्यवस्था में इसका प्रयोग निषाद-प्राप्ति के लिए किया जाता है। भारतीय स्वर-व्यवस्था में तार-षड्ज की प्राप्ति इसी छिद्र पर करते हैं।

दूसरे ढंग में कुछ लोग उँगलियों की स्थिति बदलने से कोमल स्वरों की प्राप्ति करते हैं, किंतु उनके स्वरों की शुद्धता नहीं रह पाती। प्रायः देखा जाता है कि इस प्रकार स्वर प्राप्त करने में स्वरों में एक श्रुति का अन्तर रह जाता है, वे या तो अधिक हो जाएँगे या कम रह जाएँगे। अतः शुद्धता में संदेह रहता है। भारतीय स्वर-साधना में उँगलियों के आधे उठाने और पूरा उठा कर स्वर निकालने की प्रक्रिया में ही स्वरों की शुद्धता तथा बंदिशों के बजा पाने की सुविधा प्राप्त होती है।

बजाने के दूसरे प्रकार को भी हम यहाँ इसलिए दे रहे हैं कि साधक दोनों प्रकारों को जानकर उनके सरल ढंग की परख कर सकेंगे। दूसरे प्रकार में कोमल ऋषभ पहली ही रीति के अनुसार प्राप्त होगा। कोमल गांधार पहलो और तीसरी उँगलियों के छिद्रों पर वैसी ही रखी रहने पर निकलेंगे, केवल दूसरी उँगली उठा लेने से कोमल गांधार की प्राप्ति होगी। इस गांधार की प्राप्ति में श्रुति का अंतर बना रहता है। चतुर लोग इसे ठीक कर लेते हैं, किंतु प्रारंभिक शिक्षण में जब तक स्वरों की शुद्धता का ज्ञान परिपक्व नहीं हो पाता, स्वर के बेसुरेपन का अनुभव गुणीजनों को खटकता है जो विद्यार्थी के लिए हितकर नहीं हो पाता। इसी प्रकार शुद्ध मध्यम बनाने के लिए पहली और दूसरी उँगलियों के छिद्र तो बन्द रहेंगे और तीसरी उँगली पूरी खुली रहने से शुद्ध मध्यम (कोमल मध्यम) प्राप्त होगा। कोमल धैवत पहले प्रकार से ही प्राप्त होगा तथा कोमल निषाद के लिए दाहिने हाथ

की दूसरी उँगली पूरी उठा लेने से और शेष सब छिद्रों को पूरा बंद रखने से प्राप्त होगा। किंतु यह भी कोमल गांधार की तरह कुछ ऊँचा रहेगा। यहाँ भी चतुर गुणीजन फूँक के माध्यम से स्वर शुद्ध कर लेंगे, किंतु प्रारंभिक विद्यार्थी को शुद्ध स्वर प्राप्त करने का निर्णय नहीं हो पाएगा। तार-सप्तक एवं अतितार सप्तकों के कोमल स्वरों के निकालने की विधि अगले भाग में दी जाएगी। हम पहले कह चुके हैं कि दाहिने हाथ की दूसरी और तीसरी उँगलियाँ सदैव खुली रहेंगी, ये उँगलियाँ केवल पंचम बनाने के लिए ही प्रयोग में ली जाएँगी तथा दाहिने हाथ की पहली उँगली को कुछ समय अभ्यास के बाद प्रायः उठाए रखना चाहिए। क्यों कि इसका प्रयोग केवल बाँसुरी को सहारा देने में ही किया जाता है। पीछे दिए हुए चित्र से ऊपर दी हुई प्रक्रिया सरलता से समझ में आ सकेगी।

बाँसुरी में प्रत्येक छिद्र को स (षड्ज) मानकर बजाने से शुद्ध एवं कोमल स्वरों की प्राप्ति

ज्ञात होता है कि बाँसुरी-वादक अपने-अपने अभीष्ट स्वरों की बाँसुरियाँ अलग-अलग रखते थे तथा अवसर पड़ने पर उनका प्रयोग करते थे। किंतु ज्यों-ज्यों कला का विकास हुआ और बजाने की विधि में कलात्मक चतुरता का विकास हुआ, सिद्ध कला - साधकों ने एक ही बाँसुरी पर उसके छह छिद्रों पर ही उँगलियों के संचलन, छिद्रों के आवरण और फूँक की विधि से सम्भव गायकियों की एवं तंतकारियों की अवतारणा सिद्ध की है। यद्यपि यह कला सिद्ध कलाकारों के पास बैठने तथा गुरु–शिष्य के सीधे सम्पर्क से ही प्राप्त होती है, फिर भी हम उसके कुछ प्रारम्भिक संकेत यहाँ प्रसंगवश दे रहे हैं, जिससे विद्यार्थीजन इस कलात्मक विकास के लिए कुछ प्रेरणा पा सकें। यह पहले ही बताया जा चुका है कि उँगलियों के आधे और पूरा उठा लेने से कोमल, शुद्ध एवं तीव्र शुद्ध स्वरों की उपलब्धि होती है। अब प्रस्तुत विवेचन में हम प्रत्येक छिद्र से प्राप्त स्वरों को जब षड्ज

मानकर चलें तो तीनों सप्तकों की उपलब्धि कैसे होगी ? इसकी क्रिया का कुछ संकेत देते हैं। यद्यपि यह विषय कुछ कठिन प्रतीत होगा, किंतु कलात्मक विषय में मानव-मस्तिष्क ने आज कुछ असंभव नहीं रहने दिया है। साधना की महत्ता प्रत्येक असम्भव को सम्भव बनाती है। प्रारंभिक अभ्यास के लिए यह क्रिया उपयुक्त नहीं है। स्वर-ज्ञान के पक्के होने पर उँगलियों के निर्बाध संचालन के बाद ही इस कलात्मक विकसित चातुर्य के लिए प्रयत्न करना चाहिए। यह कलात्मक विकास किसी भी आर्केस्ट्रा (वृन्दवादन) या गायन-वादन में संगति कर पाने की क्षमता उत्पन्न करता है तथा हर सम्भव गायकी का अनुकरण तभी सम्भव हो पाता है।

सर्वप्रथम यदि हम मंद्र-पंचम को या मध्य-पंचम को अभीष्ट षड्ज मानकर बजाना प्रारंभ करें तो हमें सारे ही स्वर शुद्ध प्राप्त होंगे। इस क्रिया में कोमल स्वरों की उपलब्धि छिद्रों को आधा ढँकने पर हो सकेगी। मंद्र-पंचम से प्रारंभ करने पर मंद्र-सप्तक के स्वर उपलब्ध नहीं हो सकेंगे, वरन् शुद्ध-स्वरों के ही राग प्राप्त हो सकेंगे। दाहिने हाथ की पहली उँगली को उठाने पर मन्द्र-धैवत को षड्ज मानकर बजाने से हमें गांधार, मध्यम, निषाद कोमल स्वर प्राप्त होंगे। इस स्वर से प्रारंभ करने पर ग नि कोमल वाले रागों (यानी काफी ठाठ के रागों) की उपलब्धि हो सकेगी। इसी स्वर से तीन स्वर कोमल अनायास ही प्राप्त होंगे। दाहिने हाथ की दूसरी उँगली उठाने से हमें ग, ध, नि कोमल वाले राग (आसावरी-ठाठ के राग) प्राप्त होंगे। इस सहायता से हम मालकौंस, भैरवी, आसावरी सरलता से बजा सकेंगे। दाहिने हाथ की तीसरी उँगली उठाने से यानी बाँसुरी के मध्य-षड्ज स्वर से हमें तीव्र मध्यम ही प्राप्त होगा। स्वरों को कोमल बनाने के लिए हमें उँगलियों को आधा खोलना पड़ेगा। इस स्वर से तीव्र मध्यम वाले राग आसानी से बज सकेंगे। बाएँ हाथ की पहली उँगली उठाने से यानी ऋषभ को षड्ज मानकर चलने पर शुद्ध मध्यम और कोमल निषाद की सहज में ही प्राप्ति हो जाएगी। इस स्वर से शुद्ध मध्यम और कोमल निषाद वाले

राग सरलता से बजाए जा सकेंगे, जैसे—सारंग, मेघमल्हार इत्यादि। यहाँ पर औडव, षाडव और सम्पूर्ण, र्वजित आदि स्वरों के कारण कोई अड़चन नहीं उपस्थित होती।

बाएँ हाथ की दूसरी उँगली उठाने से यानी गांधारवाले छिद्र को षड्ज मानने पर गांधार, धैवत, निषाद कोमल एवं शुद्ध मध्यम स्वरों की प्राप्ति होती है। इस छिद्र (स्वर) से ग, ध, नि कोमल वाले राग सरलता से बज सकेंगे।

बाएँ हाथ की अंतिम उँगली उठाने से कोमल ऋषभ, कोमल गांधार तथा कोमल निषाद तथा दोनों मध्यम स्वरों की प्राप्ति से दोनों मध्यम, पंचमरहित आदि स्वर प्राप्त होंगे।

इस प्रकार बजाने में जैसे-जैसे स्वयं वादकों को कलात्मक अनुभूतियाँ होंगी, चतुर वादक अन्यान्य सरलताओं का अनुभव करेंगे और कलात्मक वृद्धि होगी। किंतु हाथ की सावधानी, फूँक की विशेषता तथा राग और अभीष्ट स्वरों की यथार्थता जिस कोटि के ज्ञान की अपेक्षा करती है, वह कला - साधना में सतत् दत्तचित रहने पर ही निर्भर है।

बाँसुरी-वादन में तत्कार का प्रयोग

बाँसुरी-वादन में फूँक मारने की क्रिया के बीच एक विशेष क्रिया का नाम तत्कार का प्रयोग है। स्वरोत्पादन की मधुर क्रिया तत्कार पर निर्भर करती है। गीतों के शब्दों और गतों के विरामों के प्रकट करने के समय गुणीजन बाँसुरी-वादन में तत्कार के प्रयोग से आड़ी बाँसुरी में इस क्रिया को करते हैं। स्वरालाप में तत्कार का प्रयोग किस स्थान पर या किस मर्यादा तक कुशल कलाकार करते हैं, यह उनकी चतुरता पर निर्भर है।

सीधी बाँसुरी में जीभ द्वारा लगातार तत्कार के प्रयोग से ही स्वरोत्पादन-क्रिया सम्भव होती है। इस बाँसुरी में जीभ से तुत-तुत की तत्कार देकर बजाने से ही स्पष्ट और सुन्दर स्वर प्राप्त हो पाते हैं। प्रारंभिक विद्यार्थी स्वराभ्यास इसी सीधी बाँसुरी पर करते हैं। इसलिए तत्कार निकालने और उनका सीधी

तथा आड़ी बाँसुरी पर कैसे प्रयोग करना चाहिए, यह समझ लेना चाहिए। अनुभव में यह आया है कि आड़ी बाँसुरी पर सभी संभव तत्कार की अवतारणा इतनी सरल नहीं होती, जितनी सीधी बाँसुरी पर।

बाँसुरी की उत्पत्ति एवं वाद्यों के वर्गीकरण में उसका स्थान

'ललितं मधुरं स्निग्धं वेणोरेवाश्रितं वाद्यम्'।

संगीत के शास्त्रीय ग्रन्थों में वाद्यों को चार श्रेणियों में वर्गीकृत किए जाने का वर्णन आता है। भरत मुनि ने 'नाट्य शास्त्र' में चतुर्विध वाद्यों के नाम इस प्रकार कहे हैं :—

ततं चेवावनद्धं च घनं सुषिर मेव च।
चतुर्विधं तु विज्ञेयमातोद्यं लक्षणान्वितम्॥
ततं तंत्रीकृतं ज्ञेयमवनद्धं तु पौष्करम्।
घनं तालस्तु विज्ञेयः सुषिरो वंश एव च॥

'संगीत दामोदर' में भी बजाए जानेवाले वाद्य निम्नलिखित उदाहरणों से चार प्रकार के माने गए हैं :—

ततः सुषिरमानद्धं घनमित्थं चतुर्विधम्।
ततः तंत्रीगतं वाद्यं वंशीद्य सुषिरं तथा॥

तार या ताँतों के आघात करने से तत् और वितत वाद्य, फूँक मारकर या हवा भरकर ध्वनि उत्पन्न किए जानेवाले वाद्य सुषिर, खाल से मढ़े हुए वाद्य अवनद्ध तथा धातुओं से बने उपकरणों से घन-वाद्यों की रचना की जाती है। इन सभी वाद्यों का सामूहिक वादन नाटक में आतोद्य-वादन या कुतुप-वादन के नाम से जाना जाता था, जो आज भी रूपांतर से वृन्द-वादन (आर्केस्ट्रा) के रूप में प्रतिष्ठित है।

भारतीय समाज के सभी मांगलिक उत्सवों, त्यौहारों, पूजा, पाठ, यज्ञ एवं धार्मिक समारोहों पर इन चतुर्विध वाद्यों के बजाये जाने का विधान शास्त्रों में वर्णित है। सभी मंगलकामना से

आयोजित पूजा-अर्चना के कार्यों में सबसे पहले शंखध्वनि करने का शास्त्रीय विधान है। समस्त दिशाओं के अमंगल दूर करने, विपरीत भाव पानेवाले शत्रुओं, असुरों आदि को दूर करने के लिए प्रारम्भ में शंखनाद करने का शास्त्रीय विधान परंपरा से हमारे समाज में प्रतिष्ठित है। यहाँ तक कि युद्ध के वाद्यों में भी शंख-वीररस का उत्पादक माना जाता है। सैनिकों को युद्ध के लिए सन्नद्ध करने एवं उत्साहपूर्वक युद्ध के लिए चलने का संकेत करना तथा विपरीत शत्रु को युद्ध के लिए आमंत्रित करने का घोष शंख-नाद से किया जाता था। यह महाभारत के अनेक प्रसंगों से प्रमाणित है। श्रीमद्भगवद्गीता में अनेक महारथियों द्वारा अपने-अपने शंखों के बजाने का वर्णन आता है। शंख सुषिर वाद्य का एक विशिष्ट उपकरण है। युद्धों में तुरई (तुरही), भेरी आदि भी वीररसोत्पादक वाद्य बजाए जाते रहे हैं, जो सुषिर वाद्यवर्ग के ही अंग हैं।

सुषिर वाद्य-वर्ग के अनेक वाद्यों में से बाँसुरी या मुरली अपना एक अद्भुत ही स्थान रखती है। वास्तव में यदि कहा जाए कि भारतीय वाद्यों में सबसे प्राचीन और परम प्राकृतिक वाद्य क्या है? तो निःसंकोच कहा जा सकता है कि शंख समुद्र से प्राप्त होता है तथा बाँस जंगलों में स्वतः ही उगता है, जिनका किसी विशेष प्रकार के बुद्धि-चातुर्य बिना ही उपयोग किया जा सकता है। बाँसों के झुरमुटों में प्रविष्ट हवा उनके रन्ध्रों में से प्रतिध्वनि करती हुई अनेक मधुर ध्वनियाँ उत्पन्न करती थी जो किसी के भी स्वागत का मंगल गान होती थीं, ऐसा काव्यों में वर्णन मिलता है। दूर जंगलों में गाय या पशुओं को चराते हुए ग्वाले बाँस के टुकड़ों में हवा फूँककर अपने मन का बहलाव तथा साथी ग्वालों का मनो-विनोद अपने-अपने झुण्ड के रूप में ही करते थे, जो परम प्राकृतिक एवं वाद्य-सृष्टि का परम आद्य स्वरूप था, ऐसा वर्णन भारतीय साहित्य एवं अँग्रेजी साहित्य में भी प्रायः पाया जाता है।

बाँसुरी का नाम सुनते ही भगवान् श्रीकृष्ण का स्मरण होने लगता है। वे बाँसुरी बजाते थे, गायों को चराते थे। वंशीधर, मुरलीमनोहर, मुरलीधर, वेणुगोपाल आदि-आदि नामों से वे याद

किए जाते हैं। इस बाँस की बाँसुरी में वे ऐसा मोहनी मन्त्र फूँकते थे, जिससे नर-नारी, पशु-पक्षी ही क्या, यमुना की धार भी मंत्र-मुग्ध हो स्थिर हो जाती थी। इस बाँसुरी के महत्त्व को श्रीकृष्ण ने अपने अलौकिक व्यक्तित्त्व के साथ अत्यन्त गौरवपूर्ण बना दिया।

उपर्युक्त प्रमाणों से सिद्ध होता है कि यह वाद्य अत्यन्त प्राचीन है, और इसकी वादन-क्रिया बड़ी सरल तथा मनमोहक है। वाद्य अवश्य ही प्राचीन है, परंतु इसकी वादन-क्रिया का प्रारंभ एवं उसमें संभव गायकियों का अवतरण कब से हुआ, इसका इतिहास प्रायः उपलब्ध नहीं होता। गुणीजनों के अनेकानेक विचार अपना-अपना अलग-अलग मत प्रस्तुत करते हैं। कुछ लोगों का मत है कि जंगलों में भ्रमरों के गूँजने की ध्वनि को प्रतिध्वनित करते हुए सछिद्र बाँसों के झुण्ड से यह विचार पाया गया कि बाँस में मधुर प्रतिध्वनि करने की प्राकृतिक शक्ति है। उसे मनुष्य यत्नपूर्वक अपनी सफल संगीतात्मक साधना का आधार बना सकता है। प्राचीनतम प्रमाणों से जाना जाता है कि बाँसुरी सीधी नहीं, वरन् आड़ी होठों पर रखकर बजाई जाती थी। श्रीकृष्ण के प्राप्त प्राचीनतम चित्रों में भी आड़ी बाँसुरी ही पाई जाती है।

'संगीत-रत्नाकर' ने मुरली और बाँसुरी के अनेक रूपान्तरों के वर्णन किए हैं, जिनकी चर्चा हम आगे करेंगे। अन्यत्र ग्रन्थों में भी कहा गया है :—

"एष त्रिधा भवेद्वेणुः मुरली वांशिकेत्यपि"।

वेणु, मुरली तथा वंशिका नाम ग्रन्थों में प्राप्त होते हैं। इनका प्रमाण भी कहा गया है :—

"परिकाख्यो भवेद्वेणुर्द्वादशांगुलदैर्घ्यभाक्।
स्थौल्येंगुष्ठामितः षड्भिरन्ध्रैः (स च) समन्वित ॥"

वेणु लम्बाई में बारह अंगुल, मोटाई में एक अंगुल तथा छह छिद्रों से युक्त होती है। इसे परिक भी कहते हैं। मुरली का लक्षण कहा है :—

हस्तद्वयमिता यामा मुखरन्ध्रसमन्विता ।
चतुःस्वरच्छिद्रयुता मुरली चारुवादिनी ॥

चारुवादिनी मुरली लंबाई में दो हाथ, मुख में छिद्रवाली चार छिद्रों तथा स्वरों से युक्त मनोहर स्वरों को उत्पन्न करनेवाली मुरली कहलाती है।

वंशिका :

अर्द्धांगुलान्तरोन्मानं तारादिविवराष्टकम् ।
ततः सार्द्धांगुलाद्यत्र मुखरन्ध्रं तथांगुलम् ॥
शिरोवेदांगुलं पुच्छं त्र्यंगुलं सा तु वंशिका ।
नवरान्ध्रा स्मृता सप्तदशांगुलमिता बुधैः ॥
दशांगुलान्तरा स्याच्चेत् सा तारा मुखरन्ध्रयोः ।
महानंदेति विख्याता तथा सम्मोहिनीति च ॥
भवत्सूर्यान्तरा सा चेतन्तदाकर्षिणी मता ।
आनन्दिनी तथा वंशी भवेदिन्द्रान्तरा यदि ॥
गोपानां वल्लभा सेयं वंशुलीति च विश्रुता ।
क्रमान्मणिमयी हैमी वैषतीति त्रिधा च सा ॥

जिसके बीच में आधा अंगुल छोड़कर तारादि आठ छिद्र होते हैं तथा जिनके पश्चात् डेढ़ अंगुल की दूरी पर अंगुलपरिणाम वाला मुखरध्र होता है तथा जिसमें चार अंगुल का मस्तक तथा तीन अंगुल की पुच्छ होती है, उसे वंशिका कहते हैं। जिस बाँसुरी में नौ छिद्र होते हैं और १६ अँगुल के परिणाम की होती है व जिसमें तारा तथा मुखरंध्र के बीच की दूरी दस अँगुल होती है, उसे महानन्द भी कहते हैं, उसे सम्मोहिनी वंशी भी कहते हैं। तारा और मुखरंध्र में बारह अंगुल की दूरी जिसमें हो, वह आर्कांषिणी और चौदह अंगुल की दूरीवाली आनन्दिनी कहलाती है।

ये वेणुएँ-वेणु, मुरली तथा वंशिका प्रायः मणिमयी सुवर्णनी धातुनिर्मित या बाँस की होती हैं।

बाँसुरी और उसके वादन-क्रम या उपभोग का प्रारंभिक रूप कुछ भी रहा हो, किंतु यह स्पष्ट है कि जैसे-जैसे मनुष्य का ज्ञान बढ़ता गया है, उसके जीवन का व्यवहार क्षेत्र भी बढ़ता गया है। उसने अपने साधारण-से-साधारण ज्ञान को बढ़ाया है और उसमें सुन्दरता की वृद्धि की है तथा कलात्मक विकास किया है। इसी कारण हमें आज के व्यवहार में आते हुए अनेकविध वाद्य दिखाई पड़ रहे हैं। विभिन्न देशों की सांस्कृतिक परम्पराएँ भी इन अनेकविध वाद्यों के अपने-अपने प्रयोग, उनकी वादन-शैली एवं उनमें विविध परिवर्तन, परिवर्धन एवं विकास में सहायक होती हैं। इसी कारण पश्चिमी देशों में बजनेवाले आर्केस्ट्रा या बैंडों में उनकी आवश्यकताओं के वाद्य देखने में आते हैं। भारत के अनेक प्रांतों में भी वाद्यों के अनेक रूप, उनके अनेक प्रयोग देखने में आते हैं। आड़ी बाँसुरी, सीधी बाँसुरी, अलगोजा, क्लारनेट, तुरई (तुरही) शहनाई, मुरली, त्रिपुरी बाँसुरी, कर्नाटकीय बाँसुरी आदि-आदि। इनमें सभी के बजाने और प्रयोग करने के प्रकार भी भिन्न हैं।

बाँसुरी-वादन के इन रूपों को सूक्ष्म और स्थूल रूप में जान लेने मात्र से संतोष नहीं होता है। यूँ प्रायः सभी मांगलिक कार्यों में, सभा - आयोजनों में उत्सव - आरम्भ शहनाई, शंख और घंटा-वादन से ही शुभ माना जाता है, जो मंगल दायक, निर्विघ्नता का सूचक और सहयोगियों के आमन्त्रण का सूचक होता है। किंतु प्रायः समाज में उपेक्षित रहने के कारण अपना निजी इतिहास, अपना निजी वादन-क्रम और उसकी कला के आधार का साहित्य एकत्रित-व्यवस्थित रख पाने में असमर्थ रहा है। प्रायः समझा जाता है कि वाद्य गीत के अनुगत एवं सहायक होते हैं। गीत-गायन ही मुख्य है हम भी यही मानते हैं, किन्तु प्रत्येक वाद्य अपने-आपमें सहायक होते हुए भी स्वतन्त्र है और उसकी निर्माणविधि, वादन-प्रक्रिया और उपयोग भी स्वतन्त्र है। इस कारण सहायक वाद्य के रूप में अभी तक गीतानुगवाद्यों की तरह बाँसुरी-वादन का साहित्य भी गीतानुग ही अनुकरण में आता रहा है। इस वाद्य के स्वतंत्र साहित्य और स्वतंत्र कला का रूप अध्ययन एवं शोध का विषय है, जिसपर जैसे-जैसे जिज्ञासुओं का

प्रयत्न बढ़ेगा, वाद्य की प्रतिष्ठा स्थापित होगी और गुणीजनों के आकर्षण का विषय होगी ।

बाँसुरी के प्रकार

बाँसुरी किसी भी वस्तु की बनाई जा सकती है और बनाई भी गई है एवं बन भी रही है । पीतल, अलमुनियम, लकड़ी, सिल्वर, गोल्ड (स्वर्ण) की बाँसुरियाँ अधिकतर विदेशों में देखने एवं सुनने को मिलती हैं । यह बाँसुरी चाबीदार होती है (की फ्लूट) । अधिकतर इसे आर्केस्ट्रा में ही बजाने का प्रचलन है । लकड़ी की बाँसुरी का प्रचार पंजाब (स्यालकोट) में रहा, जो अब पाकिस्तान में है। आबनूस लकड़ी की भी बाँसुरी बनाई जाती थी, जो अधिकतर बैंडों में बजाते थे, किंतु अब इसका प्रचार बहुत कम है । रोम के म्यूजियम में हड्डी एवं मिट्टी की बाँसुरी लोगों ने देखी हैं। इसके अतिरिक्त भी कुछ विशेष प्रकार के शंख में छिद्र करके बाँसुरी की भाँति बजाने का प्रचलन था। यानी किसी भी वस्तु की अलग-अलग सुरों की बाँसुरी बनाई जा सकती है। किंतु मेरे विचार से व बाँसुरी-वादकों के विचार से सिर्फ बाँस की बाँसुरी को ही अति उत्तम समझनी चाहिए । बाँस की बाँसुरी में एक विशेष मिठास रहती है। क्योंकि बाँस स्वयं ही मीठा होता है, जैसा कि इसके पहले बाँस की उत्पत्ति पर भौतिक एवं अध्यात्मवादी विचार प्रस्तुत किया जा चुका है। अधिकतर बैंडों में बजनेवाली बाँसुरियाँ प्राय: पीतल, स्टील एवं लकड़ी की ही होती हैं। बाँस की बाँसुरी का बैंडों में बहुत कम प्रयोग करते हैं। इस पुस्तक में चार-पाँच प्रकार की बाँसुरी का संक्षिप्त परिचय व बजाने का ढंग चित्रों द्वारा प्रदर्शित किया गया है। इसको विद्यार्थीगण भलीभाँति देख-समझकर अध्ययन करके सरलतापूर्वक वंशी - वादन कर सकते हैं । प्रारंभिक विद्यार्थियों के लिए यह अति आवश्यक है कि प्रत्येक बाँसुरी के बारे में जानकारी करें । प्रायः यह देखा गया है कि नौसिखिया बाँसुरी-वादक जोकि आधुनिक मन्द्र पंचम है वहीं से षड्ज मानकर बजाते हैं । ऐसा करने से मन्द्र-सप्तक के स्वर नहीं प्राप्त होते। जबकि शास्त्रीय

संगीत के लिए तीनों सप्तक में गायन-वादन करना अति आवश्यक है।

'भरत-नाट्य-शास्त्र' वाद्य-अध्याय में १४ प्रकार की बाँसुरियों का वर्णन किया गया है। किंतु वर्तमान काल में चार ही प्रकार की बाँसुरी देखने को मिलती हैं, शेष बाँसुरियों का प्रयोग अब नहीं होता है। इसका मुख्य कारण यह है कि उन १४ प्रकार की बाँसुरियों का मुख्यरंध्र एवं स्वररंध्र आज की उन बाँसुरियों से भिन्न है। आज की वादनशैली एवं भरत नाट्य-काल की वादन-शैली में भी काफी अंतर है। यहाँ पर अभी हम आधुनिक काल की बाँसुरियों का वर्णन करेंगे, शेष का वर्णन बाद में करेंगे।

आड़ी बाँसुरी का संक्षिप्त परिचय

बाँसुरी का यह अत्यन्त प्राचीन रूप है। यह प्रायः छह छेदों की देखने में आती है। यद्यपि बजाने में कठिन होती है, किंतु कलात्मक समस्त साधना इसी बाँसुरी पर सम्भव हो पाती है। इस बाँसुरी में जीभ नहीं होती। बाँसुरी में एक छिद्र ऊपर होता है, जिसे मुख्य रन्ध्र कहते हैं। छह छिद्र नीचे होते हैं, जिन्हें स्वरन्ध्र कहते हैं। इस बाँसुरी में मुख्य रन्ध्र के भीतर बाईं ओर लगभग एक इंच छोड़कर एक कार्क लगा होता है जोकि बाईं ओर हवा जाने से रोकता है। यह कार्क स्वरों को ऊँचा-नीचा करने में भी उपयोगी हो सकता है। आजकल बड़े-बड़े कलाकार और साधक इसी आड़ी बाँसुरी का प्रयोग करते हैं, जिसमें सात स्वरों के लिए सात छिद्र रखते हैं। सातवाँ छिद्र दाहिनी ओर कनिष्ठ अँगुलियों के पास कर लेते हैं, इससे मन्द्र-सप्तक तक स्वर-संचार कर पाने की सुविधा हो जाती है। यह छिद्र सप्तक के मन्द्र-मध्यम को प्रकट करता है। कुछ वादक शुद्ध मध्यम की अपेक्षा तीव्र मध्यम का छिद्र बनाते हैं, इससे तार-सप्तक के स्वर ठीक और सही निकल पाते हैं, क्योंकि शुद्ध मध्यम वाले छिद्र पर तार-सप्तक के स्वरों के निकालते समय स्वरों का ठीक-ठीक निकाल पाना सम्भव नहीं हो पाता। कुछ कलाकार अँगूठे के नीचे एक छिद्र बनाते हैं, जो मीड़ आदि के निकालने में बहुत सहायक होता है। परन्तु इस छिद्र का प्रयोग अब प्रायः बन्द हो चला है। कुछ समय पूर्व इसका प्रचार अधिक था।

आड़ी बाँसुरी फूँक या फूँक के तत्कार से बजाई जाती है। आड़ी बाँसुरी में फूँक से पहले स्वर की स्थापना की जाती है। जबकि सीधी बाँसुरी में इस प्रकार स्वर-स्थापना की कोई आवश्यकता नहीं होती। आड़ी बाँसुरी में स्वर - स्थान के बाद ही बजाना संभव हो पाता है, यही इस बाँसुरी की विशेषता है।

सीधी बाँसुरी का संक्षिप्त परिचय

बाँसुरी शब्द कहने से स्पष्टया यह ज्ञात होता है कि यह बाँसुरी बाँस के टुकड़ों पर बनती है। सीधी बाँसुरी प्रायः छह से लेकर आठ छेदों की बनाई जाती थी, किंतु आजकल प्रचार में केवल छह छिद्रोंवाली ही बनाई जाती है। इस बाँसुरी में फूँक भरने की जगह जीभ के आकार की काटकर बनाई जाती है। आड़ी बाँसुरी की तरह छिद्र नहीं होते। बाँस की मोटाई के अनुसार ही यह जीभ बनाई जाती है। इस जीभ की उपयोगिता है कि बाँसुरी-वादन में जो तत्कार विशेष ध्वनियाँ हैं, उनको इसी जीभ पर निकाल पाना संभव है, जब कि आड़ी बाँसुरी में काफी कठिनाई होती है।

(त्रिपुरा) या टेपारा बाँसुरी का संक्षिप्त परिचय

इस बाँसुरी का प्रचार प्रायः त्रिपुरा (आसाम) और बंगाल में अधिक था। इसमें भी आड़ी बाँसुरी की भाँति फूँक द्वारा स्वर-स्थापना की जाती है। इस बाँसुरी में कुल आठ छिद्र होते हैं। सात छिद्र ऊपर की ओर तथा एक उँगूठे के नीचे होता है। इसमें फूँक मारने का छिद्र बाँस की मोटाई के अनुसार रखा जाता है। इसमें आड़ी की तरह कार्क तथा जीभ नहीं होती, परन्तु अन्य बाँसुरी की अपेक्षा कोमल निषाद तथा शुद्ध मध्यम के छिद्र अलग-अलग होते हैं, जो इसकी विशेषता है। फूँक द्वारा तत्कार से जो ध्वनि निकलती है, वह सुनने में मधुर लगती है। किंतु दोनों का तरीका भी भिन्न है और स्वर-माधुर्य भी भिन्न है। चाहे आड़ी बाँसुरी बजाई जाए या त्रिपुरा बाँसुरी, गुणीजन इस बाँसुरी के स्वर-मात्र से ही इसे पहचान लेते हैं कि कलाकार अमुक बाँसुरी बजा रहा है।

कर्नाटकीय बाँसुरी का संक्षिप्त परिचय

बाँसुरी का यह प्रकार मद्रास, मैसूर तथा आन्ध्रप्रदेश में बहुत पाया जाता है। आठ और नौ छिद्रोंवाली बाँसुरी भी पाई जाती है, किंतु प्रायः आठ छिद्रोंवाली बाँसुरी का ही अधिक प्रचार है। यह बाँसुरी अन्य बाँसुरियों की अपेक्षा आकार में छोटी तथा इसके छिद्र अधिक पास-पास होते हैं, यह उत्तर-भारतीय बाँसुरी से भिन्न है। यह आड़ी बाँसुरी की तरह ही बजाई जाती है। इन बाँसुरियों में मुखरन्ध्र ऐसे स्थान पर बनाते हैं जहाँ बाँस की गाँठ होती है। कर्नाटकीय पद्धति के गायन या वादन के प्रकारों में संगीत या स्वतंत्र-वादन में गीत के शब्दों का उच्चारण फूँक एवं तत्कार से करते हैं। वास्तव में कर्नाटकीय बाँसुरी अपने आपमें निजी विशेषताओं के कारण अन्यान्य बाँसुरियों की अपेक्षा अपना विशेष महत्त्व रखती है।

बाँसुरी में नए प्रयोग

विज्ञान की प्रगति ने मानव-बुद्धि में एक नई स्फूर्ति पैदा की है। वह साधारण-से-साधारण वस्तु में विशिष्ट गुणों की कल्पना को साकार करने की चेष्टा में लगा, ताकि कम-से-कम समय और शक्ति-योग से अधिकतम लाभ, आनंद और सौख्य प्राप्त हो। इस विचार से प्रायः सभी विद्याओं और कलाओं के क्षेत्र में प्रगति का प्रेरक यही मंत्र रहा है। भारतीय वाद्यों के अनेक रूप, अनेक प्रकार एवं प्रयोग—इस दृष्टिकोण से अनेक विकसित रूपों का यह जन्मदाता हुआ। बाँसुरियों के अनेक प्रकार प्रयोग में आते थे। उनमें परिष्कार-परिवर्धन हुए। छोटी बाँसुरियों में राग-विस्तार की अधिक क्षमता न हो पाने का अनुभव हुआ, इसलिए बाँस के बड़े पोर के टुकड़ों में यथानुकूल छिद्रों की कल्पना आई। परिणाम-स्वरूप आज के सिद्ध वादक बड़ी बाँसुरियों पर ही आज की गायकियों की समस्त संभव कलात्मकताएँ दिखलाते दीख पड़ते हैं। बाँसुरी-वादकों में वर्तमान युग के युग-निर्माता सिद्ध कलाकार स्व० पन्नालाल घोष थे। उन्होंने बाँसुरी के आकार, लंबाई, छिद्रों के स्थान, उनकी आपसी दूरी, उनपर स्वरों के निकालने के प्रकार आदि का शास्त्रों में वर्णित प्रकार आदि के आधार पर अनेक

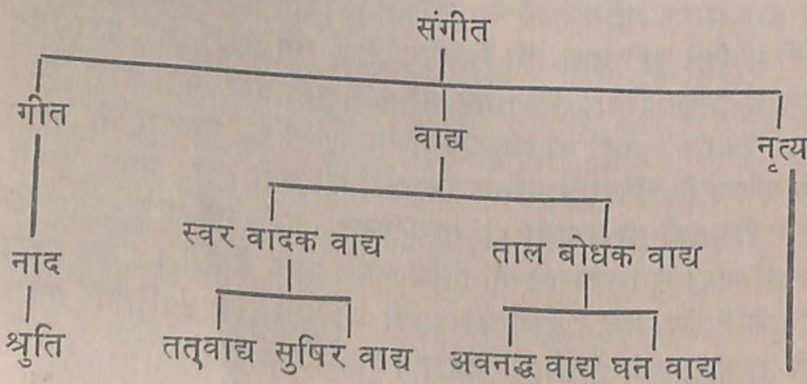
प्रयोगसिद्ध ढंग प्रशस्त किए। वादन-क्रम में नवीन प्रयोगों से सभी सम्भव गायकियों की साधना मानों उनके युग-निर्माता होने के विचार को सिद्ध करती है। स्व० पन्नालाल घोष ने वादन-क्रम में नई अनुभूतियाँ पाईं। बाँसुरियों के आकार, ढंग, छिद्रों की संख्या, उनपर उँगलियों के संचलन के प्रकार, स्वरों का निकालना, फूत्कार के प्रयोग आदि-आदि सभी विषयों में गंभीर विचार करते हुए नवीन प्रयोग किए। उदाहरणार्थ—पंचम स्वर से तार-सप्तक का ऋषभ निकालना तथा प, ध, नि, से सां, रें, गं रें सां निकाल पाना आज के युग की वादनशैली की विशेषता है। इसके अतिरिक्त अन्याय नवीन प्रयोग होते जा रहे हैं।

बजाने के दूसरे प्रकार को भी हम यहाँ इसलिए दे रहे हैं कि साधक दोनों प्रकारों को जानकर उनके सरल ढंग की परख कर सकेंगे। दूसरे प्रकार में कोमल ऋषभ पहली ही रीति के अनुसार प्राप्त होगा। कोमल गांधार पहली और तीसरी उँगलियों के छिद्रों पर वैसी ही रखी रहने पर निकलेगी। केवल दूसरी उँगली उठा लेने से कोमल गांधार की प्राप्ति होगी। इस गांधार की प्राप्ति में श्रुति का अंतर बना रहता है। चतुर लोग इसे ठीक कर लेते हैं, किंतु प्रारंभिक शिक्षण से जब तक स्वरों की शुद्धता का ज्ञान परिपक्व नहीं हो पाता, स्वर के बेसुरेपन का अनुभव गुणी-जनों को खटकता है, जो विद्यार्थी के लिए हितकर नहीं हो पाता। इसी प्रकार शुद्ध मध्यम बनाने के लिए पहली और दूसरी उँगलियों के छिद्र तो बंद रहेंगे और तीसरी उँगली पूरी खुली रहने से शुद्ध मध्यम (कोमल मध्यम) प्राप्त होगा। कोमल धैवत पहले प्रकार से ही प्राप्त होगा तथा कोमल निषाद दाहिने हाथ की दूसरी उँगली पूरी उठा लेने से और शेष सब छिद्रों को पूरा बंद रखने से प्राप्त होगा, किंतु यह भी कोमल गांधार की तरह कुछ ऊँचा रहेगा। यहाँ भी चतुर गुणीजन फूँक के माध्यम से स्वर ठीक कर लेंगे, किंतु प्रारंभिक विद्यार्थी को सही स्वर प्राप्त करने का निर्णय नहीं हो पाएगा। तार-सप्तक एवं अतितार सप्तक के कोमल स्वरों के निकालने की विधि अगले भाग में देंगे। हम पहले कह चुके हैं कि दाहिने हाथ की दूसरी और तीसरी उँगलियाँ सदैव खुली रहेंगी। ये उँगलियाँ केवल पंचम बजाने के लिए ही प्रयोग

में ली जाएँगी तथा दाहिने हाथ की पहली उँगली को कुछ समय अभ्यास के बाद प्रायः उठाए रहना चाहिए, क्योंकि इसका प्रयोग केवल बाँसुरी को सहारा देने में ही किया जाता है। आगे दिए हुए बाँसुरी के चित्र से ऊपर दी हुई प्रक्रिया सरलतापूर्वक समझ में आ सकेगी।

संगीत-शास्त्र के कुछ पारिभाषिक शब्दों की व्याख्या

संगीत एक कला है—एक आनंददायिनी कला है, जिसकी साधना तीन अंगों या रूपों में की जाती है। एक रूप को हम गायन यानी कण्ठ-संगीत (Vocal music) कहते हैं, दूसरा वाद्य-वादन (Instrumental music) कहलाता है तथा तीसरा रूप नृत्य-कला (Dance) के नाम से हमारे परिचय में आता है। इसी बात को शास्त्रकार 'गीतं वाद्यं तथा नृत्यं त्रयं संगीत-मुच्यते' कहते हैं। कला के ये तीनों रूप संगीत को अपने आपमें पूर्ण करते हैं। यद्यपि एक अंग भी अपने आपमें पूर्ण है और अपने आपमें आत्मसमर्थ और पूर्ण आनन्ददायक, किंतु फिर भी एक-दूसरे के पूरक हैं। यानी कण्ठ संगीत या गीत वाद्य के बिना अधूरा रहता है और उसका पूर्ण आनंददायक रूप वाद्यों के ही साथ सिद्ध होता है। वाद्य-वादक भी अपने आपमें पूर्ण होते हुए अपने साथ अन्य तालवाद्यों की अपेक्षा रखता है। नृत्य-कला भी गीत से भाव तथा वाद्यों से आनंददायक तत्त्वों के संयोजन की अपेक्षा करती है। अतः ज्ञात होता है कि तीनों अंग अपने आपमें पूर्ण होते हुए भी एक-दूसरे के पूरक होकर संगीत-कला को मन-मोहक और आनंददायक बनाते हैं।



|
स्वर
|
मेल या ठाठ
|
राग और रागिनियाँ

ताण्डव लास्य

गीत या गायन की प्रवृत्ति और अनुकरण

संगीत-शास्त्र की चर्चा करते ही गीत शब्द से परिचय होता है। गीत में कुछ कविता के शब्द और उसके भाव होते हैं। कविता बनानेवाला कवि या गायक जब अपने हृदय के भावों को मन-मोहक ढंग से अपने कण्ठ की आवाज (ध्वनि) में कुछ ऊपर चढ़कर या नीचे उतरकर एक मर्यादित गति में छंद के नियमानुसार कहता है, हम उसे गीत या गान कहते हैं। यही संगीत का मुख्य अंग है। मानव-हृदय को स्थायी आनन्द और शांति प्रदान करनेवाला गीततत्त्व किस अलौकिक भाव की भूमिका रखता है और उसे संगीत की मधुर ध्वनि एवं ताल-योजना किस प्रकार सहस्रगुणित भाववर्धक बना देती है, यह कहने की बात नहीं। साधना करने पर अनुभव में लाने का ही विषय है।

प्रारंभ में मनुष्य ने इस कला की साधना पक्षियों की बोली के अनुकरण में की होगी, इसलिए शास्त्रकारों ने मोर की आवाज को गीतगान का प्रारंभिक स्वर 'सा' माना और कहा 'षड्जं वदति मयूरः'। पंचम स्वर की आवाज कोयल की आवाज (कूक) के समान मानी है। इस प्रकार प्रारंभ में इस अनुकरण (नकल करने) की वृत्ति में सिंह की दहाड़ और घोड़े के हिनहिनाने की आवाजों से भी मनुष्य ने प्रेरणा ली। मेघों की गड़गड़ाहट, पत्तों की खड़खड़ाहट, नदियों और झरनों के कलकल निनाद ने प्रारंभिक व्यक्ति को प्रकृति के इन अलौकिक उपादानों की ओर आकृष्ट किया। इससे मनुष्य ने अपने और अपने आस-पास के व्यावहारिक जगत् को आनंदित कर पाने की कला को विकसित करने का अवसर पाया।

वाद्य

वाद्य-अंग की चर्चा में कहा जाता है कि मुर नामक दैत्य के संहार के बाद, उसकी देह से मुरज नामक वाद्य का निर्माण किया गया तथा प्रयोग में लिया गया। इसी प्रकार अन्यान्य वाद्यों की भी उत्पत्ति हुई है। परंतु प्रकृति से स्वतः उत्पन्न बाँस और उसके छेदों में प्रविष्ट होकर हवा ने जो प्रतिध्वनि की, वह वास्तव में प्रकृति की प्रारंभिक वस्तु है, जिसे कुछ समय के पश्चात् मनुष्य ने पहचाना और उसे बाँसुरी या मुरली के रूप में अपनी स्वर-साधना का अंग बनाया। अन्य वाद्यों में मानव-मस्तिष्क के विकास के साथ-साथ नई नई सम्भावनाएँ हो पाईं, जिनमें चार प्रकार के वाद्य आते हैं। हम इन्हें कृत्रिम वाद्य मानते हैं और बाँसुरी को प्राकृतिक वाद्य। यद्यपि बाँसुरी के आधुनिक रूप में अनेक संशोधन आवश्यकतानुसार हुए हैं, किन्तु फिर भी अधिकांशतः उसका प्राकृतिक रूप ही माना जाता है।

नृत्य

नृत्य-अंग में मनुष्य (पुरुष या स्त्री) अपने हृदयगत भाव या काव्यगत भावों को अपने पैरों की गति के द्वारा तथा नेत्र और भ्रूचालन के अनेक प्रकारों के द्वारा प्रकट करता है। इन सभी भाव-प्रकाशन की क्रियाओं में विविध गति-विधियों का जो प्रकाशन होता है, उसके लिए ताल-वाद्यों का सहयोग अपेक्षित होता है।

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन में संगीत के तीनों अंगों का सूक्ष्म परिचय दिया गया है।

संगीत का आधार स्वर है, जो किसी श्रुति या ध्वनि (नाद) पर ठहरा हुआ एक व्यवस्थित श्रुति का रूप है। श्रुतियाँ अनन्त हैं, श्रुतियाँ मानव की श्रोतेन्द्रिय यानी कानों से सुनी जा सकने-वाली, साथ ही मधुर एवं आनन्दायक ध्वनियाँ हैं। इन कुछेक श्रुतियों को मनुष्य ने अपनी शक्ति के अनुसार नियमबद्ध कर पाने की परिधि में बाईस की संख्या में ही व्यवस्थित किया है। इन बाईस श्रुतियों के बीच बारह (शुद्ध एवं विकृत) और सात (शुद्ध) स्वरों की योजना को हम आगे समझाने की चेष्टा करेंगे।

संगीत की पद्धतियाँ

समस्त भारत में सीखी जानेवाली गायन एवं वादन की शैलियों के अनेक रूप होते हुए भी स्थूल रूप से संगीत की दो पद्धतियाँ अलग-अलग दीख पड़ती हैं। उनमें से एक हिन्दुस्तानी संगीत-पद्धति कहलाती है, जो दक्षिण-भारत के कुछ-एक प्रान्तों को छोड़कर समस्त भारत में व्यवहृत होती है। दूसरी कर्नाटकीय संगीत-पद्धति है, जो मद्रास, तंजौर, कर्णाटक प्रदेश एवं सुदूर दक्षिण में व्यवहृत होती है। स्वरों की व्यवस्था एक-सी होते हुए भी कुछएक स्वरों के विभिन्न संयोजन, रागों की योजना के नाम से तालों की योजना एवं गीतों की भिन्न रीति की रचना और भाषा की भिन्नता, इन दोनों पद्धतियों को स्थूल रूप से अलग-अलग करती है।

श्रुति एवं स्वर

संगीत का आधार हमने जिन स्वरों को बतलाया है, वे स्वर श्रुतियों से उत्पन्न होते हैं। उनकी संख्या हमने २२ (बाईस) स्थिर की है। इनमें से १२ श्रुतियों पर अपने स्वरों को व्यवस्थित किया है, जिन्हें हम १२ स्वर कहते हैं। एक सप्तक में ये ही १२ श्रुतियाँ या स्वर होते हैं जो मन्द्र, मध्य और तार-सप्तकों के नाम से हमारे व्यवहार में आते हैं। १२ श्रुतियों को स्वरों में ले लेने के बाद १० श्रुतियों को हम कण, स्पर्श, सूत, मीड़ आदि की क्रियाओं द्वारा प्रयोग में लेते हैं। इनका स्पर्श इतना सूक्ष्म होता है कि इनको स्थूल रूप में पहचान पाना कठिन होता है। गायन वा वादन-क्रिया में हम प्रायः २२ श्रुतियों का उपयोग कर लेते हैं। ये बाईस श्रुतियाँ हमारे जाने हुए सात स्वरों (सा रे ग म प ध नि) के समान अंतर के साथ विभक्त नहीं हैं। षड्ज (सा), मध्यम (म) और पंचम (प) को चार-चार श्रुतियाँ, ऋषभ (रि) और धैवत (ध) को तीन-तीन श्रुतियाँ तथा गांधार और निषाद (नि) को दो-दो श्रुतियाँ दी गई हैं। (३×४)+(२×३)+(२×२) कुल २२ श्रुतियाँ होती हैं। वर्तमान प्रचार में आए हुए सप्त स्वरों में सप्तक का पहला स्वर तीव्रा, कुमुद्वती, मन्दा और छंदोवती नामक श्रुतियों के बीच के अंतराल (Interval) को

लेता है। इन चार श्रुतियों के अनंतर पाँचवीं श्रुति पर (दयावती पर) ऋषभ है, जो दयावती, रंजनी और रतिका के क्षेत्र में संचार करता है। रौद्री और क्रोधा दो श्रुतियों का गांधार (ग) है, वज्रिका, प्रसारिणी, प्रीति और मार्जनी मध्यम की श्रुतियाँ हैं; क्षिति, रक्ता, संदीपिनी और आलापिनी पंचम की श्रुतियाँ हैं; मदन्ती, रोहिणी और रम्या धैवत की तथा उग्रा और क्षोभिणी निषाद की श्रुतियाँ हैं।

इसमें तीव्रा पर षड्ज की स्थिति रखें और दयावती पर ऋषभ की तो कोमल ऋषभ की स्थिति हमें मन्द्रा पर करनी पड़ेगी। इसी प्रकार कोमल गांधार को ऋषभ की अंतिम श्रुति रतिका पर लाना पड़ेगा। मध्यम की श्रुति वज्रिका १०-वीं है। तीव्र मध्यम को १२-वीं प्रीति श्रुति पर ले जाना पड़ेगा। पंचम की १६-वीं श्रुति संदीपिनी पर कोमल धैवत तथा धैवत की २०-वीं श्रुति रम्या पर कोमल निषाद लाकर कोमल-तीव्र १२ स्वरों को व्यवस्थित मानते हैं। यह क्रिया क्यों और कैसे की जाती है तथा इसका क्या प्रयोजन है, इसकी विवेचना हम आगे के पृष्ठों में करेंगे।

नाद

जिन स्वरों और श्रुतियों की हमने प्रसंगवश उपर्युक्त विवरण में चर्चा की है, वे एक प्रकार की ध्वनियाँ हैं, जिन्हें नाद कहते हैं। ये नाद दो प्रकार के होते हैं—अनाहत नाद तथा आहत नाद। अनाहत नाद मानव-शरीर के अंदर की एक अव्यक्त ध्वनि होती है, जो किसी बाहरी अवयव से न प्रभावित होती है और न उसका सुन पाना या आनन्दानुभव कर पाना सम्भव है। केवल योगीजन इसका आनन्द ले पाते हैं। दूसरा आहत नाद मानवकण्ठ से उत्पन्न या तार पर आघात करने से या दो धातुओं के परस्पर घर्षण (टकराव) से उत्पन्न ध्वनि से पहचान में आता है। यह आहत नाद किन्हीं नियमों और मर्यादाओं से इस प्रकार नियमित या नियमबद्ध किया जाता है, जिसके द्वारा वह ध्वनि आनन्ददायक बन सके। अतः ज्ञात होता है कि आहत नाद मधुर नहीं होता। आहत नाद को विभिन्न रुचियों के अनुसार आनंददायक बनाया जाता है। इस नाद की चार

अवस्थाएँ होती हैं—१. स्थान-भेद, २. रूप-भेद, ३. जाति-भेद तथा ४. उसकी स्थिरता। इसी आधार पर ये चार अवस्थाएँ अनुभव में आती हैं।

नाद का स्थान

नाद मन्द्र स्वरों में जब प्रकट होता है तब उसकी झंकृतियाँ या आन्दोलन (Vibrations) प्रति सेकेण्ड अधिक होगा तथा नाद जब उच्च स्वरों में यानी तार स्वरों में किया जाएगा, आन्दोलन या झंकार उतने ही कम होंगे। इनका यह परीक्षण वीणा या सितार के तारों पर किया जाता है। यह नाद कितने स्थान तक सुन पाना सम्भव होता है, इसे हम नाद का ऊँचा या नीचा होना या पिच (Pitch) कहते हैं।

नाद का रूप

रूप-भेद में नाद का स्थान है। हम पहचानते हैं कि ध्वनि जोर से निकल रही है या धीरे-धीरे। ध्वनि से उत्पन्न आन्दोलन यदि जोरदार हों तो ध्वनि दूर तक सुनाई देगी, यदि निर्बल हों तो ध्वनि पास के क्षेत्र तक ही सीमित होगी। पुरुष एवं स्त्रियों के कंठों की ध्वनि इसी प्रकार के अन्तर पर पिच (Pitch) के रूप में समझी जाती है।

नाद की जाति

नाद का जाति-भेद समझ में तब आता है, जब स्वर (सा रे ग म) किसी मानवकण्ठ से निकलते हैं। वे ही स्वर यदि सारंगी, सितार, सरोद या वायोलिन और बाँसुरी पर निकलते हैं तो हम दूर बैठे हुए बिना देखे हुए भी वाद्य-विशेष या मानवकण्ठजन्य नाद को पहचान लेते हैं। नाद का यह भेद टिम्बर (Timber) के नाम से समझा जाता है।

नाद की स्थिरता

नाद की एक विशेष पहचान यह भी है कि वह मानवकण्ठ या वाद्ययन्त्र-विशेष पर ठहरा हुआ है या द्रुत गति से घटता या बढ़ता है।

अतः संगीत के उपयोग में आ सकनेवाली ध्वनियाँ नाद की वे अवस्थाएँ हैं, जिनमें आन्दोलन की क्षमता हो, जो अपने स्थान पर स्थिरता से रुक पाती हों तथा नाद की भनक क्रमशः उत्तरोत्तर उतरते-चढ़ते एक क्रमानुसार गतिमान हो सकने की क्षमता रखती हों। नाद की उन ध्वनियों को संगीत के द्वारा नियमबद्ध साधना का आधार बना पाना संभव होता है, जो अनेक अपने ही समान मधुर ध्वनियों या श्रुतियों के संयोजन से आनन्दोत्पादक तत्त्व उत्पन्न कर सकें।

नाद 'ब्रह्म' का रूप कहा जाता है। 'ब्रह्म' जिस प्रकार निराकार या साकार माना जाता है, अव्यक्त, अविकारी और निरंजन कहा जाता है; उसी प्रकार अनाहत नाद निराकार, अव्यक्त, अविकारी और निरंजन होता है और आहत नाद विकारी, रंजक तथा साकार होता है। एक को योगीजन योगाभ्यास में सिद्ध करते हैं तथा दूसरे आहत नाद की साधना के लिए भी साधक को योगीजनों की तरह ही योगस्थ एवं समाहित चित्त होना पड़ता है। गायकों एवं वादकों के गुणावगुण-विवेचन में हम इस गुण की चर्चा करेंगे। आहत नाद के व्यक्त स्वरूपों का ही नाम स्वर है। यह कानों से सुनी जा सकने वाली ध्वनियों का ही व्यवस्थित रूप है। बाईस श्रुतियों पर व्यवस्थित हम शुद्ध और विकृत स्वरों की संख्या बारह (१२) स्थिर करते हैं। शुद्ध स्वर केवल सात ही हैं, जिनके नाम इस प्रकार हैं—षड्ज, ऋषभ, गांधार, मध्यम, पंचम, धैवत और निषाद (जिनके प्रायोगिक नाम इस प्रकार हैं—(सा रे ग म प ध नि)। इन सात स्वरों में षड्ज और पंचम (सा और प) अविकारी स्वर हैं। शेष पाँच स्वर अपने निश्चित स्थान से कम या ज्यादा होने पर विकृत कहलाते हैं। इनमें ऋषभ, गांधार, धैवत एवं निषाद की ध्वनि अपने निश्चित स्थान से कम अर्थात् नीची होती है यानी कोमल होती है तथा मध्यम का शुद्ध रूप अपने आपमें शुद्ध माना गया है, उसे अपने निश्चित स्थान से ऊँचा कर उसका विकृत रूप किया जाता है तब वह तीव्र मध्यम कहलाता है। अतः एक सप्तक में निम्न-प्रकार से १२ स्वर होते हैं :—

सा	<u>रे</u>	रे	<u>ग</u>	ग	म	मं	प	<u>ध</u>	ध	<u>नि</u>	नि
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२

स्वरों का रूप जोकि मानव-कण्ठ या वाद्य-विशेष के द्वारा प्रकट होता है, वह मात्र एक ध्वनि है। श्रवणेन्द्रिय से श्रव्य और कर्णप्रिय मधुर ध्वनियों के स्थिर और आकर्षक रूप को स्वर कहते हैं। इन स्वरों के पृथक्-पृथक् देव, पृथक्-पृथक् रूप-रंग, गुण-स्थान एवं वर्ण, जाति, छन्द और सिद्धियाँ शास्त्रों में वर्णित की गई हैं। प्राचीनतम शार्ङ्गदेव कृत 'संगीत-रत्नाकर' एवं अन्य परवर्ती आचार्यों ने यत्र-तत्र इनका वर्णन किया है। नीचे की तालिका में इन सभी तत्त्वों को एकसाथ दिखलाया गया है :—

सप्त स्वरों के वंश, स्वरूपादि का परिचयात्मक विवरण

सं० स्वर नाम	स्थान (द्वीप)	वंश	जाति	वर्ण	देवता	गोत्र	ऋषि	छन्द	उत्पत्ति	पुत्र (राग)	वार	शस्त्र
१. षड्ज	जम्बू	देव	ब्राह्मण	रक्त	अग्नि	अग्निवेश्य	अग्नि	अनुष्टुप	नाभि	भैरव	रवि	फरसा
२. ऋषभ	शाक	ऋषि	क्षत्रिय	पीत	ब्रह्मा	काश्यप	ब्रह्मा	गायत्री	हृदय	करनाट	सोम	खाड़ा
३. गांधार	कुश	देव	वैश्य	सुवर्ण	शशि	गौतम	मृगांक	त्रिष्टुप	वक्षस्थल	हिंडोल	मंगल	धनुष-वाण
४. मध्यम	क्रौंच	देव	ब्राह्मण	श्वेत	विष्णु	आंगिरस	लक्ष्मीपति	वृहती	कण्ठ	बसन्त	बुध	मुद्गर
५. पंचम	शाल्मली	पितृ	ब्राह्मण	श्याम	नारद	भार्गव	नारद	पंक्ति	मुख	मल्हार	गुरु	कटार
६. धैवत	श्वेत	ऋषि	क्षत्रिय	पीत	तुम्बुरु	कौशिक	तुम्बुरु	उष्णिक्	तालु	श्री	शुक्र	मूसल
७. निषाद	पुष्कर	असुर	वैश्य	विचित्र	तुम्बुरु	वशिष्ठ	धनद	जगती	नासिका	श्री	शनि	शूल

सप्त स्वरों के शृंगार, स्वरूपायु आदि का परिचयात्मक विवरण

सं०	स्वर-नाम	चलाचल स्वर	स्वरों के आकाश व गृह	स्वभाव	आवाजवाले पशु	ऋतु	सवारी	पोशाक	अवस्था (आयु)
१.	षड्ज	अचल	चंद्र	सर्दतर	मयूर	सर्वदा	वृषभ	श्वेत	८०
२.	ऋषभ	चल	बुध	सर्दखुश्क	गाय, बैल, चातक	वसन्त	अश्व	रक्त	७०
३.	गांधार	चल	शुक्र	सर्दतर	मेंढक, अजा	ग्रीष्म	रथ	रक्त	६०
४.	मध्यम	चल	रवि	गर्म (खुश्क)	क्रौंच, कालिंग	वर्षा	हाथी	श्वेत	४०
५.	पंचम	अचल	मंगल	गर्म (खुश्क)	कोयल	शरद	पालकी	पीत	३०
६.	धैवत	चल	गुरु	समशीतोष्ण	अश्व, मेंढक	हेमन्त	शेर (सिंह)	रक्त	२०
७.	निषाद	चल	शनि	सर्दखुश्क	हाथी	शिशिर	महिष	श्याम	१०

'इन्द्रधनुष' नवम्बर १९५५ के सौजन्य से कुछ देशों के शुद्ध स्वरों के नाम एवं स्वर

भारतीय स्वर	ईरानी स्वर
आरोह—सा, रे, ग, म, प ध, नि, सां	आरोह—चक, दो, से, चार, पंच, शत, हफ्त।
अवरोह– सां, नि, ध, प, म, ग, रे सा	अवरोह– हफ्त, शत, पंच, चार, से, दो, चक।

यूरोपीय स्वर	अरबी स्वर
आरोह—डो, रे, नी, फा, सोल, ला, सी, डो।	आरोह—मीम्र, फे, साद, लाम, शीन, दाल, रे।
अवरोह– डो, सी, ला, सोल, फा नी, रे डो।	अवरोह– रे, दाल, शीन, लाम, साद, फे, मीम।

नोट—अरबी संगीत में तार (तीव्र) को 'आली', मध्य स्वर को 'बस्ति' और मन्द्र स्वर को 'संअलि' कहते हैं।

आरोह-अवरोह

क्रमानुसार सा से रे, रे से ग, ग से म, म से प, प से ध और ध से नि स्वरों की ध्वनियाँ एक दूसरे से उत्तरोत्तर ऊँची होती जाती हैं। अन्त में पुनः तार-सप्तक का षड्ज (सा) ध्वनित होता है। यह तार सां उस मध्य सा का दूना ऊँचा होता है, जिससे हम अपना स्वर-सप्तक का गायन-वादन प्रारम्भ करते हैं। स्वरों के इस क्रम को आरोहण या आरोह (चढ़ता क्रम) कहते हैं। और इसी निश्चित क्रम से तार सां के बाद नि, नि के बाद ध, प, म, ग, रे और पुनः मध्य सा (प्रारम्भिक सा) आता है, हम इस उतरते क्रम को अवरोहण या अवरोह कहते हैं। सा से म तक के जो अन्तराल यानी बीच की दूरी और रे ग की स्थिति जो है, वही स्थिति प से तार सां तक की है और रे ग की तरह धैवत और निषाद की स्थिति है। अतः सा रे ग म हम जिस क्रम से कहते हैं, उसी क्रम में प ध नि सां भी कहते हैं। इसी आधार पर सात स्वरोंवाले

सप्तक में सा से म तक के स्वरों को पूर्वांग तथा प से तार सां तक के स्वरों को उत्तरांग कहते हैं।

सप्तक त्रय

अभ्यास का सप्तक मध्य सप्तक कहलाता है। उस सप्तक से जब उसी निश्चित क्रम से हम अपनी ध्वनि नीचे के स्वरों पर उतारते हैं यानी सा नि़ ध़ प़ म़ ग़ रे़ सा़ तक ले जाते हैं तब इस सप्तक को हम मन्द्र सप्तक कहते हैं। तार सां से ऊपर ध्वनि ले जाने पर यानी सां रें गं मं पं धं आदि स्वरों को तार सप्तक कहते हैं। हमारे भारतीय संगीत में तीन सप्तक माने गए हैं—१. मन्द्र सप्तक, २. मध्य सप्तक, ३. तार सप्तक। मन्द्र सप्तक की ध्वनि बहुत गम्भीर एवं मोटी होती है और इस ध्वनि की उत्पत्ति नाभि से मानते हैं। मध्य सप्तक की ध्वनि साधारण ध्वनि होती है, अर्थात् जिस ध्वनि में वार्तालाप करते हैं और जिस ध्वनि के उच्चारण में शारीरिक अंग पर किसी प्रकार का जोर नहीं लगता, वही ध्वनि मध्य सप्तक की ध्वनि कहलाती है। मध्य का अर्थ है बीच का। तार सप्तक, मध्य सप्तक का ठीक दूना ऊँचा होता है। इसकी ध्वनि के उच्चारण में मस्तिष्क पर जोर पड़ता है, ऐसा संगीतज्ञों का मत है। इन तीन सप्तकों के अलावा और भी अनेक सप्तक होते हैं, जैसे अति मन्द्र सप्तक और अति-तार सप्तक तथा अति-अति मन्द्र सप्तक तथा अति-अति तार सप्तक आदि। किन्तु हमारे संगीत में साधारण रूप से तीन सप्तकों की ही चर्चा की जाती है, शेष को केवल नाम देकर ही सम्बोधित किया जाता है। मन्द्र सप्तक को लिखने में स्वरों के नीचे बिन्दु लगाने की प्रथा है, जैसे—नि़ ध़ प़ म़ ग़ रे़ आदि। मध्य सप्तक के स्वरों में किसी प्रकार के चिह्न की आवश्यकता नहीं होती, किन्तु तार सप्तक को लिखने में स्वरों के ऊपर बिन्दु रखने की प्रथा है, जैसे—सां रें गं मं पं धं आदि।

मेल या ठाठ

मेलः स्वरसमूहः स्याद्रागव्यंजनशक्तिमान्

स्वरों के आरोहावरोह क्रम के अनुसार उनके ऐसे स्वर-समूहों को मेल (ठाठ) या ठाठ कहते हैं, जिनसे राग-स्वरूपों की विविध

रचनाएँ संभव हो सकें। अनेक रागों में उनमें लगनेवाले मुख्य स्वरों के कोमल-तीव्र स्वरों के विविध संयोजन - समूह उनके विशेष परिवार में आते हैं। तब हम कहने लग जाते हैं कि अमुक राग अमुक ठाठ या समुदाय का है। कोमल गांधार और कोमल निषाद के प्रयोग वाले राग निःसंदेह काफी मेल (ठाठ) या उसके परिवार के बीच की गणना में ले लिए जाते हैं। इसी प्रकार अन्यान्य राग भी हैं। आहत नाद का शुद्ध एवं स्पष्ट रूप श्रुति और श्रुतियों का व्यवस्थित रूप (स्वर) होता है। ये स्वर सप्तक की रचना को पूरा करते हैं। इन सप्तकों से ठाठों (मेलों) की कल्पना की गई है, जो रागों के स्वरूप को बनाते हैं। सप्तक के पूर्वांग एवं उत्तरांग के विविध संयोजन गणित के अनुसार ७२ ठाठों की रचना (पं० व्यंकटमखी के द्वारा) करते हैं। जिनका गणित पं० व्यंकटमखी (एक दक्षिण-भारत के संगीत-शास्त्र के विद्वान्) ने अपनी पुस्तक 'चतुर्दण्डिप्रकाशिका' में किया है। ठाठ-रचना में यह माना गया है कि एक स्वर के दो रूप कोमल और तीव्र एकसाथ आ सकते हैं। ठाठ गेय नहीं होता, उसका केवल शास्त्रीय रूप ही होता है, अतः उसके रूप में रंजकता की कोई आवश्यकता नहीं होती। सप्तक के पूर्वांग एवं उत्तरांग-मेल से ठाठों की रचना इस प्रकार से हो सकती है :—

पूर्वांग					उत्तरांग				
१.	सा	रे	ग	म	१.	प	ध	नि	सां
२.	सा	रे	रे	म	२.	प	ध	ध	सां
३.	सा	रे	ग	म	३.	प	ध	नि	सां
४.	सा	रे	ग	म	४.	प	ध	नि	सां
५.	सा	ग	ग	म	५.	प	नि	नि	सां
६.	सा	रे	ग	म	६.	प	ध	नि	सां

पूर्वांग के उपर्युक्त इन छह रूपों में प्रत्येक के साथ उत्तरांग के छहों रूपों को मिलाएँ तो ६×६=३६ मेल या ठाठ तैयार होते हैं। इनमें यदि शुद्ध (कोमल) म के स्थान पर तीव्र मध्यम (म) का प्रयोग कर लें तो ३६×२=७२ ठाठ सिद्ध हो जाएँगे। यदि यह नियम माना जाए कि ठाठ में एक स्वर के दो रूप एकसाथ न लिए जाएँ तो पूर्वांग एवं उत्तरांग के केवल चार-चार रूप ही बनेंगे

और इस प्रकार ४×४=१६×२=३२ केवल (बत्तीस) मेलों की ही रचना संभव होगी, जो इस प्रकार है :—

पूर्वांग					उत्तरांग				
१.	सा	रे	ग	म	१.	प	ध	नि	सां
२.	सा	रे	ग	म	२.	प	ध	नि	सां
३.	सा	रे	ग	म	३.	प	ध	नि	सां
४.	सा	रे	ग	म	४.	प	ध	नि	सां

पूर्वांग के इन चार रूपों के साथ प्रत्येक उत्तरांग के चारों रूपों का पृथक्-पृथक् मेल ४×४=१६ रूप प्रस्तुत करता है जो शुद्ध मध्यम के हैं। तीव्र मध्यम के इसी प्रकार १६×२=३२ रूप होंगे। विद्वानों ने ७२ ठाठ या मेल भी माने हैं। ३२ रूप भी दोनों प्रकार उपर्युक्त विधि से समझने चाहिए।

ठाठों से रागों की रचना मानी गई है। अतः इन्हें जनक ठाठ कहते हैं तथा इनसे उत्पन्न होनेवाले रागों को जन्य राग कहते हैं। ठाठ और राग के विशेष गुणों के आधार पर साधारणतया निम्नलिखित तुलनात्मक विवरण में दोनों को अलग-अलग समझना चाहिए।

मेल या ठाठ (जनक ठाठ)	राग (जन्य राग)
१. ठाठ गाया या बजाया नहीं जाता।	१. राग गाया-बजाया जाता है तथा किसी-न-किसी ठाठ से उत्पन्न माना जाता है।
२. ठाठ में सातों स्वर क्रमानुसार होने चाहिए, जो आरोहावरोह-क्रम से रहें। किन्तु आरोह मात्र से ही काम चल सकता है। सात स्वरों से कम का ठाठ नहीं माना जाता।	२. राग संपूर्ण, औडव तथा षाडव तीनों जाति के हो सकते हैं। इसके लिए आरोह, अवरोह, पकड़, आलाप-तान, वादी-संवादी-अनुवादी स्वरों की एक निश्चित योजना चाहिए। चार स्वरों का राग नहीं होता। राग

	का गायन-वादन समय निश्चित होता है।
३. ठाठ में एक ही स्वर के दो रूप भी आ सकते हैं। क्योंकि ठाठ कभी गाया नहीं जाता। अतः ठाठ में रंजकता की आवश्यकता नहीं होती, किन्तु स्वर ऐसे अवश्य हों, जिनसे कि राग एवं रागिनियों की उत्पत्ति हो सके।	३. राग-रचना में ललित को छोड़कर प्रायः किसी भी राग में एक स्वर के दोनों रूप एकसाथ नहीं प्रयोग होते। रंजकता का होना राग के लिए एक आवश्यक-तत्त्व है, क्योंकि रंजकता के लिए ही राग की रचना हुई है।
४. ठाठ का नाम उससे उत्पन्न किसी आश्रित राग के नाम पर ही मान लिया जाता है।	४. राग अपने प्रसिद्ध नाम के आधार पर ही उस परिवार के ठाठ को अपना नाम दे देता है। इसी से उन रागों को आश्रित राग कहा जाता है, जिनके नाम के आधार पर ठाठ का नामकरण होता है।
५. ठाठ में वादी-संवादी आदि स्वरों की मान्यता की आवश्यकता नहीं होती।	५. राग में वादी-संवादी-अनुवादी आदि स्वर निश्चित रूप में होने चाहिए। राग के स्वर मधुर, चित्ताकर्षक होने चाहिए। राग में आरोही, अवरोही, संचारी, आभोग, स्थायी तथा अन्तरा आदि वर्ण होने चाहिए। राग में सा, म, प एकसाथ वर्जित नहीं हो सकते। षड्ज कभी भी किसी भी राग में वर्जित नहीं होता, किन्तु म या प में से कोई एक वर्जित

हो सकता है, यदि आवश्यकता हुई तो। दूसरी बात यह भी है कि ऋषभ-गांधार, पंचम-धैवत, मध्यम-पंचम या निषाद-धैवत ये निकट के स्वर एकसाथ वर्जित नहीं हो सकते, किन्तु वक्र रूप से ले लिए जाएँ तो राग-रचना की रंजकता के अनुसार यह व्यवस्था मान्य हो सकती है।

राग

योऽयं ध्वनिविशेषस्तु स्वरवर्णविभूषितः।
रंजकोजनचित्तानां स राग: कथितो बुधैः॥

स्वर-वर्णादि की वह विशिष्ट मधुर रचना जो स्वयं साधक और श्रोताओं के चित्त का रंजन करे, राग कहलाती है। 'रंजयतीति राग:' स्वर की रचना, जो चित्त को प्रसन्न करे वह राग कहलाती है।

राग के मुख्य अंग ध्वनि (नाद) और स्वर की व्याख्या की जा चुकी है। अब दूसरा अंग वर्ण आता है। गाने व बजाने की प्रत्येक क्रिया के कुछ अंग होते हैं, जिन्हें हम वर्ण कहते हैं। जैसे—आरोही वर्ण, अवरोही वर्ण, स्थायी वर्ण तथा संचारी वर्ण। स्वरों को जब हम इन वर्णों के आधार पर व्यवस्थित करते हैं तब इनके अनुसार स्वर-संचारण अनेकों अलंकार, तान, आलापों का रूप लेकर राग का विस्तार करते हैं। स्थायी वर्ण के अनुसार एक-एक स्वर पर व्यवस्थित रूप से जमकर आरोही वर्ण या आरोह में मध्य षड्ज से निषाद और तार षड्ज तक बढ़ती हुई ध्वनि (आवाज) के साथ क्रम से सा रे ग म प ध नि सां कहना या बढ़ना (अनुलोम रीति से) आरोहण या आरोह कहलाता है।

अवरोहण

इसी क्रम से तार सप्तक के षड्ज से मध्य सप्तक के षड्ज तक विलोम रीति से आवाज को उतारते हुए कहने की क्रिया को अवरोह या अवरोहण क्रिया या अवरोही वर्ण कहते हैं।

संचारी वर्ण

आरोही या अवरोही तथा स्थायी वर्णों के मिश्रित रूपों का नाम ही संचारी वर्ण है। अर्थात् संचारी वर्ण में आरोही वर्ण, अवरोही वर्ण तथा स्थायी वर्ण (संचारी को छोड़कर शेष तीनों वर्णों का) मिलकर संचारी वर्ण की व्यवस्था होती है। जैसे :— १. सा ग म रे ध नि सां ध प म प रे २. सा रे ग ग ग रे, म ग रे सा –। ३. ध नि सां सां सां सां रें सां नि ध प म ग रे सा। आदि अनेकों बनाए जा सकते हैं।

राग की जातियाँ

राग सात, छह या पाँच स्वरों के हो सकते हैं। जिनकी रचना में सात स्वर लगते हैं, वे सम्पूर्ण जाति के राग होते हैं। जिनमें छह स्वरों का प्रयोग होता है, वे षाडव जाति के तथा जिनमें पाँच स्वरों का प्रयोग होता है, वे औडव जाति के राग कहलाते हैं। किन्तु कभी-कभी आरोह या अवरोह के स्वरों में व्यतिक्रम देखा जाता है। अतः रागों की जातियाँ मुख्य रूप से तीन होते हुए भी क्रम से ३×३=९ हो जाती हैं। वे इस प्रकार से हैं :—

१. सम्पूर्ण-सम्पूर्ण २. सम्पूर्ण-षाडव ३. सम्पूर्ण-औडव ४. षाडव-सम्पूर्ण ५. षाडव-षाडव ६. षाडव-औडव ७. औडव-सम्पूर्ण ८. औडव-षाडव तथा ९. औडव-औडव।

राग के आवश्यक अंगों में वादी स्वर, संवादी स्वर, अनुवादी स्वर, वक्र स्वर तथा वर्जित स्वरों का भी जानना आवश्यक है। उपर्युक्त स्वरों का वर्णन निम्न-प्रकार से है :—

वादी स्वर

राग में कोई एक स्वर मुख्य स्वर होना आवश्यक है। उसे उस राग का प्रधान स्वर कहा जाता है। वह अंश या जीव स्वर

के नाम से भी जाना जाता है। वादी स्वर राग के सारे वैचित्र्य का केन्द्र होता है। वादी स्वर पर ही राग का सच्चा स्वरूप निर्भर करता है। वादी की महत्ता कम कर देने पर राग का स्वरूप ही बदल जाता है। राग के शेष स्वरों के संयोजन के साथ यदि वादी स्वर को न्यून या उसका बहिष्कार कर दिया जाता है तो राग की समस्त रंजकता नष्ट हो जाती है। राग की समस्त रंजकता का केन्द्र वादी स्वर ही होता है।

संवादी स्वर

वादी स्वर के पश्चात् राग में दूसरा महत्वपूर्ण स्वर संवादी होता है। किन्तु एक बात ध्यान देने की यह है कि यदि वादी स्वर सप्तक के पूर्वांग में स्थित होता है तो संवादी स्वर सप्तक के उत्तरांग में स्थित होता है। वादी और संवादी के बीच तीन या चार स्वरों का अन्तर रहता है। वादी और संवादी के बीच स्वर-संवाद अवश्य होना चाहिए। चाहे षड्ज-मध्यम का हो या षड्ज-पंचम का स्वर-संवाद हो। वादी स्वर को यदि राग-रूपी राज्य का राजा माना जाए तो संवादी स्वर को मन्त्री मानना पड़ेगा।

अनुवादी स्वर

वादी और संवादी स्वरों के अतिरिक्त राग-रचना में लगनेवाले अन्य समस्त स्वरों को अनुवादी स्वर कहते हैं। अनुवादी का अर्थ होता है पीछे चलनेवाला या प्रजागण।

विवादी स्वर

राग-रचना में जो स्वर नहीं लगने चाहिए, यदि उनका प्रयोग किया जाए तो राग का स्वरूप बिगड़ जाता है; ऐसे स्वरों को ही विवादी स्वर कहा जाता है। अर्थात् जो स्वर विवाद उत्पन्न करें, उन्हें विबादी स्वर कहते हैं। किंतु ऐसे नहीं लगनेवाले त्याज्य विवादी स्वर कभी-कभी बड़े-बड़े गुणीजनों द्वारा बड़ी कुशलता के साथ वक्र गति से प्रयोग में लाए जाते हैं। विवादी स्वर की यह व्यवस्था केवल राग की सुन्दरता, रंजकता और महत्ता बढ़ाने के लिए ही कुशल कलाकारों द्वारा सम्भव हो सकती है, अन्यथा

विवादी स्वर राग को नष्ट-भ्रष्ट कर देनेवाला स्वर है। इसी कारण इसकी तुलना राग-रूपी राज्य में शत्रु से की गई है। इसे राग का शत्रु-स्वर भी कह सकते हैं। विवादी स्वर को राग-रचना के स्थूल नियमों में वैध नहीं माना जा सकता।

वक्र स्वर

वक्र का अर्थ होता है टेढ़ा, अर्थात् राग में जिन स्वरों का प्रयोग वक्र (टेढ़े) रूप से किया जाता है, उन स्वरों को वक्र स्वर कहते हैं। आरोहावरोह-क्रम से राग - रचना में जिन स्वरों का सीधा प्रयोग न होकर टेढ़े रूप से हो; जैसे—ग म रे सा इसमें ग स्वर वक्र रूप में प्रयुक्त हुआ; इसी प्रकार ध म प में ध वक्र हुआ है; इसी प्रकार अन्य स्वरों में भी हो सकता है।

वर्जित स्वर

राग-रचना में नहीं लगनेवाले स्वर वर्जित स्वर कहलाते हैं। औडव जाति के रागों में कोई दो स्वर (षड्ज, मध्यम और पंचम को छोड़कर) तथा षाडव जाति के रागों में (षड्ज को छोड़कर) कोई एक स्वर वर्जित स्वर हो सकता है। किन्तु यहाँ यह बात ध्यान देने की है कि विवादी स्वर और वर्जित स्वर में अन्तर है। विवादी स्वर का प्रयोग राग में कुशल कलाकारों द्वारा किया जा सकता है, किंतु वर्जित स्वरों का प्रयोग ही नहीं किया जा सकता।

पकड़

राग में प्रयुक्त होनेवाले उन प्रधान स्वरों का समूह, जो तुरन्त ही राग के शुद्ध रूप का परिचय दे सके, उसे पकड़ के स्वर या राग का मुख्य अंग कहते हैं। जैसे यमन राग में ध नि रे ग, नि़ रे सा। यह स्वर-समूह इस राग की पकड़ हुई।

अलंकार

अलंकार शब्द का सीधा अर्थ सजाने की वस्तु से है। स्त्री-पुरुष अपने शरीर को सजाने के लिए जिन बहुमूल्य वस्तुओं,

आभूषणों (गहनों) का प्रयोग करते हैं, उन्हें हम अलंकार कहते हैं। मकान के सजाने के जो उपकरण होते हैं, उन्हें भी अलंकरण के उपकरण या अलंकार कहते हैं। संगीत में गायन-वादन के क्रम में स्वरों के निश्चित व क्रमानुसार आरोहावरोह के साथ एक ही गति में लगातार कहने की क्रिया अलंकार-अभ्यास कहलाता है। इन्हीं अलंकारों के अभ्यास से सिद्ध कलाकार विविध प्रकार की तानों के द्वारा विस्तार करते हैं। राग-विस्तार एवं गायकी की प्रभाव-पूर्णता या वादक की समस्त चतुरता इस अलंकार-अभ्यास पर ही सिद्ध मानी जाती है। स्वर-प्रस्तार, राग-प्रस्तार एवं तान या टुकड़ों के अनेक चमत्कारवर्धक तत्त्व अलंकार-अभ्यास से ही सिद्ध होते हैं।

एक स्वर का प्रस्तार आर्थिक, दो स्वरों का प्रस्तार गाथिक, तीन स्वरों का प्रस्तार सामिक, चार स्वरों का स्वरान्तर, पाँच स्वरों का औडव, छह स्वरों का षाडव तथा सात स्वरों का स्वर-प्रस्तार सम्पूर्ण जाति का होगा। सप्त स्वरों के विविध स्वर-प्रस्तार अनेकों बन सकते हैं।

आलाप

राग में प्रयुक्त होनेवाले स्वरों के विविध आनन्ददायक एवं चमत्कारपूर्ण संयोजनों के समूह, जिनमें प्रायः वादी, संवादी स्वर, ग्रह, अंश, न्यास आदि स्वरों का ठीक-ठीक प्रयोग होता हो, आलाप कहलाते हैं। ये आलाप राग की प्रकृति के अनुसार राग के अनेक स्वर-संयोजनों में विविध भावों को प्रस्तुत करते हैं। साथ ही स्वरों के इन संयोजनों में यदि कविता के शब्दों का प्रयोग करने लगें, तो वे बोल-आलाप कहलाएँगे। इन बोल-आलापों से काव्यगत भावों का उपयुक्त प्रकाशन हो जाता है। आलाप करते समय गायक स्वरों का नाम न लेते हुए प्रत्येक स्वर को 'अ या आ' उच्चारण करते हैं। वादक केवल स्वर-संयोजनों को बजाकर बार-बार न्यास करते चलते हैं। इस क्रिया में जिन स्वरों से आलाप प्रारंभ करते हैं, वे स्वर ग्रह-स्वर तथा जिन स्वरों पर आलाप की समाप्ति होती है, वे स्वर न्यास के स्वर कहलाते हैं।

तान

राग-विस्तार में अलंकारों के माध्यम से स्वरों के विविध चमत्कारपूर्ण प्रयोग द्रुत एवं अतिद्रुत गति में होते हैं, उनको तान कहते हैं ! तान शब्द तनु धातु से प्राप्त विस्तार करने के अर्थ में कहा गया है । तन्यते इति तानम् । अर्थात् जिस क्रिया से राग का फैलाव या विस्तार किया जाए और जिन विविध कलात्मक प्रयोगों से राग का पूर्ण रूप प्रकट किया जा सके । राग का स्वरूप प्रकट करने में जिन अलंकारिक उपकरणों का उपयोग किया जाता है, उनमें तानों या तोड़ा-फिक्रों का विशेष महत्त्व है । गुणीजन इसी विशिष्ट गुण से राग को प्रभावोत्पादक बनाते हैं और अभ्यासक्रम में शिष्यों को अलंकारों के बहुविध प्रकारों का अभ्यास करते हैं, जिससे गायन में गले (कण्ठ) की चलन तथा सितार, वीणा, वायोलिन, सरोद आदि तन्त्र वाद्यों व बाँसुरी आदि सुषिर वाद्यों पर हाथ के चलन में गति-अवरोध नहीं होता । अतः गायन या वादन-कला के राग - विस्तार - क्रम में तानों का विशेष महत्त्व माना जाता है ।

तान कई प्रकार की होती हैं । जैसे—सरल तान, अलंकारिक तान, कूट तान, वक्र तान, फिरत की तान, जबड़े की तान, चक्करदार तान, गमक की तान, सपाट तान, छूट की तान, मुर्की की तान आदि ।

मुर्की

गायन या वादन की क्रिया में एक ही झटके में (या एक ही स्ट्रोक में) स्वर गले से निकाल जाना या वाद्य पर बजाना और अंतिम स्वर पर तान को समाप्त कर देने की क्रिया को मुर्की कहते हैं। इसका प्रयोग प्रायः टप्पे की गायकी में अधिक किया जाता है ।

खटका

गायन-वादन में जब दो या अधिक स्वरों को एक झटके के साथ कहते हैं, उसे खटका कहते हैं ।

कण या स्पर्श स्वर

आलाप करते समय गायक या वादक जब एक स्वर से दूसरे स्वर पर पहुँचता है तब वह उस स्वर के आसपास के स्वर की

आवाज खींचता हुआ अपने अभीष्ट स्थान पर आता है। इस क्रिया में जिन स्वरों की ध्वनि को वह स्पर्श करता है, वे स्वर कण या स्पर्श के स्वर कहलाते हैं।

मींड़

यह गमक का एक प्रकार है। जब गायक या वादक अपने स्वरों के समूह को एक ही झटके में एक ही साथ कहते या बजाते हैं, तब यह क्रिया मीड़ की क्रिया कहलाती है। इसका अधिकतम प्रयोग सितार या वीणा अथवा सरोद आदि के वादन में देखने में आता है।

तोड़ा

गायन में तानों की जो विविधता देखी जाती है और द्रुत गति से चमत्कारिक टुकड़ों (स्वर-समूहों) का प्रयोग किया जाता है, वाद्यों के वादन में इसी क्रिया को या गायन की तानों को तोड़ा कहते हैं।

जमजमा

सितार, वीणा या वायोलिन में एक ही बार के तार छेड़ने में दो-दो स्वरों के जोड़ों को एकसाथ बजाते हुए दूसरे स्वरों के जोड़ों पर पहुँचने की क्रिया जमजमा की क्रिया कहलाती है। गायन में इस क्रिया को गिटकिरी की क्रिया कहते हैं, जैसे—सा रे सा रे, रे ग रे ग, ग म ग म, म प म प आदि। इस प्रकार की तान गिटकिरी की तान कहलाती है।

घसीट

सितार, सरोद, वीणा आदि तन्त्र वाद्यों में वादन के समय जब किसी स्वर को एक ही आघात में दूसरे स्वर तक शीघ्रता से घसीट कर पहुँचाते हैं तथा इस क्रिया में ध्वनि (नाद) का क्रम टूटे नहीं, वरन् बीच के समस्त स्वर घसीटते हुए स्पर्श करें तथा अभीष्ट स्वर तक ध्वनि पहुँचे; तब उन घसीट के स्वरों या इस क्रिया को घसीट की क्रिया कहते हैं। इस क्रिया में एक विशेष प्रकार का चमत्कार होता है तथा आनन्द का अनुभव होता है।

जोड़-झाला

सितार, सरोद, वायलिन, वीणा तथा बाँसुरी आदि वाद्यों में यह क्रिया होती है। इस क्रिया में बाज के तार पर एक प्रहार तथा अन्य प्रहार चिकारी या तार षड्ज पर अति शीघ्रता के साथ द्रुत लय में किया जाता है। झाले की क्रिया अधिकांशतः तीनताल में ही प्रचलित है। अन्य तालों में भी छन्द बनाकर झाले का काम किया जाता है। किन्तु साधारणतः अन्य तालों के झाले प्रचार में कम हैं। त्रिताल के झाले में मुख्य रूप से एक प्रहार बाज के तार के स्वरों पर तथा अन्य शेष तीन प्रहार चिकारी के तार पर करने का प्रचार है। किन्तु जब झाले के विभिन्न प्रकारों का प्रदर्शन होता है तब उक्त क्रिया में उलट-पुलट कर झाले की सुन्दरता और चमत्कार उत्पन्न किया जाता है। झाले के प्रकारों में विभिन्न छन्दों का प्रयोग किया जाता है। इन्हीं छन्दों के आधार पर झाले में विचित्रता का काम, कठिन लयों का प्रदर्शन, लड़ंत-भिड़ंत आदि के काम बड़े आकर्षक एवं सुन्दर ढंग से प्रदर्शित किए जाते हैं। झाले के कुछ बोल इस प्रकार हैं—दा रा रा रा, दा रा रा रा। दा रा दा, दा रा दा, दा रा। रा दा रा रा, रा दा रा रा। दिर दिर दिर दिर दारा रा रा, दिर दिर दिर दिर दारा रा रा। झाले के कई प्रकार हैं, जैसे—सुलट झाला, उलट झाला, जोड़-झाला आदि।

जोड़

गायकी में रागांग स्वरों के विविध संयोजन जो आलाप कहलाते हैं, उन्हें सितार, वीणा आदि तन्त्र वाद्यों पर बजाने को जोड़ कहते हैं।

संगीत-साधना में ताल-विचार

प्रकृति एक निश्चित गति के साथ अपने निश्चित अनुक्रम पर चलती है। सूर्य नित्य प्रातःकाल पूर्व दिशा में उदय होता है और पश्चिम में अस्त। चन्द्र, नक्षत्रादि सभी एक निश्चित समयानुसार गतिमान रहते हैं। नियम से चलनेवाले युगों-युगों तक जीते हैं। घड़ी एक-सी गति में टिक-टिक करती हुई निश्चित समय की

प्रामाणिकता को प्रशस्त करती है। एक-सी गति में चलते हुए, दायाँ-बायाँ करते हुए सिपाही दुर्गम पहाड़ों को पार करते हुए समय पर निश्चित स्थान पर पहुँच लेते हैं।

संगीत की साधना में, चाहे वह गीत-गायन हो, वाद्य-वादन हो या नृत्य हो; स्वरों का एक गति में कहना, आरोहावरोह के निश्चित क्रम में अलंकारों से विभूषित स्वर-रचना को एक निश्चित गति में कहना, संगीत का आकर्षक तत्त्व है। इसी एक तत्त्व पर संगीत आनन्ददायक होता है। संगीत की गति यानी चाल एक नियमित समय और उसके नियमित विधान से नियंत्रित होती है। गीत-गायक, गत-वादक या नृत्यकार एक स्थान से प्रारम्भ करते हैं तथा निश्चित गति में पुनः अपने स्थान पर लौटते हैं। संगतिकार अवनद्ध वाद्य पर गायक, वादक या नृत्यकार के साथ संगति करते हुए, उनकी गति को बतलाते हुए जब एक स्थान पर दोनों को मिलना होता है, वही संगीत का आकर्षक, मनोरंजक तथा आनन्दोत्पादक तत्त्व है।

स्वर-संयोजना को, उसकी गति और तौल (Balance) को परखने के लिए पिंगल शास्त्र के अनुसार छन्दों की मात्रा या वर्ण-व्यवस्था को समझना आवश्यक है। छन्द की मात्राएँ या उनके वर्ण (मगण, नगण, सगणादि) गेय गीत या वाद्य धुन या गत की गति, चाल और उसके तौल को व्यवस्थित करते हैं। छन्दों की मर्यादा है। छन्द भले ही एक-सी मात्रा के हों, वर्णों की भिन्नता से, लघु-गुरु शब्दों की योजना से गति में भिन्नता आ जाती है। उदाहरणार्थ—सूलफाक्ता, झपताल, करालमंच, चर्चरी आदि एक-सी समान मात्राओं की तालें हैं, किन्तु छन्द-गणना में मात्राओं और वर्णों की योजना के अनुसार उसकी गति भिन्न हो जाने से गुणीजन गीत-गायन, गत-वादन, या नृत्य में तदनुकूल ही गतिसूचक ताल की योजना कर लेते हैं। इसी गति के आधार पर प्रयुक्त ताल की संगति से संगीत आनन्दवर्द्धक होता है।

गीत, वादन तथा नृत्य में समय की एक-सी नियमित गति को लय कहते हैं। कभी-कभी यह चाल या गति धीमी होती है। कभी-कभी सम (न धीमी न तेज) यानी मध्य होती है और

कभी-कभी द्रुत यानी तेज होती है। इसी को विलम्बित, मध्य और द्रुत कहते हैं। संगीत में गति की नियमितता उसका अनुशासन है।

अकालज्ञमतालज्ञमशास्त्रज्ञं च वादनम् ।
चर्मघातकमित्येवं प्रवदन्ति मनीषिणः ॥

संगीत में लगनेवाले समय और उसकी गति (ताल) को न जाननेवाले और शास्त्र-ज्ञान के बिना कुछ भी बजानेवाले को मनीषी केवल मरीखाल पीटनेवाला कहकर उपेक्षित व्यक्ति मानते हैं, यानी सम्मान नहीं देते। अतः ज्ञात होता है कि कालज्ञ और गतिज्ञ की कितनी बड़ी प्रतिष्ठा होती है—संगीत-साधना में जो उसका मानो मूलाधार है। वादक के आवश्यकीय गुणों की चर्चा में कहा गया है, 'यतितालज्ञयाभिज्ञः' यानी जो वादक गति को समझकर उसके ठहरने के स्थान, गति, ताल यानी मात्राओं या वर्णों के चलन और लय का ज्ञान रखते हुए अवधान से सावधान रहता है, वह कुशल वादक होता है।

तालस्तलप्रतिष्ठायामितिधातोर्धञि स्मृतः ।
गीतं वाद्यं तथा नृत्यं यतस्ताले प्रतिष्ठितम् ॥

ताल शब्द की व्युत्पत्ति तल् धातु से है, जिसका प्रयोग प्रयोजन प्रतिष्ठा या स्थापना के अर्थ में होता है। गीत, वाद्य या नृत्य की गति को व्यवस्थित एवं नियन्त्रित रखनेवाली क्रिया ताल कहलाती है। ताल की गति लय है। संगीत में काल या समय की गति को नियंत्रित एवं मर्यादित रखनेवाली क्रिया लय एवं ताल है।

जिस लय या चाल (गति) की चर्चा ऊपर की गई है वह द्रुत, मध्य और विलंबित के नाम से शास्त्रों में व्यवहृत है। द्रुत लय जिस चाल को हम कहते हैं, उससे आधी तेज चाल मध्य लय होती है और मध्य लय की आधी चाल विलंबित होती है। विलंबित और भी धीमी चाल को कहते हैं या यों कहिए कि द्रुत लय में जितना समय लगता है, उससे दूने समय में मध्य लय का

निर्वाह होता है। मध्य लय के समय से दूना समय विलंबित-लय में लगता है।

द्रुतो मध्यो विलम्बश्च द्रुतः शीघ्रतमो मतः ।
द्विगुणा द्विगुणौ ज्ञेया तस्मान्मध्यौविलम्बितौ ॥

गायन, वादन या नृत्य की साधना में लगनेवाले समय की गति स्थिर होने पर उसके समय को हाथ की ताली से नापा जाता है। समय अनन्त है, फिर भी उसकी निर्बाध गति की मर्यादा को कुछ मात्राओं की इयत्ता तक नापते हैं। संगीत में निबद्ध रचना के छन्द और उसकी मात्रिक या वर्णिक योजना को तथा यतियों को व्यवस्थित रूप से समझकर ताल का विधान किया जाता है। गीत-गायन, वाद्य-वादन या नृत्य के अनुरूप इस ताल की योजना करने से गति और मात्राओं की अनुरूपता और एकरूपयोजना ही संगीत को आनन्ददायक बनाती है।

ताल-योजना की अनुरूपता और एकरूपता न रहना संगीत को तो नष्ट करती ही है, उसके उचित प्रयोग न करने पर शास्त्रकारों ने साधकों को होनेवाले अनर्थ से भी सतर्क किया है।

तालहीने कायरोगो धातुहीने धनक्षयः ।
मातुधातुप्रदं यत्र नास्ति तद्घातको रिपुः ॥

तालहीन होने पर गायक-वादक या नृत्यकार (संगीत-साधक) शरीर की पीड़ा से दुःखी होता है। धातुहीन होने पर साधक के धन का नाश होता है। तालावधानयुक्त धातुसम्पन्न साधक मातु-धातु दोनों का आनन्दोपभोक्ता होता है, उसको क्षति पहुँचा सकने की शक्ति शत्रु को भी नहीं हो पाती। अतः साधक को सुतालज्ञ होना चाहिए।

विनातालेन गीतादे गीतिशुद्धिर्न जायते ।
कर्णधार विना नादं इतस्ततेति कथमते ॥

गीतादि की शुद्धता या सिद्धि बिना ताल के स्थापित नहीं होती; जैसे बिना खेनेवाले कर्णधार के नाव नदी में इधर-उधर डगमगाती है, किसी कूल-किनारे नहीं लग पाती।

इन प्रमाणों के आधार पर यह सिद्ध है कि संगीत में समय की गति और उसकी नियमितता लय और ताल पर किस प्रकार प्रतिष्ठत होती है तथा उसका क्या महत्त्व है। समय की इस गति के दस अंगों को ताल के दस प्राणों के नाम से शास्त्रों में कहा गया है। 'संगीत - पारिजात' में तालाध्याय में इस प्रकार कहा गया है :—

कालो मार्गः क्रियाङ्गानि ग्रहो जातिः कला लयः।
यति प्रस्तारकश्चेति तालप्राण दशस्मृताः ॥

विस्तार के भय से इनकी व्याख्या हम यहाँ नहीं कर रहे हैं। अगले भाग में इन्हें विस्तार सहित समझाएँगे। संक्षेप में तालों के नाम, उनके बोल, भाग, खाली-ताली का परिचय देते हुए तालों के पारिभाषिक शब्दों का सूक्ष्म परिचय देंगे।

सम

गीत-गायन या वाद्य की गति का चलन या नृत्य की गति जिस लय पर व्यवस्थित होती है और उनकी संगत के वाद्य (तबला या पखावज) जिस ताल में संगति करके एक स्थान पर मिलते हैं, ताल का वह सम्मिलन-स्थान या ताल की पहली मात्रा सम कहलाती है। यह आवश्यक नहीं है कि सम किसी ताल की ताली लगाए जानेवाले स्थान पर ही आए। रूपक में सम खाली के स्थान पर ही होता है। अर्थात् सम और खाली, एक ही स्थान (पहली मात्रा) पर होती है।

खाली तथा भरी या ताली

किसी ताल में ताल देते हुए जब हम मात्राओं की गणना करते हैं, जहाँ ताली नहीं देते वरन् ताल के भाग का संकेत करते हैं, उस भाग को खाली तथा जिन भागों पर ताली देते हैं,

उन्हें हम भरी या ताली कहते हैं। जैसे त्रिताल में १६ मात्रा, विभाग–४, ताली १,५ और १३ पर तथा खाली ९ पर है।

आवर्तन

एक ही ताल और उसके विस्तार यानी रेले, परन या टुकड़ों-सहित उसका गायन, वाद्य की गत या नृत्य की गति के साथ घूमकर गायन-वादन या नृत्य के साथ तालानुसार सम पर मिलने में ताल के दो या अधिक बार घुमाने की क्रिया को आवर्तन कहते हैं।

बेलय

गाते, बजाते या नाचते हुए गीत, गत या नृत्य की गति से या चाल से हटकर संगत की चाल की ओर ध्यान देते हुए गाने, बजाने या नाचने की क्रिया बेलय कही जाती है।

जिस क्रिया में लय का साम्य नहीं रहता, वह क्रिया बेलय क्रिया कहलाती है।

बेताल

इसको बेताला भी कहते हैं, अर्थात् ताल से विलग होना। कोई भी संगीत-कलाकार जब कला - प्रदर्शन के समय ताल की विभिन्न मात्राओं, खाली या सम से अलग होकर चलता है, और उसके गत, गीत या अन्य बोलों का सम, खाली या मुखड़ा निश्चित मात्रा पर नहीं आता, तो बेताल या बेताला कहा जाता है।

सम ताल एवं विषम ताल

जिन तालों की मात्राएँ समान भागों में समान रीति से विभक्त होती हैं, उन्हें हम सम ताल कहते हैं, जैसे—त्रिताल में कुल १६ मात्राएँ चार भागों में समान रूप से विभक्त हैं :—

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
×				२				०				३			

जिन तालों की मात्राओं के भाग विषम रीति से विभक्त होते हैं, उनको विषम ताल कहते हैं; जैसे—रूपक और झप ताल।

रूपक

१	२	३	४	५	६	७
×			०		२	

स्वर-चिह्न-परिचय

इस वंशी-वादन पुस्तक में स्व० पं० भातखंडे की स्वरलिपि-पद्धति का अनुसरण किया गया है। फिर भी स्वर-चिह्न-परिचय दे देना अति आवश्यक है। जिन स्वरों के नीचे बिन्दु हो, वे स्वर मन्द्र सप्तक में बजाए जाएँगे। जैसे—नि़ ध़ प़ म़ इत्यादि। मध्य सप्तक का कोई स्वर-चिह्न नहीं होता। जिन स्वरों के ऊपर बिन्दु हो, वे स्वर तार सप्तक में बजाए जाएँगे। जैसे—सां, रें, गं, मं, पं इत्यादि।

शुद्ध स्वरों के लिए कोई भी स्वर-चिह्न नहीं होता। कोमल स्वरों का स्वर-चिह्न स्वरों के नीचे 'लेटी पाई' जैसे—<u>रे</u>, <u>ग</u>, <u>ध</u> <u>नि</u> है। तीव्र स्वर के लिए स्वर के ऊपर 'खड़ी पाई' जैसे—मं॑। एक मात्रा के लिए कोई चिह्न नहीं होगा।

एक मात्रा में दो स्वर बजाने के लिए पहले दो स्वर लिखकर अर्धचन्द्र का चिह्न नीचे बना देना चाहिए। जैसे—सासा, सारे, साग, रेम। इसी प्रकार एक मात्रा में तीन स्वर लिखने के लिए तीनों स्वर लिखकर, नीचे अर्धचन्द्र का चिह्न बना देना चाहिए। जैसे—सासासा, रेरेरे, गगग, ममम इत्यादि। इसी प्रकार एक मात्रा में चार स्वर लिखकर अर्धचन्द्र का चिह्न बनाना चाहिए। जैसे—सासासासा, रेरेरेरे, गगगग, मममम। इसी प्रकार एक

मात्रा में जितने भी स्वर लिखना चाहें, लिखकर अर्ध चन्द्र का चिह्न बना देना चाहिए।

दो मात्रा में तीन स्वर

१ २
जैसे—साऽरे ऽगऽ इत्यादि।

तीन मात्रा में दो स्वर

१ २ ३ ४ ५ ६
जैसे—साऽ ऽरे ऽऽ गऽ ऽम ऽऽ इत्यादि।

चार मात्रा में पाँच स्वर

१ २ ३ ४
जैसे—साऽऽऽरे ऽऽऽगऽ ऽऽमऽऽ ऽपऽऽऽ इत्यादि।

चार मात्रा में छह स्वर

१ २ ३ ४
जैसे—साऽऽऽरेऽ ऽऽगऽऽऽ मऽऽऽपऽ ऽऽधऽऽऽ इत्यादि।

इसी प्रकार वादक अपनी इच्छानुसार किसी भी लयकारी में तानें, बोलतानें इत्यादि बजा सकते हैं।

कर्ण या स्पर्श स्वर

रे ग म प ध नि सां रें
सा रे ग म प ध नि सां

रें रें सां नि ध प म ग
सां नि ध प म ग रे सा इत्यादि।

खटका का चिह्न

एक मात्रा में तीन स्वर झटके से बजाना; जैसे—रेसानि़ गसानि़

मुर्की-स्वरों का चिह्न

(सा) (प) (सां)
रेसानि़सा धपमप रेंसांनिसां इत्यादि।

जमजमा-स्वर का चिह्न

सा〰 रे〰 ग〰 म〰 इत्यादि।

मीड़ का चिह्न

नि़सा ध़सा रेम गप इत्यादि।

मुर्की एवं कण

(सा) (रे) (ग)
रेसानि़सारेसा गरेसारेगरे मगरेगमग इत्यादि।

ताल-मात्रा-लय का चिह्न

एक मात्रा का कोई स्वर-चिह्न नहीं है। जहाँ तक ही स्वर हो एवं उसके आगे कोई पाई या रेखा न हो तो उसे एक ही मात्रा का स्वर समझना चाहिए।

दो मात्रा का स्वर लिखने के लिए स्वर के आगे लेटी पाई लगेगी, जैसे—सा – रे – ग – इत्यादि।

इसी प्रकार से तीन एवं चार मात्रा का स्वर लिखने के लिए पड़ी रेखाओं की संख्या बढ़ती जाएगी।

जैसे—तीन मात्रा लिखने के लिए सा – –, रे – –, ग – – इत्यादि। इसी प्रकार चार मात्रा के लिए सा – – –, रे – – –, ग – – – इत्यादि।

ताल में सम का चिह्न यह (×) है। सम के अतिरिक्त दूसरी तालियाँ जहाँ-जहाँ पड़ती हैं, वहाँ-वहाँ संख्या दी

गई हैं। जैसे—तीनताल में सम के अतिरिक्त पाँच एवं तेरह पर दूसरी एवं तीसरी ताली है, वहाँ पाँच के स्थान पर दो, तेरहवीं के स्थान पर तीन की संख्या लिख दी जाती है।

खाली का चिह्न शून्य (०) से प्रदर्शित किया गया है। सम प्रत्येक ताल की प्रथम मात्रा को कहते हैं।

कुछ प्रचलित तालों के बोल-सहित ठेके

तीनताल

मात्रा १६, विभाग-४ ताली-१, ५ और १३ पर तथा खाली ९-वीं मात्रा पर।

ठेका

धा	धिं	धिं	धा	धा	धिं	धिं	धा	धा	तिं	तिं	ता	ता	धिं	धिं	धा
×				२				०				३			

झप ताल

झप ताल में कुल १० मात्राएँ होती हैं। विभाग–४, ताली—१, ३, ८ पर तथा खाली ६-वीं मात्रा पर होती है।

ठेका

धी	ना	धी	धी	ना	ती	ना	धी	धी	ना
×		२			०		३		

एकताल

इस ताल में कुल १२ मात्राएँ होती हैं। विभाग–६। ताली–१, ५, ९ तथा ११-वीं मात्राओं पर और खाली तीसरी तथा सातवीं मात्राओं पर हैं।

ठेका

धिं	धिं	धागे	तिरकिट	तू	ना	क	त्ता	धागे	तिरकिट	धी	ना
×		०		२		०		३		४	

चारताल (चौताल)

इस ताल में भी १२ मात्राएँ होती हैं। विभाग–६, ताली–१, ५, ६ और ११-वीं मात्राओं पर तथा खाली ३ तथा ७-वीं मात्राओं पर होती हैं।

ठेका

धा	धा	दिं	ता	किट	धा	दिं	ता	तिट	कत	गदि	गन
×		०		२		०		३		४	

तीवरा (तेवरा)

इस ताल में कुल ७ मात्राएँ होती हैं। विभाग तीन होते हैं। ताली–१, ४, ६-वीं मात्राओं पर हैं। इस ताल में खाली नहीं होती।

ठेका

धा	दिं	ता	तिट	कत	गदि	गन
×			२		३	

रूपक ताल

इस ताल में कुल सात मात्राएँ होती हैं। विभाग तीन होते हैं। ताली—४ और छठवीं मात्राओं पर तथा खाली पहली मात्रा पर होती है।

ज्ञातव्य : किंतु कुछ लोग इसमें पहली मात्रा पर सम और खाली, दोनों मानते हैं।

ठेका

ती	ती	ना	धी	ना	धी	ना
×			०		२	

दादरा ताल

इस ताल में कुल छह मात्राएँ होती हैं। विभाग केवल दो ही होते हैं। पहली मात्रा पर सम (ताली) तथा चौथी मात्रा पर खाली होती है।

ठेका

धा	धी	ना	धा	तू	ना
×			०		

कहरवा ताल

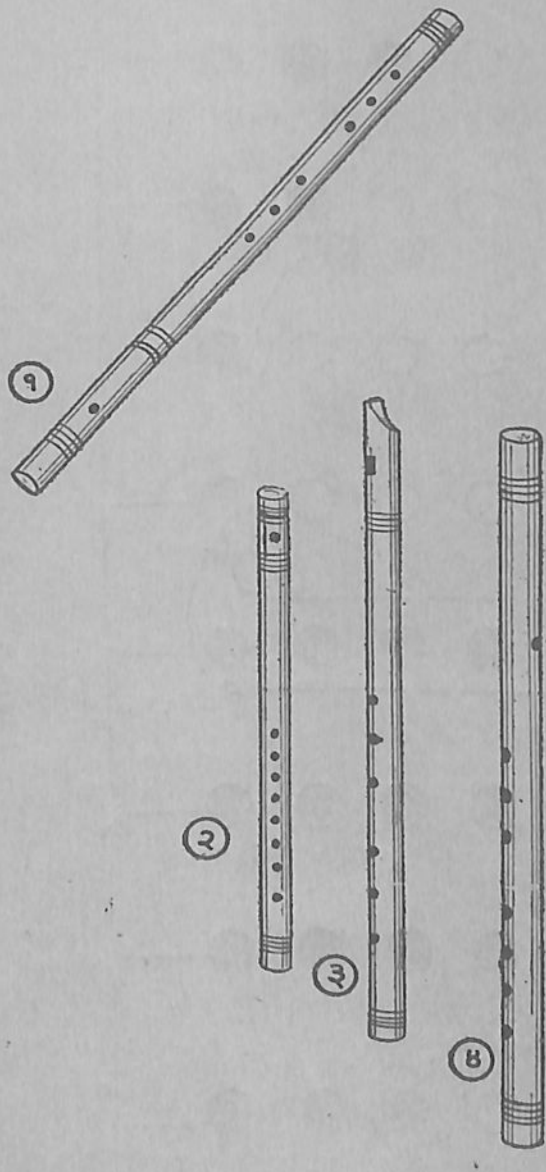
इस ताल में कुल आठ मात्राएँ होती हैं। विभाग दो होते हैं। ताली (सम) पहली मात्रा पर तथा खाली पाँचवीं मात्रा पर होती है।

ठेका

धा	गे	ना	ती	न	क	धी	न
×				०			

ज्ञातव्य : कहरवा के इन्हीं बोलों को द्रुत लय में बजाने पर ठेका केवल चार मात्राओं का हो जाता है। कुछ लोग इस ताल को केवल चार मात्रा का ही मानते हैं। चार मात्राओं के ठेके में सम (ताली) पहली मात्रा पर होती है, किन्तु खाली का स्थान पाँचवीं मात्रा से हटकर तीसरी मात्रा पर हो जाता है।

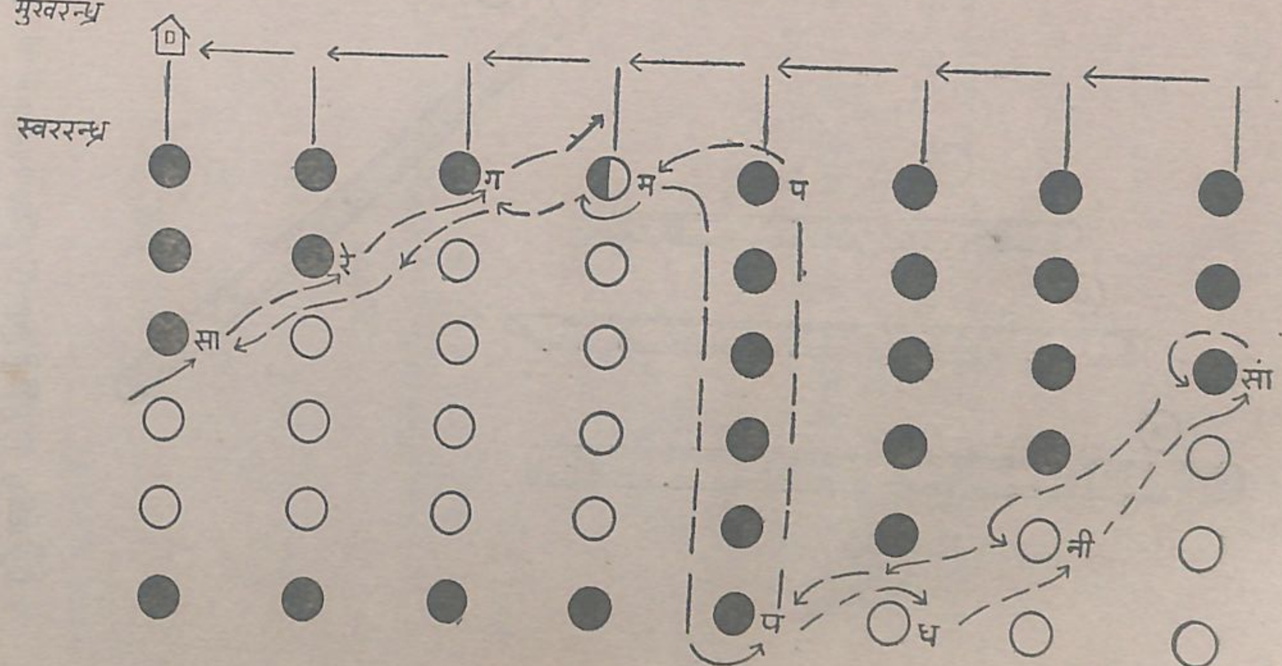
① आडी बाँसुरी ② कर्नाटकीय बाँसुरी ③ सीधी बाँसुरी ④ त्रिपुरा बाँसुरी



सीधी बाँसुरी का शुद्ध स्वरों का चित्र

सीधी बाँसुरी के शुद्ध स्वरों के छिद्र—उँगलियाँ उठाने व रखने से शुद्ध स्वरों की प्राप्ति

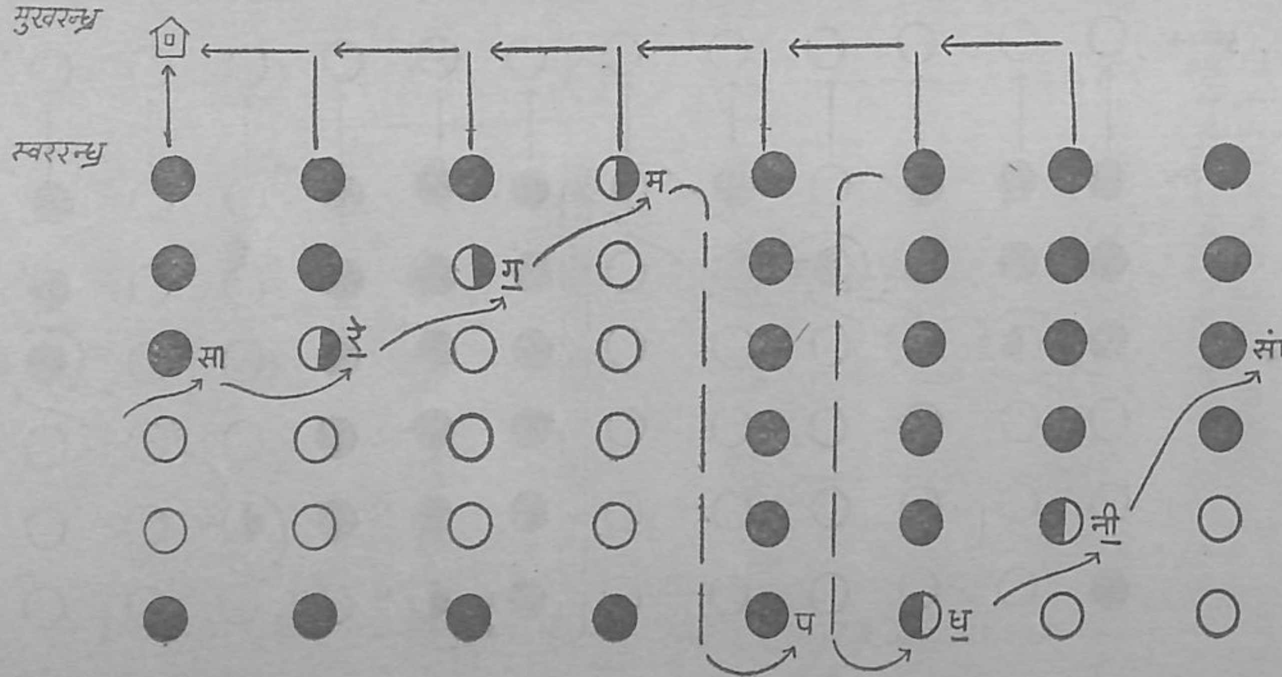
(मध्य प से तार सां तक दुगुनी फूँक)



ज्ञातव्य : इस प्रकार स्वररन्ध्रों पर उँगलियाँ उठाने व रखने से हमें शुद्ध स्वरों की प्राप्ति होगी। ये स्वर इस प्रकार से होंगे—सा रे ग म प ध नि सां । सां नि ध प म ग रे सा ॥

इस सीधी बाँसुरी में भी शुद्ध स्वरों के चित्र में मध्य सा से तार सां तक दुगुनी फूँक व जाने की क्रिया दिखाई गई है।

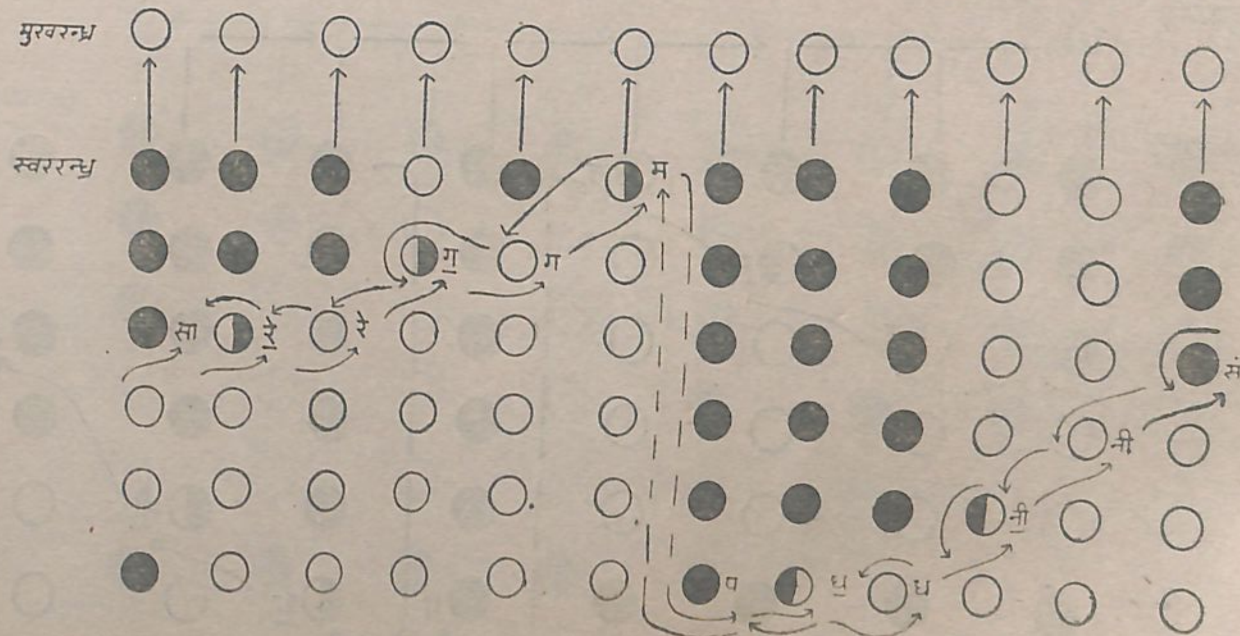
सीधी बाँसुरी का आधा छिद्र खोलने से कोमल स्वरों की प्राप्ति



सीधी बाँसुरियों के शुद्ध एवं कोमल स्वरों के छिद्र तथा उँगलियाँ उठाने व रखने से शुद्ध एवं कोमल स्वरों की प्राप्ति ।

पृष्ठ १०५ से आगे—**ज्ञातव्य :** इस प्रकार स्वररन्ध्रों में चित्र को देखकर जाना जा सकेगा कि भारतीय बाँसुरियों में कोमल स्वर केवल उँगलियों को आधी उठाकर ही निकालने की प्रथा है। त्रिपुरा बाँसुरी एवं कर्नाटकीय बाँसुरियों के अतिरिक्त सीधी या आड़ी बाँसुरियों में भी कोमल स्वर निकालने की यही प्रक्रिया है।

आरोह कोमल स्वर : सा रे॒ ग॒ म प ध॒ नि॒ सां । अवरोह कोमल स्वर : सां नि॒ ध॒ प म ग॒ रे॒ सा ॥

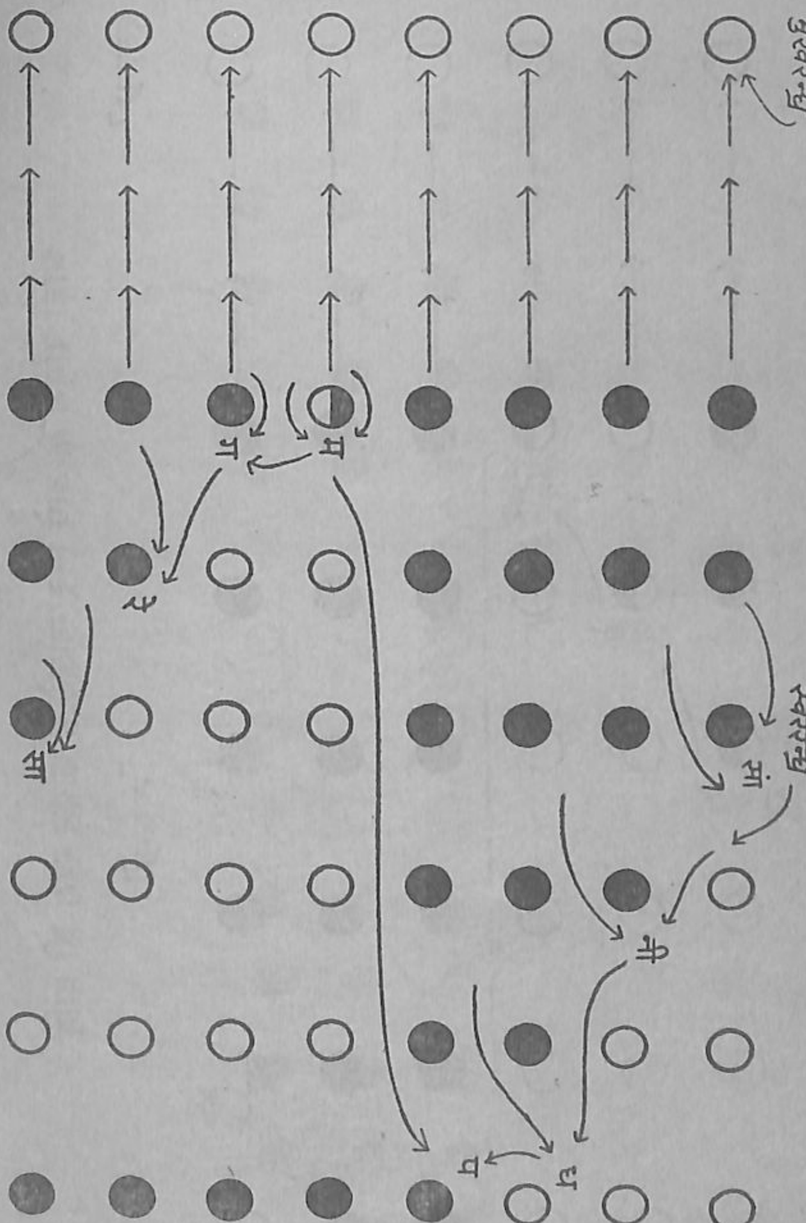


ज्ञातव्य : दाहिने हाथ की कनिष्ठका के बाद अनामिका उँगली को बंद करके एवं कनिष्ठका के सहारे बाँसुरी पकड़कर वादन कर सकते हैं।

आरोह—सा रे॒ रे ग॒ ग म म॑ प ध॒ ध नि॒ नि सां।

अवरोह—सां नि नि॒ ध ध॒ प म॑ म ग ग॒ रे रे॒ सा॥

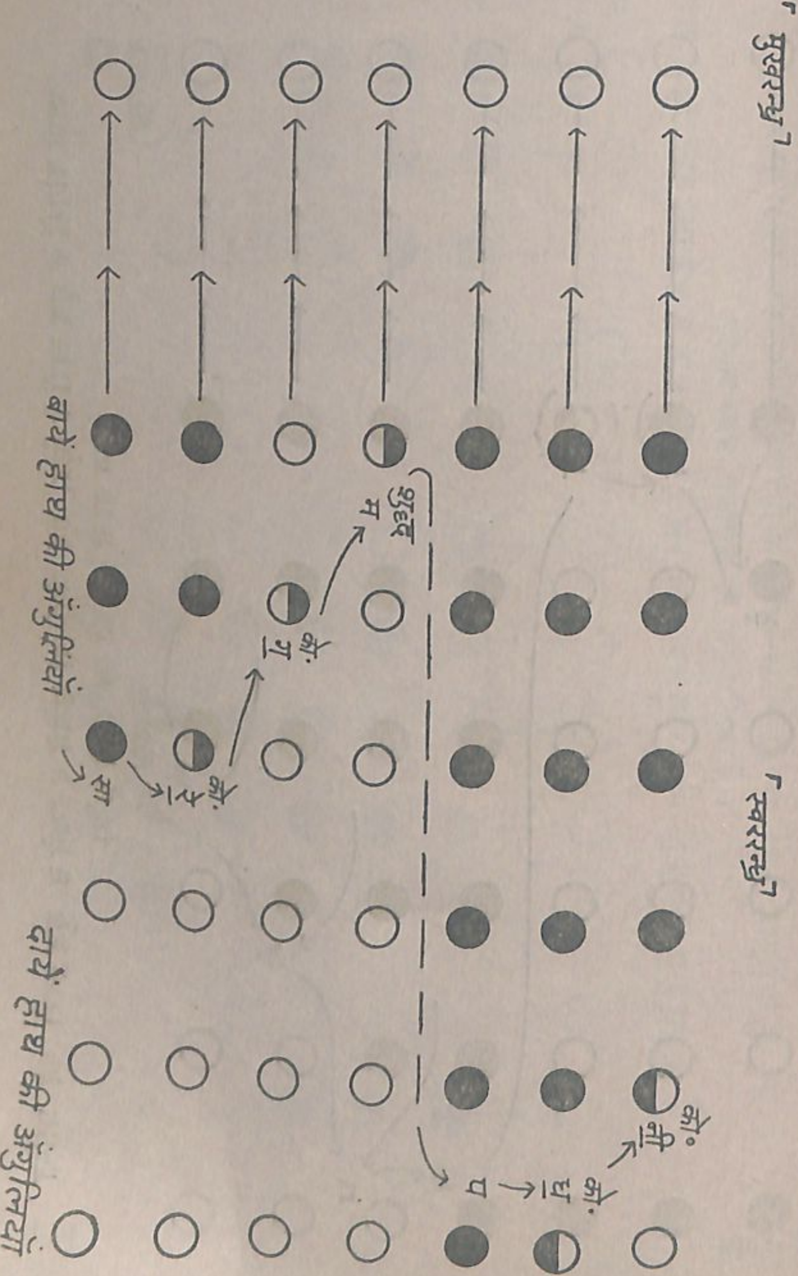
आड़ी बाँसुरी के शुद्ध स्वरों का चित्र



आड़ी बाँसुरी के शुद्ध स्वरों के छिद्र, एवं उँगलियाँ उठाने व रखने से शुद्ध स्वरों की प्राप्ति

(मध्य सा से तार सां तक दुगनी फूँक)

इस प्रकार स्वररन्ध्र पर उँगलियाँ उठाने व रखने से हमें शुद्ध स्वरों की प्राप्ति होगी, ये स्वर इस प्रकार से होंगे—सा, रे, ग, म, प ध नि सां। सां, नि, ध, प, म, ग, रे, सा। इस आड़ी बाँसुरी के शुद्ध स्वरों के चित्र में मध्य सा से तार षड्ज की ओर जाने की क्रिया दिखाई गई है। आरोह—सा रे ग म प ध नि सां।
अवरोह—सां नि ध प म ग रे सा॥

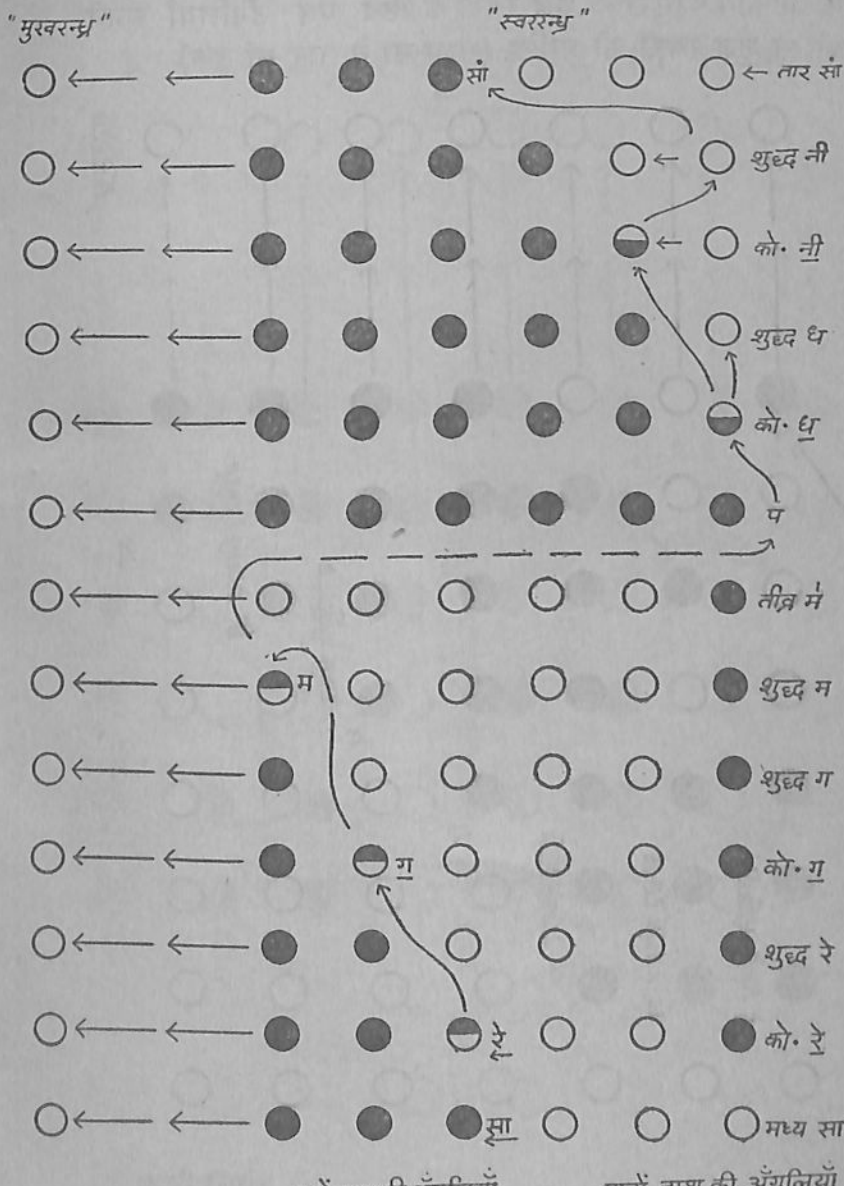


आड़ी बाँसुरी के आधे छिद्र खोलने से कोमल स्वरों की प्राप्ति

ज्ञातव्य : उक्त चित्र को देखकर जाना जा सकेगा कि भारतीय बाँसुरियों में कोमल स्वर केवल उँगलियों को आधी उठाकर ही निकालने की प्रथा है। त्रिपुरा बाँसुरी एवं कर्नाटकीय बाँसुरियों के अतिरिक्त सीधी या आड़ी बाँसुरियों में भी कोमल स्वर निकालने की यही प्रक्रिया प्रयोग की जाती है।

आरोह कोमल स्वर—सा रे ग म प ध नि सां।

अवरोह कोमल स्वर-सां नि ध प म ग रे सा ॥



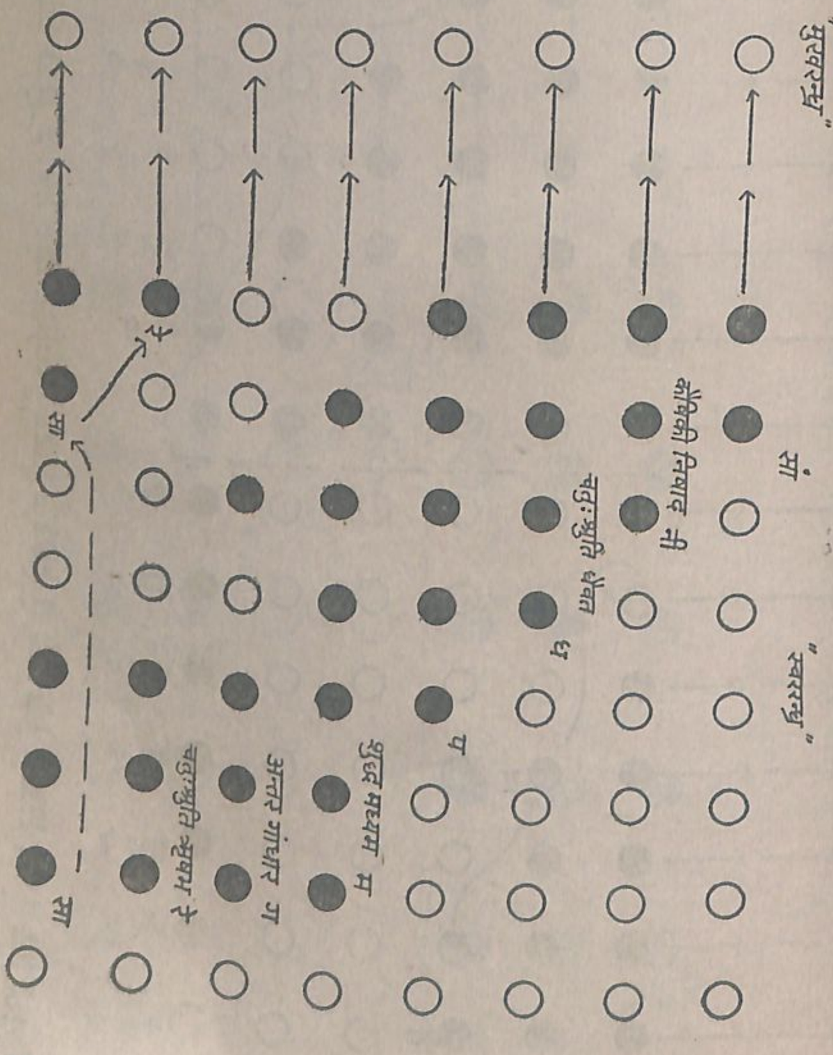
वंशी (बाँसुरी) के शुद्ध व कोमल स्वरों के छिद्र तथा उँगलियाँ उठाने व रखने से शुद्ध एवं कोमल स्वरों की प्राप्ति

ज्ञातव्य : दाहिने हाथ की कनिष्ठका के बाद अनामिका उँगली को वन्द करके भी वादन कर सकते हैं एवं सिर्फ कनिष्ठका के सहारे बाँसुरी पकड़कर वादन कर सकते हैं। यह वादक पर निर्भर है।

आरोह—सा रे रे ग ग म मं प ध ध नि नि सां ।
शुद्ध एवं कोमल स्वर
अवरोह–सां नि नि ध ध प मं म ग ग रे रे सा ।।

कर्नाटकीय बाँसुरी के शुद्ध स्वरों का चित्र

कर्नाटकीय बाँसुरी के शुद्ध स्वरों के छिद्र एवं उँगलियाँ उठाने व रखने से शुद्ध स्वरों की प्राप्ति (मध्य सा से तार सां तक)

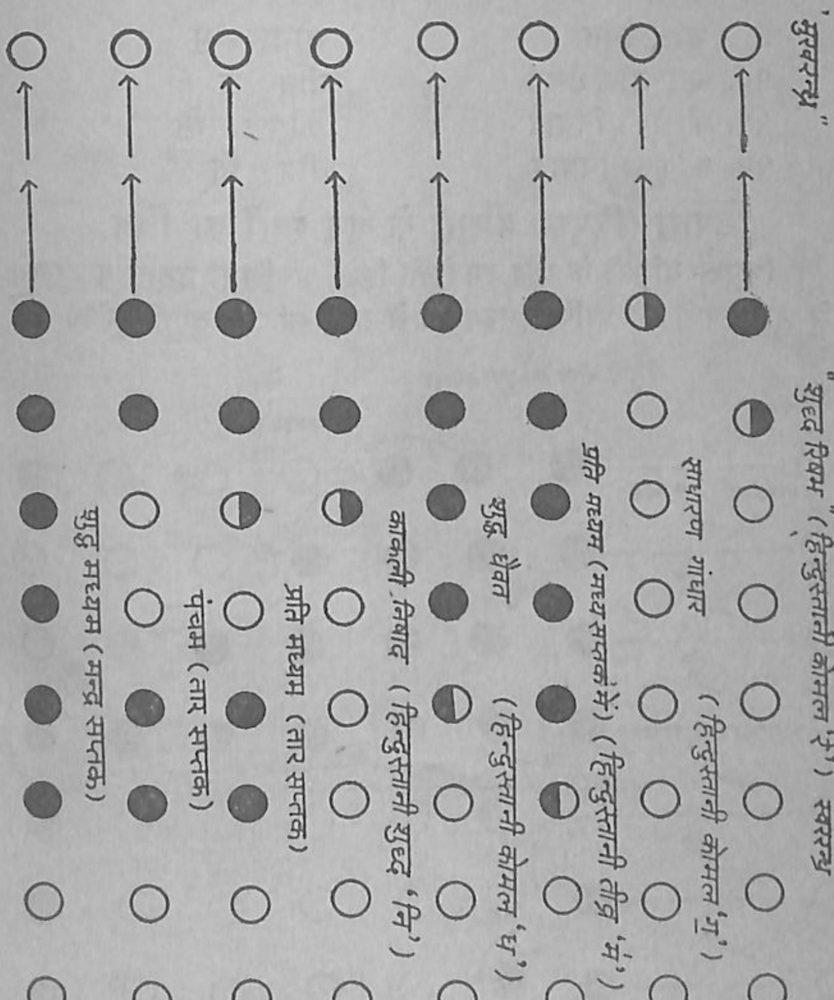


इस प्रकार स्वररन्ध्रों पर उँगलियाँ उठाने व रखने से हमें शुद्ध स्वरों की प्राप्ति होगी, ये स्वर इस प्रकार होंगे :—

सा, रे, ग, म, प ध नि सां।

सां नि ध प म ग रे सा ॥

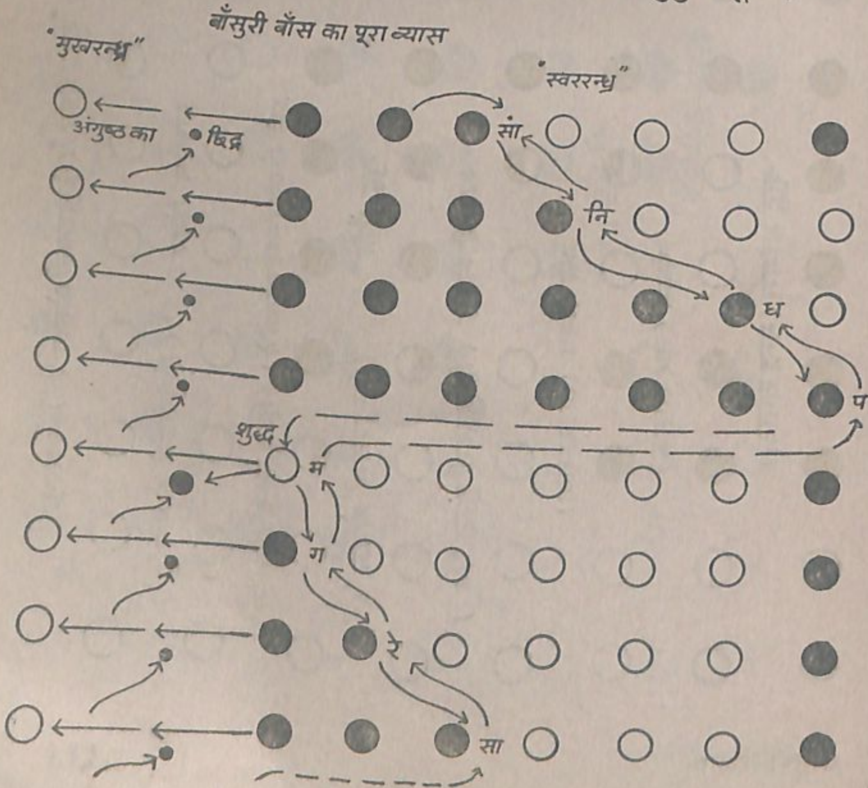
बाँसुरी के कोमल एवं तीव्र स्वरों के छिद्र तथा उँगलियाँ उठाने व रखने से कोमल एवं तीव्र स्वरों की प्राप्ति



कर्नाटकीय	हिन्दुस्तानी
१. षड्ज	षड्ज
२. शुद्ध ऋषभ	कोमल रे
३. चतुश्श्रुति ऋषभ	तीव्र रे
४. साधारण गांधार	कोमल ग
५. अन्तर गांधार	तीव्र ग
६. शुद्ध मध्यम	कोमल म
७. प्रति मध्यम	तीव्र म
८. पंचम	पंचम
९. शुद्ध धैवत	कोमल ध
१०. चतुश्श्रुति धैवत	तीव्र ध
११. कैशिकी निषाद	कोमल नि
१२. काकली निषाद	तीव्र नि

टेपारा (त्रिपुरा) बाँसुरी के शुद्ध स्वरों का चित्र

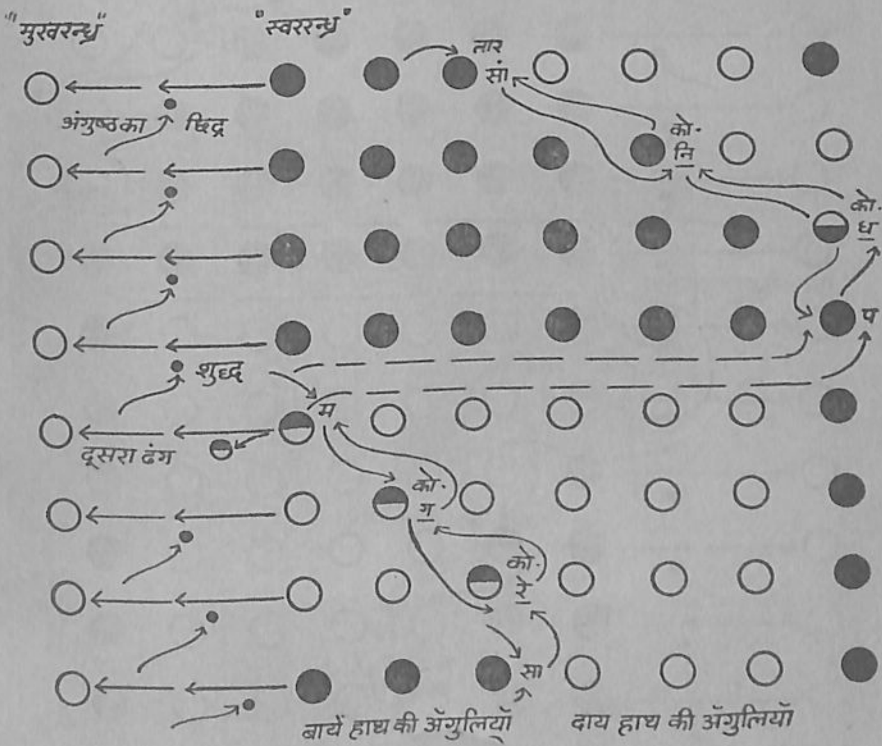
त्रिपुरा बाँसुरी के शुद्ध स्वरों के छिद्र, उँगलियाँ उठाने व रखने से शुद्ध स्वरों की प्राप्ति (मध्य सा से तार सां तक दुगुनी फूँक)।



सा, रे, ग, म, प, ध, नि, सां।
सां, नि, ध, प, म, ग, रे, सा ।।

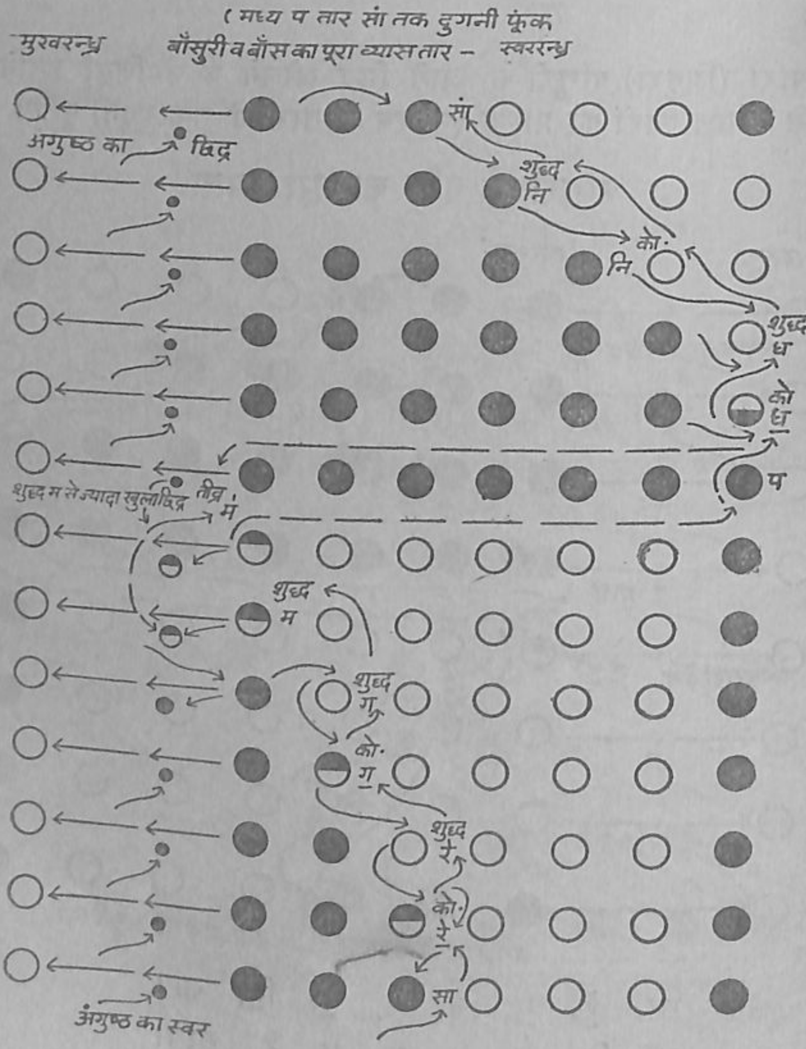
टेपारा (त्रिपुरा) बाँसुरी के आधे छिद्र खोलने व उँगलियाँ उठाने से कोमल स्वरों की प्राप्ति (मध्यम से तार सां तक दुगुनी फूँक)

बाँसुरी के बाँस का पूरा व्यास



सा, रे॒, ग॒, म, प, ध॒, नि॒, सां।
सां, नि॒, ध॒, प, म, ग॒, रे॒, सा ।।

टेपारा (त्रिपुरा) बाँसुरी के शुद्ध एवं कोमल व तीव्र स्वरों के छिद्र तथा उँगलियाँ उठाने व रखने से शुद्ध, कोमल एवं तीव्र स्वरों की प्राप्ति



सा, रे॒ रे ग॒ ग म मं प ध॒ ध नि॒ नि सां ।

सां नि नि॒ ध ध॒ प मं म ग ग॒ रे रे॒ सा ।।

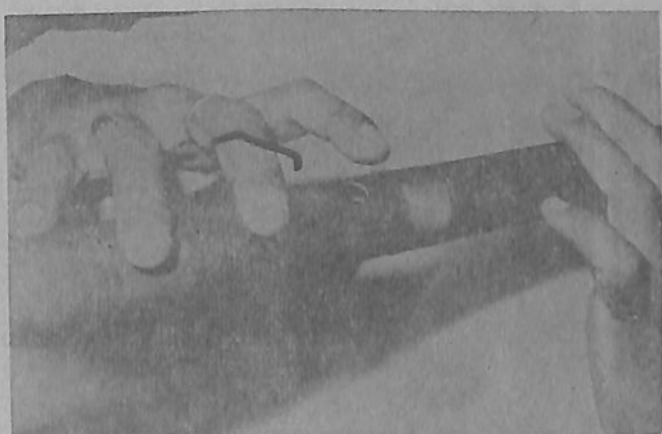
सा→





←रे

ग→





म



प

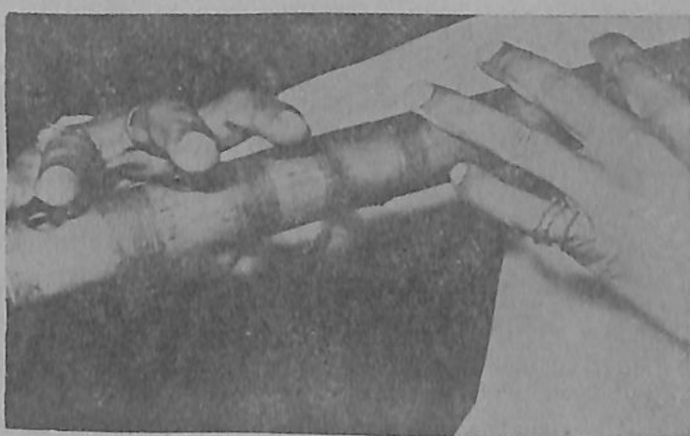
ध→



←नि



सां→



स्वराभ्यास के लिए अलंकार

१. सा, रे, ग, म, प, ध, नि, सां। सां, नि, ध, प, म, ग, रे, सा ॥

२. सासा, रेरे, गग, मम, पप, धध, निनि, सांसां। सांसां, निनि, धध, पप, मम, गग, रेरे, सासा ॥

३. सासासा, रेरेरे, गगग, ममम, पपप, धधध, निनिनि, सांसांसां। सांसांसां, निनिनि, धधध, पपप, ममम, गगग, रेरेरे, सासासा।

४. सासासासा, रेरेरेरे, गगगग, मममम, पपपप, धधधध, निनिनिनि, सांसांसांसां। सांसांसांसां, निनिनिनि, धधधध, पपपप, मममम, गगगग, रेरेरेरे, सासासासा।

५. सारे, रेग, गम, मप, पध, धनि, निसां। सांनि, निध, धप, पम, मग, गरे, रेसा ॥

६. सांनि, रेसा, गरे, मग, पम, धप, निध, सांनि। निसां, धनि, पध, मप, गम, रेग, सारे, ऩिसा।

७. सारेसा, रेगरे, गमग, मपम, पधप, धनिध, निसांनि। निसांनि, धनिध, पधप, मपम, गमग, रेगरे, सारेसा ॥

८. सारेरेसा, रेगगरे, गममग, मपपम, पधधप, धनिनिध, निसांसांनि। निसांसांनि, धनिनिध, पधधप, मपपम, गममग, रेगगरे, सारेरेसा।

९. सारेसासा, रेगरेरे, गमगग, मपमम, पध१प, धनिधध, निसांनिनि। निसांनिनि, धनिधध, पधपप, मपमम, गमगग, रेगरेरे, सारेसासा ॥

१०. सासासारे, रेरेरेग, गगगम, मममप, पपपध, धधधनि, निनिनिसां। निनिनिसां, धधधनि, पपपध, मममप, गगगम, रेरेरेग, सासासारे॥

११. सारेग, रेगम, गमप, मपध, पधनि, धनिसां। सांनिध, निधप, धपम, पमग, मगरे, गरेसा ॥

१२. गरेसा, मगरे, पमग, धपम, निधप, सांनिध। धनिसां, पधनि, मपध, गमप, रेगम, सारेग।

१३. सारेगम, रेगमप, गमपध, मपधनि, पधनिसां। सांनिधप, निधपम, धपमग, पमगरे, मगरेसा॥

१४. मगरेसा, पमगरे, धपमग, निधपम, सांनिधप। पधनिसां, मपधनि, गमपध, रेगमप, सारेगम॥

१५. सारेगमप, रेगमपध, गमपधनि, मपधनिसां। सांनिधपम, निधपमग, धपमगरे, पमगरेसा॥

१६. सारेगमपध, रेगमपधनि, गमपधनिसां। सांनिधपमग, निधपमगरे, धपमगरेसा॥

१७. सारेगमपधनि, रेगमपधनिसां। सांनिधपमगरे, निधपमगरेसा॥

१८. साग, रेम, गप, मध, पनि, धसां। सांध, निप, धम, पग, मरे, गसां॥

१९. साम, रेप, गध, मनि, पसां। सांप, निम, धग, परे, मसा।

२०. साप, रेध, गनि, पसां। सांप, निम, धग, पसा।

२१. सागरेसा, रेमगरे, गपमग, पनिधप, धसांनिध। सांनिसांध, निधनिप, धपधम, पमपग, मरेगसा॥

२२. सारेसागरेगरेम, गमगप, मपमध, पधपनि, धनिधसां। धसांधनि, पधपनि, मपमध, गमगप, रेगरेम, सारेसाग॥

२३. रेसानि़सा, गरेसारे, मगरेग, पमगम, धपमप, निधपध, सांनिधनि, रेंसांनिसां। निसांरेंसां, धनिसांनि, पधनिध, मपधप, गमपम, रेगमग, सारेगरे, नि़सारेसा॥

२४. रेसानि़सागरे, गरेमगपम, मगमपधप, धपनिधसांनि, निधसांनिरेंसां। सांरेंसांनिधनि, सांनिधनिपध, पधमपगम, मपमगरेग, रेगसानि़रेसा॥

२५. म़प़ध़नि़, सारेगम, पधनिसां, रेंगंमंपं, धंनिसांरें। सांनिधंपं, मंगंरेंसां, निधपम, गरेसानि़, ध़प़म़–॥

कुछ कठिन अलंकारों के प्रकार

२६. सामरेनि़रेमग, रेपगसागपम, गधमरेमधप, मनिपगमनिध, पसांधमधसांनि, धरेंनिपनिरेंसां, सांपनिरेंनिपध, निमधसांधमप, धगपनिपगम, परेमधमरेग, मसागपगसारे, गनि़रेमरेनि़सा ।

२७. सागपनिरेम, रेमधसांगप, गपनिरेंमध, मधसांगंपनि, पनिरेंमंधसां, सांधमरेनिप, निपमसाधम, धमरेनि़पग, पग-साध़मरे, मरेनि़प़नि़सा ।

२८. सागमधमग, रेमपनिपम, गपधसांधप, मधनिरेंनिध, पनिसांगंरेंसां, सांधपगपत्र, निपमरेमप, धमगसागम, पगरेनि़रेग, मरेसाध़सारे, गरेनि़प़नि़सा ।

२९. सारेनि़रेमग, रेगसागपम, गमरेमपप, मपगपनिध, पधमधसांनि, धनिपनिरेंसां, सांनिरेंसांपध, निधसांधमप, धपनिपगम, पमधमरेग, मगपगसारे, गरेमरेनि़सा ।

३०. सामरेगसारे, रेपगमरेग, गधमपगम, मनिपधमप, पसांधनिपध, धरेंनिसांधनि, निगंसांरेंनिसां, सांपनिगंसांनि, निमधगनिध, धगपरेधनि, परेमसापम, मसागनि़मग, गनि़-रेध़गरे, रेध़साप़रेसा ।

भारतीय संगीत के दस ठाठों के आरोह-अवरोह

१. ठाठ बिलावल (प्रत्येक स्वर शुद्ध)

आरोह : सा रे ग म प ध नि सां ।
अवरोह : सां नि ध प म ग रे सा ।।

२. ठाठ यमन (केवल मध्यम तीव्र, अन्य स्वर शुद्ध)

आरोह : सा रे ग म॑ प ध नि सां ।
अवरोह : सां नि ध प म॑ ग रे सा ।।

३. ठाठ खमाज (आरोहावरोह में कोमल निषाद)

आरोह : सा रे ग म प ध नि॒ सां ।
अवरोह : सां नि॒ ध प म ग रे सा ।।

४. ठाठ काफी (आरोहावरोह में गांधार, निषाद कोमल, शेष स्वर शुद्ध)

आरोह : सा रे ग॒ म प ध नि॒ सां ।
अवरोह : सां नि॒ ध प म ग॒ रे सा ।।

५. ठाठ मारवा (आरोहावरोह में ऋषभ कोमल, मध्यम तीव्र)

आरोह : सा रे॒ ग म॑ प ध नि सां ।
अवरोह : सां नि ध प म॑ ग रे॒ सा ।।

६. ठाठ पूर्वी (ऋषभ, धैवत कोमल, म तीव्र, शेष स्वर शुद्ध)

आरोह : सा रे॒ ग म॑ प ध॒ नि सां ।
अवरोह : सां नि ध॒ प म॑ ग रे॒ सा ।।

७. ठाठ तोड़ी (ऋषभ, गांधार, धैवत कोमल, मध्यम तीव्र)

आरोह : सा रे॒ ग॒ म॑ प ध॒ नि सां ।

अवरोह : सां नि ध॒ प म॑ ग॒ रे॒ सा ।।

८. ठाठ भैरव (ऋषभ, धैवत कोमल, शेष स्वर शुद्ध)

आरोह : सा रे॒ ग म प ध॒ नि सां ।

अवरोह : सां नि ध॒ प म ग रे॒ सा ।।

९. ठाठ भैरवी (ऋषभ, गांधार, धैवत, निषाद, मध्यम, कोमल शेष स्वर शुद्ध)

आरोह : सा रे॒ ग॒ म प ध॒ नि॒ सां ।

अवरोह : सां नि॒ ध॒ प म ग॒ रे॒ सा ।।

ज्ञातव्य : सुन्दर एवं कुशल बाँसुरी-वादक बनने हेतु इन नौ ठाठों में विधिवत् अलंकारों का अभ्यास करना अति आवश्यक है। इन ठाठों में अलंकारों का अभ्यास कर लेने से बाँसुरी-वादक को सरलता एवं मधुरतापूर्ण अधिकार हो जाएगा। क्योंकि बाँसुरी में कुछ ऐसे कठिन राग हैं, जिनके लिए इन ठाठों में अलंकारों का अभ्यास करना अति आवश्यक है। राग तोड़ी (अन्य प्रकार), राग ललित, राग मालकोष, राग भैरवी और जितने कोमल स्वरों के राग हैं, उन्हें बाँसुरी में बजाना बहुत ही कठिन है। इसके लिए विशेषकर कोमल स्वरों का नित्य-प्रति अभ्यास करना परम आवश्यक है।

राग भूपाली

परिचय : ठाठ कल्याण, वर्जित स्वर : म और नि, जाति : औडव-औडव, विकृत स्वर : कोई नहीं, वादी स्वर : गांधार, संवादी स्वर : धैवत, समय : रात्रि का प्रथम प्रहर।

आरोह : सा रे ग प ध सां।

अवरोह : सां ध प ग रे सा ।।

पकड़ : सा रे ग, प ग रे सा, ध़ सा रे ग, प ग – रे ग, ध़ रे सा ।

राग-चलन : सा ध़ सा रे ग, प ग रे ग, प ध प ग, ध प ध सां, ध रें सां, ध सां ध प, ग रे ग, प ग रे ग, रे, ध़ रे सा ध़ सा ।

विशेष विवरण

यह राग कल्याण-अंग का है। इस राग में मध्यम और निषाद स्वर बिलकुल ही वर्जित हैं। शेष स्वर शुद्ध लगते हैं। इस राग में पाँच स्वर प्रयोग होने से इसकी जाति औडव-औडव होती है। राग देशकार के भी सभी स्वर बिलकुल इसी प्रकार से लगते हैं। देशकार का आरोह, अवरोह ठीक भूपाली-जैसा ही है, परन्तु दोनों राग एक-दूसरे से एकदम भिन्न हैं। भूपाली राग की उत्पत्ति कल्याण ठाठ से मानी जाती है, जबकि देशकार की उत्पत्ति बिलावल ठाठ से मानी जाती है। इसके साथ ही दोनों रागों के चलन में बहुत भिन्नता है। भूपाली राग का चलन कल्याण-अंग से हीता है और देशकार राग का चलन बिलावल-अंग से होता है। इन दोनों रागों के वादी-संवादी में भी भिन्नता है। भूपाली को गाते-बजाते समय शुद्ध कल्याण तथा जैत कल्याण रागों से भी बचना चाहिए। पूर्वांग में गान्धार तथा उत्तरांग में धैवत का उपयोग करने से इस राग का स्पष्टीकरण हो जाता है। इसी राग भूपाली को कर्नाटक संगीत-पद्धति में राग मोहनम् के नाम से पुकारते हैं।

मुक्त स्वरालाप

सा – – – ध़ – सा – – – ध़ सा – ध़ रे – – सा

– – – ध़ रे – सा रे सा – ध़ – सा – –

– ध़ ध़ – प – – – प़ ध़ सा ध़ सा – –

ध़ सा – रे ग – – –, रे रे ग – – –, रे
सा रे, सा रे – – –, ग रे ग –, – – रे ग –
– –, रे रे ग – – –, रे सा रे, सा रे – – –,
रे रे ग रे सा रे ग – – –, प ग – – रे –,
सा रे, रे ग, – – –, प ग – – ग रे ग प
– – – ग ध प – – –, सा रे ग प, – –,
ग रे ग –, प ग – – –, रे सा रे ग प –
– –, ग रे, प –, – ग – रे ग – – –,
प ग रे ग – – –, सा रे सा – – –, सा रे
ग प – रे ग – – –, प ग –, प ध ग –,
रे ग प ध ग रे ग – – –, रे ग प ध ग
ध प – – –, ग – – –, सा रे – सा ग – रे
ग प ग प ध प ग प – – –, ध ध प ध प

– – – सां ध प ध प ग रे ग – – –, रे
सां रे ध़ रे सा ध़ सा – – –, सा रे ग –,
रे ग प – – – ग ध प – ध सां ध सां –
ध प – – –, सा रे ग प ध सां – ध प –

ग रे ग – – – सां ध सां – प ध प सां –

– – ध रें सां – – –, ध सां – – – रें सां

– – – ध प रे – – – ग प सां ध सां –

– – गं रें गं – – – पं – – –, गं – – –

रें ध सां – ध ग – प ध प ग –, रे ग – – –,
रे सा –, ग रे – ग – – – रे सा रे ध़ सा
– – –, सा रे ग – सा रे ग प ध सां –
ध सां रें गं रें गं रें सां – – – सां ध प ध
सा रे ग – – पं गं रें गं रें सां – – – ध
प ग प ग प ध प ग रे ग – – – रे ग
– प ग – प ध ग – रे ग – रे सा
रे सा ध़ प़ – – – ध़ ध़ सा – – – ग रे

सा रे सा – – – ध़ सा – – – – – –
– – ध़ रे सा ध़ सा – – –।

ताल-रहित तानें

१. निर्बन्ध : सा रे ग, रे सा, रे ग प ग रे सा, ग रे ग प ग रे सा रे ग – रे सा, सा रे ग प ग रे ग ग रे सा, ग प ध प ग ध प ग प ग रे सा, ग रे सा रे ग प ध प ध प ग रे ग ग रे सा, प प ग प प ग प प ग रे ग प ध प सां ध प ग प ग रे सा ध़ रे सा।

२. सा रे ग प ध सां रें सां ध प ग रे ग ग रे सा, सा रे, रे ग, ग प, प ध, सां रें सां ध प ध प ग रे ग प ग रे सा ध़ सा, सा रे ग, रे म प, ग रे ग रे सा, सा रे सा ग रे ग प ग रे ग रे सा सा रे ग प ध प ग प ग रे सा रे ग ग रे सा, सा रे रे, सा ग ग, प ध ध प सां सां ध प ग रे ग ग रे सा प ग प ग प ध प ग रे सा ध़ प़ ध़ सा ग रे सा रे ग रे सा ध़ सा।

३. ग रे प ग ध प सां ध रें सां ध प ध सां ध प ग रे ग ग रे सा सा सा रे ग प ध सां प ध सां ध प ग प ग रे सा, रे ग प प ग प प ध सां सां रें सां गं रें सां रें सां ध प ग रे सा।

४. प ध सा रे ग प ध सां रें गं रें सां ध सां ध प ग रे सा रे ग रे सा ध़ सा रे ग प ध सां रें रें सां रें सां सां ध सां रें सां सां सां सां ध प ग रे सा, सा रे ग रे, सां रें गं मं गं रें सां ध प ग रे सा ध़ रे सा, रें सां गं रें सां ध पं गं रें सां ध प ग रें ग ग रें सां रे सा, ध़ सा ध़ रे सा रे सा ध़ प़ ध़ सा रे सा ग रे सा, ग प, ग ध, प ध प सां रें सां गं रें सां रें सां ध प ध ग प सा रे सा रे ग ग रे सा, प ध सां रें गं रें सां रें सां ध प ग प ग प ग रे सा।

५. सा रे ग प ध सां रें गं पं धं सां धं पं गं रें सां ध सां ध प ग रे सा ध़ प़ ध़ सा रे ग ग रे सा ध़ प़ सा ध़ रे सा ग रे ग ग रे ग प ग रे सा प ध सा ध़ सा ध़ प़ गं रें सां ध सां सां ध प ध ध प ग प प ग रे ग ग रे सा सां ध ध प ग प ग ग रे सा ध़ रे सा ध़ सा रे ग रे सा।

राग भूपाली

● स्थायी (तीनताल)

×	२	०	३
		सां ध सां ध	- प ग रे
(रे)ग - - प	ग रे सा -	ग रे ग प	- (ध)सां ध प
पंग रेंगं सांरें धसां	धसां धप गरे सा	सां ध सां ध	- प ग रे
(रे)ग - - प	ग रे सा -		

● अंतरा

×	२	०	३
		(रे)ग प ध प	- (सां)ध प ध
(रें)सां - सां सां	ध रें सां -	ध गं रें, ध	रें सां, ध प
प ध सां, पध	सां धप गरे सा		

● तालबद्ध तानें

×　　　　　　　　२　　　　　　　　०

१. सारे गप धसां रेंसां । धसां धप गरे सा । गरे सारे ग, गरे

३

सारे ग, गरे सारे ।

×　　　　２　　　　०
२. सारे गरे गप धप । धसां रेंसां धसां धप । गरे सारे – –
३
सारे ग – सारे ।

×　　　　२　　　　०
३. सारे गप गरे गप । धसां धप धसां रेंगं । रेंसां पध सांध पग
३　　　　×　　　　२
सारे गप धसां पध । सां सारे ग, सारे । गप धसां पध सां
०　　　　३
सारे ग, सारे गप । धसां पध सां सारे ।

×　　　　२　　　　०
४. सारे गप गप धसां । धसां रेंगं पंगं रेंसां । धरें सांध पध पग
३　　　　×　　　　२
पग रेसा ध़रे सा । सारे गप धसां सांरें । ग – सारे गप
०　　　　३
धसां सारे ग – । सारे गप धसां सारे ।

×　　　　२　　　　०
५. गप धसां पध सांरें । गरें सांध पग रेसा । गत—

×　　　　२　　　　०
६. प़ध़ सारे गप धसां । रेंगं पंगं रेंसां धप । गरे साध़ प़ध़ सा
३　　　　×　　　　२
प़ध़ सारे ग सारे । ग सारे ग, प़ध़ । सारे ग सारे ग
०　　　　३
सारे ग, प़ध़ सारे । ग सारे ग सारे ।

×　　　　२　　　　०
७. सारे गरे पग पध । पग रेसा पध सांध । रेंसां गरें सांध पग

३ × २
पग सांरें गंरें सांध। पग रेसा गप धसां। सा सां ग, गप

० ३
धसां सा सां ग,। गप धसां सा सां।

× २ ०
८. सारे गरे गप धप। धसां रेंसां पध सांरें। गं रेंसां रें सांध

३ × २
सां धप ध गरे। ग पग रेसा ध़सा। प़ध़ सारे ग सारे

० ३
प़ध़ सारे ग सारे। प़ध़ सारे ग सारे।

× २ ०
९. सारे गरे साग रेसा। गरे पग रे,प गरे। धप सांध प,सां धप

३ × २
रेंसां गंरें सां,गं रेंसां। धप गरे सा,ग रेसा। प़ध़ साध़ प़,सा ध़प़,

० ३
पध सां,ध पसां धप। सारे ग,सा रेग सारे।

× २ ०
१०. प़ध़ सारे गप धसां। रेंगं पंधं सांरें सांध। पंगं रेंसां धप गरे

३ × २
साध़ प़ध़ गरे सा। गप धसां साध़ सारे। ग –, गप धसां

० ३
साध़ सारे ग –,। गप धसां साध़ सारे।

× २ ०
११. गरे सां,गं रेंसां गंरें। गंरें सांध पग रेसा। ध़सा ध़प़ ध़सा रेग

३ × २
पध सांध सांरें गंरें। सांरें सांध पग रेसा। प़ध़ सारे गप धसां

० ३
प़ध़ सारे गप धसां। प़ध़ सारे गप धसां।

× २ ०
१२. सारे गप सांरें गंपं। सारे गप गरें सांध। पग रेसा ध़रे सा–
३ × २
प़ध़ सारे गरे सारे। ग– सारे ग,– प़ध़। सारे गरे सारे ग–
० ३
सारे ग– प़ध़ सारे। गरे सारे ग– सारे।

× २ ०
१३. रेसा गरे पग धप। सांध रेंसां गरें सांध। पध सांध पग रेसा
३ × २
प़ध़ सारे गप धसां। रेंगं पंगं रेंसां धप। धसां रेंसां पध सांध
० ३ ×
सां– धप धसां धप। गरे सा– प़ध़ सारे। ग– सारे ग– सारे
२ ० ३
प़ध़ सारे ग– सारे। ग– सारे, प़ध़ सारे। ग– सारे ग– सारे

× २ ०
१४. सां– –रें सांध पध। सांरें गंरें सांध पग। रे– सारे साध़ प़ध़
३ × २
सारे गप धसां धप। धसां रेंगं रेंसां धप। गंरें सांध पग रेसा

× २ ०
१५. सारे गरे सारे पग। सारे गरे सारे धप। सारे गरे सारे सांध
३ × २
सारे गरे सारे रेंसां। गंरें सांरें धसां रेंसां। पध सांध गप धप
० ३ ×
धसां धप गरे सारे। सारे ग,सा रेग, सारे। पध सां– ग–, सारे
२ ० ३
ग,सा रेग सारे पध। सां– ग– सारे ग,सा। रेग सारे पध सां–

× २ ०
१६. सारे गरे गप धप। धसां धप गरे सा–। प़ध़ सारे ग, प़ध़
३
सारे ग प़ध़ सारे।

× २ ०
१७. सारे –सा गरे –सा । गप –ग धप –ग । धसां –ध पग –रे

३
गसा –रे गसा –रे ।

× २ ०
१८. साग रेग पग धप । धसां धसां रेंसां गरें । सांरें सां,ध सांध पग

३ × २
पध प,ग पग, रेसा । ग, सारे ग, पध । प,ग पग, रेसा ग,

० ३
सारे ग, पध प,ग । पग, रेसा ग, सारे ।

× २ ०
१९. साग रेग पग रेसा । धसां धप सांध पग । साग रेसा पग रेसा

३ × २
गप धसां रेंसां धप । धसां धप गरे सारे । ग –, धसां धप

० ३
गरे सारे ग –, । धसां धप गरे सारे ।

× २ ०
२०. सारे साग रेग सारे । गप गध पध गप । धसां धरें सांरें धसां

३ × २
रेंगं रेंसां रेंसां धसां । धसां ध,प धप गप । गरे सा धसां धप

० ३ ×
गरे सारे ग सारे । ग, सारे ग, धसां । धप गरे सारे ग,

२ ० ३
सारे ग, सारे ग, । धसां धप गरे सारे । ग, सारे ग, सारे

× २ ०
२१. सारे गरे पग पध । पग रेसा पध सांध । रेंसां गरें सांध पग

३ × २
पध सांरें गंरें सांध । पग रेसा गप धसां । सा, सां, ग, गप
० ३
धसां सा, सां ग, । गप धसां सा सां ।

× २ ०
२२. रेसा गरे पग धप । सांध रेंसां गंरें सांध । पध सांध पग रेसा
३ × २
पध़ सारे गप धसां । रेंगं पंगं रेंसां धप । धसां रेंसां पध सांध
० ३ ×
सां धप धसां धप । गरे सा, पध़ सारे । ग, सारे ग सारे
२ ० ३
पध़ सारे ग, सारे । ग, सारे पध़ सारे । ग, सारे ग, सारे

राग भूपाली

● स्थायी

(तीनताल)

×	२	०	३
सां	धसां धप गप धप	ग –रे – सा	– प ग रे
रे ग – –, प	ग प ध प	– सां ध प	सां ध सां ध प
ग रे सा, सां	धसां धप गप धप	ग –रे – सा	– प ग रे
ग – – ,प			

● अंतरा

× २ ० ३
। ग प ध प । – ध प ध । सां – सां सां

```
×               २               ०
सां             पं
ध   रें  सां  – । गं   रें   सां   ध । –   सां   ध   प

३               ×               २
धसां गंरें सांध पग । पग  रेसा  धृसा, सां । धसां  धप  गप  धप

०               ३               ×
                                प
ग  –रे  –   सा । –   प   ग   रे । ग   –   –,
```

• तालबद्ध तानें

```
    ×               २               ०
१.  सारे साग रेग पग । पध पसां धसां रेंसां । धसां  धप  गरे  सा

    ३               ×               २
    धृसा  –  ग  सारे । ग  –  पध,  सां । धसां  धप  गप  धप

    ०               ३
    ग  –रे  –  सा । –  प  ग  रे ।

    ×               २               ०
२.  सारे गप धसां रेंगं । पंगं रेंसां धप  गरे । सारे  गरे  सारे  गप

    ३               ×               २
    धसां सारे गप धसां । सारे  गप  धसां, सां । धसां धप  गप  धप

    ०               ३
    ग  –रे  –  सा । --  प  ग  रे ।

    ×               २               ०
३.  सारे –सा रेग  –रे । गप  –ग  पध  –प । धसां –ध  सांगं रेंसां

    ३               ×               २
    रेंसां  धसां  धप  ग । सांध पग रेसा,  सां । धसां धप  गप  धप

    ०               ३
    ग  –रे  –  सा । –  प  ग  रे ।
```

×   २   ०
४. सारे गरे गप धसां । गंरें सांध रेंसां धप । सांध पग पग रेग

३
सारे गसा रेग सारे ।

×   २   ०
५. सारे गप गरे, गप । धसां धप, धसां रेंगं । रेंसां, धप गरे सारे

३
ग, सारे ग, सारे ।

×   २   ०
६. गरे सा,प गरे धप । ग,सां धप रेंसां धगं । रेंसां गंरें गंपं गंसां

३   ×   २
रेंगं सांरें गंपं गंरें । सांध पग रेंसा, सां । धसां धप गप धप

०   ३
ग –रे – सा । – प ग रे ।

×   २   ०
७. सारे गप रेग पध । पध सांरें धसां धप । गप गरे ग रेसा

३   ×   २
ध़सा ध़प़ ध़रे सारे । गप धसां साध़ सारे । ग, सारे गप धसां

०   ३
साध़ सारे ग, सारे । गप धसां साध़ सारे ।

×   २   ०
८. गरे सारे गंरें सांरें । धसां धप गप धप । ध़सा ध़प़ ध़सा रेग

३   ×   २
पग पग रेसा ध़सा । रेग सारे गरे सारे । ग –, रेग सारे

०   ३
गरे सारे ग –, । रेग सारे गरे सारे ।

×　　　　　२　　　　　०
९. साग रेसा गप गरे । पध पग धसां धप । सांगं रें,सां रेंसां धसां
३　　　　　×　　　　　२
ध,प धप, गप ग,रे । गरे सारे सा–, सां । धसां धप गप धप
०　　　　　३
ग –रे – सा । – प ग रे ।

×　　　　　२　　　　　०
१०. गरे साग रेसा रेग । सारे गप गरे सारे । ग – –, सारे
३
ग – –, सारे ।

×　　　　　२　　　　　०
११. गरे सारे पग रेग । धप गप सांध पध । रेंसां धसां गंरें सांरें
३　　　　　×　　　　　२
गंपं गंरें सांध पग । रेसा ध़रे सा, सां । धसां धप गप धप
०　　　　　३
ग –रे – सा । – प ग रे ।

×　　　　　२　　　　　०
१२. गरे सारे सांरें गंरें । गंपं धंसां धंपं गंरें । सांध पग रेसा ध़सा
३　　　　　×　　　　　२
पग रेग –सा गरे । ग सारे ग, पग । रेग –सा गरे ग
०　　　　　३
सारे ग पग रेग । –सा गरे ग, सारे ।

×　　　　　२　　　　　०
१३. सारे ग रेसा, पध । सां धप सांरें गं । रेंसां धसां धप गरे
३　　　　　×　　　　　२
सारे गप धसां पध । सां सारे ग सारे । गप धसां पध सां
०　　　　　३
सारे ग सारे गप । धसां पध सां सारे ।

×　　　　　　　२　　　　　　　०
१४. धसा धरे सारे धसा। धग रेग सारे साग। पध गप धसां धरें

३　　　　　　　×　　　　　　　२
सांरें सांगं रेंगं पंगं। रेंसां धप गरे साध। सा, पध सारे गरे

०　　　　　　　३
ग, पध सारे गरे। ग, पध सारे गरे।

×　　　　　　　२　　　　　　　०
१५. ग रेग प गप। ध पध सां धसां। गं रेंगं रेंसां रें

३　　　　　　　×　　　　　　　२
सांरें सांध सां धसां। धप गरे सा सां। धसां धप गप धप

०　　　　　　　३
ग –रे – सा। – प ग रे।

×　　　　　　　२　　　　　　　०
१६. सारे गरे गप धप। धसां रेंसां पध सांरें। गं रेंसां रें, सांध

३　　　　　　　×　　　　　　　२
सां धप ध गरे। ग, पग रेसा धसा। पध सारे ग, सारे

०　　　　　　　३
पध सारे ग, सारे। पध सारे ग, सारे।

×　　　　　　　२　　　　　　　०
१७. सारे गरे सा,ग रेसा। गरे पग रे,प गरे। धप सांध प,सां धप

३　　　　　　　×　　　　　　　२
रेंसां गंरें सांगं रेंसां। धप गरे सा,ग रेसा। पध साप धसा पध

०　　　　　　　३
पध सां,प धसां पध। सारे, ग,सा, रेग, सारे।

×　　　　　　　२　　　　　　　०
१८. सां –रें सांध पध। सांरें गंरें सांध पग। रे सारे साध पध

३ × २
सारे गप धसां धप। धसां रेंगं रेंसां धप। गंरें सांध पग रेसा

० ३
सां ध सां ध।– प ग रे।

× २ ०
१९. सारे गरे सारे पग। सारे गरे सारे धप। सारे गरे सारे सांध

३ × २
सारे गरे सारे रेंसां। गंरें सांरें धसां रेंसां। पध सांध गप धप

० ३
धसां धप गरे सारे। सारे ग,सा रेग, सारे।

× २ ०
२०. सारे गरे गप धसां। गंरें सांध पग रेसा। रेसा –रे ग रेसा

३
–रे ग रेसा –रे।

× २ ०
२१. धृपृ साधृ रेसा गरे। पग धप सांध रेंसां। पध सांरें सांगं रें

३ × २
पध सांरें धरें सां। पध सांरें धसां ध,। पध सांध गध प

० ३
सां ध सां ध।– प ग रे।

झाला प्रथम ढंग

खयाल-अंग एवं गायकी-अंग

झाला वैसे तो विशेषकर वीणा (वीणाओं के प्रकार), सुर-बहार, सरोद इत्यादि वाद्यों में ही बजाया जाता रहा है और अभी भी इन वाद्यों में झाला बजाया जाता है। झाले के अनेकों प्रकार व नाम हैं; जैसे—सुलट झाला, उलट झाला, लोम-विलोम, कर्ण, मीड़, मुर्की, कृन्तन, गमक, जमजमा इत्यादि के साथ तन्त्र वाद्यों में ही प्रायः सुनने को मिलता है। किन्तु आजकल (आधुनिक युग) बेला, हवायन गिटार, जल-तरंग एवं शहनाई आदि सुषिर वाद्यों में भी झाला बजाने की प्रथा चल पड़ी है। प्रत्येक कुशल वादक द्वारा अपने तन्त्र-वाद्य में बड़ा खयाल, छोटा खयाल बजाने के पश्चात् लय बढ़ाकर समाप्ति के पहले फूँक एवं ततकार (फूँक एवं ततकार के प्रकार) से झाला बजाकर ही समाप्त करने की प्रथा चल रही है। ऐसा ही प्रायः आज-कल सुनने व देखने को मिलता है। झाला वादन में कर्ण, मीड़, मुर्की, खटका, गमक, जमजमा, सूत, घसीट इत्यादि के साथ कुशल वादक व साधक अपने-अपने वाद्य में झाले का प्रयोग करने लगे हैं। इसके साथ ही साथ कर्ण, मीड़, मुर्की, खटका, सूत, घसीट के अलावा अनेक प्रकार की लयकारियों में भी वाद्य में अति द्रुत लय बढ़ाकर सुन्दर झाला बजाते देखे व सुने गए हैं। इसमें श्रोताओं को सुनने-देखने से एक विशेष प्रकार के आनन्द की अनुभूति होती है। इससे वाद्यों एवं साधक वादक का मूल्य (ख्याति) और भी अधिक बढ़ जाता है; इससे वादक संगीत साधना में सदैव तल्लीन रहते हैं। इसके साथ ही साथ अपने आनन्द के अतिरिक्त दूसरों को भी आनन्द प्रदान करते हैं। अतः हमने इस वंशी-वादन पुस्तक में बाँसुरी पर फूँक, फूँक के अन्य प्रकार, तत्कार एवं तत्कार के अन्य प्रकार कर्ण, मीड़, मुर्की, खटका, गमक, जमजमा इत्यादि के साथ बाँसुरी पर प्रत्येक राग में झाला बजाने की विशेष सामग्री दी है। जिससे बाँसुरी के विद्यार्थियों को बाँसुरी - वादन में किसी

प्रकार की कठिनाई का सामना न करना पड़े। इसलिए इस बाँसुरी-शिक्षा नामक पुस्तक में विशेषकर बाँसुरी पर हर प्रकार की सामग्री पर विशेष ध्यान रखा गया है, जिससे बाँसुरी सीखनेवाले प्रेमी व वादकों को बाँसुरी बजाने में किसी भी प्रकार की कठिनाई न हो सके।

झाला एवं गतकारी का द्वितीय ढंग

जैसा कि हमने प्रथम ढंग में बताया है कि गायकी अंग में वादन में पहले बड़ा खयाल (खयाल अंग की गत) के पश्चात् छोटा खयाल (या गत) बजाकर समाप्ति के पहले द्रुत लय में झाला बजाने की प्रथा है। झाला बजाकर झाले की अन्तिम तान व तिहाई बजा-कर ही प्रत्येक वाद्य में राग की समाप्ति करते हैं। किंतु द्वितीय ढंग गतकारी अंग बजाने के लिए है, जो कि प्रथम ढंग से भिन्न है। इस गतकारी अंग से बजाने में पहले मुक्त स्वारा-आलाप, जोड़, तानें, इसके पश्चात् झाला बजाकर विलम्बित या मध्य लय की गत तीनताल या तीनताल के अतिरिक्त किसी अन्य ताल में बजाते हैं। विलम्बित एवं मध्य गत के पश्चात् तीनताल या तीन ताल के अतिरिक्त किसी अन्य ताल में मध्य एवं द्रुत लय की गत बजाने का प्रचलन है। इसके पश्चात् पुनः द्रुत लय में झाला बजाते हैं। अन्त में झाले की तान व तिहाई बजाकर राग की समाप्ति करते हैं। इस प्रकार की वादन शैली को गतकारी अंग कहते हैं, जो कि प्रथम ढंग से बिलकुल भिन्न है। कुछ वादक ऐसे भी देखे व सुने गए हैं, जो कि खयाल - अंग व गतकारी-अंग, दोनों अंगों को समिश्रण करके भी वादन करते हैं, जो कि इन दोनों ढंगों से बिलकुल ही भिन्न है। इसके अतिरिक्त कुछ ऐसे भी कुशल वादक हैं, जोकि अपने वाद्य में झाला बिलकुल ही नहीं बजाते। वे केवल बड़े खयाल अंग की गत व छोटे खयाल अंग की बन्दिश बजाकर कुछ लय बढ़ाकर एवं अन्त में केवल तिहाई लेकर अपना वादन समाप्त कर देते हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि आधुनिक युग में वादन-शैली के कई प्रकार देखने व सुनने को

मिलते हैं। यह कलाकार व साधक की अपनी-अपनी इच्छा पर निर्भर करता है। आजकल अनेक प्रकारों की वादन शैली (बजाने का ढंग) का विकास होता जा रहा है। जिससे वाद्य की भी महत्ता पहले के अतिरिक्त अधिक होती जा रही है। इस प्रकार हमने इस पुस्तक में तीनों प्रकारों का प्रयोग करने की चेष्टा की है, जिससे सभी संगीत-प्रेमियों को इन तीनों शैलियों का भली प्रकार ज्ञान हो।

झाला, राग भूपाली, तीनताल

(कण, मींड, जमजमा और तानें-सहित)

×	२	०	३
रे रे रे	सा ग रे रे	सा रे सा रे	रे रे रे
सा ध़ सा सा	ध़ रे सा सा	ध़ सा ध़ सा	सा ध़ सा सा
{तूया रू ऊ रू रू	तू ऊ रू रू	{तूया रू ऊ रू ऊ	तू ऊ तू तू
सा रे सा	रे रे रे		रे ध़ ध़
ध़ सा ध़ प़	सा ध़ सा सा	ध़ सा ध़ रे	सा ध़ सा सा
तू ऊ तू तू	तू ऊ रू रू	तू ऊ तू ऊ	तू ऊ रू रू
सा रे	ग प	ग प	ग रे
ध़ – सा –	रे – ग –	रे – ग –	रे – सा –
तू ऽ ऊ ऽ	तू ऽ ऊ ऽ	तू ऊ तू ऽ	तू ऽ ऊ ऽ

ग रे सा रे रे
रे सा ध़ प़ | ध़ ध़ सा – | ध़ सा ध़ रे | सा – सा –
तू ऊ तू ऊ | तू तू ऊ ऽ | तू ऊ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ

सा रे ग प रे ग प ग प ग प रे ग प
ध़ सा रे ग | सा रे ग – | रे ग रे ग | सा रे ग –
तू ऊ तू ऊ | तू ऊ तू ऽ | तू तू तू तू | तू ऊ तू ऽ

रे ग ग ग रे ग प
सा रे प ग | रे – ग – | रे सा रे ग | सा रे ग –
तू ऊ तू ऽ | तू ऽ ऊ ऽ | तू तू तू तू | तू तू ऊ ऽ

सा रे ग प ग रे ग प रे ग रे रे ग प
ध़ सा रे ग | रे सा रे ग | सा रे प ग | सा रे ग –
तू ऊ ऊ ऊ | तू ऊ ऊ ऊ | तू तू तू तू | तू तू तू ऊ

ध रे ग प रे रे ग प प ग ध़
प ग रे ग | सा ग रे – | ग रे ग – | रे – सा –
तू ऊ रू रू | तू ऊ रू ऽ | तू ऊ रू ऽ | तू ऽ ऊ ऽ

प ग सा सा रे सा ग सा ग
ध़ सा ध़ रे | ध़ ध़ सा – | ध़ रे ध़ सा | ध़ रे सा –
तू ऊ तू ऊ | तू तू ऊ ऽ | तू ऊ तू ऊ | तू तू ऊ ऽ

रे ग प
रे सा रे ग | सा रे ग प | ग रे प ग | सा रे ग –
तू ऊ तू ऊ | तू तू तू ऊ | तू ऊ तू ऊ | तू ऊ तू ऽ

रे ग ध रे रे ग प सा ग रे
सा रे प ग | सा रे ग – | रे ग रे, – | ध़ रे सा –
तू तू ऊ ऊ | तू ऊ ऊ ऽ | तू ऊ तू ऽ | तू ऊ तू ऽ

सा रे ग प ध़ ग प प सां ध रे ध
ध़ सा रे ग | सा रे ग प | ग ध प ध | प ग प –
तू ऊ तू ऊ | तू तू ऊ ऊ | तू ऊ तू ऊ | तू तू ऊ ऽ

प रे सा सां रे ध रे ग ध
ग प ग रे | ग ध प – | ग रे प ग | रे ग प –
तू ऊ तू ऊ | तू ऊ ऊ ऽ | तू ऊ तू ऊ | तू ऊ ऊ ऽ

सा रे प ग | प ध प ग | प – प – | ग प ध प
तू ऊ तू ऊ | तू ऊ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ | तू ऊ तू तू

रें रें रें रें रें रें गं रें ध
सां ध सां – | सां ध सां ध | सां ध सां रें | सां – सां –
तू ऊ तू ऊ | तू ऊ तू ऊ | तू ऊ तू तू | तू ऽ तू ऽ

सां गं रें   सां रें

ध रें सां – | ध सां ध प | ग रे प ग | प – प –

तू ऊ ऊ ऽ | तू ऊ तू ऊ | तू ऊ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ

प   सां   सां   ध   ध   ध ध ध रें

ग ध प – | ध प ध सां | सां – सां – | सां – सां –

तू ऊ तू ऽ | तू ऊ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ

×   २   ०   ३

गं गं गं   गं   रें   रें गं गं रें   गं गं सां

रें सां रें गं | रें – गं – | सां रें सां गं | रें रें गं –

तू ऊ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ | तू ऊ तू ऊ | रू रू तू ऊ

रें रें सां   रे गं   रें गं   गं रें रें

सां गं रें गं | सां रें गं – | सां रें पं गं | रें सां गं –

तू ऊ तू ऊ | तू ऊ तू ऽ | तू ऊ तू ऊ | तू ऊ रू ऽ

सां   सां गं

पं गं रें सां | ध रें सां ध | पधसांरें गंरें सांध | पग रेसा धरे साध

तू ऊ तू ऊ | तू ऊ तू ऊ | तूऊ ऊऊ ऊऊ ऊऊ | ऊऊ ऊऊ ऊऊ ऊऊ

रें गं

सा रे ग – | रे ग प – | ध सां रें – | सां रें गं –

तू ऊ तू ऽ | तू ऊ तू ऽ | तू ऊ तू ऽ | तू ऊ तू ऽ

×   २

पंगं रेंसां धरें सांध। सांध पग पग रेसा

तान केवल फूंक से :

०　　　　　　　　　　　　३
धसा　रेग　सारे　गप । धसां　रेंगं　रेंध　सांरें

×　　　　२　　　　　　०　　　　　　३
　　रें　रें　　रें　　पं　　　गं　रें　　रें
सां – सां – | सां – सां – | ध सां ध रें | सां – सां –
तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ | तू ऊ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ

×　　　　　　　　　　२
　　　　　　　　　　गमक से :
रेंरें　रें,गं　गंगं,　रेंसां । धध　ध,सां　सांसां,　धप

०　　　　　　　　　　३
सांसां　सां,ध　धध　पप । गग　ग,रे　रेरे,　साध़

×　　　　　　　　　　२
सारे　गप　रेग　पध । सांध　सांरें　गंपं　धंसां

०　　　　　　　　　　३
रेंसां　धंपं　गंरें　पंगं । रेंसां　धप　गरे　सा–

×　　　　२　　　　　　०　　　　　　३
सा　रे　ग　　प　　ध　　सां　　गं
ध़ – सा – | रे – ग – | प – ध सां | रें – गं –
तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ

　　रें　　गं　गं　　　सां　गं　　　　सां　　रें
पं – गं – | रें रें गं – | रें रें सां – | ध – सां –
तू ऽ तू ऽ | तू तू तू ऽ | तू तू तू ऽ | तू ऽ तू ऽ

×				२				०				३			
	रें		गं										गं		
ध	सां	ध	रें	ध	गं	रें	गं	रें	सां	ध	प	ध	रें	सां	–
तू	ऊ	तू	ऊ	तू	ऊ	तू	ऊ	तू	ऊ	ऊ	ऊ	तू	ऊ	तू	ऽ

×				२			
रेंसां	रेंगं	सांरें	गंपं ।	गंरें	सांध	पग	रेसा

०				३			
ध़रे	साध़	प़ध़	सारे ।	गप	धसां	रेंगं	रेंसां

×				२				०				३			
				रें		रें						रें		रें	
प	–	ध	–	सां	–	सां	–	ध	ध	सां	रें	सां	–	सां	–
तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	तू	तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऽ

सां		रें		गं		ध		सां		रें		रें			
ध	–	सां	–	रें	–	सां	–	ध	–	सां	–	ध	–	प	–
तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ

रे		प				ग		रे		रे			ग	रे	
ग	रे	ग	–	रे	सा	रे	–	सा	ध़	सा	–	ध़	रे	सा	–
तू	ऊ	तू	ऽ	तू	तू	ऊ	ऽ	तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऊ	तू	ऽ

सा				सा		रे		रे		रे		रे		रे	
ध़	–	प़	–	ध़	–	सा	--	सा	–	सा	–	सा	–	सा	–
तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ

झाले की समाप्ति की तान व तिहाई

×　　　　　　　२　　　　　　　०
सांगं सांगं रेंगं रेंगं । सांरें सांरें धसां धसां । पध पध गप गप
३
रेग रेग सारे सारे ।। सारे गप धसां सारे । ग --, सारे गप
धसां सारे ग -- । सारे गप धसां सारे ।। सांगं सांगं रेंगं रेंगं
सांरें सांरें धसां धसां । पध पध गप गप । रेग रेग सारे सारे ।।
सारे गप धसां सारे । ग --, सारे गप । धसां सारे ग --,
सारे गप धसां सारे ।। सांगं सांगं रेंगं रेंगं । सांरें सांरें धसां धसां
पध पध गप गप । रेग रेग सारे सारे ।। सारे गप धसां सारे
ग --, सारे गप । धसां सारे ग --, । सारे गप धसां सारे ।।

राग भूपाली, झप ताल

● स्थायी

×		२			०		३		
(रे)ग	–	पध	सां	ध	प	ग	रे	साध़	सारे
सा .	ध़	सा	रे	गप	धसां	गरें	सांध	पग	रेसा

● अंतरा

×		२			०		३		
(रे)ग	–	प	(सां)ध	–	प	सांध	(रें)सां	–	(रें)सां
ध	सां	रें	गं	–	रें	सां	(गं)रें	ध	सां
रें	सां	ध	प	गंरें	सांध	पग	रेसा	साध़	सारे
(प)ग	–	पध	सां	ध	प	ग	रे	साध़	सारे

● तालबद्ध तानें

	×		२			०		३		
१.	सारे	गरे	गप	धप	धसां	धप	मप	धप	गरे	सा
	प़ध़	सारे	गरे	ग,प़	ध़सा	रेग	रेग,	प़ध़	सारे	गरे
२.	सारे	गप	गरे	सारे	सारे	गरे	पग	रेसा,	गप	धसां
	धप	गप	धसां	रेंगं	रेंसां	धप	धसां	धप	गरे	सा
	प़ध़	सारे	गरे	सारे	ग	सारे	ग	प़ध़	सारे	गरे
	सारे	ग	सारे	ग,	प़ध़	सारे	गरे	सारे	ग,	सारे

	×		२			०		३		
३.	सांरें	गंरें	साग	साग	रेसा	गप	धप	धसां	धसां	धप
	धंसां	रेंगं	सांरें	गंरें	सांरें	सांध	पध	पग	पग	रेसा
	प़ध़	सारे	ग	पध	सां	सारे	ग,	प़ध़	सारे	ग
	पध	सां	सारे	ग,	प़ध़	सारे	ग,	पध	सां	सारे
४.	प़ध़	प़सा	ध़रे	साग	पध	सांध	पग	रेग	पग	रेसा
	ध़रे	सारे	ग,	–	ध़रे	सारे	ग,	–	ध़रे	सारे
५.	सारे	गरे	सारे	गप	धप	गप	धसां	धप	गरे	सारे
	ग,	धसां	धप	गरे	सारे	ग,	धसां	धप	गरे	सारे
६.	सारे	गरे	साप	गरे	पग	रेसा	गप	धसां	प,रे	सांध
	गंरें	सांध	पग	रेसा	गप	धसां	रेंसां	धप	गरे	सा
	सारे	गप	धसां	पध	सां	सारे	ग,	सारे	गप	धसां
	पध	सां	सारे	ग,	सारे	गप	धसां	पध	सां	सारे
७.	रेसा	ध़सा	प़ध़	सारे	पग	रेसा	गरे	गप	धसां	रेंगं
	सांरें	गंरें	सांरें	सांध	पध	गप	गरे	सारे	ध़सा	रेसा
	प़ध़	सारे	गप	गरे	सारे	गरे	ग,	प़ध़	सारे	गप
	गरे	सारे	गरे	ग,	प़ध़	सारे	गप	गरे	सारे	गरे
८.	प़ध़	सारे	गप	धसां	रेंगं	पंगं	रेंसां	धप	गरे	सा
	ग,	सारे	ग,	–	ग	सारे	ग	–	गरे	सारे

	×		२			०		३		
९.	सारे	ग	रेसा	रेसा	ग	रेसा	पग	रेसा	पध	सां
	धप	सांध	सां	धप	रेंसां	धप	गरे	सा,	पध	सां,प
	धसां	पध	गप	ध,ग	पध	गप	सारे	ग,सा	रेग	सारे
१०.	सारे	साग	रेसा	गरे	सा,ग	रेसा	गप	गध	पग	सांध
	प,सां	धप	धप	धसां	रेंगं	सांरें	गरें	सांध	पग	रेसा
	पध	सांध	सां	धसां	–ध	पध	सां	गप	धप	ध
	पध	–प	गप	ध,	सारे	गरे	ग,	रेग	–रे	सारे
११.	सा	–रे	गप	गरे	ग	–प	धसां	धप	ध	–सां
	रेंगं	रेंसां	प	–ध	सांध	पध,	ग	–प	धप	गप
	गरे	सा,ग	रेसा	पध	सां	सा	सां	गरे	सा,ग	रेसा
	पध	सां	सा	सां	गरे	सा,ग	रेसा	रेसा	ग	गं
१२.	सारे	गरे	सारे	गप	धप	गप	धसां	रेंगं	पंगं	रेंसां
	धरें	सांध	पग	रेग	पग	रेसा	रेसा	ग,रे	साग,	रेसा
१३.	सारे	ग	–रे	सारे	गप	गप	ध	–प	गप	धसां
	रेंगं	पंधं	सां	धंपं	गरें	सांध	पग	रेसा	धप़	ध़सा
१४.	गरे	पग	धप	सांध	रेंसां	धप	धसां	धप	गरे	सारे
	ग,	–	गं	ग	सारे	ग,	–	गं	ग	सारे
१५.	साध़	प़ध़	सारे	गप	धसां	धरें	गरें	सांध	पग	रेसा
	सारे	ग,सा	रेग	सांरें	गं,सां	रेंगं,	सारे	ग,सा	रेग,	सारे

राग भूपाली, एकताल

● स्थायी

×		०		२		०		३		४	
						धसां	धसां	ध	प	सा ग	रे
रे ग	–,	प	ग	रे	सा	ग	रे	ग	प	ध	सां
प	गं	रेंगं	सांरें	धसां	प						

● अंतरा

×		०		२		०		३		४	
						ग	प	ध	प	सां	ध
सां	–	सां	रें	ध	सां	गं	रें	गं	सां	ध	सां
पध	सांरें	गंरें	सांध	पग	रेसा						

● तालबद्ध तानें

× ० २ ०

१. सारे गप । गरे गप । धसां धप । धसां रेंगं

३ ४

रेंसां धसां । धप गरे ।। सारे गप । धसां –

सारे गप । धसां – । सारे गप । धसां – ।।

२. प़ध़ सारे । गप धसां । रेंगं पंगं । पंगं रेंसां

धप गरे । साध़ सारे ।।

३. गरे सारे । गप धसां । रेंगं रेंसां ।

×　　　　　०　　　　　　　२　　　　　　　०
४. सारे　सारे । गरे　　गप । धप　　गप । धसां　　गरें
३　　　　४
धसां　रेंसां । धप　　गरे ।।

५. गरें　पंगं । रेंसां　धप । गरे　सा– । गप　धसां
गप　धसां । गप　धसां ।।

६. सा–　सां– । ग–　गं– । पं–　गं– । रेंसां　धप
सांध　पग । पग　रेसा ।।

७. गं–　–रें । सांरें　गं– । ग–　–रे । सारे　ग–
गं–　–रें । सारें　गं– ।।

८. प़ध़　सारे । ध़सा　रेग । पध　सांरें । गरें　पंगं
रेंसां　धप । गरे　सारे ।।

९. सांरें　गं,ध । सांरें　पध । सां,ग　पध । रेग　प,सा
रेग　गरें । सांरें　गं ।।

१०. ग–　रेग । रेसा　सां– । धसां　धप । गं–　रेंगं
रेंसां　सां– । धसां　धप ।। गरे　सा– । सां–　धसां
धप　गरे । सा–　सां– । धसां　धप । गरे　सा– ।।

११. प़ध़　प़सा । ध़सा　प़ध़ । प़सा　ध़सा । ध़सा　ध़ग
रेग　ध़सा । ध़ग　रेग ।। पग　धप । सांध　रेंसां
गरें　सांध । पग　रेसा । गरे　सा,गं । रेंसां　गरे ।।

१२. सारे　गप । धसां　रेंगं । पं–　गरें । सांध　पग
रेसा　ध़प़ । ध़सा　गरे ।।

×　　　　　०　　　　　२　　　　　०
१३. सारे　गप । धसां　धप । सांध　पग । रेंसा　प़ध़

३　　　　४
सा,　ध़सा । रे,　सारे ।।

१४. सारे　ग,रे । गप　धप । सांध　रेंसां । धप　गप
धसां　धप । गरे　सा ।। पध　सा,प । धसां,　पध,
पध　सांप । धसां,　पध । सारे　ग,सा । रेग,　सारे ।।

१५. सारे　गरे । सारे　गप । गप　धप । गप　धसां
पध　सांध । रेंसां　धप ।। गंरें　सांध । पग　रेसा
प़ध़　सारे । गरे　सारे । ग,　प़ध़ । सा,–　प़ध़ ।।
सारे　गरे । सारे　ग, । प़ध़　सां, । प़ध़　सारे
गरे　सारे । ग　सारे ।।

१६. सारे　साग । रेग　पग । पध　पसां । धसां　रेंसां
धसां　धरें । सांगं　रेंगं ।। रेंगं　पंगं । रेंसां　धप
धसां　धप । गरे　सारे । ग,　सारे । ग,　सारे ।।

१७. ग　रेसा । रेग　पध । पग　रेसा । सां　धप
गप　धसां । रेंसां　धप ।। धसां　रेंगं । पंगं　रेंसां
पध　सांरें । सांध　पग । पग　रेसा । ध़रे　सारे ।।

१८. ध़सा　ध़रे । सारे　साग । रेग　पध । रेंसां　धप
गंरें　सांध । पग　रेसा ।।

१९. प़ध़　प़सा । ध़सा　ध़रे । ध़सा　ध़रे । साग　रेग
पग　रेग । पग　रेसा ।। गरे　सारे । ग,　सारे
गंरें　सांरें । गं,　सांरें । गरे　सारे । ग,　सारे ।।

२०. साध़　सारे । गप　धसां । धप　गरे । ग,　धप
गरे　ग, । धप　गरे ।।

× ० २ ०

२१. सारे सा,रे । गरे गप । गप धप । रेग रेग

३ ४

पग पध । प,ध सांध । गप ग,प । धप धसां

धसां रेंसां । धसां रेंप । धसां ग,प । ध,सा रेसा ॥

२२. सारे गप । धसां पध । पग रेसा । गप धसां

गरें सांध । पग रेसा । रेग प,ग । पध पध

सां,ध सांरें । सांगं रेंध । रेंसां पसां । धप धप

सांध पध । पग रेसा । पध सां । सा सां

सांध पध । पग रेसा । पध सां । सा सां

सांध पध । पग रेसा । पध सां । सा सां ॥

२३. प़ध़ साध़ । सारे गरे । गप धप । धसां रेंसां

गरें सांरें । धसां पध । गप रेग । सारे ध़सा

धसां धप । गरे सारे । ग प़ध़ । सा, धसां

धप गरे । सारे ग । प,ध़ सा, । धसां धप

गरे सारे । ग, सारे । ॥

२४. गरे सारे । गप धप । सांध रेंसां । सांसां धप

गप धप । गरे सारे ॥

२५. प़ध़ सारे । गरे ध़सा । रेग पग । सारे गप

धप गप । धसां रेंसां । धसां रेंगं । रेंसां पध

सांरें सांध । पध सांध । पग रेसा । पग रेसा

× ० २ ०
सा सां । सा सां । सा –, । पग रेग

३ ४
पग रेसा । सा सां । सा सां । सा –, ।
पग रेग । पग रेसा । ग गं । ग गं ।।

२६. गरे गप । धसां रेंगं । पंगं रेंगं । रेंसां धप
गरे साध़ । प़ध़ सारे ।।

२७. सारे गप । रेग पध । गप धसां । पध सांरें
धसां रेंगं । पंधं सां । धंपं गंरें । सांरें सांध
पध पग । रेग रेसा । ध़प़ ध़सा । ध़रे सारे
सारे गप । धसां सारे । सारे गप । धसां सारे
सारे गप । धसां सारे ।।

गत, राग भूपाली, ताल रूपक

• स्थायी

०			×		२	
रे ग	रे	ग	पग	रेसा	प़ध़	सा।रे
सा ध़	रे	सा	सा ध़	रे सा	ध़	प़
ध़	सा	रे	ग	प	ध	रें सां
ग रें	गं	सां रें	गंरें	सांध	पग	रेसा

• अंतरा

०			×		२	
रे ग	ध	प	रें सांप	ध	पध	सारें
रें सां	–	रें सां	ध	गं रें	रें सां	–,
रें गं	सां रें	रें गं	ध	रें गं	रें	सां
सां ध	रें	गं	गंरें	सांध	पग	रेसा

• तालबद्ध तानें

	०			×		२	
१.	सारे	गरे	गप	धसां	धरें	सांध	पग
	रेसा,	प़ध़	सारे	ध़सा	रेग	सारे	गप

	०			×		२	
२.	सारे	गप	गप	धसां	गरें	सांरें	गरें
	सांध	पग	रेसा	पध	सा,ध़	सारे,	सारे
३.	गरे	सा,धं	गरें	सां,रें	गरें	सांध	पग
	रेसा	ध़रे	सा–	प़,ध	साध़	सारे	गरे
४.	सारे	गप	गरे	गप	धसां	रेंगं	रेंसां
	धप	धसां	धप़	गरे	साध़	प़ध़	सा–
	सारे	गप	धसां	सारे	ग–	सारे	गप
	धसां	सारे	ग–	सारे	गप	धसां	सारे
५.	सारे	गप	धसां	रेंगं	पंगं	रेंगं	पंगं
	रेंसां	धसां	धप	गरे	सारे	साध़	सा–
	प़ध़	सारे	ग–	सारे	ग–	प़ध़	सारे
	ग–,	सारे	ग–,	प़ध़	सारे	ग–	सारे
६.	सारे	गप	गरे	गप	धसां	रेंगं	रेंसां
	धप	गरे	पग	रेसा	ध़सा	ध़रे	सा–.
	सारे	गप	गप	धसां	ग–	सारे	गप
	गप	धसां	ग–	सारे	गप	गप	धसां
७.	सारे	गप	धसां	रेंगं	पंगं	रेंसां	धप
	धसां	धरें	धसां	धप	गरे	सा–,	सारे
	गप	धसां	सारे	ग–	सांरें	गं–	सांरें

	०			×		२	
	सारे	गप	धसां	सारे	ग–	सारें	गं–
	सांरें	सारे	गप	धसां	सारे	सारे	गं–
८.	प़ध़	सारे	गप	धसां	रेंगं	पंधं	सांरें
	सांधं	पंगं	रेंसां	धसां	धप	गरे	सा–
	प़ध़	सारे	सारे	गप	ग–	प़ध़	सारे
	सारे	गप	ग–,	प़ध़	सारे	सारे	गप
९.	सारे	गप	गप	धसां	पध	सांरें	धसां
	रेंगं	सारें	गंपं	गंपं	धंसां	धंपं	गंरें
	सांरें	सांध	गंपं	पग	पग	रेसा	ध़सा
	गप	धसां	प़ध़	सारे	ग–	गप	धसां
	प़ध़	सारे	ग–,	गप	धसां	प़ध़	सारे
१०.	प़ध़	प़सा	ध़सा	प़ध़	प़रे	सारे	ध़सा
	ध़ग	रेग	पध	पसां	धसां	धसां	धगं
	रेंगं	पंगं	पंधं	सांरें	सांधं	पंगं	रेंसां
	धरें	सांध	पध	पग	पग	पग	रेसा
	प़ध़	सारे	ध़सा	रेग	सारे	गप	धसां
	प़ध़	सारे	ध़सा	रेग	सारे	गप	धसां
	प़ध़	सारे	ध़सा	रेग	सारे	गप	धसां
११.	गरे	सारे	गप	धप	धसां	रेंसां	धसां
	धप	गरे	सारे	सारे	साध़	प़ध़	सा–
	गप	धसां	सारे	गप्र	धसां	सारे	ग–
	गप	धसां	सारे	गप	धसां	सारे	ग–
	गप	धसां	सारे	गप	धसां	सारे	गरे

गत, राग भूपाली, ध्रुवपद-अंग

चारताल

● स्थायी

×		०		२		०		३		४	
(रें)सां	–	ध	–	सां	–	ध	प	ग	रे	सा	–
ग	प	ध	सां	–	ध	प	ध	प	ग	रे	सा
सां	–	ध	–	सां	–	ध	प	ग	रे	सा	–

● अंतरा

×		०		२		०		३		४	
सां	–	ध	सां	–	प	ध	सां	–	(गं)रें	सां	–
गं	रें	गं	सां	–	(गं)रें	सां	ध	प	ग	रे	सा
(रें)सां	–	ध	–	सां	–	ध	प	ग	रे	सा	–

(दुगुन की लयकारी में)

×		०		२		०	
सां–	ध– ।	सां–	धप ।	गरे	सा– ।	गप	धसां

३		४	
–ध	पध ।	पग	रेसा ॥

×		०		२		०	
सां–	धसां ।	–प	धसां ।	–रें	सां– ।	गंरे	गंसां

३		४	
–रें	सांध ।	पग	रेसा ।

(तिगुन की लयकारी में)

×		०		२			
सां–ध	–सां– ।	धपग	रेसा– ।	गपध	सां–ध		
०		३		४			
पधप	गरेसा, ।	सां–ध	–सां– ।	धपग	रेसा– ॥		
गपध	सां–ध ।	पधप	गरेसा, ।	सां–ध	–सां–		
धपग	रेसा– ।	गपध	सां–ध ।	पधप	गरेसा ॥		

×		०		२	
सां–ध	सां–प ।	धसां–	रेंसां– ।	गंरेंगं	सां–रें
०		३		४	
सांधप	गरेंसां ।	सां–ध	सां–प ।	धसां–	रेंसां–
गंरेंगं	सां–रें ।	सांधप	गरेसा, ।	सां–ध	सां–प
धसां–	रेंसां– ।	गंरेंगं	सां–रें ।	सांधप	गरेसा ॥

(चौगुन की लयकारी में)

×		०		२	
सां–ध–	सां–धप ।	गरेसा–	गपधसां ।	–धपध	पगरेसा

० ३ ४
सां–ध– सां–धप । गरेसा– गपधसां । –धपध पगरेसा ।।

× ० २
सां–ध– सां–धप । गरेसा– गपधसां । –धपध पगरेसा

० ३ ४
सां–ध– सां–धप । गरेसा– गपधसां । –धपसां पगरेसा ।।

× ० २
सा–धसां –पधसां । –रेंसां– गंरेंगंसां । –रेंसांध पगरेंसां,

० ३ ४
सां–धसां –पधसां । –रेंसां– गंरेंगंसां । –रेंसांध पगरेंसां ।।

सा–धसां –पधसां । –रेंसां– गंरेंगंसां । –रेंसांध पगरेंसां,

सा–धसां –पधसां । –रेंसां– गंरेंगंसां । –रेंसांध पगरेंसां ।।

आड़ (डेढ़ गुन की लयकारी में)

× ० २ ०
साऽ– ऽधऽ । –ऽसां ऽ–ऽ । धऽप ऽगऽ । रेऽसा ऽ–ऽ

३ ४
गऽप ऽधऽ । सांऽ– ऽधऽ ।। पऽध ऽपऽ । गऽरे ऽसाऽ,

साऽ– ऽधऽ । –ऽसां ऽ–ऽ । धऽप ऽगऽ । रेऽसा ऽ–ऽ ।।

गऽप ऽधऽ । साऽ– ऽधऽ । पऽध ऽपऽ । गऽरे ऽसाऽ,

साऽ– ऽधऽ । –ऽसां ऽ–ऽ ।। धऽप ऽगऽ । रेऽसा ऽ–ऽ

गऽप ऽधऽ । साऽ– ऽधऽ । पऽध ऽपऽ । गऽरे ऽसाऽ, ।।

×		०	२	०	
साऽ–	ऽधऽ । –ऽसां	ऽ–ऽ । धऽप	ऽगऽ । रेऽसा	ऽ–ऽ	
३		४			
गऽप	ऽधऽ । साऽ–	ऽधऽ ।। पऽध	ऽपऽ । गऽरे	ऽसाऽ,	
×		०	२	०	
सांऽ–	ऽधऽ । सांऽ–	ऽपऽ । धऽसां	ऽ–ऽ । रेंऽसां	ऽ–ऽ	
३		४			
गऽरें	ऽगऽ । साऽ–	ऽरेंऽ ।। सांऽध	ऽपऽ । गऽरे	ऽसाऽ,	
सांऽ–	ऽधऽ । साऽ–	ऽपऽ । धऽसां	ऽ–ऽ । रेंऽसां	ऽ–ऽ ।।	
गऽरें	ऽगऽ । साऽ–	ऽरेंऽ । सांऽध	ऽपऽ । गऽरे	ऽसाऽ	
सांऽ–	ऽधऽ । सांऽ–	ऽपऽ ।। धऽसां	ऽ–ऽ । रेंऽसां	ऽ–ऽ	
गऽरें	ऽगऽ । साऽ–	ऽरेंऽ । सांऽध	ऽपऽ । गऽरे	ऽसाऽ, ।।	
सांऽ–	ऽधऽ । सांऽ–	ऽपऽ । धऽसां	ऽ–ऽ । रेंऽसां	ऽ–ऽ	
गऽरें	ऽगऽ । साऽ–	ऽरेंऽ ।। सांऽध	ऽपऽ । गऽरे	ऽसाऽ	

ज्ञातव्य : इसी प्रकार से सवाई लय, पौनी लय एवं पचगुन, छहगुन इत्यादि लयकारियों में भी बजाने का प्रयत्न करना चाहिए।

राग दुर्गा

परिचय : ठाठ बिलावल, वर्जित स्वर : गान्धार और निषाद, विकृत स्वर : कोई नहीं, जाति : औडव-औडव, वादी : धैवत, संवादी : ऋषभ, प्रकृति : शांत-धीर, समय : रात्रि का द्वितीय प्रहर।

आरोह : सा रे म प ध सां।

अवरोह : सां ध प म रे सा।

पकड़ : सा, रे म प, ध, म प ध, म रे सा, ध़ सा।

राग-चलन : सा ध़ सा रे प, ध म प ध, सां ध सां, ध रें सां ध प, ध म प ध म रे ध़ सा।

विशेष विवरण

इस राग की उत्पत्ति दो ठाठों से मानते हैं। प्रथम बिलावल ठाठ तथा द्वितीय खमाज ठाठ से। इस राग में गान्धार और निषाद स्वर बिलकुल ही वर्जित हैं, शेष सभी स्वर शुद्ध लगते हैं। इस प्रकार इस राग की जाति औडव-औडव हुई। इस राग के आरोह में धैवत पर और अवरोह में ऋषभ पर ठहरने से इस राग का स्वरूप शीघ्र ही स्पष्ट हो जाता है। इसमें ध म रे, सा रे प तथा ध म प ध, म रे सा की संगति भली प्रतीत होती है। कुछ गुणीजनों का कहना है कि इस राग का वादी स्वर मध्यम तथा संवादी स्वर षड्ज है। इस प्रकार हम देखते हैं कि इस राग के वादी-संवादी में भी मतभेद है। दुर्गा के समान स्वरवाला एक अन्य राग दक्षिण भारतीय संगीत या कर्नाटकीय पद्धति में भी प्रचलित है, जिसका नाम शुद्ध सावेरी है। यह एक उत्तरांग-प्रधान राग है। इस राग को गाते-बजाते समय इसके समप्रकृति राग जलधर केदार से भी बचाना चाहिए। राग दुर्गा एक ऐसा राग है, जिसे बाँसुरी पर सरलता से बजाया जा सकता है और मधुर भी लगता है।

स्वर-आलाप

१. सा, ध़ सा – – – रे म, प ध ध – म

रे सा रे सा ध़ सा – – – ध़ प़ – – –

ध़ म़ – प़ ध़, ध़ सा – – – ध़ सा – – –

रे – सा रे प – – – म प ध म रे, सा

ध़ सा – – – रे, म प – – रे म प ध म

प ध़ सा – रेम – ध़ध़पम प – – – – म ध

प – – – ध म रे, प ध म प ध म रे सा

– – – ध़ सा ध़ प़ – – ध़ सा – – – रे,

सा – – – सा, म रे प ध, म प ध, म रे सा रे सा

ध़ सा – – – –, ध़ सा ध़ रे सा रे सा –

– – सा रे, रे म, म प, ध – –, प ध –

– – म प – – – ध म प – – ध म रे

सा रे सा रे ध़ सा – – – सा रे म प ध म

प ध – सां ध सां – – –, ध म प ध सां –

– – रें सां – – – ध सां – – – ध रें सां

– – – ध प – – – ध म प ध म रे सा

रे प म – ध म रे सा – ध़ रे सा रे सा –

– – ध़ सा – – – सा रे प – म ध – –

– ध सां – – – ध म प ध सां रें (सां) ध

म प प ध सां ध सां ध सां रें सां मं रें सां

मं
रें ध सां – – – रें सां ध म प ध सां – –

– ध सां रें सां ध म प ध सां – – – ध सां

रें सां – – – सा रे म प ध प सां – ध रें

सां – – – रें सां रें, पं धं मं रें सां ध रें सां

– – – रें सां ध म प ध सां ध – प ध –

म रे, रे म, सा रे, सा ध़ सा – – –, ध़ –

प़ – – – ध़ ध़ सा रे सा (ध़) ध़ रे सा रे

म
ध़ सा – – – रे सा – – सा रे, सा रे प

म प – – – म ध – – – प ध – – –

प सां ध म रे, प ध – – – म रे सा रे सा

ध़ प़ ध़ सा ध़ रे सा – – ध़ सा – – – ध

म
रें सां – – – म म रे, – सा सा रे – प म

ध ध – सां सां – ध, सां ध – प ध –, ग म

रे, सा सा, ध़ रे रे – सा – – – सा ध़ –

– – सा – – – ध़ सा – – – ध़ रे सा –

म
रे ध़ ध़ सा – – –, सा – – – – ध़ सा –

म
रे – – – सा – – – – ध़ सा – – – रे

सा – – –, ध़ रे सा – ध़ सा – –।

निर्बन्ध ताल-रहित तानें

१. सा रे ग रे म म रे सा ध़ रे सा –, सा रे, रे म, प ध, म रे ग रे सा, सा रे म प ध म प ध, म रे सा रे सा ध़ सा –, सा रे – म रे म – प ध म – प ध म रे सा, सा रे म रे म प म रे ध म प ध म रे सा रे ध़ रे सा, ध़ सा रे म सा रे म प रे म प ध प ध म रे सा रे ध सा ध़ रे सा, सा रे रे प प प, ध म प ध म प ध सां ध प ध म रे सा ध़ सा।

२. सा रे म रे म प ध प ध म प ध सां ध प ध म रे सा रे म म रे सा ध़ सा ध़ रे म रे सा, सा रे सा म रे म रे प म प म ध प ध म रे सां ध प म ध म रे सा, रे म प ध, म प ध सां रें ध सां रें सां ध प ध म रे सा, सा रे म प ध सां प ध म म रे सा, प़ ध़ सा रे, ध़ रे सा।

३. सा सा सा, ध़ ध़ ध़ ध़ प़ ध़ सा रे सा ध़ सा रे म प ध – म रे सा रे प ध म प ध म प ध म रे म म रे सा, सा रे म प ध सां ध रें सां सां ध प ध ध प म ध म रे रे सा रे ध़ सा म रे सा, सा रे म, रे म प, म प ध, प ध सां, ध सां रें मं

रें सां ध सां प ध म रे म म सा रे सा ध़ रे रे सा, प़ ध़ प ध सां रें सा रे सा रे प म प प ध ध प म ध म प ध म रे म म रे रे सा।

४. सा रे म प ध म प ध सां ध रें सां रें मं पं मं धं मं पं धं मं रें सां ध प ध प सां ध म ध म रे रे सा रे सा, ध़ सा रे म, रे म प ध, म प ध सां, रें मं पं धं मं रें मं मं रें धं सां रें सां ध प ध म रे सा रे प प म म ध म रे सा ध़ ध़ सा, रे रे म, प प ध सां सां रें, मं मं मं रें रें रें सां सां सां ध ध ध, म म म, रे रे रे सा रे सा ध़ प़ ध़ सा रे ध़ रे सा रे सा ध़ सा।

५. सा रे म रे सा रे म प म रे, सा रे प म प ध म रे, सा रे म म रे सा सा रे म प ध सां रें मं पं धं मं रें सां ध प म रे सा ध़ सा रे म प ध, सां रें मं पं मं रें सां ध प म रे सा ध़ रे सा, सा रे म प ध सां सां रें मं पं धं सां पं धं मं रें सां रें सां ध प म प ध प म ध म प प ध म रे सा रे ध़ सा – – –।

गत, राग दुर्गा, तीनताल

● **स्थायी**

×	२	०	३
		सा मम रे प	– ध(सां) म प
(सां)ध – –, म	– (म)रे सा –	ध़ सा ध़ रे	– म रे म
ध म प ध	(रें)सां धप मरे सा–		

● **अंतरा**

×	२	०	३
		ध म प ध	सां – प ध
(रें)सां – सां सां	ध (मं)रें सां –	ध सां रें मं	रें सां ध सां
धं म पध सांरें	मंरें सांध पम रेसा		

● **तालबद्ध तानें**

×   २   ०

१. सारे मप धसां रेंसां। धसां धप मरे सा। सारे मप ध सारे

३

मप ध सारे मप।

२. सारे मरे मप धप। धसां रेंसां धग पध। गरे साध़ सारे मप

सारे मप सारे मप।

३. धम पध सांध सांरें। मंरें सांध पम रेसा। सारे मप ध –

मप ध – मप।

× २ ०
४. सारे गरे मप धप । धम पध सांरें सांध । पध मरे सारे मप
३
सारे मप सारे मप ।

५. सांध रेंसां मंरें पंमं । रेंसां धप मरे सा । गत बजाएँ …।

६. सारे मप पृधृ सारे । मप धसां मंरें सांध । पम रेसा धृसा रेम रेम पध मप धसां ।

७. धम पध सांध रेंसां । रेंमं सांरें धसां पध । मप रेम सारे धृसा रेम पध सां रेम ।। प धप ध, रेम । पध सां रेम प धप ध रेम पध । सां रेम प धप ।।

८.– धृरे सारे मप धप । धसां रेंसां रेंमं पंमं । रेंसां धप धम पध साधृ पम रेसा धृसा ।। रेम पध –सां –सां । सां – रेम पध –सां –सां सां – । रेम पध –सां –सां ।।

९. मप धसां धसां रेंमं । रेंमं पंसां रेंमं धसां । रें,प धसां मप ध,रे मप सारे म,धृ रेसा ।। रेम पध मप धसां । रेंमं पंमं रेंसां धप मरे सा सां रेम । पध मप धसां रेंमं ।। पंमं रेंसां धप मरे सा सां रेम पध । मप धसां रेंमं पंमं । रेंसां धप मरे सां ।।

१०. सा सां – रें । मंरें सांध पम रेसा । यहाँ से गत बजाएँ…।

११. पं –– मंरें सांध । पम रेसा धृरे सा । रेम पध गप धसां सा सां सा सां ।

१२. म प मप धसां । प ध पध सांरें । रेंमं सांरें धसां पध मप रेम सारे धृसा ।। सारे मप धसां मप । ध – सारे मप धसां मप ध –– । सारे मप धसां मप ।।

× २ ०
१३. प़ प सा सां। प पं मंरें सांध। पम रेसा ध़रे सा
३
रेम पध मप धसां ।। सारे मप धसां रेम। पध मप धसां सारे
मप धसां रेम पध। मप धसां सारे मप ।।

१४. सारे ध़सा पध मप। सारे धसां मं रेंसां। पंमं रेंसां धप मरे
साध़ सा सां सा ।।

१५. प़ध़ सारे सांरें मंपं। धम पध मरे साध़। प़ध़ सारे मप धसां
रेंमं पंमं रेंसां धप ।। मरे सा ध रेंमं। पंमं रेंसां धप मरे
सा ध रेंमं पंमं। रेंसां धप मरे सा ।।

१६. सारे साम रेम रेप। मप मध पध पसां। धसां पप मरे सा
मप ध,म मध मप ।।

१७. सारे मरे मप धप। धसां रेंसां पध सांध। पध सांरें मंरें सांरें
धसां धप मरे सारे ।। सारे मप ध मप। ध – सारे मप
ध, मप ध –,। सारे मप ध मप ।।

१८. म रेम रेसा सां। धसां धप मं रेंमं। रेंसां सां धसां धप
धम पध मरे सा ।। प़ध़ साध़ सा प़ध़। सा – ध़सा रेसा
रे सारे म –। मप धप ध मप ।।

१९. रेसा ध़सा मरे सारे। पम रेम धप मप। सांध पध रेंसां धसां
मंरें सांरें मं रेंसां ।। धसां रेंसां धसां धप। मप धप मरे सारे
प मप ध धसां। रेंसां धसां धप मप ।। धप मरे सारे प
मप ध धसां रेंसां। धसां धप मप धप। मरे सारे प मप ।।

×　　　　　２　　　　　०
२०. सारे म– रेसा रेम । रेम मरे, मप मध । पम पध पसां धप
३
धसां रेंमं रेंसां धसां ।। पध सांध पम रेसा । रे, मप ध मप
ध मप ध पध । सांध पम रेसा रे ।। मप ध मप ध,
मप ध पध सांध । पम रेसा रे, मप । ध मप ध मप ।।

२१. मरे सारे पम रेम । धम पध पध सांध । सांरें मंरें सांध पध
सांध पम रेंसां धसां ।। रेसा मरे पम धप । ध – रेसा मरे
पम धप ध – । रेसा मरे पम धप ।।

२२. मप धसां रेंमं रेंसां । धम पध मरे सारे । मप धसां –, मप
धसां – मप धसां ।।

अनाघात की तानें

२३. धप सांध रेंसां ध़सा । धसां रेंमं रेंसां धसां । पध मप रेम सारे
पम रेसा ध़प़ ध़सा ।। सारे मप धसां ध । – –, सारे मप
धसां ध – – । सारे मप धसां ध ।।

२४. धप मप सारे मप । धप मप मरे सा । रेम पध सांरें सांध
पध सांरें सांध पम ।। पध मप मरे सा– । प़ध़ सा,प ध़सा प़ध़
सारे म,सा रेम, सारे । मप ध,म मध मप ।।

२५. रेसा मरे पम धप । सांध रेंसां मंरें पंमं । रेंसां धप धसां धप
धम रेध़ सारे मप ।।

२६. ध़सा ध़रे सारे, पध । पसां धसां धरें सां । धप प धसां धप
धम पध मरे मप ।।

२७. प़ध़ सारे मप धसां । रेंमं पंधं सांधं पंमं । रेंसां धप मरे साध़
सारे म,रे मप, मप ।।

झाला, राग दुर्गा, तीनताल

(कण, मींड़, जमजमा, गमक व तान-सहित)

×				२				०				३			
रे								सा			म	रे		रे	
सा	ध़	सा	–	ध़	–	सा	–	ध़	सा	ध़	रे	सा	–	सा	–
तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऊ	तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऽ
म		म		म		ध़		म				सा	सा		
रे	सा	रे	म	रे	–	सा	–	रे	सा	ध़	प़	ध़	ध़	सा	–
तू	ऊ	तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	तू	ऊ	ऊ	तू	ऊ	तू	ऽ
सा				ध़		ध़		सा		रे		रे	म		
ध़	सा	ध़	प़	प़	–	प़	–	ध़	–	सा	–	ध़	रे	सा	–
तू	ऊ	तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऊ	तू	ऽ
म		म		ध		ध						ध		ध	
रे	सा	रे	म	प	–	प	–	म	रे	सा	रे	प	–	प	–
तू	ऊ	तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	तू	कू	कू	तू	ऽ	तू	ऽ
रे	म			रे	म	ध									
सा	रे	म	रे	सा	रे	प	–	म	–	प	–	म	म	प	–
तू	ऊ	तू	ऊ	तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	तू	तू	ऽ
सां						ध						रे		रे	
ध	म	प	ध	म	–	प	–	म	–	रे	–	सा	ध़	सा	–
तू	ऊ	तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऊ	तू	ऽ

म म ध ध सां सां रें रें

रे - सा रे | प - प - | ध प ध सां | ध म प -

तू ऽ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ | तू ऊ तू ऊ | तू ऊ तू ऽ

ध ध़ रे

ध म प ध | म रे प - | म - रे - | सा ध़ सा -

तू ऊ तू ऊ | तू ऊ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ | तू ऊ तू ऽ

म म म सां ध ध ध ध

रे रे सा रे | प म प ध | प - प - | प - प -

तू ऊ तू ऊ | तू ऊ तू ऊ | तू ऽ रू ऽ | कू ऽ कू ऽ

रें रें मं ध ध सां मं रें

सां ध सां रें | सां - सां - | ध रें सां - | ध सां ध -

तू ऊ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ | तू ऊ तू ऽ | तू ऊ तू ऽ

सां म सा रे म रे रे

म ध प - | रे म रे - | सा रे सा - | सा - सा -

तू ऊ तू ऽ | तू ऊ तू ऽ | तू ऊ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ

म सां रें रें रें रें रें रें

रे म प ध | सां - सां - | सां - सां - | सां ध सां -

तू ऊ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ | तू ऊ तू ऽ

गं

रेंमं रेंसां धसां धप | धम पध मरे साध़ | प़ध़ सारे मप धसां | ध रें सां -

तूऽ ऊऊ तूऊ ऊऊ | तूऊ ऊऊ तूऊ ऊऊ | तूऊ ऊऊ तूऊ ऊऊ | तू ऊ तू ऽ

सां रें | सां मं | रें रें | रें रें
ध – सां – | ध रें सां – | सां – सां – | सां – सां –
तू ऽ तू ऽ | तू ऊ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ

रें रें रें | मं | मं | रें रें
ध ध सां – | रें मं रें सां | रें – सां – | ध – सां –
तू ऊ तू ऽ | तू ऊ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ

रें मं | मं
सां रें मं रें | सां रें पं – | पं – पं – | मं – पं –
तू ऊ तू ऊ | तू ऊ तू ऽ | तू ऽ रू ऽ | कू ऽ कू ऽ

मं | | सां
मं रें सां रें | पं मं पं – | धं मं पं धं | मं – पं –
तू ऊ तू ऊ | तू ऊ तू ऽ | तू ऊ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ

| रें न | रें रें | रें रें
मं – रें – | सां – सां – | सां – सां – | सां – सां –
तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ

× २
रेंमं रेंसां धसां धप । धसां रेंमं रेंसां धप

० ३
धम पध मरे सारे । साध् सारे मरे सा–

× २ ० ३
सा | म | सा म ध् | रे रे
ध् – सा – | रे – सा – | ध् रे सा – | सा – सा –
तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ | तू ऊ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ

×				२			
रेरे	रे,म	मम,	पप,	मम	म,प	पप,	धध
तूतू	तूतू	तूतू	तूतू	तूतू	तूतू	तूतू	तूतू

०				३			
पप	प,ध	धध.	सांसां	धध	ध,सां	सांसां,	रेंरें
तूतू	तू,तू	तूतू	तूतू	तूतू	तूतू	तूतू	तूतू

मंमं	मं,रें	रेंरें,	सांसां	सां,ध	धध,	पप	प,म
तूतू	तू,तू	तूतू,	तूतू	तू,तू	तूतू,	तूतू	तूतू

मम,	रेरे	रे,सा	सासा,	ध़ध़	ध़,सा	सासा	रेसा
तूतू,	तूतू	तू,तू	तूतू,	तूतू	तू,तू	तूतू	तूतू

×				२				०				३			
म			म	ध		ध						ध		ध	
रे	–	सा	रे	प	–	प	–	रे	म	रे	सा	प	–	प	–
तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऊ	तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऽ
सां		ध	सां				मं	रें		रें		रें		रें	
ध	म	प	ध	मं	रें	सां	रें	सां	–	सां	–	सां	–	सां	–
तू	ऊ	तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ
सां		रें		सां	मं	रें		सां	रें		मं	रें		रें	
ध	–	सां	–	ध	रें	सां	–	ध	सां	ध	रें	सां	–	सां	–
तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऊ	तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऽ

×	२	०	३
मं मं			
रें सां रें मं	पं – पं –	धं मं पं धं	मं – पं –
तू ऊ तू ऊ	तू ऽ तू ऽ	तू ऊ तू ऊ	तू ऽ तू ऽ
धं मं पं धं	सां – सां –	धं – सां –	सां – सां –
तू ऊ तू ऊ	तू ऽ तू ऽ	तू ऽ तू ऽ	तू ऽ तू ऽ
रें सां धं पं	धं मं पं धं	सां – सां –	धं रें सां –
तू ऊ तू ऽ	तू ऊ तू ऊ	तू ऽ तू ऽ	तू ऊ तू ऽ
	मं		
धं – पं –	रें मं पं –	मं – रें –	सां रें ध सां
तू ऽ तू ऽ	तू ऊ तू ऽ	तू ऽ तू ऽ	तू ऊ तू ऊ
रें रें	रें रें		सां
सां – सां –	सां – सां –	ध रें सां –	ध सां ध –
तू ऽ तू ऽ	तू ऽ तू ऽ	तू ऊ तू ऽ	तू ऊ तू ऽ
	म	म	रे
प ध प –	रे म रे –	सा रे सा –	ध़ – सा –
तू ऊ तू ऽ	तू ऊ तू ऽ	तू ऊ तू ऽ	तू ऽ तू ऽ
		रे म	रे रे
ध़ – प़ –	ध़ – सा –	ध़ रे सा –	सा – सा –
तू ऽ तू ऽ	तू ऽ तू ऽ	तू ऽ तू ऽ	तू ऽ तू ऽ

झाले की समाप्ति की तान व तिहाई

×　　　　　　　　२　　　　　　　　०
रेंमं रेंमं सांरें सांरें । धसां धसां पध पध । मप मप रेग रेम

३　　　　　　　　×　　　　　　　　२
सारे सारे साध़ सा– ।। रेम पध सां– रेम । प– —, रेम पध

०　　　　　　　　३　　　　　　　　×
सां– रेम प– —, । रेम पध सां– रेम ।। रेंमं रेंमं सांरें सांरें

२　　　　　　　　०　　　　　　　　३
धसां धसां पध पध । मप मप रेम रेम । सारे सारे साध़ सा–

×　　　　　　　　२　　　　　　　　०
रेम पध सां– रेम । प– —, रेम पध । सां– रेम प– —,

३　　　　　　　　×　　　　　　　　२
रेम पध सा– रेम ।। रेंमं रेंमं सांरें सांरें । धसां धसां पध पध

०　　　　　　　　३　　　　　　　　×
मप मप रेम रेम । सारेसारे साध़ सा– ।। रेम पध सां– रेम

२　　　　　　　　०　　　　　　　　३
प– —, रेम पध । सां– रेम प– —, । रेम पध सां– रेम

गत, राग दुर्गा, तीनताल

● **स्थायी**

×	२	०	३
		सांध सां ध म	– रे सा रे
प – – म	ध म प ध	म रे सा रे	–सा ध़ सा
रेम पध सांरें मरें	सांध पम रेसा ध़सा		

● अंतरा

×				२				०				३			
								म	प	ध	सां	–	रें	सां	–
ध	–	सां	रें	–	सां	ध	म	रे	सा	ध	म	–	प	ध	सां
धसां	रेंसां	पम	पध	मम	रेम	ध़रे	सा								

● तालबद्ध तानें

×　　　　　　　२　　　　　　०
१. सारे मप धसां रेंसां । धम पध मरे सा । सांध सां ध म
३
– रे सा रे ॥

२. सारे मप धम पध । सांध पम रेध़ सा– । रेम पम प, रेम पम प, रेम पम ॥

३. सारे मरे मप मरे । मप धप धसां धप । धसां रेंमं रेंमं रेंसां पध सांरें सांरें सांध ॥ पध पम रेम रेसा । प़ध़ सा,प़ ध़सा, प़ध़ सारे म,सा रेम सारे । मप ध,म पध, मप ॥

४. मरे म, रेसा, सांध । सां धप मंरें मं । रेंसां रेंसां धप मरे सारे मप धसां पध ॥ सां रेम प सारे । मप धसां पध सां रेम प सारे मप । धसां पध सां रेम ॥

५. ध़सा रेम रेम रेसा । ध़सा रेम रेसा ध़सा । प़ध़ सारे मप धसां रेंसां धप मरे सा ॥ प़ध़ सारे सा, ध़सा । रेम रे मप धसां

° ३ ×
ध, पध सांरें सां। रेंमं रें,सां रेंसां धसां ।। ध,प धप, मप मरे
२ ° ३
मरे सारे साध़ रेसा। रे सारे रेम रेम। प – प –।।
× २ °
६. मरे सा,म रेसा मरे। पम रे,प मरे पम। धप म,ध पम, धप
३
सांध पसां धप सांध ।। रेंसां ध,रें सांध रेंसां। मंरें सांमं रेंसां मंरें
धसां रेंमं रेंसां धप। मंरें सांध पम रेसा ।। रेम पम प, मंरें
सांध पम रेसा रेम। पम प, मंरें सांध। पम रेसा रेम पम

७. सा रे म रे। – पम रेम रेसा। रे म प म
– सां धसां धप ।। ध सां रें सां। – मं रेंमं रेंसां
धसां धप रेम रेसा। रे सारे म रेम ।।

८. सारे –सा रेम –रे। मप –म पध –प। धसां –ध सांरें –सां
रेंमं रेंसां रेंसां, रेंसां ।। धसां ध,प धप, धप। मप मरे मरे, सारे
सारे सा,ध़ साध़ रेसा। मरे मप –म पम ।। प, प, प, मरे
मप –म पम प। प प मरे मप। –म पम प, प ।।

९. ध़सा रेम रेसा रेम। पध पम पध सांरें। सांध सांरें मंपं मंरें
सांरें सांध पध पम ।। रेम रेसा रेध़ सा। रेध़ सा रेध़ सारे
सांध सां ध म। – रे सा रे।।

१०. प़ध़ प़सा ध़सा ध़सा। ध़रे सारे पप मध। पध पध पसां धसां
धसां धरें सांरें सांरें ।। मंरें मंपं मंरें धसां। रेंमं रेंसां पध सांरें
सांध पम धसां धम। रेम पध, मरे सा ।। रे सारे म रेम
प – रेम प,रे। मप रेम प, रे। सारे म रेम प ।।
– रेम प,रे मप। रेम प रे सारे। म रेम प –
रेम प,रे मप रेम ।।

गत, राग दुर्गा, झपताल

• स्थायी

×		२			०		३		
(ध)प	–	मप	धसां	धप	(सां)ध	म	रे	–सा	–रे
(रे)सा	ध़	सा	रे	मप	ध	म	रे	–सा	–रे
प	–	मप	धसां	धप	ध	म	रे	–सा	–रे

• अंतरा

×		२			०		२		
म	–	प	(सां)ध	–	सांध	सां	रें	(ध)सां	–
(सां)ध	सां	(मं)रें	मं	–,	रें	सां	(मं)रें	ध	(रें)सां
(मं)रें	(ध)सां	ध	म	प	(सां)ध	म	रे	–सा	–रे

• तालबद्ध तानें

	×		२			०		३		
१.	सारे	मरे	मप	धप	धसां	रेंसां	धम	पध	मरे	सा–
	मरे	सारे	पम	प,म	रेसा	रेप	मप	मरे	सारे	पम
२.	सारे	मप	धसां	रेंसां	मंरें	सांरें	सांध	पध	मरे	सा–
	रेम	पम	प–	––	रेम	पम	प	––	रेम	पम

	×		२			०		३		
३.	सारे	मप	धम	पध	सांध	सांरें	मंरें	सांध	पम	रेसा
	सारे	मप	रेम	पसा	रेम	परे	मप	सारे	मप	रेम
४.	प	मप	ध	पध	सां	धसां	रेंमं	रेंसां	धसां	धप
	मरे	सा	रेम	पम	प	रेम	पम	प	रेम	पम
५.	सारे	मप	मप	धसां	धप	मप	धसां	धसां	रेंमं	रेंसां
	धसां	धप	धम	पध	मरे	सारे	प	सारे	प	सारे
६.	ध़सा	रेसा	ध़सा	रेम	रेसा	ध़सा	रेम	धम	पध	मरे
	सारे	मप	धसां	–सां	रेम	पध	सां	सारे	मप	धसां
७.	प़ध़	प़सा	ध़रे	साम	धम	पध	सांरें	सांध	मंरें	पंमं
	रेंसां	धप	धम	पध	मरे	सारे	प	सारे	प	सारे
८.	ध़–	सारे	सा	ध़सा	रेम	रेसा	रे–	मप	–म	रेम
	पध	पम	धम	पध	सांरें	मंरें	मंमं	मं,रें	रेंरें	सांसां
	सां,ध	धध	रेंरें	रें,सां	सांसां	धध	ध,प	पप	सांसां	सां,ध
	धध	पप	प,म	मम	धध	ध,प	पप	मम	म,रे	रेरे
	सारे	मप	धसां	मप	धसां	सांसां	सां	सारे	मप	धसां
	मप	धसां	सांसां	सां	सारे	मप	धसां	मप	धसां	सांसां
९.	साध़	सारे	मरे	सारे	मप	धम	पध	सांरें	मंरें	सांरें
	धसां	पध	सांध	पध	मरे	सा	रेम	प,रे	मप	रेम

	×		२			०		३		
१०.	साध़	प़ध़	सारे	मप	धम	पध	सांध	सांरें	मंरें	पंमं
	रेंसां	धप	धम	पध	मरे	सा	रेम	पध	सांध	सां
	प	रेम	पध	सांध	सां	प	रेम	पध	सांध	सां
११.	प़ध़	सारे	मप	धसां	रेंमं	पंमं	रेंसां	धप	मरे	सा
	रेम	पध	सांसां	सांरें	मप	धसां	सांसां	रेम	पध	सांसां
१२.	ध़सा	ध़रे	सारें	सारे	ध़सा	ध़म	रेम	रेम	रेम	रे,ध
	पध	पध	सांरें	मं,ध	सांरें	पध	सांम	पध	पम	रेसा
	रेसा	मरे	पम	धप	सां	रेम	प	रेसा	मरे	पम
	धप	सां	रेम	प	रेसा	मरे	पम	धप	सां	रेम
१३.	सारे	मरे	मप	मरे,	सारे	मप	धम	पध	मरे़	सा–
	रेम	पम	प	–,	रेम	पम	प	–,	रेम	पम
१४.	मरे	पम	धप	सांध	सांरें	मंरें	सांध	पध	पम	रेम
	रेसा	ध़प़	ध़सा	ध़प़	ध़सा	रेसा	रेम	पध	मरे	सा
	रेम	पध	सां	पध	सां	रेम	प	रेम	पध	सां
	पध	सां	रेम	प,	रेम	पध	सां	पध	सां,	रेम
१५.	मरे	सारे	सारे	मप	धप	मप	रेम	पध	सांध	पध
	पध	सांरें	सांरें	मंपं	मंरें	सांध	पम	पध	मरे	सा
	रेम	पम	प	ध	सां	रेम	प	रेम	पम	प,
	ध	सां	रेम	प	रेम	पम	प	ध,	सां	रेम

१६. मरे सारे | म रेम रेसा | ध़सा रेसा | मरे प मध
पम रेम | रेसा ध़सा रेम | पध सांरें | मंपं मंरें सांरें
सांध पम | रेसा प़ध़ सारे | पम प | सांध पम रेसा
प़ध़ सारे | पम प सांध | पम रेसा | प़ध़ सारे पम

१७. रेसा मरे | पम रेसा मरे | पम पध | पम पध मप
रेम पध | सांध पम रेसा | रेम प, | रेम पध सांध
पम रेसा | रेम प रेम | पध सांध | पम रेसा रेम

१८. सा –रे | मप मरे मप | –म –प | धसां धप धसां
रेंमं रेंसां | रेंसां धसां धप | धप मप | म,रे मरे, सारे
मप धसां | रेंसां रेंधं सांध | सांध धसां | धप मरे सा–
–रे –म | प –, –रे | –म प | –, –रे –म

१९. मप धसां | रेंमं रेंसां धम | पध सांध | पम धम रेसा
धम पध | सां –, धम | पध सां | –, धम पध

२०. मरे पम | धप सांध रेंसां | मंरें पंमं | पंधं मंरें सांध
पध मरे | सारे साध़ प़ध़ | सारे मप | धम रेध़ सा–
मप ध– | पध सांध सां, | रेम प– | मप ध– पध
सांध सां– | रेम प,– मप | ध– पध | सांध सां, रेम

२१. ध़सा रेम | पध सांरें मंपं | धंसां धंमं | रेंसां धम पध
मरे सारे | सारे साध़ प़ध़ | प़सा रेम | पध मरे सा–
रेम पध | सां, सा, सां | रेम प, | रेम पध सां
सा– सां– | रेम प,– रेम | पध सां– | सा– सां– रेम

गत, राग दुर्गा, एकताल

● **स्थायी**

×		०		२		०		३		४	
प	–	म	प	मप	धसां	धप	ध	म	रे	सा	रे
सा	ध़	सा	रे	म	प	धसां	रेंसां	धसां	धप	मरे	सारे
प	–	म	प	मप	धसां	धप	ध	म	रे	सा	रे

● **अंतरा**

×		०		२		०		३		४	
सां	ध	सां	रें	ध	सां	ध	म	प	ध	सांध	सांरें
सां	–	सां	ध	रें	सां	ध	सां	रें	मं	रें	सां
ध	सां	ध	प	म	प	धसां	रेंसां	धसां	धप	मरे	सा

● **तालबद्ध तानें**

	×		०		२		०	
१.	म–	पध ।	पध	मप ।	रेम	रेसा ।	ध	पध
	३		४					
	सांध	पध ।	पम	रेसा ॥	सां	सां ।	रेंमं	रेंसां
	धम	पध ।	मरे	सा– ।	रेम	प,रे ।	मप	रेम ॥
२.	रेम	रेसा ।	धसां	धप ।	रेंमं	रेंसां ।	धसां	धप
	मप	धसां ।	धप	मप ॥	धसां	धप ।	मरे	सारे
	साध़	प़ध़ ।	सारे	मरे ।	साध़	सा– ।	रे–	सारे ॥
	म–	रेम ।	प–	रे– ।	सारे	म– ।	रेम	प–
	रे–	सारे ।	म–	रेम ॥				

	×	०	२	०	
३.	पध	मप । रेम	पम । धसां	धप । धसां	रेंसां
	३	४			
	धसां	धप । मरे	सारे ।। पम	पध । मरे	सा
	रेम	पम । प	रेम । पम	प । रेम	पम ।।
४.	रेम	पध । मप	धसां । धसां	रेंमं । रेंसां	धसां
	धम	पम । रेध़	सारे ।। मप	धप ।। धम	रेसा
	ध़रे	सा– । रे–	सारे । प	सारे । म–	रेम ।।
५.	पम	रेम । धप	मप । सांध	पध । सांध	रेंसां
	धप	मरे । सारे	मप ।। धसां	रेंमं । रेंसां	धप
	मरे	सा । प़ध़	साध़ । सारे	मरे । ध़सा	रेम ।।
६.	म	–प । धसां	धप । ध–	सां– । रेंमं	रेंसां
	धप	मरे । साध़	सा ।। प़ध़	साप़ । ध़सा	प़ध़
	सारे	म,सा । रेम	सारे । रेम	प,रे । मप	रेम ।।
७.	रेसा	मरे । पम	धप । सांध	पम । पध	पम
	धम	पध । पध	सां,प ।। धसां	पध । सां	प़ध़
	साप़	ध़सा । प़ध़	सा । रेम	परे । मप,	रेम ।।
८.	सारे	मरे । सा	रेम । पम	रेम । पध	सांरें
	मंरें	सांध । पध	मरे ।। मरे	सा– । रे	–म
	प	मप । –रे	–म । प	मप । –रे	–म ।।
९.	सारे	मप । धसां	पध । सांसां	मंरें । सांध	पम
	रेसा	ध़प़ । ध़सा	रेम ।। रेसा	मरे । सारे	मप

–म पम । प रेम । प – । सारे मप ।।
–म पम । प, रेम । प –, । सारे मप
–म पम । प रेम ।।

१०. सारे ध़सा । रेम रेम । पम धप । मप धसां
रेंमं रेंसां । धसां धरें ।। सांरें सांध । पध मप
रेम सारे । ध़सा ध़प़ । ध़रे सा– । रे– सारे ।।
म– रेम । प– रे– । सारे म– । रेम प–
रे– सारे । म– रेम ।।

गत, राग दुर्गा, ताल रूपक

● **स्थायी**

०			×		२	
प	मप	ध–	म	रे	–सा	–रे
सा	ध़	सा	रे	म	प	ध
सां	धप	ध	म	रे	–सा	–रे

● **अंतरा**

०			×		२	
प	मप	ध	सां	ध	प	ध–
सां	–	सां	(मं)रें	(मं)रें	सां	––
ध	रें	सां	ध	म	प	ध–
सां	धप	ध–	म–	रे–	–सा	–रे

● तालबद्ध तानें

	०			×		२	
१.	सा	–रे	सारे	मरे	मप	मरे	पम
२.	मप	धम	पध	मप	धप	धम	रेसा
	रेम	प–	––	रेम	प–	––	रेम
३.	सारे	मप	धसां	रेंसां	धप	मप	मरे
	ध़सा	रे–	––,	सारे	म–	–,–	रेम
४.	ध़सा	रेम	पध	सांध	सांरें	मंरें	सांध
	पध	पम	रेम	रेसा	ध़प़	ध़रे	सा–
	सारे	मप	ध–	पम	प–	सारे	मप
	ध,–	पम	प–,	सारे	मप	ध–	पम
५.	पम	पध	सांरें	मंरें	सांध	पम	रेसा
	पम	प–	––,	पम	प,–	––,	पम
६.	सा–	रेम	–रे	सारे	मप	रे–	मप
	रेम	पध	प	धसां	ध–	पध	सांरें
	धप	मरे	सारे	मप	रेम	पध	सां–
७.	ध़सा	ध़रे	सा–	रेप	धसां	धरें	सां–
	रेंपं	मंरें	सांध	पध	मप	धम	रेसा
	मरे	सारे	पम	प,–	प–	मरे	सारे
	पम	प–,	प,–	मरे	सारे	पम	प–

	०			×		२	
८.	सारे	मप	रेंम	पध	मप	धसां	रेंमं
	रेंसां	धसां	धप	धप	धम	पम	रेसा
	प़ध़	सारे	मरे	पम	प–	प़ध़	सारे
	मरे	पम	प-	प़ध़	सारे	मरे	पम

९.	सा–	रे–	म–	प–	––,	धसां	धप
	मरे	म–	प–	ध–	सां–	–,	रेंमं
	रेंसां	धप	धम	प–	धम	प–	धम

१०.	सा–	रेम	रे–	मप	म–	पध	प–
	धसां	ध,–	सांरें	मंपं	धसां	धंपं	मंरें
	सां–	पध	सां–	पध	सां	सा–	प़ध़
	सा–	प़ध़	सा–	रे–	पम	प–	पम

गत, राग दुर्गा (ध्रुवपद-अंग)

चारताल

● **स्थायी**

×		०		२		०		३		४	
सां								रे	म		
ध	म	प	ध	म	रे	सा	ध़	सा	रे	म	प
सां				रें		रें	गं	रें			
ध	–	प	ध	सां	ध	सां	रें	सां	ध	प	ध

म	प	ध	(रें)सां	ध	प	ध	(मं)रें	(रें)सां	(मं)रें	(रें)सां	ध
प	ध	म	रे	(सा)ध़	सा	ध़	प़	(रे)सा	(म)रे	म	प

• अंतरा

×		०		२		०		३		४	
(सां)ध	म	प	ध	(रें)सां	ध	(रें)सां	(मं)रें	ध	(मं)रें	(रें)सां	–
ध	(रें)सां	(मं)रें	मं	रें	सां	ध	म	प	ध	(रें)सां	(मं)रें
(रें)सां	ध	प	(सां)ध	म	रे	सा	ध़	(रे)सा	रे	म	प
(सां)ध	सां	ध	म	प	ध	म	रे	सा	रे	म	प

ज्ञातव्य : विद्यार्थी एवं वादक अपनी साधना व इच्छा के अनुसार इस गत की दुगुन, तिगुन, चौगुन, आड़ (डेड़गुन) कुवाड़ (पचगुन), जिस लय में चाहें साधना करके बजा सकते हैं।

राग भिन्नषड्ज

परिचय : ठाठ बिलावल, जाति : औडव-औडव, वर्जित स्वर : ऋषभ और पंचम, वादी : मध्यम, संवादी : षड्ज, प्रकृति : शांत-गंभीर, रस : वीर एवं शांत, समय : मध्य रात्रि।

आरोह : सा ग म ध नि सां।

अवरोह : सां नि ध म ग सा।

पकड़ : सा, ऩि सा, ध़ ऩि सा म, ग म ध, ग म ग म ग सा, ध़ ऩि सा म।

राग-चलन : सा ऩि ध़ ऩि सा म, ग म ध म, सा म ग ग म ध नि सां नि ध म, ग म ग सा, ऩि सा।

विशेष विवरण

भिन्न षड्ज बिलावल ठाठ से उत्पन्न हुआ एक मधुर प्राचीन राग है। इस राग में ऋषभ तथा पंचम स्वर वर्ज्य हैं। शेष सभी स्वर शुद्ध लगते हैं। इस राग का वादी स्वर शुद्ध मध्यम तथा संवादी स्वर षड्ज है। यह एक प्राचीन राग है। परन्तु आजकल प्रचार बहुत कम होने के कारण इस राग को इने-गिने लोग ही गाते-बजाते हैं। इस राग में षड्ज एवं मध्यम का बहुत ही महत्त्व है। यदि इस राग में शुद्ध मध्यम के बजाय तीव्र मध्यम का प्रयोग किया जाए तो यह राग हिन्डोल में परिवर्तित हो जाएगा तथा षड्ज मध्यम-भाव भी भिन्न हो जाएगा। इस राग में आलाप एवं विलम्बित खयाल अथवा गत बहुत ही प्रिय प्रतीत होती है। बाँसुरी के लिए भिन्नषड्ज एक मधुर एवं सरल राग है। इससे काफी मिलता-जुलता राग हिन्डोली है। फिर भी इससे बहुत भिन्न है। भिन्नषड्ज में षड्ज-मध्यम का संवाद है, जबकि राग हिन्डोली में गंधार और धैवत पर विशेष न्यास दिया जाता है।

स्वर-आलाप

१. सा – – –, नि़ सा – – –, ध़, नि़ सा –
– –, नि़ सा ध़ नि़ सा – – –, म – – –,
सा ग म – – –, ग म – – ग, सा – –,
नि़ सा – – –, ध़ नि़, ध़ सा – – –, सा
नि़ ध़ नि़ ध़ ध़ सा – – –, नि़, नि़ सा म
– –, नि़ सा, नि़ –, ध़, म ध़ –, नि़ ध़, नि़
सा –, ध़ नि़ सा – – –, ग म – – –, ग
म ग –, म ग सा ग म – –, ग सा – – –।

२. म ग म – – –, ग म, ध ग – म –
– –, म ग, सा ग म – – –, ग म सा ग,
म ग म ध, म ग म – – –, ग म ग ध,
म –, ग म ध, म ग म –, सा ग म, – –
– ग म, ध ध, म ध, म – – –, ग म –
– –, ग सा – – –, नि़ सा – – –, ध़
नि़, ध़ सा – – –, नि़ सा – – –, सा ग म

ध, म ग म – – –, सा ग म ग, ग म ध
म, ध ग म – – –, ग म ध –, ग, सा –
– –।

३. नि़ सा, नि़ ध़, नि़ सा, ध़ नि़, ध़ सा –
– –, नि़ सा – – –, ध़ नि़, सा ग म – –,
नि़ सा ध़ नि़ सा ग म – – –, ग म ध, म,
सा ग, म ध, ध़ नि़, ध़ सा, सा नि़ ग, सा म,
ग ध, म ध, म ग म – – –, सा नि़ ध़ नि़,
सा गम ध म ग म, ग म – – –, ध म –
– –, ग म, सा ग सा म – – –, ग, सा
नि़ सा – – –, सा – – –, नि़ ध़ नि़ सा ग
म ग म – – –।

४. सा ग, म ध, म नि ध, म नि –, ध
म ग म – –, सानि़ ध़ नि मगसा म धमग म
– – –, नि ध, नि – – –, ध, म ध, नि ध,
नि ध म, ग म ध ग – म, ध नि सां ध –
नि़, सागम ध नि ध, म ग म – –, ग म –,

ध म, ध नि सां –, नि ध, नि –, ध म –

ध – म ग –, म – ग, म – ग सा –, ध

नि सा ग म ध, नि ध सां – – –।

५. नि सां – – –, नि ध, म ध, सां सां
नि ध सां – – –, नि सां, नि गं सां – – –,
नि सां, नि़ सा, ग म, सा ग म ध, ग म ध म,

ध नि सां – – –, ध नि सां –, गं मं – ध
नि सां मं – – –, गं मं – – –, गं गं सां
नि सां – – –, नि सां – – –, मं – – –,

मं – गं मं – – – सां गं –, मं धं नि धं –,

मं धं सां – – –, निं सां –, निं धं, म ग

मं, गं मं –, सां गं –, सां गं सां – – –, नि

सां, नि ध, म ध, म नि, ध सां, नि ध, म ग म

– – –, ग म – – –, ध म, सा ग, सा म

– ग सा – –, ध ग – म, सा ग म ग म –

– –, ग म ग, सा – – –, नि सां – –,।

निर्बन्ध तानें

१. सा नि़ ध़ नि़ सा म ग सा, ग म ग सा नि़ सा, ध़ नि़ सा म ग म ग सा नि सा, म म ग म, ग म ग सा, ध़ नि़ ध़ म़ ध़ ध़ नि़ सा म, ग म ध म ग म ग सा, नि़ सा ग म ध म ग म ग म सा ग सा म ग सा, ग सा, ग सा म ग ध म ग सा, म म ग, ध ध म, ग म ध म ग सा, नि़ सा सा ग, ग म म ध, नि ध म ग म ग सा, ध़ नि़ सा ध़ नि़ सा ग म ध, म ध नि, म ध म ग ध म ग म ग सा नि़ सा।

२. सा ग म ध, ग म ध म नि ध म ग म म ग सा, नि़ सा ध़ नि़ सा म, ध़ नि़ सा ग, म ध म ग, नि़ ध़, म ग ध म ग सा, म ग सा म म ग, ध ध म, नि नि ध, नि ध म ध म ग सा म ग म ग सा नि़ सा, ध़ नि़, सा ग म ध नि ध, म नि ध म, ध सां नि ध, नि ध म ग सा ग सा, नि़ सा ग म, सा ग म ध, ग म ध नि, सां नि ध म, ग म ध म, ग म ग सा नि़ सा।

३. नि़ सा ग म ग म ध नि सां नि ध नि ध नि ध म ग म सा म ग सा, सा ग म सा ग म ध, सां नि म ध नि सा ग म ध नि सां, सा नि़ ध़ नि़ सा ग म ध, सां नि ध, नि ध म, ध म ग, ग म ग सा, सा ग सा म ग ध, म ध म नि, ध सां, नि ध म ग म ग सा नि़ ध़ सा नि़ ग सा, म ग, नि ध, सां नि ध म ग सा नि़ सा।

४. सा ग म ध म ग, म ध नि सां नि ध, नि सां गं मं गं सां ध सां नि ध, नि ध म ध, म ग ग म ध म ग म ग सा नि़ सा।

गमक से—

५. सा ग म ध सां नि सां गं मं गं सां नि ध म ग म ध म म ग म ग सा, नि़ सा ग म ध नि सां नि सां गं मं गं सां मं गं मं

गं सां नि सां ध नि ध म ग सा नि़ सा सा नि़ ध़ नि़ सा म ग म ग सा नि़ सा ध़ नि़ सा, नि़ सा ग, सा ग म, ग म ध, म ध नि, ध नि सां, गं मं गं सां नि सां ध नि सां नि ध म ग म ग सा ध़ नि़ सा ग म ध नि सां गं मं गं सां नि ध म ग सा म ग सा, सा ग म ग, सां गं मं गं म ध नि ध, म़ ध़ नि़ ध़ नि़ सा ग म ध नि सां नि ध म ग म ग सा नि़ सा ध़ नि़ सा म ग म ग सा।

गत, राग भिन्नषड्ज, (तीनताल)

• स्थायी

×	२	०	३
सा नि़ ध़ नि़	सा – म ग	सा ग म –	सां नि ध नि
सां – – नि	ध नि सां –	ध नि ध म	ग म ग सा

• अंतरा

×	२	०	३
ग म ग म	ग म ग म	ध म ध म	ध म नि ध
सां नि सां –	नि ध नि –	ध म ध –	म ग म –
ग म ध नि	सां मं गं, सां	गं सां, नि ध	म ग सा –

• तालबद्ध तानें

×				२			
१. सांनि	धनि	मग	साग	सांनि	धनि	मंगं	सांगं
०				३			
सांमं	गंसां	धसां	निध	मध	मग	मग	सा–
निसां	धनि	सां	धनि	सां–	––	नि़सा	ध़नि़
सा–	ध़नि़	सा–	––	निसां	धनि	सां–,	धनि

	×				‖	२			
२.	धनि	सांमं	गंसां	निसां	‖	धनि	धसां	निध	मध
	०				‖	३			
	मग	मध	मग	सा–	‖	गम	धनि	सां–	––
	सा–	धनि	सां–	गम	‖	धनि	सां–	––,	सां–,
	धनि	सां,–	गम	धनि	‖	सां–	––	सा–	धनि
३.	ऩिसा	गम	धम	गम	‖	धनि	धम	गम	गसा
	गम	धम	–ध	मध	‖	निसां	निध	मग	सा–
	धनि	सां,ध	निसां,	धनि	‖	सां–	––	ध़ऩि	सा,ध़
	ऩिसा,	ध़ऩि	सा–	––	‖	धनि	सां,ध	निसां	धनि
४.	ऩिसा	गम	साग	मध	‖	गम	धनि	सांगं	मंगं
	सांमं	गंसां	निसां	निध	‖	मग	साम	गसा	ऩिसा
	ऩिसा	गम	धनि	सां–	‖	सां–	––	ऩिसा	गम
	धनि	सां–	सां–	––,	‖	निसा	गम	धम	सां,–
५.	सांनि	धनि	धम	गम	‖	साग	गम	गसा	ऩिसा
	गम	धनि	सांगं	सांनि	‖	धम	गसा	ऩिसा	गम
	सासा	ऩिसा	म–	धनि	‖	सां–	––	गसा	ऩिसा
	म–	ध़ऩि	सा–	––,	‖	गसा	ऩिसा	म–	धनि
६.	ऩिसा	गम	गसा	गम	‖	धनि	धम,	धनि	सां,ध
	सांनि,	धनि	धम	गसा	‖	ऩिसा	गम	–ध	–नि
	सां–,	धनि	सां,–	ऩिसा	‖	गम	–ध	–नि	सां–
	धनि	सां,–	ऩिसा	गम	‖	–ध	–नि	सां–,	धनि

	×				२			
७.	नि़सा	गम	साग	साम	साग	मध	मग	मध
	०				३			
	सांनि	धनि	धम	गम	सांनि	धम	गम	गसा
	सा–	सां–	–ध	–नि	सां–	––,	सा–	सां–
	–ध	–नि	सां–	––	सा–	सां–	–ध	–नि
८.	गम	धम	धनि	धम	धनि	सांनि	सांगं	सांनि
	सांमं	गंसां	निध	मग	साग	मध	मग	सानि़
	साम	गम	गम	धनि	सां–	––,	साम	गम
	गम	धनि	सां–	––	साम	गम	गम	धनि
९.	सां–	निसां	नि–	धनि	ध–	मध	म–	गम
	ग–	साग	साम	गसा	गम	ध,म	धनि,	धनि
१०.	ध़नि़	साग	मध	निध	निसां	गंमं	धंनिं	सां–
	निंधं	मंगं	सांनि	धम	गसा	नि़सा	ध़नि़,	सा–
	–सां	–सा	सां–	धनि	सां–	––	–सा	–सां
	–सा	ध़नि़	सा–	––,	–सां	–सां	सां–	धनि

गत, राग भिन्नषड्ज, तीनताल

• स्थायी

×				२				०				३			
												~	म	गम	धनि
गं सां	–	–	नि	ध	नि	ध	म	ग	म	ग	सा	–	ध़	नि़	सा
नि़	सा	ग	म	–	ग	म	ग	म	ध	म	ग				

• अंतरा

×				२				०				३			
												– म	गम	धनि	
सां (गं)	–	नि	सां	–	ध	नि	सां	गं (मं)	मं	गं	सां	–	ध (नि)	सां (गं)	नि
ध	म	ग	सा	सा	म	गम	धनि	सां–	, म	गम	धनि	सां–	म	गम	धनि

• तालबद्ध तानें

	×				२			
१.	नि़सा	गम	गसा	नि़सा	गम	धनि	धम	गम
	०				३			
	धनि	सांनि	धम	गसा	–	म	गम	धनि
२.	धम	गम	गसा	नि़सा	गम	धनि	सांगं	सांनि
	धनि	धम	गम	गसा	–	म	गम	धनि
३.	धनि	सांनि	सांगं	सांनि	धनि	ध,म	धम,	गम
	गम	धनि	सां,	गम	धनि	सां,	गम	धनि
४.	सांमं	गंमं	गंसां	निसां	धनि	धसां	निध	मग
	साम	गम	गसा	नि़सा	–	म	गम	धनि
५.	साग	मध	निसां	निध	गम	धनि	सांगं	सांनि
	धम	गम	गसा	नि़सा	गम	धनि	सां,	धनि
	सां	सां	सां,	गम	धनि	सां,	धनि	सां
	सा	सां,	गम	धनि	सां	धनि	सां	सा

	×				२			
६.	साग	मग	मध	मग	मध	निध	निसां	निध
	० निसां	गंमं	गंसां	निसां	३ धनि	धम	गम	गसा
	गम	धनि	सां,	धनि	सां–	––,	गम	धनि
	सां,	धनि	सां	–,	गम	धनि	सां,	धनि
७.	धनि	सांनि	धनि	धम	गम	धम	गम	गसा
	गम	धनि	सांगं	मंगं	सांनि	धम	गसा	नि़सा
	नि़सा	गम	धनि	सांनि	सां–	––,	नि़सा	गम
	धनि	सांनि	सां	––,	नि़सा	गम	धनि	सांनि
८.	ध़नि़	ध़सा	नि़सा	ध़नि़	साम	गम	ध़नि़	साम
	गम	साग	मध	निसां	धसां	निध	मग	सा–
	ध़नि़	साग	म	धनि	सां–	––,	ध़नि़	साग
	म	धनि	सां	––	ध़नि़	साग	म	धनि
९.	सांमं	गंसां	निसां	निध	मध	मग	मग	सा–
	गम	ध,म	धनि	धनि	सां	म	गम	धनि
१०.	सांनि	धनि	धम	गम	गम	धनि	धम	गम
	धनि	धम	गनि	सा–	ध़नि़	साग	मध	निसां
	––	धनि	सां,	ध़नि़	साग	मध	निसां	––
	धनि	सां,	ध़नि़	साग	मध	निसां	––	धनि

११.	धऩिऩ	साम	साग	मध	मध	निसां	गंमं	गंसां
	धसां	निध	मग	सा	–	म	गम	धनि
१२.	धऩिऩ	साग	मध	निसां	गंमं	गंसां	निध	मग
	मध	मग	मग	सा–	गम	धनि	गम	धनि
	×				२			
	गम	धनि	सां,	गम	धनि	गम	धनि	गम
	०				३			
	धनि	सां,	गम	धनि	गम	धनि	गम	धनि
१३.	साग	मध	गम	धनि	मध	निसां	गंमं	गंसां
	निध	मग	साम	गसा	–	म	गम	धनि
१४.	धऩिऩ	साग	निऩसा	गम	साग	मध	मध	निसां
	गंमं	गंसां	निध	मग	–	म	गम	धनि
१५.	साम	गम	धनि	धसां	गंमं	सांगं	निसां	धनि
	मध	गम	साग	निऩसा	–	म	गम	धनि

झाला, राग भिन्नषड्ज, तीनताल

(कण, मीड़, जमजमा, मुर्की, खटका व तान-सहित)

×				२				०				३			
निऩ		निऩ		ग						सा		सा	सा		
सा	–	सा	–	निऩ	–	सा	–	धऩ	–	निऩ	सा	निऩ	निऩ	सा	–
तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऊ	तू	तू	ऊ	ऽ

×				२				०				३			
नि़		सा		ग		ग		नि़				म			
ध़	–	नि़	–	सा	–	सा	–	ध़	नि़	सा	म	ग	–	म	–
तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऊ	तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऽ
म															
ग	म	ग	सा	म	–	म	–	ग	म	सा	म	ग	ग	म	–
तू	रू	रू	रू	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऊ	तू	ऊ	तू	तू	तू	ऽ
नि़	सा													ग	
ध़	नि़	सा	म	ग	म	ग	–	सा	म	ग	म	ग	म	सा	–
तू	ऊ	तू	ऊ	तू	तू	तू	ऽ	रू	ऊ	ऊ	ऊ	तू	ऊ	तू	ऽ
म	ध	नि		ग				म		नि	सां				
ग	म	ध	म	सा	ग	म	–	ग	म	ध	नि	ध	–	म	–
तू	ऊ	तू	ऊ	तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऊ	तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऽ
म			सां					ग				नि			
ग	म	ध	नि	ध	ग	म	–	सा	म	ग	म	ध	ग	म	–
तू	ऊ	तू	ऊ	तू	ऊ	तू	ऊ	तू	तू	तू	तू	तू	तू	तू	ऽ
नि		नि		सां				म		नि	सां	गं		गं	
ध	–	ध	–	नि	ध	म	–	ग	म	ध	नि	सां	–	सा	–
तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऽ
सां				मं				सां	गं		सां	गं		गं	
नि	गं	सां	–	गं	–	सां	–	नि	सां	ध	नि	सां	–	सां	–
तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऊ	तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऽ

×   २   ०   ३

गं   मं   सां

सां मं गं मं | गं – मं – | गं मं धं मं | गं – मं –

तू ऊ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ | तू ऊ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ

×   २

सांगं सांनि धसां निध | मध मग साम गसा

तूऊ तूऊ तूऊ तूऊ | तूऊ तूऊ तूऊ तूऊ

०   ३

नि़ग सानि़ ध़सा नि़ध़ | नि़सा गम साग मध

तूऊ तूऊ तूऊ तूऊ | तूऊ तूऊ तूऊ तूऊ

×   २   ०   ३

नि   गं

मध निसां गंमं धंमं | गंसां निसां धनि सांगं | सां – सां – | नि – सां –

तूऊ तूऊ तूऊ तूऊ | तूऊ तूऊ तूऊ तूऊ | तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ

मं नि सां

गं – सां – | नि – सां – | नि गं सां मं | गं – नि सां

तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ | तू ऊ तू ऊ | तू ऽ तू ऊ

मंमं मं,गं गंगं, मंगं | सां गं मं धं | निं निं सां – | निं धं निं –

तूऊ तूऊ तूतू, तूऊ | तू ऊ तू ऊ | तू तू तू ऽ | तू ऊ तू ऽ

निं निं

सां – सां – | निं धं मं गं | मं – मं – | गं मं गं सां

तू ऽ तू ऽ | तू ऊ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ | तू ऊ तू ऊ

×　　　　　　२　　　　　　०　　　　　　३

गं　गं　　　　नि　　　　　　गं　　　　　　गं　गं
नि – सां – | ध नि सां – | नि – सां – | सां – सां –
तू ऽ तू ऽ | तू ऊ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ

　　　　　　　　　　　　नि　　　　　　गं
नि नि निनि निनि | सां – सांसां सांसां | ध – धध धध | सां नि सां –
तू कू तुकू तुकू | तू ऽ तुकू तुकू | तू ऽ तुकू तुकू | तू ऊ तू ऽ

　　　　　　　　　　　　नि　मं　　मं
सासा सांसां सासा सांसां | निनि निनि सां – | ध नि ध गं | नि गं सां –
तुकू तुकू तुकू तुकू | तुकू तुकू तू ऽ | तू ऊ तू ऊ | तू तू तू ऽ

नि　गं　　　सां　मं　　　　　　　गं　मं　　सां
ध नि सां मं | नि सां गं मं | म ध नि सां | गं मं ध नि
तु कू तु कू | तु कू तु कू | तु कू तु कू | तु कू तु कू

　　　　　सा　　　　　नि़　सा　　म
सा ग म ध | नि़ सा ग म | ध़ नि़ सा ग | सा म ग सा
तु कू तु कू | तू ऊ तू ऊ | तू ऊ तू ऊ | तू ऊ तू ऊ

×　　　　　　　　　　　　　२
गग　ग,सा　सासा,　मम | म,ग　गग,　धध　ध,म
तूऊ　तू,तू　तूतू　तूतू | तू,तू　तूतू　तूतू　तूतू
०　　　　　　　　　　　　　३
मम,　निनि　नि,सां　सांसां, | मंगं　सांमं　गंसां　निगं
तूतू,　तूतू　तू,तू　तूतू | तूऊ　तूऊ　तूऊ　तूऊ

×				२			
सांनि	धसां	निध	निगं	सांनि	धनि	धम	गसा
तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ

०				३			
ऩिसा	ऩिग	साऩि	धऩि	साऩि	सा–	ऩिसा	ग–
तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऽ	तूऊ	तूऽ

×				२				०				३			
								गं				गं			
म	–	म	–	म	म	ध	नि	सां	–	सां	–	सां	–	सां	–
तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऊ	तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ

×				२			
निनि	सांसां	निनि	गंगं	निनि	मंमं	गंमं	गंसां
तुकू	तुकू	तुकू	तुकू	तुकू	तुकू	तुकू	तुकू

०				३			
धनि	सांनि	धसां	निध	मध	मग	मग	सा–
तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऽ

×				२				०				३			
म								म		नि	सां		नि	सां	
नि	–	सा	–	ग	म	ग	सा	ग	म	ध	नि	म	ध	नि	सां
तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऊ	तू	ऊ	तू	ऊ	तू	ऊ	तू	ऊ	तू	ऊ

सां		गं				गं		नि		नि		नि		नि	
नि	–	सां	–	नि	नि	सां	–	सां	–	सां	–	सां	–	सां	–
तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ

×				२				०				३			
नि		गं													
ध	नि	सां	मं	धं	निं	सां	–	निं	–	सां	–	सां	–	सां	–
तू	ऊ	तू	ऊ	तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ

								गं				मं			
निं	–	धं	–	मं	–	मं	–	सां	मं	गं	सां	गं	–	सां	–
तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऊ	तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऽ

×				२			
सासा	सा,म	मम,	गसा	मम	म,ध	धध,	मम
तूतू	तू,तू	तूतू	तूतू	तूतू	तू,तू	तूतू,	तूतू
०				३			
धध	ध,म	मम	धध	निनि	नि,सां	सांसां,	मंमं
तूतू	तू,तू	तूतू	तूतू	तूतू	तू,तू	तूतू,	तूतू
गंसां	निसां	धनि	सांनि	मध	निध	गम	धम
तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ
साग	मग	नि़सा	गसा	ध़नि़	साम	गम	गसा
तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ

×				२				०				३			
नि़		नि़		नि		नि		नि		नि		नि		नि	
सा	–	सा	–	सां	–	सां	–	सा	–	सा	–	सां	–	सां	–
तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ

म				नि				नि		नि		नि		नि	
ग	म	ध	नि	सां	–	सा	–	सां	–	सा	–	सां	–	सां	–
तू	ऊ	तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ

						नि़		ग		ग		नि़	सा		
निसां	धनि	धम	गम	ग	–	सा	–	नि़	–	सा	–	ध़	नि़	सा	–
तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऊ	तू	ऽ

समाप्ति की तिहाई व तान—इस पूरी तिहाई व तान को तीन बार बजाइए :—

×				२			
गम	धनि	मध	निसां	गंमं	गंसां	निसां	सांनि
०				३			
धसां	निध	मग	सा–	गम	धनि	सां–	धनि
सां–	धनि	सां–,	गम	धनि	सां–	धनि	सां–
धनि	सां–	गम	धनि	सां–	धनि	सां–,	धनि

गत, राग भिन्नषड्ज (झप ताल)

● स्थायी

×		२			०		३		
ग		म							
सा	–	साम	गम	ग	सा	नि़	सा	ध़	नि़
साम	गम	ध	म	ध	सां	नि	धसां	निध	मग

• अंतरा

×		२			०		३		
		म		नि	सां				
म	–	ग	म	ध	नि	ध	सां	नि	सां
मं									
गं	मं	सां	गं	मं	गं	सां	धसां	निध	मग

• तालबद्ध तानें

	×		२			०		३		
१.	सानि़	ध़नि़ ।	साग	मध	निध ।	मग	सा, ।	मग	सा,	मग
२.	सानि़	साग ।	मध	मग	मध ।	निसां	निध ।	मग	सा,	सां
३.	साग	मग ।	मध	निसां	निध ।	मग	साग ।	म,सा	गम,	साग
४.	मध	मग ।	साग	मध	मग ।	साग	मध ।	मग	सानि़	ध़नि़
५.	साग	साम	गसा	नि़सा	धनि	धम	धनि	सांनि	धम	गसा
	नि़सा	ध़नि़	सा	–,	नि़सा	ध़नि़	सा	––,	नि़सा	ध़नि़
६.	ध़नि़	ध़सा	गम	धम	गसा	गम	धनि	सांनि	धम	गसा
	ध़नि़	सानि़	सा	–	धनि	सांनि	सां	––,	ध़नि़	सानि़
७.	ध़नि़	साग	मध	गम	धनि	सांगं	सांनि	धम	गसा	नि़सा
	–ध़	–नि़	सा	––,	–ध	–नि	सां	––	–ध़	–नि़
८.	ध़नि़	साग	मध	निसां	गंमं	गंसां	धनि	धम	गसा	नि़सा
	गम	धनि	सां,	गम	धनि	सां,	गम	धनि	सां,	ध़नि़
९.	गसा	नि़सा	सांनि	धनि	सांमं	गंमं	गंसां	निध	मग	मध
	सां–	धनि	सां–	––	सां–	धनि	सां–	––	सा–	ध़नि़

१०. गम धनि | सांगं मंगं मंगं | सांनि धनि | धम गसा नि़सा

नि़सा ध़नि़ | सासा सा,नि सांध | निसां सांसां, | नि़सा ध़नि़ सासा

गत, राग भिन्नषड्ज (एकताल)

- **स्थायी**

×		०		२		०		३		४	
						म					
						ग	म	ध	नि	सां	गं
नि						म					
सां	–	धसां	निध	मग	सा	ग	म	ध	म	ग	म
सां		गं									
ध	नि	सां	नि	ध	म						

- **अंतरा**

×		०		२		०		३		४	
						म		नि		नि	
						ग	म	ध	म	ध	नि
गं			मं	मं		नि					
सां	–	सां	गं	गं	सां	ध	नि	सां	मं	गं	सां
नि	गं										
ध	सां	निध	मग	मग	सा,						

तालबद्ध तानें

× ० २ ०

१. सांनि धनि । धम गम । गसा नि़सा । गम धनि

३ ४

गम धनि । गम धनि ।।

२. गंसां निसां । धनि धम । गसा नि़सा । गम धम

धनि सांनि । सां– सा– ।।

× ० २ ०

३. मग सा,ग । गसा धम । धनि धम । सांनि धसां

३ ४

निध मग । साम गसा ।। गम ध,ग । मध, साग

मध नि,म । धनि, गम । धनि सां,ध । निसां, धनि ।।

४. साग म,ग । मध, मध । निध निसां । मंगं सांगं

सांनि धम । गम गसा ।। निसां धनि ।। सां,– धनि

नि़सा ध़नि़ । सा,– ध़नि़ । निसां धनि । सां–, धनि ।।

५. मंगं सांनि । धसां निध । सांनि धम । निध मग

सानि़ ध़नि़ । साग मध ।। म गम । धम ध

मध निध । नि सांनि । सांनि सांगं । मंगं सांनि ।।

धम गसा । ध़नि़ सा– । सांनि धनि । सां– सानि़

ध़नि़ सा– । सांनि धनि ।।

६. सांनि सांमं । गंमं गंसां । निसां धनि । सांनि धम

गम धम । गम गसा ।। नि़सा ध़नि़ । सां– सा–

नि़सा ध़नि़ । सां– सा– । नि़सा ध़नि़ । सां– सा– ।।

७. सानि़ ध़नि़ । साम गम । धनि धसां । निसां निमं

गंसां निध । मग सा– ।। निसां धनि । सांसां सा–

निसां धनि । सांसां सा– । निसां धनि । सांसां सा– ।।

८. ध़नि़ सासा । मध मनि । धनि धसां । निसां निमं

गंमं गंसां । निध मग ।। साग मध । निसां धनि

साग मध । निसां धनि । साग मध । निसां धनि ।।

९. ध़नि़ साम । ग, मध । मनि ध, । निसां निमं

गं, मंगं । सांनि धम ।। गसा, ध़नि़ । साम धनि

सां,– ध़नि़ । साम धनि । सां,– ध़नि़ । साम धनि ।।

× ० २ ०

१०. सानि़ धनि़ । मग साग । सांनि धनि । मंगं सांगं

३ ४

मंगं सांनि । धम गसा ।। –ध –नि । सां धनि

–ध़ –नि़ । सा, धनि़ । –ध –नि । सां, धनि ।।

११. गसा नि़सा । धनि़ साम । धम गम । निध मध

सांनि धनि । गंसां निसां ।। धनि सांमं । गंसां निध

मग सा, । मग सा, । मग सा, । गम धनि ।।

१२. सा, गम । ध, मध । नि, धनि । सां, निसां

गं, सांमं । गंमं गंसां ।। धसां निध । मध मग

साम गसा । गम धनि । गम धनि । गम धनि ।।

१३. म गम । धम गम । निध मध । सांनि धनि

सांगं निसां । धनि मध ।। गम साग । नि़सा धनि़

साग सा, । धनि़ साम । साग मध । गम धनि ।।

१४. धनि़ साग । मध निसां । गंमं गंसां । निध मग

सानि़ धनि़ । साग सा– ।। धनि़ साम । गम धनि

सां –, । गम धनि । सां –, । गम धनि ।।

१५. धनि़ साग । नि़सा गम । साग मध । गम धनि

मध निसां । धनि सांगं ।। सांमं गंसां । निसां निध

मध मग । साम गसा । नि़सा नि़ध़ । नि़ग सा– ।।

गम धनि । सांध –नि । सां, धनि । सां– धनि

गम धनि । सांध –नि ।। सां–, धनि । सां–, धनि

गम धनि । सांध –नि । सां– धनि । सां–, धनि ।।

गत, राग भिन्नषड्ज (ध्रुवपद-अंग)

चारताल

• स्थायी

×		०		२		०		३		४	
(गं)सां	–	ध	नि	ध	म	ग	सा	ग	म	ध	नि
सां	नि	ध	नि	ध	म	ग	म	ग	सा	नि़	ध़
सा	म	ग	म	ध	म	ध	नि	सां	गं	मं	गं
सां	मं	गं	सां	नि	ध	म	ग	सा	म	ग	सा

• अंतरा

×		०		२		०		३		४	
ग	म	ध	म	ध	नि	सां	नि	ध	नि	सां	–
गं	मं	सां	गं	सां	मं	गं	सां	नि	ध	नि	सां
ध	सां	नि	ध	म	ध	म	ग	सा	म	ग	म
ध	म	ध	नि	सां	नि	ध	म	ग	म	ध	नि

ज्ञातव्य : इस गत को भी दुगुन, तिगुन, चौगुन, आड़, कुआड़, छहगुन एवं अठगुन की लयकारी में बजाएँ ।

गत, राग भिन्नषड्ज (ताल रूपक)

• स्थायी

०			×		२	
(गं)सां	नि	सां	धनि	धम	गम	धनि
ध	म	ध	(म)ग	म	ग	सा

०			×		२	
म	ग	म	ध	नि	सां	नि
ध	सां	नि	धनि	धम	गम	धनि

● अंतरा

०			×		२	
				नि		
म	–	ग	म	ध	निसां	धनि
गं					गं	
सां	–	सां	ध	नि	सां	–,
सां						
नि	सां	मं	गं	मं	गं	सां
नि						
ध	सां	नि	धनि	धम	गम	धनि

● तालबद्ध तानें

	०			×		२	
१.	सां–	निसां	निध	मग	साग	मध	निसां
	धनि	धसां	निध	मग	गम	धनि	सां–
	धनि	सां–	–,	ध़नि़	सा–	––	धनि
२.	सांनि	धम	निध	मग	धम	गसा	नि़सा
	गम	ध	मध	नि	धनि	सां–	सा–
३.	नि़सा	गम	ध–	निसां	गंमं	गंसां	निध
	मग	सानि़	ध़नि़	साम	गम	गम	धनि
४.	ध़नि़	साग	मध	निसां	धसां	निध	मग
	मध	सांनि	धम	गम	गसा	गम	धनि

	०			×		२	
५.	साग	साम	गम	धम	गसा	नि़सा	गम
	धनि	सां–	गम	धनि	सां–	गम	धनि
६.	सांनि	धनि	धनि	सांमं	गंसां	निसां	निध
	मग	सानि़	सा–	गम	ध,म	धनि,	धनि
७.	सांमं	गंमं	गंसां	धनि	धसां	निध	सांनि
	सांनि	सां–	सां–	सानि़	सा–	सा–	सांनि
८.	गसा	नि़सा	गम	धम	धनि	धम	धनि
	सांनि	धम	गसा	नि़सा	ध़नि़	ध़नि़	धनि
९.	गसा	मग	निध	सांनि	गंसां	निध	मग
	सा–	गम	धनि	गम	धनि	गम	धनि
१०.	ध़नि़	ध़सा	नि़सा,	नि़सा	नि़म	गम,	धसां
	निसां	निमं	गंमं	गंसां	निध	मग	सा–
	नि़सा	गम	धनि	सांसां	सां–	नि़सा	गम
	धनि	सांसां	सां–	नि़सा	गम	धनि	सांसां
११.	ध़नि़	साग	मध	निसां	गंमं	गंसां	निध
	मग	सानि़	ध़म़	ध़नि़	सा–	सां–	सा–
१२.	सांनि	धनि	धम	गम	धम	निध	सांनि
	सां–	धनि	धनि	ध़नि़	ध़नि़	धनि	धनि
१३.	धनि	सांमं	गंसां	गंसां	निध	मग	सानि़
	ध़नि़	साग	मध	मध	निसां	धनि	सांगं

१४. साम गम सांमं | गंमं धसां | निसां निध
मग मग सा– | गम ध,म | धनि, सांसां

० ×
१५. ध़नि़साग मधनिसां गंमंगंसां । निसांनिध मगसानि़
२
सागमध गमधनि ॥

गत दूसरी, राग भिन्नषड्ज (ध्रुवपद-अंग)

चारताल

• स्थायी

×		०		२		०		३		४	
(गं) सां	–	नि	सां	–	नि	ध	म	ध	नि	सां	–
(मं) गं	–	मं	गं	सां	मं	गं	सां	नि	ध	म	ग
सा	नि़	ध़	नि़	सा	म	ग	म	ध	म	ध	नि
ध	सां	नि	ध	ग	म	ध	म	ग	म	ध	नि

• अंतरा

×		०		२		०		३		४	
म	–	ग	म	–	ध	म	ध	नि	ध	सां	–
गं	मं	गं	सां	नि	ध	सां	नि	ध	म	ग	सा
ग	म	ध	नि	ध	म	ध	नि	सां	मं	गं	सां
नि	ध	म	ध	म	ग	सा	म	ग	म	ध	नि

राग हंसध्वनि

परिचय : ठाठ कल्याण, र्वजित स्वर : शुद्ध मध्यम और धैवत, विकृत स्वर : कोई नहीं, जाति : औडव-औडव, वादी स्वर : ऋषभ, संवादी स्वर : पंचम, रस : शांत एवं श्रृंगार, प्रकृति : सौम्य, समय : रात्रि का प्रथम प्रहर, न्यास-स्वर : निषाद, ऋषभ और पंचम ।

आरोह : सा रे ग प नि सां ।

अवरोह : सां नि प ग रे सा ।

ग

पकड़ : नि़ प़ नि़ सा, रे ग प, रे ग रे सा रे, नि़ सा ।

राग-चलन : सा, नि़ सा नि़ प़, सा नि़ सा, प ग रे, नि प नि़ सा ।

विशेष विवरण

उत्तर-भारत में इस राग की उत्पत्ति कल्याण ठाठ से मानी है। यह एक बहुत ही मधुर एवं सुन्दर कर्णाटकीय राग है। इस राग में मध्यम और धैवत स्वर पूर्णरूपेण र्वजित हैं, शेष सभी स्वर शुद्ध लगते हैं। ऋषभ और शुद्ध निषाद विशेष महत्त्व के स्वर हैं। इस राग की जाति औडव-औडव है। ऋषभ और निषाद पर न्यास करने से इसकी सुन्दरता और भी बढ़ जाती है तथा राग का स्वरूप भी तुरन्त स्पष्ट हो जाता है। इस राग में विशेषकर प़ रे, प़ सा, नि़ प़ नि़ सा,

रे

नि़ सा, स्वर-संगति बहुत ही सुन्दर लगती है। पूर्वांग में ऋषभ तथा उत्तरांग में निषाद इस राग के प्राण स्वर हैं। इस राग का प्रचार फिल्म-संगीत के द्वारा भी अधिक हुआ, इसके अतिरिक्त भी स्वर्गीय श्री पन्नालाल घोष व अन्य कलाकारों द्वारा अधिक

हुआ है। यह बाँसुरी के लिए सरल एवं बहुत ही मधुर व सुन्दर राग है। इस राग का चलन तीनों सप्तकों में होता है। यह कर्णनाटक प्रदेश का बहुत ही लोकप्रिय राग है।

स्वर-आलाप

सा
सा - - -, नि़ सा - - -, रे नि़ सा - - -, नि़ रे - - -

सा
नि़ सा - - नि़ प़ - - -, प़ नि़, प़ सा - - -, रे सा - - -,

(सा) प़ नि़ - - -, प़ रे - - - सा रे - - -, सा नि़ रे - सा

- - -, सा नि़ सा - - -, रे ग रे - - -, ग प ग रे ग - - -,

सा रे -, नि़ सा - - -, नि़ प़ नि़ सा - - -, रे ग रे -,
प ग -, रे - - -, ग -, ग रे ग प ग रे सा नि़ रे - सा - -

-, नि़ सा सा नि़ सा - - -, प़ नि़ नि़ सा - -, रे ग रे सा रे

- - -, सा रे ग प नि - - -, प - प नि प सां नि - - -,

सां नि प - - -, सा रे ग प नि प - - -, सां - - -, रें सां -

- -, रें नि, प नि प सां नि -, प - - -, रें नि सां नि प नि

प सां पं रें - - - सा रे -, ग रे, ग प नि प - - -, सां नि

रें
रें सां - - -, प सां नि रें सां नि सां - - -, नि सां, सा रे

ग प नि सां – – –, रें गं रें सां रें – – –, रें नि सां –, रें सां

– – – नि सां – – –, सा रे, रे ग, ग प –, नि – प – – –,

सां सां रें रें

नि नि सां – – –, सा रे ग प नि सां – – –, प नि, सां –

– –, नि प – – –, नि गं रें सां – – –, नि सां – – –, निप

– –, ग रे ग – – –, प ग – – –, नि प – – –, सां नि सां

रें

– – –, नि़ प़ नि़ सा रे ग प नि प सां प रें – – –, गं – – –,

रें गं रें – – –, गं पं – – –, सां रें गं पं – – –, गं रें – – –,

सां

गं पं, नि सां – – –, सां रें गं पं गं रें पं गं – – रें गं रें –

– –, सां रें गं पं गं रें – – –, नि सां – – –, रें सां रें

सां – – –, नि सां नि प – – –, ग रे ग प – – –, ग रे,

सा नि़ रे – – –, सा, – – –, नि़ प़ – – –, नि़ सा – – –,

प़ नि़ – प सा – प रे –, सा नि़ सा रे, ग रे, सा नि़ रे – सा

– – –, रे सा रे ग – सा रे नि़ प़ – – –, नि़ सा – – –, ।

सां

रे ग, नि प ग प – – –, ग प नि – – –, सा रे ग प नि – – –,

रें

सां नि प ग रे सा – – –, प़ नि़ प़ – – –, ग रे, प ग रे,

रे

ग रे ग सा, रे ग रे – – –, सा – – –, नि़ सा, रे सा रे नि़

सा नि़ सा – – –, नि़ प़ नि़ सा – – –, प़ नि़, प़ सा रे –, रे – सा – नि़ – सा – – – ।

निर्बन्ध तानें

१. सारे गरे नि़प़ नि़सा, रेसा रेग सारे नि़सा, गरे गसा रेसा रेग सारे नि़सा, प़नि प़ग प़नि़ सारे नि़सा, रेग सारे नि़सा रेनि़ सारे गरे सा, गरे गरे सारे गरे पग रेसा रेनि़ सा, गरे गप गरे सारे नि़सा, प़नि़ सानि़ रेसा नि़सा प़नि़सा, रेसा रेग सारे नि़सा, नि़प़ सानि़ रेसा नि़सा प़नि़ सारेसा नि़सा ।

२. सारे गप गरे गरे पग रेसा रेनि़सा, नि़रे सारे गरे गरे पग रेसा नि़सा गप सारे गप गरे सारे गप गरे सानि़ प़नि़ प़सा नि़सा रेनि़ सा, पपग निनिप गरे गप गप रेग पग पग रेसा, नि़सा नि़प़ रेरे सारे गप निप गरे पग रेसा नि़सा प़नि़ सा, सारे गप निनिप निनिप गरे पप गरे गग रेसा नि़सा प़नि़ सारे नि़सा रेनि़ प़नि़ सानि़सा ।

३. सारे गप निसां निप गरे पग पनि सांनि पग पग रेसा नि़सा रेनि़सा, रेग सारे नि़सा प़नि़ गरे पग निप सांनि सांनि पग रेसा नि़सा प़नि़ प़सा रेनि़सा, रेगरे गप गपग, पनिपनिप, निसां निसांनि सांरें सांनि पप गरे पग रेसा पनि़ सारे गपनिसां रेंगं सांरें पंगं रेंसां निप निसां निप गरे सानि़ प़नि़ सारेसा ।

४. गरे सारे गप गरे गप निसां रेंरें सांरें सांनि पनि पग रेसा रेग सारे गप गप निसां निप निसां निप गरे पग रेसा नि़प़ नि़सा रेग रेसा, प़नि़ प़सा नि़सा रेसा सारे गप गरे गप निसां निप

निसां रेंगं रेंगं रेंसां निप गरे नि़प़ नि़सा रेनि़सा, सारे गप गप निसां पनि परें सांरें निसां गरें सांनि पग रेसा नि़प़ नि़सा।

५. प़प़प़ नि़नि़नि़ प़प़प़ सासासा नि़सा, नि़नि़नि़ रेरेरे गरेगप रेग सारे पग रेसा प़नि़सा रेरे सारे, रेरे सासा रेंरें गंगं रेंगं रेंसां निप गरे पग रेग पग रेसा नि़प़ सानि़ पनि़सा, गप निनि पनि सांरें गरें पंगं रेंसां निप गरे सानि़ प़नि़ सारे नि़सा नि़प़ सानि़सा–, सारेगप निसां रेंगं पनि सांनि पग पग रेसा नि़प़ गरे सानि़ रेसा नि़सा, प़नि़सा, गरे पग रेगरे, पग निप गपगरे गप निप सांनि पनि पग सांनि रेंसां निसांनि सारेंसा निसांनि पनिप, गपग, रेगरे सानि़ पग रेसा नि़सा प़नि़ प़नि़ प़सा, नि़सा प़नि़ प़नि़ प़रे सारे सांरें गरें सांनि पग पनि सांनि पग रेग पग पग रेसा।

गत, राग हंसध्वनि (तीनताल)

● स्थायी

०				३				×				२			
								रे				रे ग सा			
पनि	सांरें	सां,–	गप।	निसां	नि–,	पग	रेसा ।।	नि़	प़	–	नि़	सा	रे	नि़	सा।
						ग	प								
प़	नि़	प़	रे।	–	ग	रे	ग ।।								
पनि	सांरें	गरें	सांनि।	पग	रेसा	प़नि़	सा–,।	पनि	सांरें	सां–,	गप				
									सा						
निसां	नि–,	पग	रेसा ।।	नि़	प़	–	नि़।	सा	रे	नि़	सा				

● अंतरा

०				३				×			
सा	ग		नि					रें			
ग	रे	ग	प । –	नि	प	नि ।।		सां	–	सां	सां
२											
सां	गं	रें		रें					गं	रें	
नि	रें	सां	– ।	गं	रें	पं	गं ।	–	रें	सां	नि ।।

सांगं रेंसां निरें सांनि । पसां निप गरे सा–, । पनि सांरें सां– गप

निसां नि–, पग रेसा ।। नि़ प़ – नि़ । सा रे नि़ सा

प़ नि़ प़ रे । – ग रे ग ।। पनि सांरें गरें सांनि

पग रेसा पनि सा– ।

● तालबद्ध तानें

	×					२			
१.	नि़प़	सानि़	रेसा	नि़सा	।	रेसा	गरे	पग	निप
	०					३			
	सांनि	पग	रेसा	नि़सा	।	प़नि़	सा,प़	नि़सा	प़सा
२.	सारे	गप	निसां	रेंसां	।	प़सा	नि़प़	गरे	सा–
	प़नि़	प़सा	नि़–	प़नि़	।	प़सा	नि़–	पनि	प़सा
३.	सारे	गरे	गप	निप	।	सांनि	पग	पग	रेसा
	गप	निप	सांनि	रेंसां	।	पनि	सांनि	पग	रेसा
	प़नि़	सा,प़	नि़सा	प़सा	।	नि–	––,	पनि	सां,प
	निसां,	पसां	नि–	––,	।	प़नि़	सा,प़	नि़सा,	प़सा
४.	रेसा	नि़सा	गरे	सारे	।	पग	रेग	निप	गप
	सांनि	पनि	रेंसां	निसां	।	पनि	सांगं	पंगं	रेंसां
	पनि	सांनि	पग	रेसा	।	प़नि़	सा,प़	नि़सा	प़सा
	पनि	सां,प	निसां,	पसां	।	प़नि़	सा,प़	नि़सा,	प़सा

×   २
५. साग रेग सारे नि़सा । पग रेग पग रेसा

०   ३
पनि सांगं रेंसां पनि । सांरें सांनि पनि सांनि
पग रेसा प़नि़ सा– । नि़प़ नि़सा नि़– प़नि़
सा– नि़प़ नि़सा नि़– । प़नि़ सा– नि़प़ नि़सा
६. रेसा गरे साग रेसा । गरे पग रे,प गरे,
निप सांनि पसां निप । रेंसां गंरें सांगं रेंसां
पनि सांगं रेंगं सांरें । पनि सांरें सांरें निसां
पनि सांनि पग रेसा । प़नि़ सानि़ रेसा नि़सा
प़नि़ सा– नि़–, पनि । सांनि रेंसां निसां पनि
सां– नि–, प़नि़ सानि़ । रेसा नि़सा प़नि़ सा–
७. निप सानि़ रेसा नि़सा । रेसा गरे पग रेसा
गरे पग निप सांनि । रेंसां निसां पनि सांनि
पनि पसां निरें सांगं । सांरें सां,नि सांनि पनि
पग पग रेग रेसा । रेसा नि़सा पनि सां–
पनि सां– सा– सां– । नि़– ––, पनि सां–
सा– सां– नि़– ––, । पनि सां– सा– सां–
८. प़नि़ प़सा नि़सा नि़सा । प़नि़ प़रे सारे सारे
पनि पग रेग रेग । रेग पग रेसा नि़सा
गंपं निसां रेंसां निसां । पनि सांगं रेंसां पनि
सांरें सांनि, पनि सांनि । पग रेग रेसा गरे
साग रेसा नि़प़ नि़सा । नि़– गरे सा,ग रेसा
नि़प़ नि़सा नि़– गरे । सा,ग रेसा, नि़प़ नि़सा

९. सारे साग सारे गप । रेग रे,प गप निसां
पनि पसां पनि सांरें । निसां निरें सांगं रेंसां
पनि़ सांनि पग रेसा । नि़– ––, पनि सांनि
पग रेसा नि़– ––, । पनि सांनि पग रेसा
१०. प़नि़ प़सा नि़सा नि़– । सारे साग रेग रे–
गप निसां रेंसां नि– । पनि सांगं रेंगं पंगं
रेंसां निप गरे सा– । नि़सा प़नि़ सा,प़ नि़सा,
नि़– प़नि़ सा,प़ नि़सा, । नि़– प़नि़ सा,प़ नि़सा।

गत, राग हंसध्वनि (तीनताल)

• स्थायी

×				२				०				३			
						रे		रे				रे			
						ग	प	ग	–रे	–	सा	–	प़	सा	प़
ग				रे											
रें	–	–	सा	ग	–,	ग	प	ग	–रे	–	सा	–	प	ग	प
सांनि	पनि	सांरें	सांनि	पग	रेसा,	ग	प	ग	–रे	–	सा	–	प़	सा	प़
ग				रे											
रे	–	–	सा	ग	–,										

• अंतरा

×				२				०				३			
						ग							रें		
						रे	सा	ग	प	नि	प	–	सां	नि	प
रें					गं										
सां	–	सां	सां	सांनि	रें	सां	–,	नि	गं	रें,	नि	रें	सां,	नि	प
सांरें	सांनि	पसां	निप	गरे	सा–,	ग	प	ग	–रे	–	सा	–	प़	सा	प़
रे	–	–	सा	रे	ग,										

● तालबद्ध तानें

	×					२			
१.	नि़प़	सानि़	रेसा	गरे	।	पग	रेसा,	ग	प
	०					३			
	ग	–रे	–	सा	।	–	प़	सा	प़
२.	सारे	गरे	गप	गरे	।	सारे	गरे	पग	रेसा
	नि़प़	सानि़	रे–,	नि़प़	।	सानि़	रे–	नि़प़	सानि़
३.	सारे	गप	निप	गप	।	गरे	सा–,	ग	प
	ग	–रे	–	सा	।	–	प़	सा	प़
४.	सारे	गप	नि–	पनि	।	पनि	सांरें	गंरें	सांनि
	पनि	सांनि	पग	रेसा	।	नि़प़	नि़सा	रेसा	नि़सा
	रे–	प़सा	रे–	नि़प़	।	नि़सा	रेसा	नि़सा	रे–
	प़सा	रे–,	नि़प़	नि़सा	।	रेसा	नि़सा	रे–	प़सा
५.	गप	निसां	गंरें	सांनि	।	पग	रेसा,	ग	प
	ग	–रे	–	सा	।	–	प़	सा	प़
६.	प़सा	नि़रे	साग	रेग	।	रेग	पग	रेसा	नि़सा
	नि़प़	नि़सा	रेग	पग	।	पनि	सांनि	पग	रेसा
	सारे	गप	निसां	रेंसां	।	निप	गरे	ग–	रेसा,
	पनि	सारे	गप	निसां	।	निप	नि–	पग	रेसा
	प़सा	–प़	रे–	निप	।	नि–	पग	रेसा	पसा
	–प़	रे–,	निप	नि–	।	पग	रेसा	प़सा	–प़

७.	प़नि़	सारे	गप	निसां	।	गरें	सां–,	ग	प
	ग	–रे	–	सा	।	––	प़	सा	प़
८.	नि़प़	नि़सा	रेग	पग	।	पनि	सांनि	सांरें	सांनि
	पसां	निप	गरे	सानि़	।	गरें	सांनि	पग	रेसा
	नि़प़	नि़सा	रे–	गरें	।	सांनि	पग	रेसा	नि़प़
	नि़सा	रे–	गरें	सांनि	।	पग	रेसा	नि़प़	नि़सा
९.	प़नि़	सारे	सारे	गप	।	गप	निसां,	ग	प
	ग	–रे	–	सा	।	–	प़	सा	प़
१०.	नि़–	सा–	रेग	सारे	।	प–	प–	निसां	पनि
	प–	नि–,	सांरें	गरें	।	सां–,	रें–,	सांरें	गंपं
	गरें	सांनि	रेंसां	निप	।	सांनि	पग	निप	गरे
	पग	रेसा	प़नि़	सा–	।	पनि	सांनि	पग	रेसा
	रे–	नि़सा	रे–,	पनि	।	सांनि	पग	रेसा	रे–,
	नि़सा	रे–	पनि	सांनि	।	पग	रेसा	रे–	नि़सा
११.	सारे	गप	निसां	गरें	।	सांनि	पग	पग	रेसा
	प़नि़	प़सा	रे–	प़नि़	।	प़सा	रे–,	प़नि़	प़सा
१२.	सा–	नि़सा	रे–	सारे	।	ग–	रेग	प–	गप
	नि–	पनि	सां–	निसां	।	पनि	–प	सां–,	निसां
	नि–	पनि	–प	गप	।	निप	गप	गरे	सा–
	रे–,	––,	निप	गप	।	गरे	सा–	रे–	––
	निप	गप	गरे	सा–	।	रे–,	––,	ग	प
	ग	–रे	–	सा	।	–	प़	सा	प़.

×　　　　　　　　　　२
१३. प़नि़ सारे गप निसां । रेंगं पंगं, रेंगं रेंसां
०　　　　　　　　　　३
रेंगं सांरें गंरें सांनि । पग रेसा प़नि़ सा–
प़सा नि़सा रे– नि़सा । रे–, ––, प़सा नि़सा
रे– नि़सा रे–, ––, । प़सा नि़सा रे–, नि़सा,

१४. नि़– –प़ रेसा नि़सा । रे– –सा गरे सारे
निप, –प, निसां रेंसां । रें– –गं पंगं रेंसां
सां ंनि पंगं रेंसां निंसां । निंपं गंरें सांनि पनि
पंगं रेंसां निप गरे । सारे गप निसां पनि
सां–, नि़सा रे–, सारे । गप निसां पनि सां–
नि़सा रे–, सारे गप । निसां पनि सां–, नि़सा

१५. प़नि़ सारे गप निसां । नि़सा रेग पनि सांरें
गप निसां रेंगं पंनि । सां रें सां ंनि पंगं रेंसां
निप गरे सानि़ प़नि़ । सारे गप निसां रे–
सारे गप निसां रे–, । सारे गप निसां नि़सा

गत, राग हंसध्वनि (२)

तीनताल

- **स्थायी**

२　　　　　　　　०　　　　　　　　३
सांनि पनि सांरें सांनि । पग रेसा नि़रे सा– । – प़ सा प़ ॥

× २ ०
ग
रे – – सा । ग रे प ग । नि प सां नि
३
पनि सांरें गरें सांनि ।। पग रेसा प़नि़ सा–, । सांनि पनि सांरें सांनि

ग
पग रेसा नि़रे सा– । – प़ सा प़ ।। रे – – सा,

● अंतरा

२ ० ३
रे
सां सां
ग रे ग प । – नि प ग । नि प नि रें
×
रें गं रें गं रें
सांनि रें सां –, । प सां प रें । – गं रें सां
गरें सांनि रेंसां निप ।। सांनि पग रेसा नि़सा, । सांनि पनि सांरें सांनि

सा ग
पग रेसा नि़रे सा– । – प़ सा प़ ।। रे – – सा ।

ज्ञातव्य : निर्बन्ध तानें या तालबद्ध तानें इस गत में भी प्रयोग कर सकते हैं। यह वादक की अपनी इच्छा पर निर्भर है।

झाला, राग हंसध्वनि (तीनताल)

कण, मीड़, मुर्की, खटका, जमजमा-सहित

× २ ० ३

रे रे सा सा रे ग नि़
नि़ – सा – | नि़ – प़ – | नि़ प़ नि़ सा | रे – सा –
तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ | तू ऊ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ

×				२				०				३			
				ग		नि़		नि़	सा		ग	नि़		रे	
प़	नि़	प़	सा	रे	–	सा	–	प़	नि़	प़	रे	सा	–	सा	–
तू	ऊ	तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऊ	तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऽ

ग				रे		रे		ग		ग		रे		प	
रे	ग	रेसा	रे	ग	–	ग	–	रे	सा	रे	–	ग	रे	ग	–
तू	ऊ	तूऊ	तू	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऊ	तू	ऽ

ग				सा				सा				ग			
रे	–	सा	–	नि़	–	प़	–	नि़	प़	नि़	सा	रे	ग	रेसा	रे
तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऊ	तूऊ	ऊ

रे	ग	प						सा		ग		सा	नि़		
सा	रे	ग	रे	ग	–	ग	–	रे	सा	रे	ग	रे	–	सा	–
तू	ऊ	तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऊ	तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऽ

								रे				रे			
प	ग	प	नि	प	–	प	–	ग	रे	ग	प	ग	–	रे	–
तू	ऊ	तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऊ	तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऽ

प								रे	ग			रे		सा	
ग	रे	प	ग	रे	–	रे	–	सा	रे	नि़	सा	नि़	–	प़	–
तू	ऊ	तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऊ	तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऽ

			ग	नि़		रे		रे			ग	नि़		रे	
प़	नि़	प़	रे	सा	–	सा	–	नि़	सा़	नि़	रे	सा	–	सा	–
तू	ऊ	तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऊ	तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऽ

×				२				०				३			
रे		प		नि								सां		सां	
सा	–	ग	–	प	–	प	–	ग	प	नि	प	नि	–	नि	–
तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऊ	तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऽ

नि		रें	गं	रें		रें		सां	रें		गं	रें		रें	
प	नि	सां	रें	सां	–	सां	–	नि	सां	नि	रें	सां	–	सां	–
तू	ऊ	तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऊ	तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऽ

×				२			
निप	निसां	रेंगं	सांरें	पंगं	रेंगं	पंगं	रेंसां
तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ

०				३			
निप	निसां	निप	गरे	पग	पग	रेसा	ऩिसा
तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ

×				२				०				३			
ग		ग		प								नि		रें	
रे	–	रे	–	ग	रे	ग	–	प	ग	रेसा	रे	सां	–	सां	–
तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऊ	तूऊ	तू	तू	ऽ	तू	ऽ

ग				नि				गं				रें		नि	
रे	ग	प	ग	प	–	नि	सां	रें	–	सां	–	सां	–	सां	–
तू	ऊ	तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ

गं		नि		गं				रें				गं			
रें	–	सां	–	रें	–	सां	–	गं	–	रें	गं	रें	–	सां	–
तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऽ

×				२				०				३			
												सां	सां	रें	
प	ग	पं	गं	रें	गं	रें	–	नि	प	नि	सां	नि	नि	सां	–
तू	ऊ	तू	ऊ	तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऊ	तू	तू	तू	तू	तू	ऽ
गं				रें											
रें	–	गं	पं	गं	–	गं	–	पं	–	गं	–	रें	गं	रें	–
तू	ऽ	तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऊ	तू	ऽ
सां		रें													
नि	–	सां	–	रें	गं	रेंसां	रें	निप	निसां	रेंगं	रेंसां	निप	गरे	पग	रेसा
तू	ऽ	ऊ	ऽ	तू	ऊ	तूऊ	तू	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ
सा		रे	ग			नि़		सा		रे		नि़		नि़	
नि़	–	प़	सा	रे	–	सा	–	नि़	–	सा	–	सा	–	सा	–
तू	ऽ	तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ
नि़		रे		नि		सां		सां		सां		रें		रें	
सा	–	ग	–	प	–	नि	प	नि	–	नि	–	सां	–	सां	–
तू	ऽ	तू	ऽ	रू	ऽ	तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ

×				२			
रेंरें	रें,गं	गंगं	रेंरें	रें,सां	सांसां,	निनि	पग
तूतू	तू,तू	तूतू	तूतू	तू,तू	तूतू	तूतू	तूतू
०				३			
रेरे	रे,ग	गग	रेरे	रे,सा	सासा,	नि़नि़	नि़,सा
तूतू	तूतू	तूतू	तूतू	तूतू	तूतू	तूतू	तूतू

× २ ० ३

ग रे सां नि सां रें गं
रे – ग प | ग – प नि | प – नि सां | रें – गं रें
तू ऽ तू ऊ | तू ऽ तू ऊ | तू ऽ तू ऊ | तू ऽ तू ऊ

गंगं गं,पं पंपं, गंगं | पं – पं – | निं निं सां – | सां – सां –
तूतू तू,तू तूतू, तूतू | तू ऽ तू ऽ | तू तू तू ऽ | तू ऽ तू ऽ

रें
रें – सां – | निं – सां – | निं – पं – | गं रें गं –
तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ | तू ऊ तू ऽ

सां सां रे
रें सां रें – | नि प नि – | प ग प – | ग रे ग –
तू ऊ तू ऽ | तू ऊ तू ऽ | तू ऊ तू ऽ | तू ऊ तू ऽ

ग ग रे सा सा ग
रे सा रे – | सा नि़ सा – | नि़ प़ नि़ – | प़ रे सा –
तू ऊ तू ऽ | तू ऊ तू ऽ | तू ऊ तू ऽ | तू ऊ तू ऽ

× २
रेसा रेग सारे गप | निसां रेंगं पंनिं सांरें
तूऊ तूऊ तूऊ तूऊ | तूऊ तूऊ तूऊ तूऊ

० ३
सांनिं पंगं पंगं रेंसां | निप गरे सानि़ सा–
तूऊ तूऊ तूऊ तूऊ | तूऊ तूऊ तूऊ तूऽ

× २ ० ३

सा सा रे ग रे

नि़ नि़ सा – | प़ नि़ प़ सा | प़ नि़ प़ रे | सा रे सा –

तू ऊ तू ऽ | तू ऊ तू ऊ | तू ऊ तू ऊ | तू ऊ तू ऽ

ग सां रे रे रें रें नि सां रें गं

रे ग प नि | सा रे ग प | ग प नि सां | प नि सां रें

तू तू तू ऊ | तू तू ऊ ऊ | तू ऊ तू ऊ | तू ऊ तू ऊ

गं पं गं रें | नि रें नि प | ग रे प ग | निप निरें सांनि पग

तू ऊ तू ऊ | तू ऊ तू ऊ | तू ऊ तू ऊ | तूऊ तूऊ तूऊ तूऊ

नि़ सा नि़ ग रे ग सा रे

रेसा नि़सा प़नि़ सा– | प़ – नि़ सा | प़ नि़ प़ रे | सा रे नि़ सा

तूऊ तूऊ तूऊ तूऊ | तू ऽ तू ऊ | तू ऊ तू ऊ | तू ऊ तू ऊ

रें गं रें रें

ग – प ग | प नि सां रें | गं पं गं रें | सां नि पग रेसा

तू ऽ तू ऊ | तू ऊ तू ऊ | तू ऊ रू रू | तू ऊ तूऊ तूऊ

सा सा सा सा नि़

नि़ – नि़ नि़ | सा – सा – | नि़ – सा – | प़ नि़ सा –

तू ऽ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ | तू ऊ तू ऽ

समाप्ति की तान व तिहाई तू ऊ ततकार से

× २

गरें सांरें सांनि पनि । पग रेग रेसा नि़सा

० ३

नि़प़ नि़सा गरे सा- । प़नि़ सारे गप निसां

×					२			
पनि	सां–	नि़–,	प़नि़	।	सारे	गप	निसां	पनि
०					३			
सां–	नि़–,	प़नि़	सारे	।	गप	निसां	पनि	सां–
गरें	सांरें	सांनि	पनि	।	पग	रेग	रेसा	नि़सा
नि़प़	नि़सा	गरे	सा–	।	प़नि़	सारे	गप	निसां
पनि	सां–	नि़–,	प़नि़	।	सारे	गप	निसां	पनि
सां–	नि़–,	प़नि़	सारे	।	गप	निसां	पनि	सां–
गरें	सांरें	सांनि	पनि	।	पग	रेग	रेसा	नि़सा
पग	रेग	रेसा	नि़सा	।	प़नि़	सारे	गप	निसां
पनि	सां–	नि़–,	प़नि़	।	सारे	गप	निसां	पनि
सां–	प़नि़	प़नि़	सारे	।	गप	निसां	पनि़	सां–

गत, राग हंसध्वनि (झप ताल)

● स्थायी

×		२			०		३		
ग रे	–	ग	–प	रे	रे सा	नि़	प़	–सा	नि़सा
ग रे	–	ग	प	–सां	निसां	सांनि	पग	रेसा	नि़सा
ग रे	–	ग	–प	रे	सा	नि़	प़	–सा	नि़सा

● अंतरा

×		२			०		३		
नि प	–	ग	नि प	–	सां नि	प	गं रें	नि	सां
रें गं	–	गं रें	सां	–	गं रें	सां	सां नि	प	सां नि

×		२			०		३		
रेंसां	गंरें	पसां	नि	पनि	सांरें	गंरें	सांनि	पग	रेसा
गरे	–	ग	–प	गरे	रेसा	रेनि़	प़	–सा	नि़सा

तालबद्ध तानें

	×		२			०		३		
१.	रेग	पग ।	पनि	सांनि	पग ।	रेसा	रे–, ।	नि़सा	रे–,	नि़सा
२.	सारे	गप	गरे	गप	सांनि	पनि	गंरें	सांनि	पग	रेसा
	प़नि़	सानि़	रेसा	रे,प	नि़सा	नि़रे	सारे,	प़नि़	सानि़	रेसा
३.	रेसा	नि़सा	रेग	पग	पनि	पग	पनि	सांरें	सांनि	पग
	सांनि	पग	रेसा	नि़सा	रेनि़	–सा,	रेनि़	–सा	रेनि़	–सा
४.	रेग	पग	नि–	पनि	पनि	सांरें	गंरें	सांरें	निसां	पनि
	पग	रेग	सारे	नि़सा	नि़–	प़नि़	सारे	गप	गरे	सा–
	नि़प़	नि़सा	नि़–	प़नि़	सा–	रेग	रे–	नि़प़	नि़सा	नि़–
	प़नि़	सा–	रेग	रे–	नि़प़	नि़सा	नि़–	प़नि़	सा–	रेग
५.	रे–	सारे	सारे	गप	निसां	रेंसां	गंरें	पंगं	रेंसां	निसां
	रेंगं	सांरें	निसां	पनि	गप	रेग	सारे	नि़सा	प़नि़	सा–
	प़नि़	सारे	सा–	प़सा	नि़सा	रेग	रे–	प़नि़	सारे	सा–
	प़सा	नि़सा	रेग	रे–	प़नि़	सारे	सा–	प़सा	नि़सा	रेग

	×		२			०		३		
६.	रेग	रे,ग	पग	रेग	पनि	पनि	सांनि	सांरें	सांरें	गंरें
	सांरें	गंपं	गंरें	सांनि	पनि	पसां	निप	गरे	सानि़	सा–
	प़सा	नि़सा	रे–	सारे	ग–	रेग	रे–	प़सा	नि़सा	रे–
	सारे	ग–	रेग	रे–	प़सा	नि़सा	रे–	सारे	ग–	रेग
७.	सारे	गरे	साग	रेग	पग	रेसा	रेग	पग	पसां	निप
	निसां	निरें	सांरें	गंरें	सांनि	पनि	पनि	सांनि	पग	रेसा
	रेग	पग	पग	रेसा	रे–	प़–	रे–	पनि	सांनि	सांरें
	सांनि	प–	सां–	रें–	रेग	पग	पग	रेसा	रे–	प़–
८.	रेसा	रेग	रेसा	गरे	गरे,	गप	गरे	पग	पग	पनि
	पनि	सांनि	सांनि	रेंसां	रेंसां	गंरें	सांनि	पग	रेसा	नि़सा
	प़नि़	सानि़	सानि़	सारे	साग	रेसा	रे–	प़नि़	सा,नि़	सानि़,
	सारे	साग	रेसा	रे–,	प़नि़	सा,नि़	सानि़	सारे	साग	रेसा
९.	प़नि़	सानि़	रेसा	नि़सा,	गरे	पग	पग	रेसा	रेग	पनि
	सांनि	सांरें	गंरें	पंगं	रेंसां	निसां	निरें	सांरें	निसां	निप
	सानि़	पग	रेसा	नि़प़	नि़सा	प़सा	नि़–	सारे	सा–	रेंग
१०.	पग	प़रे	सारे	नि़सा	रेग	रे,सा	रेसा,	नि़सा	रेग	पनि
	पसां	निसां	रेंगं	सांनि	निसां	पनि	सांनि	पग	रेसा	नि़सा
	प़नि़	साप़,	नि़सा	प़नि़	सा–	रेग	रे–,	पनि	सां,प	निसां
	पनि़	सां–	रेंगं	रें–	प़नि़	सा,प़	नि़सा	प़नि़	सा–	रेग

	×		२			०		३		
११.	पृनि़	पृनि़	पृसा	नि़सा,	पृनि़	पृनि़	पृरे	सारे	पृनि़	पृनि़
	पग	रेग	रेग	पग	रेसा	नि़सा	पनि	पसां	निसां,	पनि
	परें	सांरें	पनि	पंगं	रेंगं	रेंरें	रें,सां	सांसां	निनि	नि,प
	पप,	निनि	नि,प	पप,	रेरे	रे,सा	सासा	नि़नि़	नि़,सा	सासा
	पग	रेसा	नि़प़	नि़सा	नि़–	रेग	रे–	पग	रेसा	नि़प़
	नि़सा	नि़–	रेग	रे–	पग	रेसा	नि़प़	नि़सा	नि़–	रेग

	×		२			०		३		
१२.	रेग	पग	पनि	पग	पनि	सांरें	सांनि	पग	रेसा	नि़सा
	नि़प़	नि़सा	रे–	––,	नि़प़	नि़सा	रे–	––,	नि़प़	नि़सा

	×		२			०		३		
१३.	नि़प़	नि़सा	रेग	सारे	गप	निसां	गंरें	सांनि	पग	रेसा
	पृनि़	सारे	सा–	––,	पनि	सांरें	सां–	––,	पृनि़	रेसा

	×		२			०		३		
१४.	रे–	गप	निसां	रेंगं	रेंसां	पग	रेसा	रेसा	रे–	रेसा

	×		२			०		३		
१५.	पनि	सारे	गप	निसां	रेंगं	पंगं	पंनि	सांरें	सांनि	पंगं
	रेंसां	निप	गरे	पृनि़	सा–	पृनि़	सा,प़	नि़सा,	सांसां	सासा

गत, राग हंसध्वनि (एकताल)

● स्थायी

×		०		२		०		३		४	
						प	(रे)ग	(ग)रे	(रे)सा	नि़प़	नि़सा
(ग)रे	–,	सारे	साग	(ग)रे	(रे)सा,	(म)रे	ग	(नि)प	(सां)नि	(रें)सां	(गं)रें
सांनि	पनि	सांरें	सांनि	पग	रेसा	प	(रे)ग	(ग)रे	सा	नि़प़	नि़सा
(ग)रे	–,	सारे	साग	(ग)रे	(रे)सा						

● अंतरा

×		०		२		०		३		४	
						(प)ग	(नि)प	(सां)नि	(रें)सां	निप	निसां
(रें)सां	–	सां,	(सां)नि	(गं)रें	(रें)सां	गंरें	(रें)गं	रेंसां	नि	प	(रे)ग
पनि	सांरें	गंरें	सांनि	पग	रेसा	(नि)प	(रे)ग	(ग)रे	(रे)सा	नि़प़	नि़सा
(ग)रे	–,	सारे	साग	(ग)रे	(रे)सा						

● तालबद्ध तानें

×　　　　　० 　　　　　२　　　　　०

१. नि़सा रेसा । गरे सारे । गरे पग । रेसा नि़सा

३　　　　४

प़नि़ सा,प़ । नि़सा, प़नि़ ।।

×　　　　०　　　　२　　　　०

२. नि़प़　सानि़ । गरे　पग । पग　रेसा । रेसा　गरे

३　　　　४

पग　निप । सांनि　पग ।। पनि　सांरें । सांनि　पनि

सांनि　पग । रेसा　नि़प़ । नि़सा　रे–, । प़नि़　सा– ।।

रे–,　नि़प़ । नि़सा　रे,– । प़नि़　सा– । रे–,　नि़प़

नि़सा　रे–, । प़नि़　सा– ।।

३. नि़रे　सारे । सारे　गप । निसां　रेंसां । पनि　सांनि

पग　रेसा । प़नि़　सारे ।। सा–　रेग । रे–　प़नि़

सारे　सा– । रेग　रे–, । प़नि़　सारे । सा–　रेग ।।

४. नि़सा　नि़सा । नि़रे　सा– । गरे　पग । रेसा　नि़सा

रेग　पनि । सांरें　गंरें ।। सांनि　पग । रेसा　नि़–

प़नि़　साग । रे–,　प़नि़ । साग　रे–, । प़नि़　साग ।।

५. नि़प़　सानि़ । रेसा　गरे । पग　निप । सांनि　रेंसां

गंरें　सांनि । पग　रेसा ।। नि़प़　नि़सा । प़नि़　सानि़

रेसा　रे,प़ । नि़सा　नि़रे । सारे,　प़नि़ । सानि़ रेसा ।।

६. सारे　गरे । सारे　गप । निसां　रेंगं । पंगं　रेंसां

निप　गरे । सानि़　सा– ।। नि़प़　नि़सा । रे–,　सारे

नि़प़　नि़सा । रे–,　सारे । नि़प़　नि़सा । रे–,　सारे ।।

७. सानि़　सारे । नि़सा　प़नि़ । सारे　नि़सा । रेग　पग

पनि　सांनि । सांरें　निसां ।। पनि　सानि़ । गप　निप

सारे　गरे । सानि़　सा–, । प़नि़　सारे । सा–,　प़–, ।।

रे–,　––, । प़नि़　सारे । सा–,　प़–, । रे–,　––,

प़नि़　सारे ।।

× ० २ ०
८. नि̣सा नि̣रे । सानि̣ सारे । गप निसां । रेंगं रेंसां
३ ४
निप गरे । सानि रेसा ॥

९. रे–, सारे । ग–, रेग । प– गप । नि–, पनि
सां–, निसां । रेंगं रें,सां ॥ रेंसां निसां । नि,प निप,
गप, गरे । गरे, सारे । सा,नि̣ सानि̣, । प̣नि̣ प̣रे ॥
सा–, रेग । रे–, प̣नि̣ । प̣रे सा– । रेग रे–,
प̣नि̣ प̣रे । सा–, रेग ॥ रे–, –– । पनि प̣रे
सा– रेग, । रे–, –– । प̣नि̣ प̣,रे । सा–, रेग ॥

१०. रेसा रेग । पग पनि । सांनि सांरें । गप गंरें
सांरें सांनि । पग रेसा ॥ प̣नि̣ सा,प̣ । नि̣सा, प̣नि̣
पनि सां,प । निसां, पनि । पनि सा,प̣ । नि̣सा, प̣नि̣ ॥

११. प̣नि̣ प̣सा । नि̣सा नि̣सा । प̣नि̣ प̣रे । सारे सारे
नि̣सा नि̣ग । रेग रेग ॥ पनि सांनि । पनि रेंसां
पनि गंरें । पनि रेंसां । पनि सांनि । पग रेसा ॥
रे–, प̣नि̣ । सा–, प̣सा । रे–, प̣नि̣ । सा–, प̣सा
रे–, प̣नि̣ । सा–, प̣सा ॥

१२. पनि सारे । गप गरे । सानि̣ प̣नि̣ । सारे नि̣सा
रे–, नि̣सा । रे–, नि̣सा ॥

१३. प̣नि̣ पसा । रेसा रेग । पग पनि । सांरें गंरें
पंगं रेंसां । पंनिं सांरें ॥ सांनिं पंगं । रेंसां निप
गरे पग । पग रेसा । रे–, गरे । ग–, रेसा ॥

१४. नि̣प̣ नि̣सा । प̣नि̣ सारे । सारे गप । गप निसां
रेंगं पंगं । पंगं रेंसां ॥ निरें निप । गरे सानि̣
प̣नि̣ सारे । सा–, प̣नि̣ । सारे सा–, । प̣नि̣ रेसा ॥

×　　　　　　　०　　　　　　२　　　　　　०
१५. सानि़　सारे । गप　निसां । रेंगं　रेंसां । रें–　सांरें

३　　　　　　४
गंपं　गंरें । सांरें　सांरें ।। सांनि　पनि । पग　पग
रेसा　प़नि़ । सारे　गप । निसां,　प़नि़ । सारे　गप ।।
निसां,　प़नि़ । सारे　गप । निसां,　नि़प़ । नि़सा　रे,नि़
प़नि़　सारे, । नि़प़　नि़सा ।।

१६. रेग　पग । पनि　पग । पनि　सांनि । पग　रेसा
रे–,　प़सा । नि़–　रेसा ।। रे–,　रेसा । रे–,　प़सा
नि़–,　रेसा । रे–,　रेसा । रे–,　प़सा । नि़　रेसा ।।

१७. नि़प़　सारे । गप　रेग । रेसा　नि़प़ । नि़सा　रेसा
रे–,　नि़सा । रे–,　नि़सा ।।

१८. प़नि़　सारे । गप　निसां । पनि　सांरें । गंपं　निंसां
निंपं　गंरें । सांनि　पग ।।

१९. सारे　गप । रेग　पनि । गप　निसां । रें–,　गप
निसां　रें– । गप　निसां ।।

२०. रेसा　रेग । पनि　सांरें । सांनि　पग । रेसा　नि़प़
रे–,　नि़प़ । रे–　नि़प़ ।।

गत, राग हंसध्वनि (रूपक ताल)

● **स्थायी**

०　　　　　　×　　　　　　२
⌒
ग　　　　　　रे
रे　–　सा । नि़　प़ । –सा　नि़सा

०			×		२	
(ग रे	–	ग	पसां	निसां	नि	प
सां नि	प	ग	प	नि	सां	रें
गं	रें	गंरें	सांनि	पग	रेसा	ऩिसा

● अंतरा

०			×		२	
प ग	प	सां नि	रें सां	–	पनि	सांरें
रें सां	–	रें सां	सां नि	गं रें	सां	–,
न प	सां नि	प	गं रें	सां	रें नि	सां प
रे ग	रे	सा	गंरें	सांनि	पग	रेसा

● तालबद्ध तानें

	०			×		२	
१.	ऩिप़	ऩिसा	रेनि़	सारे	पग	रेसा	ऩिसा
२.	ऩिप़	सानि़	रेसा	गरे	पग	पग	रेसा
३.	रेग	पनि	सांरें	सांनि	पग	रेसा	ऩिसा
४.	प़नि़	प़सा	ऩिसा	रेसा	गप	निसां	रेंसां
	रेंगं	रेंसां	निप	निरें	सांनि	पग	रेसा
	रेसा	रेसा	सारे	ऩिसा	रे–,	सांरें	निसां
	रेंसां	रेंगं	रें–,	ऩिप़	ऩिसा	प़नि़	प़सा

	०			×		२	
५.	रेसा	नि़सा	रेसा	रेग	पनि	सांरें	सांनि
	पग	रेसा	नि़सा	रे–,	निसां	रें–,	नि़सा
६.	रेसा	नि़प़	गरे	सानि़	पग	रेसा	निप
	गरे	सांनि	पग	रेसा	नि़सा	नि़प़	नि़सा
७.	रेसा	रेग	पनि	सांरें	गंरें	सांनि	पग
	रेसा	गप	निसां	गप	निसां	गप	निसां
८.	रे–,	गम	ग–,	पनि	प–,	निसां	नि–,
	सांरें	सां–	रेंगं	रेंसां	निप	गरे	सा–
	गप	निसां	नि़प़	नि़सा	रे–,	गप	निसां
	नि़प़	नि़सा	रे–,	गप	निसां	नि़प़	नि़सा
९.	प़नि़	सारे	सारे	गप	निसां	रेंसां	निप
	गरे	सानि़	पनि	सारे	गप	निसां	रे–,
	सारे	गप	निसां	रें–,	सारे	गप	निसां
१०.	सारे	गप	रे–,	गप	निसां	नि–,	पनि
	सांरें	सां–,	गंरें	सांनि	पग	रेसा	नि़सा
	रेसा	नि़सा	नि़प़	नि़सा	रे–,	रेसा	नि़सा
	नि़प़	नि़सा	रे–,	रेसा	नि़सा	नि़प़	नि़सा
११.	रेसा	रेग	रेसा	पग	पनि	पग	निप
	निसां	निप	सांरें	गंरें	गंपं	गंरें	सांनि

०			×		२	
पग	पग	रेसा	नि़सा	गप	निसां	रें–
––,	गप	निसां	रें–,	––,	गप	निसां
१२. प़नि़	सारे	गप	निसां	रेंगं	पंगं	पंनिं
सां–,	निंपं	गंरें	सांनि	पग	पग	रेसा
पनि	सां–,	नि़प़	नि़सा	रे–,	पनि	सां–
नि़प़	नि़सा	रे–	पनि	सां–,	नि़प़	नि़सा
१३. रेसा	नि़रे	सारे	गप	निसां	रेंसां	निप
गरे	सारे	गप	सारे	गप	सारे	गप
१४. नि़प़	सानि़	रेसा	गरे	पग	निप	सांनि
रेंसां	निसां	निप	गप	गरे	–सा	नि़सा
१५. रेग	पनि	गप	निसां	रेंगं	पंगं	रेंसां
निरें	सांनि	पग	सांनि	पग	सांनि	पग
१६. प़नि़	पसा	प़नि़	प़रे	सारे	साग	पनि
पसां	रेंसां	निप	सांनि	पग	पग	रेसा

गत, राग हंसध्वनि (ध्रुवपद-अंग)

चारताल

● स्थायी

×		०		२		०		३		४	
ग रे	–	ग	प	ग	रे	सा	–	सा नि़	प़	नि़	सा
ग रे	ग	प	नि	रें सां	नि	प	ग	प	ग	रे	सा

● अंतरा

×		०		२		०		३		४	
(नि)प	–	ग	प	नि	प	सां	नि	सां	रें	(रें)सां	–
प	नि	सां	नि	सां	रें	सां	नि	प	सां	नि	रें
(रें)गं	–	(गं)रें	सां	नि	सां	नि	प	सां	नि	प	ग
प	(रें)सां	नि	प	ग	रे	प	ग	प	ग	रे	सा

दुगुन की लयकारी में

×   ०   २   ०
रे–,––   गप । गरे   सा––– । नि़प़   नि़सा । रेग   पनि
३   ४
सांनि   पग । पग   रेसा ॥

×   ०   २   ०
प–,––   गप । निप   सांनि । सांरें   सां––– । पनि   सांनि
३   ४
सांरें   सांनि । पसां   निरें ॥ ग–,––   रेंसां । निसां   निप ।
सांनि   पग । पसां   निप । गरे   पग । पग   रेसा ॥

तिगुन की लयकारी में

×   ०   २   ०
रे–ग   पगरे । सा–नि़   प़नि़सा । रेगप,   निसांनि । पगप,   गरेसा,
३   ४
रे–ग   पगरे । सा–नि़   प़नि़सा ॥ रेगप   निसांनि । पगप   गरेसा ।
रे–ग   पगरे । सा–नि़   प़नि़सा । रेगप   निसांनि । पगप   गरेसा ॥

×   ०   २   ०
प–ग   पनिप । सांनिसां   रेंसां– । पनिसां   निसांरें । सांनिप   सांनिरें

३ ४
गं–रें सांनिसां । निपसां निपग ।। पसांनि पगरे । पगप गरेसा ।

पसांनि पगरे । पगप गरेसा, । प–ग पनिप । सांनिसां रेंसां– ।।

पनिसां निसांरें । सांनिप सांनिरें । गं–रें सांनिसां । निपसां निपग ।

पसांनि पगरे । पगप गरेसा ।।

चौगुन की लयकारी में

× ० २
रे–गप गरेसा– । ऩिप़ऩिसा रेगपनि । सांनिपग पगरेसा ।

० ३ ४
रे–गप गरेसा– । ऩिप़ऩिसा रेगपनि । सांनिपग पगरेसा ।।

रे–गप गरेसा– । ऩिप़ऩिसा रेगपनि । सांनिपग पगरेसा ।

रे–गप गरेसा– । ऩिप़ऩिसा रेगपनि । सांनिपग रेसारेसा ।।

× ० २
प–गप निपसांनि । सांरेंसां– पनिसांनि । सांरेंसांनि पसांनिरें ।

० ३ ४
गं–रेंसां निसांनिप । सांनिपग पसांनिप । गरेपग पगरेसा ।।

प–गप निपसांनि । सांरेंसां– पनिसांनि । सांरेंसांनि पसांनिरें ।

गं–रेंसां निसांनिप । सांनिपग पसांनिप । गरेपग पगरेसा ।।

प–गप निपसांनि । सांरेंसां– पनिसांनि । सांरेंसांनि पसांनिरें ।

गं–रेंसां निसांनिप । सांनिपग पसांनिप । गरेपग पगरेसा ।।

प–गप निपसांनि । सांरेंसां– पनिसांनि । सांरेंसांनि पसांनिरें ।

गं–रेंसां निसांनिप । सांनिपग पसांनिप । गरेपग पगरेसा ।।

ज्ञातव्य : आड़ लयकारी की गत भूपाली राग के अंतर्गत दी जा चुकी है। यहाँ हंसध्वनि राग में कुआड़ लय की गत दी जा रही है।

× ० २ ०
रे-- -ग- । -ग- -प- । -ग- -रे- । -सा- --- ।

३ ४
-नि़- -प़- । -नि़- -सा- ॥ -रे- -ग- । -प- -नि- ।

-सां- -नि- । -प- -ग- । -प- -ग- । -रे- -सा- ॥

× ० २ ०
-प- --- । -ग- -प- । -नि- -प- । -सां- -नि- ।

३ ४
-सां- -रें- । -सां- --- ॥ -प- -नि- । -सां- -नि- ।

-सां- -रें- । -सां- -नि- । -प- -सां- । -नि- -रें- ॥

-गं- --- । -रें- -सां- । -नि- -सां- । -नि- -प- ।

-सां- -नि- । -प- -ग- ॥ -प- -सां- । -नि- -प- ।

-ग- -रे- । -प- -ग- । -प- -ग- । -रे- -सा- ॥

• तालबद्ध तानें

× २ ०
रेसा रेग सारे गप । गप निसां पनि सांरें । सांरें गंपं निंसां रेंसां

३
सांनिं पंगं रेंसां निप ॥ गरे सानि़ प़नि़ सा- । सारे गप निसां निसां ।
सारे गप निसां निसां । सारे गप निसां निसां ॥

×　　　　　　　　２　　　　　　　　०

पृनि् सारे गप निसां । सारे गप निसां रेंगं । पनि सांरें गंपं निसां ।

३

सां नि पग रेसा पनि ।। सां–, निसां नि्–, सांनि । पग रेसा पनि सां–

निसां नि– सांनि पग । रेसा पनि सां–, निसां ।। गरे सा,गं रेंसां गरे गंरें सांनि पग रेसा । गत्—

×　　　　　　　　２　　　　　　　　०

प– नि्सां –नि पनि । सारे सा– रेग –रे । सारे गप, ग– पनि ।

३

–प गप निसां रेंगं ।। पंगं रेंसां निसां रेंगं । रेंगं रें– सांरें सांरें ।

सां– निसां निसां नि– । पनि पनि प– रेग ।। रेग रेसा नि्सा सां– ।

पृनि् सारे गप निसां । पनि् सारे गप निसां । पनि सारे गप निसां ।।

पृनि् सारे सानि् सारे । गप गरे गप निसां । निप निसां रेंगं रेंसां ।

रेंगं पंगं रेंसां निप ।। गरे सानि् पृनि् सा । गप निसां पनि सांसां ।

गप निसां पनि सांसां । गप निसां पनि सांसां ।।

पृनि् सारे पनि सांरें । पृनि् सारे गप निसां । गप निसां गंपं निसां ।

पंनि सां पनि सां ।। पृनि् सा– रेग पसां । निसां निरें सां– रेग ।

पसां निसां निरें सां– । रेग पसां निसां निरें ।।

पृ-- नि्– पृनि् सारे । नि्– सा– नि्सा रेग । सा– रे– सारे गप ।

रे– ग– रेग पनि ।। ग– प– गप निसां । निसां रेंगं रेंसां निसां ।

पसां निप निप गरे । गरे पग रेसा नि्सा ।। नि्पृ नि्सा –प –नि ।

सां– —— निप निसां । –प –नि सां– —— । नि्पृ नि्सा –प –सा ।।

राग खमाज

परिचय : ठाठ : खमाज, जाति : षाडव-संपूर्ण, वर्जित स्वर : आरोह में ऋषभ, विकृत स्वर : अवरोह में कोमल निषाद, वादी स्वर : गांधार, संवादी स्वर : निषाद, समय : रात्रि का प्रथम प्रहर, प्रकृति : चंचल।

आरोह : सा, ग म प ध, नि सां।
अवरोह : सां नि॒ ध, प म ग, रे सा।
पकड़ : ग म, प ध, नि॒ ध –, प ध ग म ग –, म ग रे सा।

राग-चलन : सा ग म प, ग प ध नि॒ ध, प ध ग म ग, ग म ध नि सां नि सां, नि सां रें सां नि॒ ध, प ध ग म ग, म ग रे सा। नि़ सा।

विशेष विवरण

राग खमाज की उत्पत्ति खमाज ठाठ से हुई है, इस राग के अवरोह में कोमल निषाद का प्रयोग किया जाता है। शेष स्वर शुद्ध लगते हैं। इस राग में अधिकांशत: ठुमरी तथा भजन आदि गाने-बजाने की प्रथा प्रचलित है। प्राय: गायक-वादक कलाकार गम्भीर रागों को गाने-बजाने के पश्चात् अन्त में ठुमरी, भजन अथवा खमाज-धुनें ऐसे ही चंचल प्रकृतिवाले रागों में गाते-बजाते हैं। ठुमरी, भजन अथवा धुन आदि गाने-बजाने के लिए कुछ निश्चित राग हैं, जैसे — खमाज, काफी, पीलू, भैरवी, तिलंग देश, मिश्र-खमाज और माज-खमाज इत्यादि। राग खमाज एक प्रसिद्ध एवं प्रचार पाया हुआ राग है। सुमधुर एवं सुन्दर राग है। यह राग श्रृंगार-रस प्रधान राग है। पूर्वांग में गांधार तथा उत्तरांग में धैवत पर न्यास करने से इस राग का रूप स्पष्ट एवं सुन्दर प्रतीत होता है। ग म प ध नि॒ –, प ध ग म ग –, अथवा ग म प ध – नि सां – नि॒ ध प ध ग म ग –, स्वर-समूहों को गाने-बजाने से यह राग स्पष्टतया सरल प्रतीत होने लगता है। खमाज में मुर्की एवं खटकों का प्रयोग पूर्णरूपेण किया जाता है। इस राग को कर्नाटक संगीत-पद्धति में राग 'खमास' कहते हैं।

स्वर-आलाप

म
नि़ सा – – –, ग, सा ग म ग – – –, सा ग म प म ग

– – –, म प म प म ग – – –, सा ग म, प – – – ग म

प ध – –, प, म ग – – –, रे सा – – –, ग म प ध नि॒ –,

ध – प ध, म प म ग – रे – सा – – –, नि़ सा ग म, सा

ग म ध प ध म ग – – –, सा ग म ग –, प प म ग –, रे सा

प़
– – –, नि़॒ –, प़ ध़ नि़॒, ध़ प़ – – –, ध़ नि़ –, ध़ सा

नि़॒ ध़, प़ –, ध़ – नि़ नि़ सा – – – ग म प ध, सा ग म प

– – –, म ध प – – –, ग म प ध नि॒ ध – ध, प ध, ग म ग

– – –, प म ग रे सा नि़ सा – – – नि़ सा – – –, ग म प

ध सां – – नि॒ ध, प ध नि॒ ध प – – –, सां नि॒ ध प – – –,

नि॒ ध प – – –, सा ग म प, ग म प ध, ग म प ध नि॒ – प ध

सां – – – नि॒, ध सां – – –, नि॒ ध प म ग – – –, ध, प ध, प म

ग रे सा रे सा – – – ग म प ध, ग प, म ग – – –, म प – – –,

सां सां
ग म ग रे म ग रे सा – – –, ग म प, ध – नि – नि सां – – –,

सां रें सां – – – नि, सां – – –, नि सां, नि॒ ध प ध म प

ग म, ग, प म ग – –, म ग रे सा – – –, नि़ सा – – –,

नि़ ध़, सा – – –, नि़ सा – – –, नि़ सा ग म, सा ग म ग –,

ध म, प ध नि, सां – – – सां नि रें सां – – –, नि सां गं मं

गं रें मं गं – रें सां – – – नि सां – – – नि॒ ध, प ध नि, प ध,

म ग – – –, रे सा नि़ सा नि़ सा नि़ सा रे सा नि़॒ ध़ प़ – – –,

ध़ म़ प़ ध़ नि़ – – – सा – – –, नि़ सा – – –, सा, ग – – –,

म प म ग – – –, प म ग – – –, रे, ग म ध ग – – म ग रे

सा रे सा – – –, नि़ सा – – –, नि़॒ ध़ – प़ – –, ध़, नि़ नि़
सा – – –, नि़ सा – – –, ग म प ध ग म ग, म ग,
रे सा नि़ सा।

निर्बन्ध तानें

१. ग म प ध प म ग म ग रे सा, ग म प ध नि॒ ध प ध प म ग रे सा, नि़ सा, ग म सा ग म प, प ध प म ग रे सा, नि़॒ ध़ नि़ सा नि़॒ ध़, प़ ध़ नि़ सा, ग रे सा नि़ सा ग म, सा ग म प ग म प ध नि॒ ध प म ग रे सा, नि़॒ ध़ प़, सा नि़॒ ध़, रे सा नि़ ग रे सा, ग रे, म ग रे सा।

२. सा ग म प म म ग म ग रे ग ग रे सा नि़ सा रे सा ग म प ध प म प ध नि॒ ध प म ग रे ग रे म ग रे सा नि़ सा, प़ ध़ नि़ सा, नि़॒ ध़ प़ ध़ नि़ सा ग म प ध म प म ग रे सा प प म प, ग म प ध, नि॒ नि॒ ध नि॒ ध सां नि॒ ध सां नि॒ ध प म ग रे सा, प़ ध़ प़ ध़ नि़ सा नि़ सा, ग म प ध म प ग म प ध प म ग रे सा।

३. सा ग ग प ग म प ध, प ध नि सां नि̲ ध नि̲ ध प म ग म प प म ग म म ग रे म ग रे सा ध़ नि़ सा, ग म प ध नि सां नि सां रें सां नि̲ ध प म ग रे ग म प ध नि̲ ध प ध नि सां नि̲ ध प म ग रे सा नि़ सा, सा ग, ग म, म प, प ध, ध नि, नि सां, नि̲ ध प म ग रे सा, सा ग, सा म, ग म, ग ध, प ध नि̲ ध प म ग रे ध प म ग रे सा नि़ सा, ध़ नि़ सा नि़ ध़ नि़ सा –, ग म प ध नि̲ ध प ध प ध नि सां गं रें मं गं रें सां नि̲ ध प ध प म ग रे सा नि़, ध़ नि़ ध़ सा नि़̲ ध़ प़ ध़, प़ ध़ नि़ सा ध़ नि़ सा रे सा नि़ सा – ।

४. सा ग म, ग म प, ग म प ध नि सां, गं मं गं रें गं गं रें सां नि सां नि̲ ध प म ग म ध सां नि̲ ध प म ग रे सा, नि़ सा ग म प म, ग म प ध नि̲ ध, प ध नि सां गं मं पं मं, गं मं गं रें सां नि̲ ध प नि̲ ध प म ध प म ग, प म ग रे म ग रे सा नि़ सा, सा ग म प, सां गं मं पं मं गं रें सां, म ग रे सा, सां नि̲ ध प म ग रे सा ।

५. सा ग म, सा ग म, ग म प, ग म प, म प ध, म ध प नि̲ ध, सां नि̲ ध सां रें सां नि̲ ध प नि̲ ध प म ग रे सा, प़ ध़ नि़ सा, नि़ सा ग म, ग म प ध, सां नि सां रें गं रें सां नि̲ ध प म ग रे सा, ग म प ध नि̲ ध प ध नि़̲ ध़ प़ ध़ गं मं पं धं निं सां निं̲ धं पं मं गं मं गं रें मं गं रें सां नि̲ ध प म ग रे सा, नि़ सा ग म प ध नि सां, सां निं̲ धं पं मं गं रें सां नि̲ ध प म ग रे सा नि़̲ ध़ नि़ सा ।

गत, राग खमाज (तीनताल)

● स्थायी

```
×                 २                 ०                 ३
                                    रे   रे   म   म                 नि
                  ।                 ।सा   सा   ग   ग ।म   –   प   ध
```

×	२	०	३
रें			रें
सां – नि॒ ध	पध पध म ग,	नि – नि नि	सां – प ध
रें		रे रे म म	
सां – नि॒ ध	मध पध म ग,	सा सा ग ग	म – प ध
रें			
सां – नि॒ ध	मध पध म ग,		

● अंतरा

×	२	०	३
		म	रें
		ग म ध नि	सां नि सां सां
		सां	रें
नि नि सां सां	निसां रेंसां नि॒ ध	नि – नि नि	सां – प ध
रें		रे रे म म	
सां – नि॒ ध	मध पध म ग	सा सा ग ग	म – प ध
रें			
सां – नि॒ ध	मध पध म ग		

● तालबद्ध तानें

× २ ०

१. गम पध निसां रेंसां । नि॒ध पम गरे सा– । गम पध नि॒,– गम ।

३

पध नि॒–, गम पध ।।

२. गम पध नि॒ध पध । पध निसां नि॒ध पध । नि॒ध पम गरे सा । गम पध नि॒ पध ।। सां पध नि॒ध गम । पध नि॒, पध सां, । पध सां, गम पध । नि॒, पध सां पध ।।

३. सांनि॒ धप, सानि॒ ध़प़ । मंगं रेंसां मग रेसा । सांनि॒ धप मग रेसा । गम पध नि॒ पध ।। सां सां सां, गम । पध नि॒, पध सां, । सा, सां, गम पध । नि॒, पध सां, सां ।।

४. पध निसां धनि सारें । गंमं गरें सांनि़ धप । नि़ध पम गरे सा ।
गम पध नि़, पध ।। निसां पध सां, गम । पध नि़ पध निसां ।
पध सां गम प,ध । नि़ पध निसां पध ।।

५. सांनि सारें सांनि़ धप । गम पध नि़ध पम । पम गरे सानि़ सा ।
गम प,म पध निसां ।। नि़ध पध सां, गम । प,म पध, निसां नि़ध ।
पध सां, गम प,म । पध, निसां पध ।।

६. निसां गम पध निसां । गंमं गरें सांनि सारें । सांनि़ धप गम पध ।
नि़ध पम गरे सा ।। गम पध निसां पध । सां –, गम पध ।
निसां पध सां –, । गम पध निसां पध ।।

७. मग रेसा सांनि़ धप । मंगं रेंसां नि़ध पम । गम पध निसां नि़ध ।
नि़ध पम गरे सा ।। पध निसां नि़, पध । सां –, पध निसां ।
नि़, पध सां –, । पध निसां नि़, पध ।।

८. गम पध निसां रेंसां । निध पध पध पम । गम पम गरे सा, ।
नि़सा गम पध निसां ।। नि़ पध सां, नि़सा । गम पध निसां नि़, ।
पध सां, नि़सा गम । पध निसां नि़, पध ।।

९. पध नि़ध पध निसां । गंमं गरें पंमं गरें । सांनि़ धप मग रेसा ।
गम पध निसां पध ।। निसां पध सा, गम । पध निसां पध निसां ।
पध सां, गम पध । निसां पध निसां पध ।।

१०. सारें गंमं पंमं गरें । सांनि सारें सांनि धप । मम पध नि़ध पम ।
नि़ध पम गरे सा ।। पध निसां सां, नि़ध । पम गरे सा, पध ।
निसां सां, नि़ध पम । गरे सा, पध निसां ।।

झाला, राग खमाज (तीनताल)

कण, मीड़-सहित

× | २ | ० | ३

सा रे | रे नि़ | सा सा रे | म
नि़ – सा – | सा – सा – | नि़ नि़ सा – | ग रे सा –
तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ | तू ऊ तू ऽ | तू ऊ तू ऽ

सा सा | | नि़ सा रे | रे रे
नि़ – ध़ – | प़ – प़ – | ध़ नि़ सा – | नि़ – सा –
तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ | तू ऊ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ

| | | रे
ग म प ध | ग म ग – | म ग रे सा | नि़ – सा –
तू ऊ तू ऊ | तू ऊ तू ऽ | तू ऊ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ

| सा | नि़ रे | रे
प़सा नि़सा नि़ ध़ | नि़ ध़ प़ – | ध़ नि़ सा नि़ | सा – सा –
तूऊ तूऊ तू ऊ | तू ऊ तू ऽ | तू ऊ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ

रे रे
नि़ सा ग म | सा ग म प | म – प – | मग रेसा रे सा
तू ऊ तू ऊ | तू ऊ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ | तूऊ तूऊ तू ऊ

रे
नि़ – सा – | ग म प ध | म – प – | ग म प ध
तू ऽ तू ऽ | तू ऊ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ | तू ऊ तू ऊ

सां | म
नि ध प – | ग म प ध | म प ग म | प ध नि ध
तू ऊ तू ऽ | तू ऊ तू ऊ | तू ऊ तू ऊ | तू ऊ तू ऊ

×	२	०	३
			सा रे रे
प – प –	म – प –	म ग रे सा	नि़ नि़ सा –
तू ऽ तू ऽ	तू ऽ तू ऽ	तू ऊ तू ऊ	तू ऊ तू ऽ
		सां रैं	
ग म प ध	नि – नि –	नि सां रैं सां	निसां रैंसां नि॒ ध
तू ऊ तू ऊ	तू ऽ तू ऽ	तू ऊ तू ऊ	तूऊ तूऊ तू ऊ
		म रे	
नि॒ – ध –	प – प –	ग म ग –	म ग रे सा
तू ऽ तू ऽ	तू ऽ तू ऽ	तू ऊ तू ऽ	तू ऊ तू ऊ
		सां रैं	रैं रैं
म प ध नि	ग म प ध	नि नि सां –	नि – सां –
तू ऊ तू ऊ	तू ऊ तू ऊ	तू ऊ तू ऽ	तू ऽ तू ऽ

×	२
निसां गंमं गंरैं सांनि॒	पध नि॒ध पध मप
तूऊ तूऊ तूऊ तूऊ	तूऊ तूऊ तूऊ तूऊ

०	३
गम पध नि॒ध पध	मग रेसा रेनि़ सा–
तूऊ तूऊ तूऊ तूऊ	तूऊ तूऊ तूऊ तूऽ

×	२	०	३
रे	म	नि़ रे	म
नि़ – सा –	ग म ग –	सा ग म प	ग म प ध
तू ऽ तू ऽ	तू ऊ तू ऽ	तू ऊ तू ऊ	तू ऊ तू ऊ

×				२				०				३			
सां		सां		सां	सां	रें		रें		नि		रें		रें	
नि	सां	नि	सां	नि	नि	सां	–	सां	–	सां	–	नि	–	सां	–
तू	ऊ	तू	तू	तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ

×				२			
सासा	सा,ग	गग,	मप	गम	पध	नि॒ध	पम
तूतू	तू,तू	तूतू,	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ
०				३			
पध	नि॒ध	पध	मप	गम	ग–	मग	रेसा
तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऽ	तूऊ	तूऊ

×				२				०				३			
					सां	रें	रें	गं				रें			
नि॒सा	गम	गम	पध	नि	सां	नि	सां	रें	नि	सां	–	सां	–	सां	–
तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तू	ऊ	तू	ऊ	तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ
सां					सा	रे		सां		रें		गं		नि	
नि	–	सां	–	नि॒	–	सा	–	नि	–	सां	–	सां	–	सां	–
तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ

×				२			
गम	पध	नि॒–	पध	पध	निसां	गंरें	मंगं
तूऊ	तूऊ	तूऽ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ ऊ	तूऊ
०				३			
पंमं	गंरें	सांसां	सां,नि॒	नि॒नि॒,	धध	ध,प	पप
तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ

मम	म,ग	गग	रेरे	रे,सा	सासा,	नि़नि़	नि़सा
तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ
				सां		र्रें	
गम	पध	गम	पध	नि	–	सां	–
तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तू	ऽ	तू	ऽ
सां	सां			र्रें	र्रें		
नि	नि	निनि	निनि	सां	सां	निनि	सांसां
तू	कू	तुकू	तूकू	तू	कू	तुकू	तुकू
						र्रें	
निनि	सांसां	निनि	सांसां	नि	नि	सां	–
तुकू	तुकू	तुकू	तुकू	तू	ऊ	तू	ऽ

×				२				०				३			
मं															
गं	मं	गं	–	मं	गं	मं	–	मं	गं	पं	–	मं	गं	र्रें	सां
तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऊ	तू	ऊ
गं		नि		सां	सां				नि॒						
र्रें	–	सां	–	नि॒	नि॒	ध	प	म	ध	प	–	ग	म	प	ध
तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऊ	तू	ऊ	तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऊ	तू	ऊ
सां								म							
नि॒	–	ध	प	म	ध	प	–	ग	म	प	ध	ग	म	ग	–
तू	ऽ	तू	ऊ	तू	ऊ	कू	ऽ	तु	कू	तु	कू	तू	ऊ	तू	ऽ
				ग		नि़		सा				नि़	रे	रे	
म	ग	रे	सा	रे	–	सा	–	नि़	–	सा	–	ध़	नि़	सा	–
तू	ऊ	तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऊ	तू	ऽ

× २ ० ३

नि़ म नि सां नि नि
सा – ग – | म – प – | ध – नि – | सां – सां –
तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ

सां
नि सां गं मं | पं – धं निं | सां – सां – | निं – सां –
तू ऊ तू ऊ | तू ऽ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ

रें सां नि॒ ध | पं – पं – | मं मं गं मं | पं – पं –
तू ऊ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ | तू ऊ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ

सां म
मं गं रें सां | नि॒ ध प – | ग म प ध | ग म ग –
तू ऊ तू ऊ | तू ऊ तू ऽ | तू ऊ तू ऊ | तू ऊ तू ऽ

सा रे सा रे नि़
म ग रे सा | नि़ – सा – | ध़ नि़ सा ध़ | नि़ सा ध़ नि़
तू ऊ तू ऊ | तू ऊ तू ऊ | तू ऊ तू ऊ | तू ऊ तू ऊं

रे रे रे रे सा नि़ सा
सा – सा – | नि़ – सा – | नि़॒ ध़ प़ – | ध़ नि़ सा –
तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ | तू ऊ तू ऽ | तू ऊ तू ऽ

सा नि़ नि़ ग नि़ नि़
नि़ सा ध़ नि़ | सा – सा – | रे नि़ सा – | सा – सा –
तू ऊ तू ऊ | तू ऊ तू ऽ | तू ऊ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ

इस तान व तिहाई को पूरा तीन बार बजाकर सम पर समाप्त करें :—

×				२			
सांरें	सांरें	निसां	निसां	धनि॒	धनि॒	पध	पध
०				३			
मप	मप	मग	रेसा	गम	पध	नि॒–	पध
सां–	निसां	नि॒–,	गम	पध	नि॒–	पध	सां–
निसां	नि॒–	गम	पध	नि॒–	पध	सां–	निसां

गत, राग खमाज (तीनताल)

● स्थायी

×	२	०	३
सां			
नि सां नि सां	– नि॒ ध प	ग म पध नि॒ध	पम गरे सानि़ सा–
सा रे सा ग	– मम ग म	गम पध निसां रेंसां	नि॒ध पम गरे सा–

● अंतरा

×	२	०	३
म म नि॒ ध	– नि सां –	ध नि सां रें	नि सां नि॒ध प
सां गं रें सां	– नि॒ ध प	ग म पध नि॒ध	पम गरे सानि़ सा

● तालबद्ध तानें

× २ ०

१. निसां नि॒ध पध पम । गम पम गरे सा–, । गम पध निसां गम

३

पध निसां गम पध ।

× ２ ०

२. गम प,म पध पध। नि,ध निसां, निसां गंरें। सांनि॒ धप मग रेसा

३

गम पध निसां पध ।। निसां निसां नि॒ गम । पध निसां पध निसां।

निसां नि॒, गम पध । निसां पध निसां निसां ।।

३. निसां नि॒ध पध गम । पध निसां रेंसां नि॒ध । पम गरे सानि॒ सा–,।

सानि॒ साग मप गम ।। पध निसां नि॒ सानि॒ । साग मप गम पध।

निसां नि॒, सानि॒ साग । मप गम पध निसां ।।

४. सारे नि॒सा पध मप । सांरें निसां नि॒ध पध । गम पध नि॒ धप।

सांनि॒ धप मग रेसा ।। गम पध निसां पध । सां –, गम पध।

निसां पध सां –, । गम पध निसां पध ।।

५. साग मप मग साग। साग मप धनि सांरें। गंमं सानि॒ धप –।

मग रेसा नि॒सा गम ।। पध निसां निध पम । गरे सानि॒ ध॒नि॒ सा–।

निसां नि, नि॒सा नि॒। नि निसां नि नि॒ ।।

६. नि॒ध पध निसां नि॒ध। पम पध पम गम। पध निसां गंमं पंमं।

गंरें सांनि धप मग ।। रेसा नि॒सा गम पम । प, सां नि॒, गम।

पम प, सां नि॒, । गम पम प सा ।।

७. निसां गंमं गंरें सांनि॒। सांनि॒ धप निध पम। धप मग पम गरे।

मग रेसा ध॒नि॒ सा– ।। निसां नि॒ध पम पध। नि॒ –, निसां नि॒ध।

पम पध नि॒ –, । निसां नि॒ध पम पध ।।

८. नि॒सा गम पध निसां। नि॒ध पध गम पध। नि॒ध पम गरे सा–।

नि॒सा गम पध निसां ।। सां सा, सां नि॒सा । गम पध निनि सां,।

सा, सां, नि॒सा गम । पध निनि सां सा ।।

९. ग म पध मप । ध नि सांरें निसां । नि॒ ध पम गरे ।
साग मप निसां धनि॒ ।। पध निसां नि साग । मप निसां धनि पध ।
निसां नि॒, साग मप । निसां धनि॒ पध निसां ।।

१०. ऩि सा, गम पध । ग म पध निसां । प ध निसां, गंमं ।
पंमं गंरें मंगं रेंसां ।। निध पम गरे सा– । पध नि॒,प धनि पध ।
प़ध़ ऩि॒,प़ ध़ऩि, पध । पध नि॒,प धनि॒ पध ।।

गत, राग खमाज (झप ताल)

- **स्थायी**

×		२			०		३		
सां									
नि	–	सांनि	सां	नि॒	ध	प	मग	रेसा	ऩिसा
ग	म	प	ध	सांनि	सां	नि॒	ध	पध	निसां

- **अंतरा**

×		२			०		३		
सां									
नि	–	सां	–	नि	सां	–	रें	सां	–
गं	मं	गं	रें	सां	सांनि	रेंसां	नि॒	ध	पध

- **तालबद्ध तानें**

× २ ० ३
१. पध निसां । नि॒ध पध गम । पध निसां । नि॒ध पध निसां

	×		२			०		३		
२.	निसां	निध	पम	गम	पध	निसां	पध	निसां	पध	निसां
३.	निसां	रेंसां	गंमं	गंरें	सांनि	धप	मग	रेसा	पध	निसां
४.	निसां	निसां	निध	पध	गम	पध	निध	पम	गरे	सा–
	गम	पध	नि	–,	गम	पध	नि	–,	गम	पध
५.	मम	पध	निध	पम	पध	निसां	रेंसां	निध	पम	गरे
	सा–,	निसा	गम	पध	नि–	गम	पध	नि,–	गम	पध
६.	गम	प,म	पध,	पध	निध	निसां	रेंसां	निध	पम	पध
७.	निसा	गम	पम	गम	पध	निसां	निध	पम	गम	सा–
	पध	निसां	नि–	—,	पध	निसां	नि–	—,	पध	निसां
८.	निसा	गम	गरे,	साग	मप	मग,	पध	निसां	निध	पध
	निसां	गंमं	गंरें,	सांनि	धप	मग	रेसा	निसा	गम	पध
९.	नि–	सांरें	सांरें	सांनि	धप	मग	रेसा	निसा	गम	पध
१०.	गम	पम	पध	मप	मप	मग	रेसा	निसा	धनि	सा–
	गम	पध	निसां	नि,ग	मप	धनि	सांनि,	गम	पध	निसां

गत, राग खमाज (एकताल)

● स्थायी

×		०		२		०		३		४	
						म ग	म	प	ध	पध	निसां
सां नि	–	ध	प	मग	रेसा	सा	ग	म	प	ग	म

×	०	२	०	३	४
पसां निसां	निध पम	गरे सा–	ग म	प ध	निसां रेंसां
सां					
नि –	ध प	म ग			

● अंतरा

×	०	२	०	३	४
			म		
			ग म	धप ध	पध निसां
रें	नि				
सां –	सां रें	सां –	निसां रेंसां	नि ध	ग म
		ग			
पध निसां	निध पम	गरे सा–	ग म	प ध	निसां रेंसां
नि –	ध प	म ग	ग म	प ध	निसां रेंसां

दूसरी गत, खमाज (एकताल)

● स्थायी

×	०	२	०	३	४
			ग म	पध निध	पध गम
म	सा				
ग –	म ग	रे सा	ग म	प ध	नि सां
नि ध	निसां रेंसां	निध पम	ग म	पध निध	पध गम
	सा				
ग –	म ग	रे सा			

● अंतरा १.

×	०	२	०	३	४
			ग म	पध निध	पध निसां
रें					
सां –,	सां रें	नि सां	गं मं	गं रेंसां	निध पम
पध निसां	निध पम	गरे सा–			

● अंतरा २.

×		०		२		०		३		४	
						ग	म	पध	निध	निध	निसां
नि नि	–	सां	रें	नि	सां	गं	मं	गं	रें	सां	नि
पध	ऩिध	पम	गरे	सांनि	सा–	ग	म	पध	निध	पध	गम
म ग	–	सा म	ग	रे	सा						

● तालबद्ध तानें

× ० २ ०

१. गम पम । गम पध । निसां गंमं । पंमं गंरें ।

३ ४

सांऩि धप । मग रेसा ॥ गम पध । निसां —, ।

गम पध । निसां —, । गम पध । निसां —, ॥

२. पध ऩिध । पध पम । गम पध । निसां ऩिध ।

पध पम । गरे सा–, ॥ प़ध़ सा़,प़ । ध़सा प़ध़, ।

पध सां,प । धसां, पध । गम प,ग । मप, गम ॥

३. गम पध । पध निसां । निसां गंमं । पंमं गंरें ।

सांनि सांरें । सांऩि धप ॥ मग रेसा । गम पध ।

ग– —, । गम पध । ग– —, । गम पध ॥

४. पध पसां । निसां ऩिध । पसां ऩिध । पम पध ।

पम गरे । साऩि सा– ॥ गम पध । ग– — ।

— साम । पध ग– । — —, । गम पध ॥

५. गरें सांनि । सांनि धप । गम पध । पम गम ।
पध पम । गरे सा– ।। गम पध । नि– –– ।
––, गम । पध नि– । –– ––, । गम पध ।।

६. साग मग । साग मप । गम पम । गम पध ।
पध निध । पध निसां ।। निध पम । गरे सा– ।
निध पम । गरे सा– । निध पम । गरे गम ।।

७. साग मप । धनि सांरें । गरें सांनि । धप मग ।
रेसा नि़सा । गम पध ।। ग, म, । ग, गम ।
पध ग, । म, ग, । गम पम । ग, म, ।।

८. साग मप । मग, पध । निसां निध, । गम पध ।
पध, मग । रेसा नि़सा ।। गम पध । पध निसां ।
गम पध । पध निसां । गम पध । पध निसां ।।

९. नि़सा गम । गम पध । निसां रेंसां । मंगं रेंसां ।
निध पम । गरे सा– ।। गम पध । गम ग–, ।
गम पध । गम ग– । –– गम । पध गम ।।

१०. गम पध । निसां निध । पम गम । पध पम ।
पम गरे । सानि़ सा– ।। गम पध । निसां गम ।
गम पध । निसां गम । गम पध । निसां गम ।।

गत, राग खमाज (रूपक-ताल)

• स्थायी

० २ ३
सां
नि सां नि । ध प । गम पध

०			×		२	
ग	म	पध	पसां	निसां	नि॒ध	पम
ग	म	ग	मग	रेसा	गम	पध

● अंतरा

०			×		२	
ग	म	पध	नि॒	ध	पध	निसां
रें		रें				
सां	–	सां	रें	नि	सां	–,
गंमं	गं	रें	सां	नि॒	ध	प
ग	म	पध	नि॒ध	पम	गम	पध

● तालबद्ध तानें

	०			×		२	
१.	गम	पध	निसां	नि॒ध	पम	गरे	सा–
	निसां	नि–	––	नि़सा	नि़–	––	निसां
२.	नि़सा	गम	पध	मप	मग	रेसा	नि़सा
	गम	प–	––	मप	ध–,	––	पध
३.	निसां	नि॒ध	गम	पध	नि॒ध	पम	गरे
	साग	मप	––	गम	पध	––	पध
४.	निसां	रेंसां	नि॒ध	पम	गम	पध	निसां
	नि॒ध	पध	पम	गम	प,म	पध	पध
५.	पसां	निसां	रेंसां	नि॒ध	पध	मप	गम
	पध	नि॒ध	पम	गम	गरे	सानि़	सा–

०			×		२	
पध	निसां	नि–	निसां	नि–	पध	निसां
नि–	निसां	नि–	पध	निसां	नि–	निसां

६.	नि़सा	गम	साग	मप	गम	पध	मप
	धनि	सांरें	सांनि	धप	मग	रेसा	नि़सा
	गम	पध	निसां	निसां	नि–	गम	पध
	निसां	निसां	नि–	गम	पध	निसां	निसां
७.	नि़सा	गम	पम	गम	पध	निध	पम
	गरे	सानि़	सा–	गम	प,म	पध	निसां
८.	निसां	निरें	सांनि	धप	मप	धनि	सांरें
	सांनि	धप	मग	रेसा	नि़सा	गम	पध
९.	पध	निसां	गंमं	गंरें	सांनि	धप	मग
	मप	गम	पध	निध	पम	गरे	सा–
	पध	नि	—	धनि	सां–	—	निसां
१०.	मग	रेसा	सांनि	धप	मग	रेसा	नि़सा
	गम	पध	निसां	गंमं	पंमं	गंरें	सांनि
	धप	मप	गम	पध	मप	मग	पम
	पध	पम	गम	गरे	सानि़	ध़नि़	सा–
	गम	प,ग	मग	गम	प,	मप	ध,म
	पध	मप	ध–,	पध	निप	धनि	पध

गत, राग खमाज (ध्रुवपद-अंग)

चारताल

● स्थायी

×		०		२		०		३		४	
सां नि	सां	नि॒	ध	प	म	ग	रे सा	म ग	म	प	ध
सां नि॒	–	ध	प	म	ग	रे	सा	म ग	म	प	ध
सां नि	–	सां	गं रें	रें सां	नि॒	ध	प	म	ग	रे	सा
रे नि़	सा	ग	म	प	ध	ग	म	नि॒	ध	प	ध

● अंतरा

×		०		२		०		३		४	
म ग	म	प	ध	नि॒	ध	प	ध	नि	नि	रें सां	–
सां नि	रें सां	मं गं	मं	पं	–	मं गं	मं	गं	रें	सां	–
सां नि॒	ध	प	ध	म ग	म	प	ध	सां नि॒	ध	प	–
म	ग	म	प	म	ग	रे	सा	ग	म	प	ध

राग वृन्दावनी सारंग

परिचय : ठाठ : काफी, जाति : औडव-औडव, विकृत स्वर : अवरोह में कोमल निषाद, वर्जित स्वर : गान्धार व धैवत, वादी स्वर : ऋषभ, संवादी स्वर : पंचम, प्रकृति : चंचल रस : शृंगार, समय : दिन का द्वितीय प्रहर।

आरोह : सा रे म प नि सां।

अवरोह : सां नि॒ प म रे सा।

पकड़ : सा, नि़ सा रे, म प, नि॒ प, म रे, नि़ (रे) सा।

राग-चलन : नि़ सा रे, म प नि॒ प म रे, म रे नि़ सा, रे म प नि सां रें नि सां नि॒ प, म रे नि़ सा।

विशेष विवरण

यह काफी ठाठ का अति मधुर लोकप्रिय राग है। इस राग को सारंग के नाम से भी पुकारते हैं। इसमें गांधार तथा धैवत स्वर बिलकुल ही वर्जित हैं। आरोह में शुद्ध निषाद तथा अवरोह में कोमल निषाद का प्रयोग किया जाता है। शेष स्वर शुद्ध लगते हैं। गांधार-धैवत स्वरों के वर्जित होने के कारण इसकी जाति औडव-औडव होती है। इसका वादी स्वर ऋषभ तथा संवादी स्वर पंचम है। यह बाँसुरी के लिए मधुर एवं सुन्दर राग है। बड़े और छोटे खयाल के साथ-साथ इस राग में लोक-गीत तथा धुनें आदि भी गाई-बजाई जाती हैं। अहीर, भोपा तथा सँपेरे लोग बीन व बाँसुरी में प्रायः सारंग, तिलंग तथा पीलू आदि राग ही अधिकांशतः बजाते हैं। ग्रामीण व लोक-संगीत में भी इस राग का अत्यधिक प्रचार है। नि़ सा रे, म प, नि॒ प, म रे सा, स्वर-समूह से इस राग को सहज में ही पहचाना जा सकता है। मथुरा तथा वृन्दावन में इस राग का अत्यधिक प्रचलन है। वहाँ के लोग इस राग में धुनें बनाकर रासलीला भी करते हैं। इसी कारण से इसका नाम भी वृन्दावनी सारंग पड़ा होगा।

स्वर-आलाप

सा – – –, नि़ सा – – –, रे, सा रे, नि़ सा रे – – –, नि़ सा – – –, प़ नि़ प़ – – –, म़ प़ –, नि़ सा – – –, रे नि़ सा रे –, नि़ सा रे – – –, म रे नि़ सा – – –, सा – – –, नि़ सा रे म –, रे सा रे –, नि़ सा – – –, म रे, प म रे सा रे सा, नि़ सा, रे – – –, सा नि़ सा – – –, रे सा नि़ सा नि़ प़ प़, नि़ नि़ सा – – –, म रे, नि़ सा रे नि़ सा – – –, नि़ सा – – –, सा – – – नि़ सा – – –, सा रे म रे – – –, प म रे म रे – – –, नि़ सा – – –, नि़ सा – – –, नि़ नि़ सा – – –, सा रे म प म प, नि़ सा, रे म रे, सा रे, म प – – –, सा रे, रे म, म प, नि॒ नि॒ प म प – – –, म रे – – –, प म, नि॒ प, रे म, रे सा रे – – –, सा – – –, नि़ सा – – –, सा – – –, रे नि़ सा – – –, नि़ सा रे म प, नि॒ नि॒ म प – – –, नि॒ प म रे सा रे नि़, नि़ नि़ सा रे – – –, सा रे – – –, सा नि़॒ प़ नि़, म़ प़ सा – – –, नि़ सा रे म प नि॒ म प, रे म, प नि म प, नि॒ प म प, रे म रे – – –, सा – – –, नि़ सा – – –, नि़ सा रे म, सा रे म प, रे म प नि॒ म प – – –, नि॒ नि॒ म प नि॒ प म रे – – –,

म प – – –, नि नि, सा रे नि सां – – – नि॒ – प म प – – –,

रे म, म रे, प म रे नि॒ सा – – –, नि॒ सा – – –, नि॒ सा सा रे,

म प, नि नि, सां नि, प नि, सां नि सां – – –, नि॒ सा –

– –, रें रें सां नि सां नि सां रें सां नि सां, नि॒ प म प नि॒ नि॒

मं
प म प म प नि सां – – –, रें – – –, मं रें, नि नि सां – –

–, नि सां – – –, रें सां रें नि सां – – –, नि सां मं रें, पं

मं रें, सां रें नि सां – – –, रें सां – – –, नि॒ प म प – – –,

म
रे, म रे सा रे – – –, नि॒ सा – – –, सा – – –, रे नि॒ सा

– – –, प॒ नि॒ सा रे म रे, सा रे म प नि॒ प म प नि सां – – –,

मं
रें, सां – – –, नि सां रें मं पं मं पं – – – मं रें – – – नि, सां रें नि सां

– – प नि॒ – प म प नि॒ नि॒ प म प, म रे सा रे, नि॒ सा – – –, सा

– – –, नि॒ सा रे सा, म रे सा रे, म प नि॒ प प नि॒ म प सां

– – –, मं रें पं मं पं – – मं पं नि॒ सा रे म, सा रे, म प,

म प नि सां प नि सां रें मं रें – – –, नि नि सां – – –, नि सां

– – –, नि नि सां रें सां सां नि॒ प – – –, म प म रे, प म,

प नि॒ म प, म रे सा नि॒ सा रे म रे, सां नि॒, प म म प, नि॒

सा – – –, रे नि॒ सा रे म रे प म रे – – –, सा – – – –,

नि॒ सा – – –, सा – – –, म रे, सा रे म रे नि॒ नि॒ सा –

– – नि॒ सा – – –।

निर्बन्ध तानें

नि़ सा रे म, नि़ सा रे सा, नि़ सा रे सा, रे म रे सा, म रे प म रे म प म नि़ सा, सा रे म रे प म रे म रे सा नि़ सा रे म रे म प म रे म सा रे नि़ सा म म रे म प म प प म रे सा, सा रे सा नि़ प़ नि़ प़ म़ प़ नि़ सा रे म प म रे सा रे नि़ सा, रे म, नि़ सा म रे सा रे नि़ सा, रें म रे सा रे म प नि॒ म प म रे सा रे नि़ सा रे सा, नि॒ प सा नि़ रे सा नि़ सा रे नि़ सा नि़ सा।

प म रे म रे रे सा रे नि़ सा, नि़ नि़ प नि॒ म प रे म सा रे नि़ सा रे नि़ सा नि़ सा रे म रे सा रे म प नि॒ प म, प नि॒ प म रे म रे सा, म रे सा नि़ सा रे म प नि॒ नि॒ म प प रे म म, सा रे रे नि़ सा सा, रे सा नि़ सा रे नि़ सा, प़ नि़ सा रे सा नि़॒, प़ नि़ सा रे म रे म प नि॒ प, म रे म म रे सा, नि़ सा म रे प म, नि॒ प सां नि॒ प म म रे, रे सा नि़ सा, रे नि़ सा रे म रे सा।

नि़ सा रे म सा रे म प नि सां नि॒ प सां नि॒ प म रे म प म रे सा नि़ सा सा रे म रे म प म रे प म सां रें सां नि॒ प म रे सा नि़ सा, नि़ सा रे म नि॒ प नि॒ म प नि॒ प म सां नि॒ नि॒ प म म रे सा रे नि़ सा रे म प नि म प नि सां रें रें सां रें मं रें सां रें सां नि॒ प म रे म रे सा म प नि सां रें मं रें मं रें सां नि॒ म प नि सां रें सां नि॒ प म रे सा नि़ सा रे सा रे नि़ सा।

रे सा नि़ सा नि॒ प म प रें सां नि सां रें रें सां रें रें सां रें रें नि सां प नि॒ नि॒ प नि॒ नि॒ म प, रें मं रें सां प नि॒ प म रे म रे सा नि़ सा रे सा, प़ नि़ सा रे सा नि़ सा रे म प म रे, म प नि सां नि॒ प रे म प म रे सा, सा रे नि़ सा, प नि॒ म प सां रें नि सां, रें मं सां रें सां नि॒ प म रे सा नि़ सा प म प नि सां रें सां नि॒ सां नि॒ प म प म रे सा नि़ सा, रे सा रे नि़ सा रे नि़ सा, रे नि़ सा।

प नि सां, नि सां रें, मं रें पं मं रें मं पं मं रें सां नि॒ प म रे सा नि़ सा नि़ सा, म प नि सां रें मं पं मं रें मं रें सां रें मं पं मं रें सां नि॒ प म रे सा सा नि़ सा नि़ सा रे सा नि़ सा पं मं रें सां नि॒ प म रे़ सा नि़॒ प़ म़ प़ नि़ सा रे म रे सा, रे सा म रे प म नि॒ प सां नि रें सां मं रें मं रें पं मं पं निं सां – – – नि॒ं पं निं सां नि॒ं पं मं रें सां नि॒ प म रे म प म, रे म नि़ सा, सा रे नि़ सा रे सा रे नि़ सा नि़ सा प़ नि़ सा रे म प नि सां रें मं पं निं सां नि॒ं पं मं रें सां नि॒ प म रे सा नि़ सा रे सा नि़॒ प़ नि़ सा रे म प नि॒ प म रे सा रे नि़ सा रे सा रे नि़ सा।

गत, राग वृन्दावनी सारंग (तीनताल)

• स्थायी

×	२	०	३
		प नि॒ प म	– रेसा नि़सा रेसा
(म) रे – – सा	रेम पम रेसा नि़सा	नि़ सा रे म	– (सां) नि॒ म प
सां नि सांरें सांनि॒	पनि॒ पम रेसा नि़सा	प नि॒ प म	– रेसा नि़सा रेसा
(म) रे – – सा	रेम पम रेसा नि़सा		

• अंतरा

×	२	०	३
		म प नि॒ प	– नि॒ प नि
(रें) सां – सां सां	(मं) रें नि सां –	रें मं रें, सां	रें सां, नि सां
प नि पनि सांरें	सांनि॒ पम रेसा नि़सा	प नि॒ प म	– रेसा नि़सा रेसा
(म) रे – – सा	रेम पम रेसा नि़सा		

● तालबद्ध तानें

× २ ०
१. रेम पम पनि़ पम । पनि सांरें सांनि़ पम । पनि़ मप रेम सारे
३
मप गरे मरे सा– ।। नि़सा रेम रे, नि़सा । रे – नि़सा रेम ।
रे, नि़सा रे –, । नि़सा रेम रे, नि़सा ।।

२. रेसा रेम रेसा नि़सा । नि़प़ नि़सा रेम रेसा । रेम पनि सांरें निसां ।
रेंमं रेंसां पनि़ पम ।। पनि़ पम रेसा नि़सा । रे, –नि़ –सा रेसा ।
रे –नि़ –सा रेसा । रे –नि़ –सा रेसा ।।

३. प़नि़ प़सा नि़सा नि़सा । प़नि़ प़रे सारे सारे । सारे नि़सा रेम रेम ।
पनि सांनि़ पम रेसा ।। नि़सा रेसा रे, पनि । सांनि़ पम रेसा नि़सा ।
रेसा रे पनि़ सांनि़ । मग रेसा नि़सा रेसा ।।

४. रेम पनि सांरें मंरें । सांनि़ पम रेम पम । पनि़ पम रेम रेसा ।
नि़प़ नि़सा रेनि़ सा– ।। रेम रे,सा रेसा नि़सा । रे –, रेम रेसा ।
रेसा नि़सा रे – । रेम रेसा रेसा नि़सा ।।

५. रेसा रेसा रेम रेसा । मरे मरे मप मरे । पम पम पनि़ पम ।
पनि सांरें सांनि़ पम ।। सांनि़ पम रेसा नि़सा । रे – सांनि़ पम ।
रेसा नि़सा रे –, । सांनि़ पम रेसा नि़सा ।।

६. रेसा –रे म– रेसा । रेसा नि़सा नि़म प । नि़– पनि़ पम रेसा ।
रेसा नि़सा मरे सारे ।। पम रेम नि़प मप । सांनि़ पम रेसा नि़सा ।
रे – – नि़सा । रे – – नि़सा ।।

७. नि़सा रेम रेसा, रेम । पनि़ पम पनि सांरें । सांनि़ पनि़ पम रेम ।
रेसा रेनि़ सारे मप ।। निसां पनि सां– रेसा । रेनि़ सारे मप निसां ।
पनि सां– रेसा रेनि़ । सारे मप निसां नि़सा ।।

८. रेसा नि़सा रेंसां निसां । रेंमं पंमं रेंसां निसां । नि़प मरे सानि़ सा– ।
रेम पनि सारे मप ।। निसां सा– सां– रेम । पनि सांरें मप निसां ।
सा– सां– रेम पनि । सारे मप निसां सा ।।

९. रेसा मरे पम निप । सांनि रेंसां मरें पंमं । रेंसां निप मरे सानि़ ।
पऩि सारे मप निसां ॥ –सां –सां सां– पऩि । सारे मप निसां –सां ।
–सां सां पऩि सारे । मप निसां –सां –सां ॥

१०. पऩि पसा ऩिसा पऩि । परे सारे पऩि पसा । पऩि परे सारे मप ।
रेम पऩि मप निसां ॥ पनि सारें निसां रेंमं । सारें मंपं मंपं निंसां ।
निंपं मंरें सांनि पम । रेसा ऩिसा मरे सारे ॥ पम पनि सां रेंसां ।
ऩिसा मरे सारे पम । पनि सां, रेसा ऩिसा । मरे सारे पम रेसा ॥

गत, राग वृन्दावनी सारंग (तीनताल)

• स्थायी

×	२	०	३
		ऩिसा रेम रे, रेम	पनि प, पनि सारें
(रें)सां – – नि	पनि पम रेम रेसा	रे म प म	रे सा ऩि सा
म रे म प	नि नि पम प	म प नि सां	रें मं रें सां
सारें सांनि पनि पम	रेम पम रेसा ऩिसा	म रे – म	प, नि (सां)सां नि

• अंतरा

×	२	०	३
		म प नि प	– नि प नि
(रें)सां – सां सां	रें नि सां –	नि सां (मं)रें मं	रें सां नि सां
पनि सारें सांनि पम	रेम पम रेसा ऩिसा	ऩिसा रेम रे, रेम	पनि प, पनि सारें
(रें)सां – – नि	पनि पम रेम रेसा	ऩिसा रेम रे, रेम	पनि प, पनि सारें

• तालबद्ध तानें

× २ ०
१. पनि सारें सांनि पम । रेम पम रेसा ऩिसा । मरे मप सां– मरे
३
मप सां– मरे मप ॥

× २ ०
२. सां –रें सांनि॒ पम । पनि॒ पम रेसा नि़सा । रेम पनि सांरें मंरें

३
सांनि॒ पम रेसा नि़सा ॥ मरे –म पनि पनि । सां – मरे –म ।
पनि पनि सां – । मरे –म पनि पनि ॥

३. सारे नि़सा रेम रेसा । रेम पनि॒ पम रेम । पनि सांरें सांनि॒ पनि॒ ।
पम रेम रेसा नि़सा ॥ मरे मप नि॒– पनि । सां – मरे मप ।
नि॒ पनि सां – । मरे मप नि॒ पनि ॥

४. पनि सांरें मंरें सांनि॒ । पम रेसा नि़सा रेसा । रेसा मरे पम नि॒प ।
सांनि रेंसां नि॒प मप ॥ रेम पम पनि॒ पम । पनि सांरें सांनि॒ पम ।
रेम पम रेसा नि़सा । मरे –म पनि॒ मप ॥ –प –नि सां– मरे ।
–म पनि॒ पम –प । –नि सां– मरे –म । पनि॒ पम –प –नि ॥

५. नि़सा रेम रेसा रेम । नि॒– पनि॒ पम रेम । नि॒ पम रेसा नि़सा ।
रेम पनि सांरें मंरें ॥ सांरें सांनि॒ पनि॒ पम । पनि सांरें सांनि॒ पम ।
रेम पम रेसा नि़सा । नि़सा रे,सा रेम, रेम ॥ प,म पनि, सां, नि़सा ।
रे,सा रेम रेम प,म । पनि सां नि़सा रे,सा । रेम, रेम प,म पनि ॥

६. पनि पसां निसां निसां । पनि सांरें सांरें सांरें । पनि सांरें मंमं रेंसां ।
निसां रेंसां नि॒प मप ॥ रेम पनि सांरें सांनि॒ । पनि॒ पम रेम पम ।
पनि सांनि॒ पम रेसा । रेम पनि सांप –नि ॥ पसां –नि सां– रेम ।
पनि सांप –नि सांप । –नि सां– रेम पनि । सांप –नि सांप –नि ॥

७. नि॒ पनि॒ पम रेम । पम रेम पनि सांरें । सांनि॒ पम रेसा नि़सा ।
नि़सा प़नि़ सा– रेम ॥ पनि सां– निसां –नि । सां– रेम पनि सां– ।
निसां –नि सां– रेम । पनि सां– निसां –नि ॥

× २ ०

८. रें– सांरें निसां ऩिप। ऩिऩि पऩि पम रेम । रेसा ऩिसा रेम पम।
३
रेम पनि सांरें मंरें ।। सांरें सांऩि पऩि पम । रेम पम रेसा ऩिसा।
ऩिप् सानि् रेसा ऩिसा । रेम पनि सां,प निसां ।। रेम पनि सां– रेम।
पनि सांप निसां रेम । पनि सां– रेम पनि । सांप निसां रेम पनि ।।

९. ऩिसा रेनि् सारे ऩिसा । ऩिसा रेम रेम रेसा । रेम प,रे मप रेम ।
रेम पऩि पम रेसा ।। पनि सां,प निसां पनि । पनि सांरें सांऩि पम।
पऩि पम रेसा ऩिसा । पऩि् सारे मप निसां ।। –प –नि सां– पऩि्।
सारे मप निसां –प । –नि सां– पऩि् सारे । मप निसां –प –नि ।।

१०. सांरें निसां पऩि मप । रेम सारे ऩिसा रेसा । पऩि् सारे मप ऩिप।
निसां रेंमं रेंसां निसां ।। ऩिप मप रेम पम । पनि सांरें साऩि पम।
पम रेम रेसा ऩिसा । ऩिसा रेम पनि सां,प ।। निसां पनि सां– ऩिसा।
रेम पनि सां,प निसां । पनि सां– ऩिसा रेम । पनि सां,प निसां पनि ।।

११. ऩिसा रेम पनि सांरें । सांऩि पम रेसा ऩिसा । रेम पनि सां, रेसा।
पनि सां, रेम पनि ।।

१२. ऩिसा रेम रेसा रेम । पऩि पम पनि सारें । सांऩि पम रेम रेम।
पनि सां,प निसां पनि ।।

१३. ऩिसा रेम सारे मप । रेम पनि मप निसां । पनि सांरें मंरें स ऩि।
पम रेम रेसा ऩिसा ।। रेम पनि सां पनि । सां –– रेम पनि।
सां पनि सां – । रेम पनि सां पनि ।।

१४. मं– रेंमं रेंसां निसां । ऩि पऩि पम रेम । रेम पम रेसा ऩिसा।
रेम पनि सां– सा– ।। सां– सां– सां– रेम । पनि सां– सा सां–।
सा– सां– रेम पनि । सां– सा– सां– सा– ।।

१५. पऩि् सारे मप निसां । रेंमं पंमं रेंसां निसां । ऩिप मरे सानि् सा– ।
पनि सांरें सां– पनि ।। सां– सां– सां– पनि । सांरें सां– पनि सां–।
सां– सां– पनि सांरें । सां पनि सां– सां– ।।

× २ ०

१६. प़नि़ सारे नि़सा रेम। सारे मप रेम पनि। मप निसां पनि सारें।

३

निसां रेंमं पंमं रेंमं ॥ रेंसां निसां नि़ पम। रेसा नि़सा सां नि़।

पम रेसा नि़सा सां। नि़ पम रेसा नि़सा ॥

१७. प़नि़ प़सा नि़सा नि़सा। प़नि़ प़रे सारे सारे। प़नि़ प,म रेम रेम।

प़ पं मंरें सांनि़ ॥ पम रेसा सां प़। पं मंरें सांनि़ पम।

रेसा सां प़ पं। मंरें सांनि़ पम रेसा ॥

१८. प़– नि़सा रे– सारे। म– रेम प मप। नि़ पनि़ सां निसां।

रेंमं रेंमं रेंसां निसां ॥ पनि़ पनि़ मप मप। रेम रेम रेसा नि़सा।

रेम पनि सां रेंमं। पनि सां रेम पनि ॥ रेम पनि सां रेम।

पनि सां रेम पनि। रेम पनि सां रेम। पनि सां, रेम पनि ॥

१९. पनि सांरें मंपं निंसां। रें सां नि़ पं मंरें सांनि़। पम रेसा नि़प़ नि़सा।

नि़सा रेम सारे मप ॥ रेम पनि सां नि़सा। रेम सारे मप रेम।

पनि सां नि़सा रेम। सारे मप रेम पनि ॥

२०. प़– –– नि़ ––। सा – रे –। प़ नि़ सा रे।

प़नि़ सारे नि़ – ॥ सा – रे –। म –– नि़ सा।

रे म नि़सा रेम। रे – म – ॥ प – नि –।

रे म प नि। रेम पनि म –। प – नि – ॥

सां –– म प। नि सां मप निसां। रेंमं रें,मं –मं सांरें।

सां,रें –रें निसां निसां ॥ –सां पनि़ पनि़ –नि़। मप मप –प रेम।

रेम –म सारे सारे। –रे नि़सा नि़सा –सा ॥ रेंमं –मं सांरें -रें।

निसां –सां पनि –नि। मप –प रेम –म। सारे –रे नि़सा –सा ॥

रेंमं सांरें निसां पनि। मप रेम सारे नि़सा। रेम पनि सां पनि।

सां प़नि़ सा सां सां ॥ रेम पनि सां पनि। सां प़नि़ सां सांसां।

रेम पनि सां पनि। सां प़नि़ सा सांसां ॥

झाला, राग वृन्दावनी सारंग (तीनताल)

कण, मीड़, मुर्की, खटका व तान-सहित

×	२	०	३
म नि़	रे म	म	सा
रे – सा –	नि़ सा रे सा	रे – सा –	नि़॒ – प़ –
तू ऽ तू ऽ	तू ऊ तू ऊ	तू ऽ तू ऽ	तू ऽ तू ऽ
सा सा	सा	सा रे	सा सा रे
नि़॒ नि़॒ प़ –	नि़॒ नि़॒ प़ –	नि़ – सा –	नि़ नि़ सा –
तू ऊ तू ऽ	तू ऊ तू ऽ	तू ऽ तू ऽ	तू ऊ तू ऽ
सा रे म	म	म नि़ म	म
नि़ सा रे म	रे – सा –	रे सा रे म	रे – सा –
तू ऊ तू ऊ	तू ऽ तू ऽ	तू ऊ तू ऊ	तू ऽ तू ऽ
म	म नि़	सा रे	रे सा
रे म प म	रे सा रे –	नि़ – सा –	नि़ नि़ सा –
तू ऊ तू ऊ	तू ऊ तू ऽ	तू ऽ तू ऽ	तू तू तू ऽ
म	नि॒ नि॒		नि॒
रे म प म	प – प –	म प म रे	म – प –
तू ऊ तू ऊ	तू ऽ तू ऽ	तू ऊ तू ऊ	तू ऽ तू ऽ
		म म	सा रे
मप निसां रेंमं रेंसां	पनि॒ पम रेसा नि़सा	रे रे सा –	नि़ – सा –
तूऊ तूऊ तूऊ तूऊ	तूऊ तूऊ तूऊ तूऊ	तू तू तू ऽ	तू ऽ तू ऽ

× २ ० ३

म

रे म प म । प नि॒ प – । म – प – । नि॒ प म प

सां म रे रे रे रे रे रे

नि॒ – प – | म रे सा रे | नि़ सा नि़ सा | नि़ – सा –

तू ऽ तू ऽ | तू ऊ तू ऊ | तू ऊ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ

× २

नि़सा रेम सारे मप | रेम पनि सांरें सांनि॒

तूऊ तूऊ तूऊ तूऊ | तूऊ तूऊ तूऊ तूऊ

० ३

म नि़

पम रेसा नि़सा रेसा | रे – सा –

तूऊ तूऊ तूऊ तूऊ | तू ऽ तू ऽ

× २ ० ३

म सां सां सां सां

रे म प नि॒ | प – नि॒ नि॒ | प –, नि॒ नि॒ | प –, नि नि

तू ऊ तू ऊ | तू ऽ तू ऊ | तू ऽ तू ऊ | तू ऽ तू तू

रें रें रें रें रे रें रे रें

सां – सां – | नि – सां – | सा – सां – | सा – सां –

तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ

मं मं नि रें रें मं मं नि

रें रें सां – | नि – सां – | रें मं रें सां | रें – सां –

तू ऊ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ | तू ऊ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ

रें   मं

नि सां रें मं | पं – पं – | प़ – प़ – | पं – पं –

तू ऊ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ

नि मं

मं - रें सां | रें – सां – | रेंमं सांरें सांसां पनि़ | मप रेम सारे नि़सा

तू ऽ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ | तूऊ तूऊ तूऊ तूऊ | तूऊ तूऊ तूऊ तूऊ

×   २

रेरे रे,म मम पप | प,नि़ नि़नि़, पप प,नि़

तूतू तू,तू तूतू, तूतू | तू,तू तूतू तूतू तू,तू

०   ३

नि़नि़, पनि सांरें सांनि़ | पनि़ पम रेसा नि़सा

तूतू तूतू तूतू तूतू | तूतू तूतू तूतू तूतू

×   २   ०   ३

म   सां   रें   नि   रें   रें   रें

रे म प नि | प नि सां रें | सां – सां – | नि – सां –

तू तू ऊ ऊ | तू ऊ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ

मं   मं

रें सां रें मं | पं – पं – | मं रें सां रें | मं मं पं –

तू ऊ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ | तू ऊ तू ऊ | तू ऊ तू ऽ

मं   मं

रें मं पं नि़ं | पं – मं पं | मं – पं – | रें मं पं –

तू ऊ तू ऊ | तू ऽ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ | तू ऊ तू ऽ

निं – निं – | सां – सां – | निं निं निंनिं निंनिं | सां – सां –

तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ | तू कू तुकू तुकू | तू ऽ तू ऽ

×				२				०				३			
								रें		रे		रें			
रें	-	सां	-	नि	-	सां	-	सां	-	सा	-	सां	-	सां	-
तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ

												मं			
नि॒ं	-	पं	-	मं	-	पं	-	मं	-	रें	सां	रें	मं	पं	मं
तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऊ	तू	ऊ	तू	ऊ

×				२			
		रें					
रें	नि	सां	-	नि॒-	पनि॒	प-	मप
तू	ऊ	तू	ऽ	तूऽ	तूऊ	तूऽ	तूऊ
०				३			
म-	रेम	रे-	सारे	सा-	नि़सा	रेनि़	सा-
तूऽ	तूऊ	तूऽ	तूऊ	तूऽ	तूऊ	तूऊ	तूऽ

गमक से—

×				२			
रेरे	रे,सा	सासा,	नि़सा	नि॒नि॒	नि॒,प	पप,	मप
कूऊ	ऊ,कू	ऊऊ,	कूऊ	कूऊ	ऊ,कू	ऊऊ,	कूऊ
०				३			
निनि	नि,सां	सांसां,	रेंसां	रेंरें,	रें,मं	मंमं,	रेंसां
कूऊ	ऊ,कू	ऊऊ,	कूऊ	कूऊ	ऊ,कू	ऊऊ,	कूऊ

फूँक से—

×				२			
रेंमं	पंमं	पंनि	सांरें	निसां	नि॒ंपं	मंरें	सांरें
तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ

० ३
सांरें सांनि॒ पनि॒ पम | रेम पम रेसा नि़सा
तूऊ तूऊ तूऊ तूऊ | तूऊ तूऊ तूऊ तूऊ

× २ ० ३
म
रे – सा – | म – रे – | प – म – | नि॒ – प –
तू ऽ तू ऽ | रू ऽ रू ऽ | कू ऽ कू ऽ | कू ऽ कू ऽ

रें रें नि रे रे रें रें
सां – नि – | सां – सां – | सा सा सा – | सां सां सां –
तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ | तू ऊ तू ऽ | तू ऊ तू ऽ

मं नि मं सां सां रें
रें – सां – | निसां रेंसां नि सां | रें – सां – | नि नि सां –
तू ऽ तू ऽ | तूऊ तूऊ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ | कू ऊ तू ऽ

रें सां सां
नि सां नि॒ प | नि॒ – प – | नि॒ प म प | म – रे –
तू ऊ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ | तू ऊ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ

सा रे रे रे
नि़ – सा – | नि़ सा रे सा | नि़ – सा – | नि़ नि़ सा –
तू ऽ तू ऽ | तू ऊ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ | तू ऊ तू ऽ

रे सा रे रे रे
नि़ सा नि़॒ प़ | नि़॒ – प़ – | म़ – प़ नि़ | सा – सा –
तू ऊ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ

रे		रे						रे		रे		रें		नि	
नि़	–	सा	–	नि़	नि़	सा	–	सा	–	सा	–	सां	–	सां	–
तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ

(इसी प्रकार ततकार से)

×					२			
रेंमं	रेंमं	सांरें	सांरें	।	निसां	निसां	पनि़	पनि़
०					३			
					नि	नि		
मप	मप	मरे	सा–	।	–सां	–सां	–सां	–सां
रेम	पनि	सां–,	–सां	।	–सां	–सां	–सां	रेम
पनि	सां–	–सां	–सां	।	–सां	–सां	रेम	पनि
रेंमं	रेंमं	सांरें	सांरें	।	निसां	निसां	पनि़	पनि़
मप	मप	मरे	सा–	।	–सां	–सां	–सां	–सां
रेम	पनि	सां–	–सां,	।	–सां	–सां	–सां	रेम
पनि	सां–	–सां	–सां	।	–सां	–सां	रेम	पनि
रेंमं	रेंमं	सांरें	सांरें	।	निसां	निसां	पनि़	पनि़
मप	मप	मरे	सा–	।	–सां	–सां	–सां	–सां
रेम	पनि	सां–	–सां,	।	–सां	–सां	–सां	रेम
पनि	सां–	–सां	–सां	।	–सां	–सां	रेम	पनि

गत, राग वृन्दावनी सारंग (झप ताल)

• स्थायी

×		२			०		३		
म रे	–	म	प	नि़	प	म	रे	नि़	सा
म रे	म	प	नि़	प	पनि	सांरें	सांनि़	पम	रेसा

● अंतरा

×		२			०		३		
(प)म	–	प	(रें)नि	सां	नि	सां	(मं)रें	नि	सां
नी	सां	(मं)रें	मं	रें	सांरें	सांनि̱	पनि̱	पम	रेसा

● तालबद्ध तानें

	×		२			०		३		
१.	निसां	रेंसां	रेंमं	रेंसां	नि̱प	मप	मरे	सारे	सानि़	सा–
	रेम	पनि	सांसां	सां,रे	मप	निसां	सांसां	रेम	पनि	सांसां
२.	रेसा	रेम	पनि̱	पम	पनि	सांरें	सांनि̱	पम	रेसा	नि़सा
	सारे	मप	निसां	––	सारे	मप	निसां	––	नि़सा	रेम
३.	नि़सा	रेम	पनि̱	पम	पनि	सांरें	सांनि̱	पम	रेसा	निसा
	मप	निसां	रे	––,	मप	निसां	रे	––	मप	निसां
४.	रेंसां	निसां ।	नि̱प	मप	रेसा ।	नि़सा	नि़सा ।	रे,नि़	सारे	नि़सा
५.	रेम	पनि̱	पनि̱	पम,	पनि	सांरें	सांनि̱	पम	रेसा	रेम
	पसां	निसां	नी	––	पसां	निंसां	नि–	––	पसां	निसां
६.	रे–	सारे	मप	मरे	म–	पम	पनि̱	पम	रेसा	नि़सा
	रेम	प–	निसां	नि़रे	म	प	निसां	निम	प	म
७.	निसां	रें,नि	सांरें	निसां	रेंमं	रेंमं	रेंसां	निसां	नि̱प	मरे
	सारे	मप	निसां	रे,सा	रेम	पनि	सांरें	सारे	मप	नि़सा
८.	रेम	पनि	पनि	सांरें	सांरें	मंपं	मंरें	सांनि̱	पम	रेसा
	रेम	प–	नि–	सां–	रेम	प–	नि–	सां	रेम	पम

	×	२	०	३
९.	रेम पम	सारे मप, रेम	पनि पनि	सांरें सांरें मंपं
	निसां नि॒पं	मरें सांनि॒ पनि॒	पम रेम	पम रेसा नि़सा
	रेम पनि	सां– पनि सां–	–– रे–	रेम पनि सां
	पनि सां–	–– रे रेम	पनि सां–	पनि सां– ––
१०	रेसा रेम	पम पम पनि	सांरें मरें	सांरें सांनि॒ पनि॒
	पम पनि	सांरें सांरें सांनि॒	पम रेसा	नि़सा प़नि़ सा
	पनि सां,प	निसां, पनि सां–	–– रे–	प़नि़ साप़ नि़सा
	प़नि सा–	–– रे– पनि	सां,प निसां	पनि सां– ––

गत, राग वृन्दावनी सारंग (एकताल)

● स्थायी

×	०	२	०	३	४
(म)रे –	सा रे	नि़ सा	रेम पम	रे सा	नि़सा रेसा
पनि सांरें	सांनि॒ पम	रेसा नि़सा	रे म	प नि॒	म प
(म)रे –	सा रे	नि़ सा	रेम पम	रे सा	नि़सा रेसा

● अंतरा

×	०	२	०	३	४
			प		सां सां
रें			म प	नि॒ प	नि नि
सां –	सां, रें	नि सां	नि सां	रें मं	रें सां
नि॒ प	नि॒ पम	रेसा नि़सा	रेम पम	रे सा	नि़सा रेसा
(म)रे –	सा रे	नि़ सा			

● तालबद्ध तानें

× ० २ ० ३

१. प़नि़ प़सा । नि़सा नि़सा । नि़रे सारे । सारे मप । रेम पनि ।

४

पसां निसां ।। नि़प मरे । सा– नि़सा । नि़प मरे । सा– नि़सा ।

नि़प मरे । सा– नि़सा ।।

२. रे– सारे । मप नि़प । मरे पम । रेसा नि़सा । रे– नि़सा ।

रे,– नि़सा ।।

३. प़नि़ सारे । सानि़ सारे । मप मरे । मप निसां । नि़प निसां ।

रेंमं रेंसां ।। नि़प मप । मरे सारे । नि़सा रेसा । नि़सा नि़सा ।

निसां निसां । नि़सा नि़सा ।।

४. नि़सा रेम । रेम पनि़ । पम रेम । पम रेसा । नि़सा रे,नि़ ।

सारे नि़सा ।।

५. प़नि़ प़नि़ । पसां निसां । नि़सा नि़सा । नि़रे सारे । मप निसां ।

रेंमं रेंसां ।। निरें सांनि़ । पनि़ पम । रेसा नि़सा । रे,– –– ।

नि़सा रे– । –– नि़सा ।

६. नि़प़ सानि़ । रेसा मरे । पम नि़प । सांनि रेंसां । मरें पमं ।

रेंसां नि़प ।। मरे सा– । नि़सा रेसा । रे– –– । नि़सा रेसा ।

नि़सा रेसा । नि़सा रेसा ।।

७. रेम पनि । सांरें मंरें । पंमं रेंसां । नि़प मरे । सानि़ सा– ।

नि़सा रेनि़ ।। सारे नि़सा । रे– निसां । रेंनि सांरें । निसां रें– ।

नि़सा रेनि़ । सारे नि़सा ।।

८. नि़सा रेम । रेसा रेम । पनि़ पम । पनि सांरें । सांनि सांरें ।

मंपं मंरें ।। सांनि़ पम । रेसा नि़सा । सांनि़ पम । रेसा नि़सा ।

सांनि़ पम । रेसा नि़सा ।।

	×		०		२		०	
९.	प़नि़	सारे ।	नि़सा	रेम ।	सारे	मप ।	रेम	पनि ।
	सांरें	सांनि ।	पम	रेसा ।।	नि़सा	रे,नि़ ।	सारे	नि़सा ।
	निसां	रें,नि ।	सांरें	निसां ।	नि़सा	रेनि़ ।	सारे	नि़सा ।।
१०.	नि़सा	नि़सा ।	रेसा	नि़सा ।	नि़सा	नि़सा ।	मरे	सारे ।
	नि़सा	नि़सा ।	पम	रेम ।।	नि़सा	नि़सा ।	निप	मप ।
	नि़सा	नि़सा ।	सांनि	पम ।	निप	मरे ।	पम	रेसा ।।
	नि़सा	रेम ।	रेसा	नि़सा ।	रे–	नि़सा ।	रे	–– ।
	––	नि़सा ।	रेम	रेसा ।।	नि़सा	रे– ।	नि़सा	रे– ।
	––	–– ।	नि़सा	रेम ।	रेसा	नि़सा ।	रे,–	नि़सा ।।

गत, राग वृन्दावनी सारंग (रूपक ताल)

• स्थायी

०			×		२	
(म)रे	–	सा	(सा)नि़	सा	(म)–रे	नि़सा
रे	म	प	नि	प	नी	सां
रें	मं	रें	सां	नि	प	म
प	नि	प	सांनि	पम	रेसा	नि़सा

• अंतरा

०			×		२	
(प)म	–	प	नि	प	(सां)नि	(सां)नि
(रें)सां	–	सां	रें	(सां)नि	(रें)सां	–

०			×		३	
सां	रें	मं			सां	
नि	सां	रें	मं	रें	नि	सां
सां						
नि̱	प	[नि	सांनि̱	पम	रेसा	नि̣सा

● तालबद्ध-तानें

	०			×		२	
१.	रे–	सारे	मप	निसां	नि̱प	मरे	नि̣सा
२.	रेसा	नि̣सा	रेम	रेसा	नि̱प	निसां	रेंसां
३.	रे–	सारे	म–	रेम	प–	मप	नि̱
	पनि	सांरें	सांनि	सांनि̱	पम	रेसा	नि̣सा
४.	नि̣सा	रेम	रेसा	रेम	पनि	सांनि̱	पम
	रेसा	रे–	नि̣सा	रे–	नि̣सा	रे–	नि̣सा
५.	प̣नि̣	सारे	सारे	मप	निसां	रेंमं	रेंसां
	निसां	नि̱प	मरे	नि̣सा	रे,नि̣	सारे	नि̣सा
६.	नि̣सा	रेम	पनि	सांरें	मंरें	मंपं	मंरें
	सांरें	सांरें	सांनि̱	पनि̱	पम	रेसा	नि̣सा
	नि̣सा	रेम	पनि	सां–	रे–	नि̣सा	रेम
	पनि	सां–	रे–	नि̣सा	रेम	पनि	सां–
७.	प̣नि̣	प̣सा	नि̣सा	नि̣रे	सारे	मप	मरे
	सारे	मप	निसां	रेंमं	रेंसां	नि̱प	मरे
	सारे	मप	निसां	नि̣सा	रे–	सारे	मप
	निसां	नि̣सा	रे–	सारे	मप	निसां	नि̣सा

	०			×		२	
८.	नि़सा	रेम	रेसा	रेम	पनि॒	पम	पनि
	सांरें	सांनि॒	पनि॒	पम	रेम	रेसा	नि़सा
	नि़सा	रे,नि़	सारे	नि़सा	रे–	निसां	रेंनि
	सांरें	निसां	रें–	नि़सा	रेनि़	सारे	नि़सा

गत, राग वृन्दावनी सारंग (ध्रुवपद-अंग)

चारताल

● स्थायी

×		०		२		०		३		४	
([म]रे)	–	सा	रे	म	प	नि॒	प	म	रे	नि़	सा
[म]रे	म	प	नि॒	प	नि	[रें]सां	[मं]रें	नि	सां	नि॒	प
म	रे	सा	[म]रे	नि़	सा	नि़॒	प़	[रे]नि़	[सा]नि़	[रे]सा	[म]रे
नि़	सा	[म]रे	नि़	[रे]सा	[म]रे	म	प	म	रे	[सा]नि़	सा

● अंतरा

×		०		२		०		३		४	
म	–	प	नि॒	प	–	[रें]सां	[मं]रें	नि	सां	[मं]रें	नि
[रें]सां	–	[मं]रें	मं	रें	सां	[मं]रें	नि	[रें]सां	[मं]रें	मं	पं
मं	रें	सां	[मं]रें	नि	सां	नि॒	प	म	प	म	रे
[रे]सा	[म]रे	म	प	–	नि॒	प	म	रे	सा	[रे]नि़	सा

चारताल की दूसरी गत

• स्थायी

×		०		२		०		३		४	
नि		रें						म			
सां	–	त्रि	प	म	रे	नि़	सा	रे	म	प	नि
रें	मं				मं						
सां	रें	मं	रें	सां	रें	नि	सां	त्रि	प	म	रे
रे				सां	सां		सां				मं
सा	रे	म	प	त्रि	त्रि	प	त्रि	प	नि	सां	रें
सां		सां				रे		म			
नि	सां	त्रि	प	म	रे	नि़	सा	रे	म	प	नि

• अंतरा

×		०		२		०		३		४	
			सां			सां	रें	मं		रें	
म	–	प	नि	–	प	नि	सां	रें	नि	सां	–
सां	रें	मं				मं		सां		रें	
नि	सां	रें	मं	पं	मं	रें	मं	रें	सां	नि	सां
मं		रें	मं								
रें	नि	सां	रें	नि	सां	त्रि	प	म	प	त्रि	प
				रे	म	सा		म		नि	
म	प	म	रे	सा	रे	नि़	सा	रे	म	प	नि

ज्ञातव्य : बराबर, दुगुन, तिगुन, चौगुन, डेढ़गुन (आड़), पचगुन (सवाई) इत्यादि लयों में वादक अपनी इच्छानुसार बजाएँ, जैसा कि राग भूपाली, दुर्गा, हंसध्वनि वगैरह में लिखकर बताया गया है।

राग तिलंग

राग परिचय : ठाठ : खमाज, वर्जित स्वर : धैवत, विकृत स्वर : अवरोह में कोमल निषाद, तार - सप्तक में ऋषभ का अल्प प्रयोग, वादी स्वर : गान्धार, संवादी स्वर : निषाद, जाति : औडव-औडव, प्रकृति : चंचल, रस : शृंगार, गायन-वादन का समय : रात्रि का द्वितीय प्रहर।

विशेष विवरण

यह खमाज ठाठ का बहुत ही प्रचलित राग है। इसके आरोह-अवरोह में धैवत स्वर बिलकुल ही वर्जित है। आरोह में शुद्ध निषाद एवं अवरोह में कोमल निषाद का प्रयोग होता है। शेष सभी स्वर शुद्ध लगते हैं। इसके अवरोह में कुशल गायक - वादक तार - सप्तक में कोमलता के साथ शुद्ध ऋषभ का भली-भाँति प्रयोग करते हैं, जिससे राग की सुन्दरता और भी अधिक बढ़ जाती है। पाँच स्वर लगने के कारण इस राग की जाति औडव - औडव है। वादी स्वर शुद्ध गांधार तथा संवादी स्वर शुद्ध निषाद है। ऋषभ एवं धैवत वर्जित होने के कारण यह राग खमाज से बिलकुल ही अलग हो जाता है। किंतु फिर भी इस राग के तार सप्तक में शुद्ध ऋषभ का पूर्णतया प्रयोग करते हैं। मध्य सप्तक में ऋषभ का बिलकुल ही प्रयोग नहीं करना चाहिए। कोमल निषाद का प्रयोग करते समय स्वतः ही शुद्ध लग जाता है। इस राग में शुद्ध निषाद के साथ कोमल निषाद और पंचम की स्वर - संगति बहुत मधुर प्रतीत होती है।

नि॒ प ग म ग – म, ग सा, ग म, प नि॒, प नि सां,

सां रें नि सां, नि॒ – प ग म ग – सा, स्वर प्रयोग करते ही राग-स्वरूप तुरन्त स्पष्ट हो जाता है। गोप-ग्वाले अपनी बाँसुरी व बीन में इस राग को अधिकाधिक बजाते सुने गए हैं। प्रायः तिलंग में ठुमरी, टप्पा, गीत, भजन, गजल व शृंगार-रस की चीजें अधिक सुनने को मिलती हैं। यह अपने ठाठ का बहुत मधुर, सुन्दर एवं लोकप्रिय राग है।

आरोह : नि़ सा ग म प नि सां।

अवरोह : सां नि॒ प म ग सा॥

पकड़ : सा, ग म, प, नि॒ प, ग म ग, सा।

राग चलन : सा, ग म, ग, सा ग म प –, नि॒ प, म प, ग म ग –, प नि सां रें, नि सां, नि॒ प, ग म प नि॒ प म प, ग म ग – सा, नि़ सा।

स्वर-आलाप

१. सा – – –, नि़ सा – – –, ग, सा – – –, नि़ सा ग सा

नि़ सा – – –, नि़ सा – – –, नि़॒, प़, नि़॒, प़ नि़, सा ग नि़ सा

ग, सा – – –, ग म, सा ग –, सा – – –, नि़ सा ग म,

सा ग म ग – – –, सा ग, नि़ सा – – –, नि़ सा – – –,

ग ग, म, सा ग म, म ग, म प – – –, नि॒ नि॒ प म प –

– –, म प – – –, म ग –, सा ग म प, ग म प – – –,

म ग म ग –, सा – – –।

२. सा ग, सा म, ग म, ग – – –, सा ग म प, म प,

म प, ग, प म, ग – – –, सा ग, ग सा – – –, नि़ सा

सा नि
---, ग सा ---, नि़ सा ग म प ---, ग म नि॒ नि॒ प

---, ग म प नि॒, म प ग म नि॒ प ---, ग म ग ---,

सा
सा ग सा---, नि़ सा सा सा, नि़ सा ग म प ---, सा ग म प

---, म नि॒ प ---, म, ग - सा।

३. सा सा, नि़ सा, - ग ग नि॒ प - - -, नि़ सा ग म,
सा ग म प ग म प नि॒, प ---, ग म प प, म प, ग म प
नि॒ - प म प - ग म, सा ग म प -, ग म ग -, सा ग,
म प, नि़ सा ग म प, नि़ सा ग म प - नि॒ प, म ग - म -
रे रे
ग म ग -, सा सा ---, नि़ नि़ सा ---, ग ग सा - -
-, नि़ सा ---, प़ नि़, सा ---, प़ नि़, सा ग, प़ नि़
सा ग म प ---, ग - म ग - सा --- ।

रें
४. सा, ग म, प नि॒ प म, प ---, नि नि, सां ---,
नि सां, -- -, नि॒ प ---, म नि॒ प नि॒, म प -,
ग म ग -- -, सा ग म प नि -- -, प नि सां रें, सां नि सां
---, नि॒ नि॒ प म प, नि॒ प ---, ग म प नि, प सां,
नि॒, प ग ग प नि सां रें - सां -, नि सां ---, गं सां ---,
रें
नि सां ---, प नि सां रें, सां नि सां ---, रें सां नि सां नि॒ प,
नि॒ म - प ग म ग ---, सा ---, नि़ सा - ।

५. नि़ सा, ग म, ग, सा ग म प म, ग – – –, म, प,
नि, नि़ सा ग म प नि, सा ग, सा म, सा प, सा, नि –
रें
– –, सां – – –, रें सां नि सां रें नि सां रें रें सां गं, – – –,

मं गं – – –, सां मं, सां गं – सां – – –, नि सां रें सां, प नि
सां रें, सां नि॒ प ग, प ग, म ग सा ग म प नि, प नि सां –
रें
– –, नि नि सां – – –, गं सां – – –, रें रें सां रें नि सां नि॒ –,
नि॒, प म प – – –, पं – – –, मं गं – – –, म ग, म नि॒,
प नि॒ म प – – –, म ग – – –, सा ग म प –, म ग –,
रें
सा ग म प नि सां – – –, नि॒ प – – –, ग म ग, सा – – –,
नि़ सा – – –, ग ग – – –, सा नि़ सा ग – सा – – –।

निर्बन्ध तानें

नि़
१. सा ग सा ग सा ग म प ग सा नि़ सा, नि़ सा ग म, सा ग म प, ग म प म ग सा नि़ सा, नि़ सा ग म, ग सा ग म, सा ग म ग सा म ग सा, प़ नि़ सा नि़॒ प़ नि़ सा ग म प म ग सा ग नि़ सा, सा नि़ सा ग म प ग म ग सा नि़ सा, म ग सा, ग सा म ग प म नि॒ प ग म प म ग म ग सा, नि़ सा ग म, नि़ सा ग म प म ग म ग म ग सा, नि़ सा ग म, ग म प नि॒ प म ग म, सा ग म प, नि़ सा ग म प म ग सा नि़ सा।

२. नि़ सा ग म प नि॒ म प ग म ग सा, नि़ सा म ग, सा ग म प नि॒ नि॒ प नि॒ प म ग म नि॒ प ग म ग सा नि़ सा, नि़ सा सा,

ग म ग, प नि॒ नि॒, म प प, ग म, ग सा ग सा नि़ सा ग सा, नि़ सा ग म ग सा, ग म प नि॒ प, नि॒ प ग म ग सा, ग सा नि़ सा, म ग सा ग, प म ग म, नि॒ प म प, ग म प म ग म ग सा नि़ सा, नि़ सा, सा ग, ग म, म प, प नि, नि सां, नि॒ प सां नि॒ प म प नि सां रें सां नि॒ प म ग सा नि़ सा।

३. नि़ सा ग म, ग सा ग म प नि सां, सा ग म प, सा ग म प नि, सां नि प नि सां रें नि सां नि॒ प म ग, सां नि॒ प म ग सा नि़ सा, नि़ ग सा, ग, सा ग नि़ सा, नि॒, प नि॒ म प, नि नि सां रें सां गं सां नि॒ प नि॒ प म सां नि॒, नि॒ प, प म, म ग, ग सा, नि़ सा ग म प नि सां रें, रें रें सां रें गं सां नि सां रें सां नि॒ प म ग सा, सा नि॒ प़ नि़ सा ग म प ग म प नि सां रें सां नि॒ सां नि॒ प म ग म ग सा।

४. सा ग, ग सा, ग म, म ग, म प, प म, प नि॒, नि॒ प, नि सां नि॒ प ग सा नि़ सा, म नि॒ प नि॒ म प ग म प सां नि॒ प सां नि सां रें सां गं रें सां नि॒ प सां नि॒ प म नि॒ प म ग प म ग सा म ग सा नि़ सा ग नि़ सा, ग सा- नि़ सा ग म प नि सां रें नि सां रें सां गं सां गं मं गं सां, रें सां नि॒ प म ग सा, नि़ सा, सां नि सां रें सां नि॒ प म ग म प म ग सा ग म प नि॒ प म ग सा नि़ सा।

५. सा, – नि़ सा, ग, म प, नि॒, प नि, सां, नि सां, रें, सां रें, सां गं मं पं मं गं सां गं नि रें सां नि सां नि॒ प म प ग म ग सा ग नि़ सा, नि़ सा ग सा, नि़ सा म ग, नि़ सा प म, नि़ सा नि॒ प, नि़ सा, सां नि॒, नि़ सा रें सां गं मं पं मं पं निं सां –, नि॒ं पं मं गं सां गं मं पं गं मं गं सां रें रें नि सां नि॒ प, म प, प नि॒ नि॒ म प ग म, ग म म, सा ग नि़ सा, प़ नि़ सा ग म प नि सां गं मं पं निं सां –, सां नि॒ प म ग सा नि़ सा, नि़ ग सा।

गत, राग तिलंग (तीनताल)

● स्थायी

×	२	०	३
		त्रि	रें प ग – म
सा ग – – सा	ग म पनि सांरें	सां त्रि प, त्रि	प ग – म
सा ग – – (सा)	ग म प म	– सां प त्रि	प नि सां रें
सां त्रि प म	म ग म पनि सांरें	सां त्रि प, त्रि	प ग – म

● अंतरा

×	२	०	३
		त्रि	प त्रि प नि
रें नि सां – – सां	– सां रें नि	सां – – रें	नि सां प त्रि
प म ग, सा	ग म पनि सांरें	सां त्रि प, त्रि	प ग – म
सा ग – –, सा,	ग म पनि सांरें	सां त्रि प, त्रि	प ग – म

● तालबद्ध तानें

× २ ०

१. नि़सा गम पम गम। पनि सांरें सांत्रि पम। गम गसा नि़सा त्रि

३ म

प ग – म॥

×   २   ०

२. पनि सांरें सांनि पम । गम पनि पम गम । गसा गम प– नि
३
प ग – म ।।

३. गम पनि पम गम । पनि सांगं सांरें सांनि । पम गसा ग–, पम।
गसा ग,– पम गसा ।।

४. साग मप गम गसा । गम पनि पनि पम । पनि सांरें सांरें सांनि।
पम गम गसा नि़सा ।। प़नि़ साग मप गम । ग– ––, प़नि़ साग।
मप गम ग– ––, । प़नि़ साग मप गम ।।

५. गम गप निप मप । मनि पनि मप गम । पसां निसां निप मग।
साग म,सा गम, गम ।।

६. साग मप गम पनि । मप निसां पनि सांरें । सांरें सांनि पनि पम।
गम पम गसा नि़सा ।। नि़सा गम प– गम । ग– –– नि़सा गम।
प– गम ग– ––, । नि़सा गम प,– गम ।।

७. गम पनि सांगं मंपं । मंगं सांरें सांनि पम । गम पनि पम गम ।
पनि पम गम गसा ।। गम पनि सां,– मम । ग– ––, गम पनि ।
सां–, गम ग– –– । गम पनि सां–, गम ।।

८. गसा मग पम निप । सांनि पम गम गसा । नि़सा गम प,– नि़सा।
गम प,– नि़सा गम ।।

९. पनि पसां निसां निप । गम पनि पम गम । गम पनि सांरें सांनि ।
पनि पम गम गसा ।। प़नि़ सा,प़ नि़सा प़नि़ । सा– ––, पनि सां,प।
निसां पनि सां– –– । गम प,ग मप, गम ।।

१०. साग मप गम गसा । गम पनि पनि पम । पनि सांरें सांनि पम।
गसा नि़सा प़नि़ सा– ।। गम पम ग, पम । ग– ––, गम पम।
ग,– पम ग– –– । गम पम ग–, पम ।।

×　　　　　२　　　　　०

११. प़नि़ साग साग मग । मप गम पम पनि़ । पम गम पम गसा ।
३
गम पनि सां– गम ।। ग–, गं– ग–, गम । पनि सां– गम ग– ।
गं– ग– गम पनि । सां– गम ग– गं– ।।

१२. साग मग सांगं मंगं । साग मग साग मप । नि़प मप गम पम ।
पनि सांनि़ पम गसा ।। ग– सा– ग–, पनि । सांनि़ पम गसा ग– ।
सा– ग–, पनि सांनि़ । पम गसा ग– सा–, ।

१३. नि़प गम पनि़ पम । पनि पसां निसां रेंसां । नि़प नि़– पनि़ पम ।
पनि़ पम गसा नि़सा ।। पसां निसां नि़प गम । ग– ––, पसां निसां ।
नि़प गम ग–, ––, । पसां निसां नि़प गम ।।

१४. ग– मप नि़– पनि । सां– निसां रें– सांरें । सांनि़ पनि़ पम गम ।
ग– मप गम गसा ।। नि़सा प़नि़ सा– गम । ग– –– निसां पनि ।
सां– गंमं गं– –– । नि़सा प़नि़ सा– गम ।।

१५. साग सा,ग मग, मप । मप, नि़प, निसां नि,सां । रेंसां निसां नि़प नि़प ।
मप गम गसा नि़सा ।। गसा गम पम गम । ग– ––, गसा गम ।
पम गम ग– ––, । गसा गम पम गम ।।

१६. साग साग मप साग । मप नि– साग मप । निसां रेंसां नि़प नि़– ।
　　म
प　ग　–　म ।।

१७. नि़सा गम साग मप । गम पनि़ पनि सां न । सां नि़ प, नि़ ।
　　म
प　ग　–　म ।।

१८. सा　ग　म　प । –　नि़–　पनि़　पम । ग　म　प　नि ।
– सां– रेंसां नि़प ।। सांनि़ पम नि़प मग । पम गसा नि़सा गम ।
प– ––, नि़सा गम । प– ––, नि़सा गम ।।

× २ ०

१९. साग –सा गम –ग । मप –म पनि़ –प । निसां –नि सांरें –सां ।

३

नि़प मग मप निसां ।। सां– गम ग, नि़प । मग मप निसां सां– ।

गम ग, नि़प मग । मप निसां सां गम ।।

२०. गम पनि सांगं मंपं । मंगं सांनि़ पम गसा । गम पनि सां, नि़ ।

प म/ग – म ।।

गत, राग तिलंग (तीनताल)

• **स्थायी**

×				२				०				३			
			सा	ग	म	पनि़	पम	पनि	सांरें	सांनि	सां	नि़	प	ग	म
			न	न	दि	याऽ	ऽऽ	कैंऽ	ऽऽ	सेऽ	ऽऽ	ऽ	नी	र	भ
सा/ग	–	–	सा												
रों	ऽ	ऽ	न												

• **अंतरा**

×				२				०				३			
				ग	म	प	–	म	प	म/ग	म	नि/प	–	सां/नि	सां/नि
				न	दि	या	ऽ	भा	ऽ	री	ऽ	गा	ऽ	ग	र
रें/सां	नि	रें/सां	नि	रें/सां	नि	रें/सां	–	म	प	सां/नि	–	रें/सां	नि	सां	रें
सि	र	न	सँ	भा	ऽ	ले	ऽ	अँ	च	रा	ऽ	क	स	प	क

×				२				०				३			
सांरें	सांनि॒	पनि॒	पम	ग	म	पनि॒	पम	पनि	सांरें	सांनि	सां	नि॒	प	ग	म
रोंऽ	ऽऽ	ऽऽ	नऽ	न	दि	याऽ	ऽऽ	कैऽ	ऽऽ	सेऽ	ऽ	नी	ऽ	र	भ
सा ग	–	–													
रों	ऽ	ऽ													

● तालबद्ध तानें

× २ ०

१. नि़सा गम गसा, गम। पनि॒ पम, पनि सांरें। सांनि॒, पम गम गसा
३
गम प,ग मप, गम ।।

सा
२. ग – – साग। मप नि॒प मप गम। पनि सांरें सांनि॒ पनि॒।
पम गम गसा गम ।।

३. प़नि़ सानि़ साग मप। गम पम पनि पम। पम गम गसा नि़सा।
गम पनि सां– पनि ।। सां– गम ग–, गम। पनि सां–, पनि सां–।
गम ग–, गम पनि। सां–, पनि सां, गम ।।

४. नि॒प सांनि॒ रेंसां निसां। पनि सांरें सांनि॒ पम। गम पनि॒ पम गम।
गसा गम गसा नि.सा ।। प़नि़ सा,प़ नि़सा, प़नि़। सा- --, पनि सां,प।
निसां, पनि सां–, ---,। गम प,ग मप, गम ।।

५. पनि सांनि सांरें निसां। नि॒प नि॒नि॒ पनि॒ मप। गम पम गम गसा।
गम पनि सां– पनि ।। सां– पनि सां–, सा। ग म पनि॒ पम।
म
पनि सांरें सांनि सां। नि॒ प ग म ।।

× २ ०

६ नि़सा गम पम गम । पनि़ नि़प नि़नि़ पम । पनि सांरें सांनि़ पम ।

३

गम प,ग मप, गम ।। पनि सां– ग–, गम । प,ग मप गम पनि ।

सां- ग–, गम प,ग । मप, गम पनि सां– ।।

७. पसां निसां निरें सांरें । सांनि़ पनि़ पम गम । पनि़ पम गम ग– ।

मप निसां पनि सां– ।। गम गम ग–, मप । निसां पनि सां– गम ।

गम ग– मप निसां । पनि सां– गम गम ।।

८. नि़सा गम प–, मप । गम पनि सां–, निसां । पनि सांरें सांनि़ पम ।

गम पम गसा नि़सा ।। प़नि़ सानि़ सा–, गम । ग–, –– पनि सांनि ।

सां– गम ग–, –– । प़नि़ सानि़ सा– गम ।।

९. गसा ग–, मग म–, । पम प–, नि़प नि– । सांनि सां–, रेंसां रें– ।

सांनि सांरें सांनि़ पम ।। गम गसा नि़सा, सा । ग^म म पनि़ पम ।

पनि सांरें सांनि सां । नि़ प ग^म म ।।

१०. साग नि़सा गम पनि । सांरें सांनि़ पनि़ पम । गम पनि़ पम गम ।

पनि सांनि सां– सा– ।। सां गम ग–, पनि । सांनि सां– सा– सां– ।

गम ग–, पनि सांनि । सां–, सा–, सां–, गम ।।

११. साग मग मप नि़प । निसां निरें सांरें निसां । नि़प मप पनि़ पम ।

गम गसा गम पनि ।। सां–, सा–, सां–, गम । गसा गम पनि सां– ।

सा– सां– गम गसा । गम पनि सां– सा– ।।

१२. सांरें निसां पनि़ मप । गम साग नि़सा गसा । नि़सा गम ग–, नि़सा ।

गम ग–, नि़सा गम ।।

१३. प़नि़ प़सा नि़सा नि़सा । नि़ग साग, साग, साम ।गम, गम गप मप, ।

मप मनि़ पनि़ पनि़ ।। पसां निसां निसां निरें । सांरें सारें सांनि़ पनि़ ।

० ३ ×
पम गसा गसा नि़सा। नि़सा गम पनि सां,प। निसां, गम ग–, नि़सा
२
गम पनि सां,प निसां। गम ग–, नि़सा गम। पनि सां,प निसां, गम ॥

× २ ०
१४. प़– –सा नि़सा नि़सा। नि़- -सा गम गम। ग– –म पनि़ पनि़
३
प– –सां निसां निसां ॥ रें– सांरें सांनि़ पम। पनि सांरें सांनि़ पम।
गम पम पम गसा। नि़सा गम पनि सां– ॥ – –, ग– नि़सा।
गम पनि सां–, –– । ––, ग–, नि़सा गम। पनि सां– –– ––, ॥

१५. प़– –सा नि़सा, नि़–। –सा गम ग– –म। पनि प– –नि सांरें।
सां– –नि़ पम गम ॥ नि़– –प मग साग। प– –म गसा नि़सा।
सांनि पनि सांरें सांनि़। पनि़ पम गसा नि़सा ॥ गम पनि –सां –सां।
सां, –सां –सां सां,। –सां, –सां, सां, गम। पनि –सां, –सां, सां, ॥
–सां, –सां, सां, –सां,। –सां, सां–, गम पनि। –सां, –सां, –सां।
–सा, सां, –सां, –सां, ॥

झाला, राग तिलंग (तीनताल)

कण, मींड़, मुर्की, खटका, जमजमा, गमक-सहित

×				२				०				३			
नि़	रे	रे		नि़		रे		सा	रे		रे	नि़		नि़	
सा	नि़	सा	–	सा	–	सा	–	नि़	सा	नि़	सा	सा	–	सा	–
तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऊ	तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऽ
सा	सा	रे		सा		नि़		सा	सा	सा		म		नि़	
नि़	नि़	सा	–	ग	–	सा	–	नि़	ग	नि़	म	ग	–	सा	–
तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ

× २ ० ३

म म सा रे म नि़ सा म म नि़
ग ग नि़ सा | ग – सा – | नि़ सा ग सा | ग – सा –
तू ऊ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ | तू ऊ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ

सा रे सा सा नि़॒
नि़ सा नि़ सा | नि़॒ – प़ – | नि़॒ नि़॒ प़ – | प़ – प़ –
तू ऊ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ | तू तू तू ऽ | तू ऽ तू ऽ

सा नि़ रे सा रे सा सा रे
नि़ – सा सा | नि़ – सा – | नि़ सा ग म | नि़ – सा –
तू ऽ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ | तू ऊ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ

सा म सा म म
नि़ सा ग म | ग – ग – | म ग म प | ग म ग –
तू ऊ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ | तू ऊ तू ऊ | तू ऊ तू ऽ

म म सा रे नि़
ग म प म | ग म ग – | नि़ सा ग म | सा ग म प
तू ऽ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऊ

म नि॒ सा सा
ग म प – | म – प – | प – – (प) | नि॒ नि॒ (प) –
तू ऊ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ | तू ऽ ऊ तू | तू ऊ तू ऽ

म
म – प – | म प म प | ग म ग प | नि॒ म प –
तू ऽ तू ऽ | तू ऊ तू ऊ | तू ऊ तू ऊ | तू ऊ तू ऽ

×				२			
नि॒प	मप	निसां	रेंसां	गंमं	गंसां	निसां	नि॒प
तूऊ	ऊऊ	तूऊ	ऊऊ	तूऽ	ऊऽ	तूऽ	ऊऊ
०				३			
नि॒–	पम	गम	गसा	नि़सा	गम	गसा	नि़सा
तूऊ	तूऽ	तूऊ	ऊऊ	तूऊ	ऊऊ	तूऊ	ऊऊ

×				२				०				३			
सा	सा	सा		नि़		रे		नि़	रे	नि़		सा		रे	
नि़	–	नि़	नि़	सा	–	सा	–	सा	सा	सा	–	नि़	–	सा	–
तू	ऽ	तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	तू	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ
सा	म							सां	नि॒	सां	रें	सां		रें	
नि़	सा	ग	म	ग	म	प	नि	प	नि	सां	–	नि	–	सां	–
तू	ऊ	तू	ऊ	तू	ऊ	तू	ऊ	तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ
सां	रें			सां		रें		नि		नि		नि॒	सां	रें	
नि	सां	नि	सां	नि	–	सां	गं	सां	–	सां	–	प	नि	सां	रें
तू	ऊ	तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऊ	तू	ऊ
नि		रें						नि				नि		रें	
सां	नि	सां	–	रेंसां	निसां	नि॒प	मप	सां	नि	सां	रें	सां	नि	सां	–
तू	ऊ	तू	ऽ	तूऊ	ऊऊ	तूऊ	ऊऊ	तू	ऊ	तू	ऊ	तू	ऊ	तू	ऊ

×				२			
गंगं	गं,मं	मंमं,	गंगं	गं,सां	सांसां,	नि॒नि॒	पप
तूऊ	ऊ,तू	ऊऊ,	तूऊ	ऊ,तू	ऊऊ	तूतू	तूतू

० ३
सां सां नि रें रें
नि नि निनि निनि | सां नि सां सां
तू ऊ तुकू तुकू | तू ऊ तू ऊ

गंमं गंसां निसां नि॒प | गम पनि सांरें सांनि॒
तूऊ ऊऊ तूऊ तूऊ | तूऊ तूऊ तूऊ तूऊ
पनि॒ पम गम पम | गम पनि सांरें गंसां
तूऊ ऊऊ तूऊ तूऊ | तूऊ ऊऊ तूऊ ऊऊ,

× २ ० ३
मं नि॒ मं मं
गं – मं – | पं – पं – | गं – गं मं | पं – पं –
तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ
मं
गं मं पं निं | सां – सां – | सां सां सां – | निं – सां –
तू ऊ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ | तू तू तू ऽ | तू ऽ तू ऽ
निं सां निं पं | निं – सां – | रें निं सां रें | निं – सां रें
तू ऊ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऊ | तू ऽ तू ऊ

मं
सां निं सां – | निं सां निं सां | नि॒ं – पं – | गं मं गं –
तू ऊ तू ऽ | तू ऽ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ | तू तू तू ऽ

रें मं रें सां सां रें सां
सां गं सां सां | गं सां नि सां | नि नि सां – | नि नि सांनि सांसां
तू ऊ तू तू | तू तू तू तू | तू ऊ ऊ ऽ | तू तू तुकू तुकू

×   २   ०   ३

सां   सां   म
निनि निनि सांनि सां– | नि॒ – प – | म नि॒ म प | ग (म) ग –
तूकू तुकू तुकू तूऽ | तू ऽ ऽ ऽ | तू ऊ तू ऊ | तू ऊ तू ऽ

ग   सा   ग   म   म
सा – सा – | नि़ – सा – | ग सा नि़ सा | ग – सा –
तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ | तू ऊ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ

नि़नि़ सासा गग गम | साग मप गम पनि॒ | प – म प | म – प –
तूऊ तूऊ तूऊ तूऊ | तूऊ तूऊ तूऊ तूऊ | तू ऽ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ

सां   म
नि॒ – प – | ग म प नि॒ | (प) – ग म | ग – ग सा
तू ऽ तू ऽ | तू ऊ तू ऊ | तू ऽ तू ऊ | तू ऽ तू ऊ

ग   सा सा
नि़ सा नि़ सा | नि़॒ – प़ – | नि़॒ नि़॒ प़ नि़॒ | प़ – प़ –
तू ऊ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ | तू तू तू ऊ | तू ऽ तू ऽ

सा सा   सा सा सा   ग नि   सा ग
नि़ – नि़ – | नि़ – नि़ नि़ | (सा) – (सा) – | नि़ – सा –
तू ऽ ऊ ऽ | तू ऽ तू तू | तू ऽ ऊ ऽ | तू ऽ तू ऽ

सा नि़   नि़ नि़   नि़ ग   सा सा ग
नि़ ग सा – | (सा) – (सा) – | सा – सा – | नि़ नि़ सा –
तू ऊ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ | तू तू तू ऽ

×				२				०				३			
				ग		ग		म				ग		ग	
नि़	सा	नि़	ग	सा	नि़	सा	–	ग	ग	सा	–	नि़	–	सा	–
तू	ऊ	तू	ऊ	तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ

झाले की समाप्ति की तान व तिहाई

× २ ०
गसा नि़सा गम पनि। सांरें सांनि॒ पनि॒ पम। गप मग सानि़ सा–
३
गम पनि सां– प़नि़ ।। सा– गम ग–, गसा । नि़सा गम पनि सांरें ।
सांनि॒ पनि॒ पम मप । मग सानि़ सा– साम ।। पनि सां–, प़नि़ सा– ।
गम ग–, गसा नि़सा। गम पनि सांरें सांनि॒ । पनि पम गप मग ।।
सानि़ सा– गम पनि। सां– प़नि़ सा– गम । ग– गसा नि़सा गम ।
पनि सांरें सांनि॒ पनि॒ ।। पम गप मग सानि़ । सा–, गम पनि सां– ।
प़नि़ सा–, पनि सां– । गम पनि सां– प़नि़ ।। सा– पनि सां–, गम ।
पनि सां–, प़नि़ सा– । पनि सां–, गम पनि । सां– प़नि़ सा– गम ।।

गत, राग तिलंग (झप ताल, मध्य लय)

● स्थायी

×		२			०		३		
नि॒		सां		म		म			
प	–	नि॒	प	ग	म	ग	सा	ग	म
	सां				रें			म	
प	नि	सां	रें	नि	सां	नि॒	प	ग	म

● अंतरा

×		२			०		३		
			रें		सां			रें	
प	–	नि	सां	–	नि̱	प	नि	सां	–
रें									
सां	रें	सां	नि̱	प	म	ग	सा	ग	म

मध्य लय की दूसरी गत, झपताल

● स्थायी

×		२			०		३		
सा									
ग	–	म	पसां	निसां	नि̱	प	म	ग	सा
(सा					रें				
ग	–	म	प	नि	सां	रें	सांनि̱	पम	गसा

● अंतरा

×		२			०		३		
					म			सां	सां
म	–	प	नि̱	प	ग	म	प	नि	नि
रें					सां				
सां	–	सां	रें	सां	नि̱	प	म	ग	सा

● तालबद्ध-तानें

	×		२			०		३		
१.	गम	ग– ।	पनि̱	पम	पनि ।	सांरें	सांनि̱ ।	पसा	गम	नि़सा
२.	नि़सा	गम ।	साग	मप	गम ।	पनि	सांरें ।	सांनि̱	पम	गसा
३.	गम	पम	पनि̱	पम	पनि	सांरें	सांनि̱	पनि̱	पम	गसा
	नि़सा	गम	ग–	––,	नि़सा	गम	ग–	––,	नि़सा	गम
४.	ग–	मप	नि̱प	नि̱नि̱	मप	गम	पनि̱	पम	गसा	नि़सा
	गम	पम	ग–	––,	गम	पम	ग–	––,	गम	पम
५.	गम	पनि̱	पम	गसा,	गम	पम	पनि	सांरें	सांनि̱	पम
	गसा	नि़सा	नि़सा	गम	ग–,	नि़सा	गम	ग–,	नि़सा	गम

	×	२	०	३
६.	नि़प़ सानि़	गसा मग पम	पनि सांरें	सांनि पम गसा
	गम पम,	सानि पम गसा	गम ग–,	गम ग–, गम
७.	नि़सा गम	पनि सांरें सांरें	सांनि पनि	पम गसा नि़सा
	गम पम	पम प,ग मप	मप मप,	गम पम पम
८.	गम गसा	सानि़ प़नि़ साग	मप गम	पनि सांरें निसां
	पनि पम	पनि सांरें सांनि	पम गम	पम गसा नि़सा
	गम पनि	सां– पनि सां–,	गम ग–,	गम पनि सां–
	पनि सां–	गम ग– गम	पनि सां–	पनि सां– गम
९.	गम पम	–नि पनि पनि	पम –प	मप निसां निरें
	सांनि पम	निप मग पम	गसा गम	प,ग मप, गम
१०.	पनि सांरें	सांगं मंपं मंगं	सांरें सांनि	पम गसा नि़सा
	प़नि़ सानि़	सा– ––, पनि	सांनि सां–	–– गम पम
११.	गम पनि ।	पनि सांरें सांरें ।	निसां पनि ।	मप मग सा–
१२.	प़सा नि़सा ।	पसां निसां निरें ।	सांरें सांरें ।	सांनि पम गसा
१३.	गम पनि ।	रेंसां निसां निप ।	मप मग ।	साग मग सा–
१४.	नि़सा निसां	प़नि़ – प़नि़	सानि़ गसा	मग पम पनि
	सांरें सांनि	पम ऽ गसा	नि़सा, नि़सा	ग,सा गम, गम
१५.	नि़सा गम	पनि सांगं मंपं	मंगं सांरें	सांनि पम गसा
	नि़सा गम	प–, गम पनि	सां– ग–,	नि़सा गम प–,
	गम पनि	सां– ग–, नि़सा	गम प–,	गम पनि सां–,

गत, राग तिलंग (एकताल, द्रुत लय)

• स्थायी

×		०		२		०		३		४	
						पसां	निसां	नि	प	(म)ग	म
(म)ग	–	सा,	नि़	सा	गम	ग	सा	नि़	सा	ग	म
प	नि	प	म	ग	म	प	(सां)नि	पनि	सांरें	सांनि	पम
सांरें	सांनि	पनि	पम	गसा	गम						

• अंतरा

×		०		२		०		३		४	
						(म)ग	म	प	(सां)नि	प	नि
(गं)सां	–	(गं)सां	रें	नि	सां	(मं)गं	मं	गं	(रें)सां	नि	सां
(सां)नि	(रें)सां	नि	प	म	प	(म)ग	म	प	नि	प	म
पनि	सांरें	सांनि	पम	गसा	नि़सा						

राग तिलंग, एकताल, दूसरी गत

• स्थायी

×		०		२		०		३		४	
						गम	पनि	सांरें	सांनि	पम	गम
(सा)ग	–	सा	(म)ग	म	(नि)प	गम	पनि	सांरें	सांनि	पम	गम

×		०		२		०		३		४	
सा					सा			सा		म	
ग	–	सा	नि़	सा	नि़	प़	–	नि़	सा	ग	म
म		म		सा							
ग	म	ग	सा	नि़	सा						

● अंतरा

×		०		२		०		३		४	
						म		नि		रें	रें
						ग	म	प	नि	सां	नि
गं			मं	मं	रें	रें	गं	मं			
सां	–	सां,	गं	गं	सां	नि	सां	गं	मं	पं	मं
				रें		रें		रें		सां	रें
पं	–	मं	गं	सां	नि	सां	नि	सां	रें	नि	सां
नि	सां			म							
प	नि़	म	प	ग	म	ग	सा	ग	म	प	नि
सांरें	निसां	पनि़	मप	गम	गसा						

गत, राग तिलंग (एकताल)

तीसरी गत, एकताल

● स्थायी

×		०		२		०		३		४	
म											
ग	म	ग	सा	ग	म	पसां	निसां	नि़	प	मप	साम
				रें							
म		नि	सां	रें							
ग	म	प	नि	सां	रें	सांरें	निसां	पनि़	मप	मग	साम

● अंतरा

×		०		२		०		३		४	
प	म	प	नि॒	प	म	प	(सां) नि	सांनि	रें	सां	–
प	(सां) नि	सां	रें	सां	नि॒	प	म	पनि॒	पम	गसा	नि़सा

● तालबद्ध तानें

× ० २ ०

१. नि़सा गम । गसा, गम । पनि॒ पम । पनि सांरें

३ ४

सांनि॒, पम । गम गसा ।।

२. गम पनि॒ । पम, पनि । सांरें सांनि॒ । पम गसा ।
पम गसा । पम गसा ।।

३. नि़सा गम । ग–, मप । पनि॒ पनि॒ । पसां निसां ।
नि॒प मप । गम गसा ।।

४. प़नि़ प़सा । नि़सा प़नि़ । पग साग, । साग साम ।
गम, गम । गप मप ।। मप मनि॒ । पनि॒, पम ।
गसा नि़सा । पम गसा । नि़सा पम । गसा नि़सा ।।

५. गम पनि । सांरें सांनि॒ । पम गम । गसा नि़सा ।
गसा नि़सा । गसा नि़सा ।।

६. ग– मप । मग, म– । पनि॒ पम । प– निसां ।
नि॒प नि– । सांरें सांनि॒ ।। प– मप । मग म– ।
गम गसा । प़नि़ सा– । पनि सां– । प़नि़ गसा ।।

७. गम पनि । सांरें सांनि॒ । पम गसा । ग– —, ।
गम ग– । — गम ।।

× ० २ ०
८. नि॒सा गम । ग–, पनि । सांरें सां–, । नि॒प मग ।
३ ४
सा–, सां– । ––, सा– ॥

९. गम पनि॒ । पनि सांरें । सांरें सांनि॒ । पनि॒ पम
गम प,ग । मप गम ॥

१०. गम गसा । नि॒सा गम । साग मप । मप निसां ।
रें– सांनि॒ । पम गसा ॥ प॒नि॒ सा,प॒ । नि॒सा, प॒नि॒ ।
पनि सां,प । निसां पनि । प॒नि॒ सा,प॒ । नि॒सा प॒नि॒ ॥

११. नि॒सा गम । गम पनि । सांरें निसां । रेंसां नि॒प ।
नि॒प मग । सानि॒ सा– ॥

१२. सांरें निसां । पनि॒ मंप । मग सा– । प॒नि॒ साग ।
मप निसां । निरें सांनि॒ ॥ सांनि॒ पनि॒ । पम, गम ।
पनि॒ पम । गम गसा । नि॒सा, गम । पम गम ॥

१३. पनि सांगं । मंपं मंगं । सांनि॒ पम । गम पनि ।
सांरें सांनि॒ । पम गसा ॥ गम पनि । सां– –– ।
गम पनि । सां– ––, । गम पनि । सां– –– ॥

१४. प॒नि॒ प॒सा । नि॒सा गम । नि॒सा नि॒ग । साग मप ।
गम गप । गम पनि ॥ सांरें सांनि॒ । पनि॒ पम ।
गप मग । साग मप । साग मप । साग मप ॥

१५. गम गसा । पनि॒ पम । सांरें सांनि॒ । पनि॒ पम ।
गम मप । गसा नि॒सा ॥ ग– ––, । गम पम ।
गसा नि॒सा । ग– ––, । गम पम । गसा नि॒सा ॥

गत, राग तिलंग (ताल रूपक)

● स्थायी

०			×		२	
		म	म ग	सा	म ग	म
नि प	सांनि	सां	नि॒	प	म ग	म
ग	–	म	ग	सा	ग	म
सा	ग	म	नि॒ प–	––	प–	––
म	नि॒	प	म ग	म	सा ग–	––,

● अंतरा

०			×		२	
प	सां नि	सां नि	सां	नि	सारें	निसां
सां नि॒	प	–	मनि॒	पनि॒	मप	गम
प	सांनि	सां	नि॒	प	म ग	म
सा ग	–	म	ग	सा	म ग	म

● तालबद्ध तानें

	०			×		२	
१.	नि़सा	गम	ग–	गम	पनि॒	पम,	पनि
	सांरें	सांनि॒	पम	गम	प,ग	मप	गम
२.	गम	पनि	पनि	सांरें	पनि	सांनि॒	पम
	गम	ग–,	पम	गम	ग–,	पम	गम

	०			×		२	
३.	नि़सा	गम	गसा	गम	पनि॒	पम	पनि
	सांरें	सांनि॒,	पम	गम	गसा,	गम	प–
	––,	गम	ग–	––,	गम	प–	––
	गम	ग–	––,	गम	प–	––,	गम
४.	पनि	सांरें	निसां	नि॒प	गम	पनि॒	पम
	गम,	साग	मप	गम	गसा	गम	पनि
	सां–	गम	ग–	––,	गम	पनि	सां–
	गम	ग–	––	गम	पनि	सां–	गम
५.	साग	सा,ग	मग,	मप	म,प	नि॒प,	सांनि॒
	पम	गम	गसा	प़नि़	सा,प़	नि़सा,	प़नि़
	सा–	––,	पनि	सां,प	निसां,	पनि	सां–
	सां–	गम	प,ग	मप,	गम	गं–	गं–
६.	पनि॒	पम	गम	गसा,	नि़सा	गम	प–
	गम	ग–	––,	गम	ग–	––	गम
७.	साग	साम	गम	पनि	पसां	निसां	निसां
	निमं	गंमं,	गंनि	सांरें	निसां	पनि	सांनि
	सां–	–नि	सां–	–नि	सां–,	प़नि़	सानि़
	सा	–नि़	सा–	–नि़	सा–	पनि॒	पम
	ग	–म	ग–	–म	ग–	गं–	ग–

०			×		२	
—,	--,	म-	ग-	सा-	ग-	म-
प-	सांनि	सां	नि॒	प	(म)ग	म
८. गसा	मग	साम	गसा	मग	पम	पनि॒
पम,	नि॒प	सांनि	सांरें	सांनि॒	पनि॒	पम
गम	गसा	ग-	—	पनि॒	पम	गम
गसा	ग-	——,	पनि॒	पम	गम	गसा
९. गम	पनि॒	पम	गम	गसा	गम	गम
–	–	गम	ग	–	–	गम
१०. साग	मप	गम	पनि	सांरें	सांनि॒	पनि
सांगं	मंपं	मंगं	सांरें	निसां	पनि॒	मप
गम	साग	नि़सा	पनि़	सा-	सां-	सा-

गत, राग तिलंग (ध्रुवपद-अंग)

चारताल

● स्थायी

×		०		२		०		३		४	
(म)ग	–	म	(नि)प	(म)ग	म	(नि)प	नि॒	प	म	ग	(नि)सां
नि़	सा	नि़॒	प़	नि़	सा	(म)ग	म	ग	सा	(म)ग	म

×		०		२		०		३		४	
नि॒	सां				सां	रें					
प	नि॒	प	म	प	नि	सां	रें	सां	नि	सां	रें
सां	गं	रें				म					
नि	सां	नि॒	प	म	प	ग	म	ग	सा	नि़	सा

● अंतरा

×		०		२		०		३		४	
म		नि॒	सां					नि॒	सां	रें	
ग	म	प	नि॒	प	म	ग	म	प	नि	सां	–
सां	गं	मं				मं			रें	रें	
नि	सां	गं	मं	पं	–	गं	मं	गं	सां	नि	सां
सां		म				रें		नि			
नि॒	प	ग	म	प	नि	सां	रें	सा	नि॒	प	म
म											
ग	म	प	नि॒	प	म	ग	म	ग	सा	नि़	सा

चारताल की दूसरी गत (ध्रुवपद-अंग)

● स्थायी

×		०		२		०		३		४	
म											
					नि॒	सां		म		सा	
ग	–	म	ग	म	प	नि॒	प	ग	म	ग	सा
सां	ग	म		नि॒		नि॒			सां	गं	सां
नि	सा	ग	म	प	नि॒	प	म	प	नि	सां	रें
)											
गं	सां		सां							सा	
सां	नि॒	प	नि॒	प	म	ग	म	ग	सा	नि़॒	प़
सा	ग	म		ग	म		नि॒	म		म़	
नि़	सा	ग	म	सा	ग	म	प	ग	म	ग	सा

● अंतरा

×		०		२		०		३		४	
म		नि॒			सां	रें		रें		नि	
ग	म	प	नि॒	प	नि	सां	नि	सां	रें	सां	–,
सां		मं	रें	मं							नि
नि	सां	गं	सां	गं	मं	पं	मं	गं	मं	गं	सां

×		०		२		०		३		४	
सां	गं	सां		सां	सां		सां				
नि	सां	नि॒	प	नि॒	नि॒	प	नि॒	प	म	ग	म
म		सा	ग	सा	सा	नि़॒	सा	ग			
ग	सा	नि़	सा	नि़॒	नि़॒	प़	नि़	सा	नि़	सा	–,

ज्ञातव्य : इन गतों को भी बराबर, दुगुन, तिगुन, चौगुन, डेढ़गुन (आड़), पचगुन (सवाई), छहगुन इत्यादि और भी अनेकों लयकारियों में बजाने का अभ्यास करना अति आवश्यक है। ऐसा करने से विद्यार्थियों का ताल व लय - ज्ञान बहुत ही अच्छा हो जाएगा।

गत, राग तिलंग (ताल दादरा)

● स्थायी

×			०			×			०		
				सां		म					
सां	नि	सां	प	नि॒	प	ग	म	प	नि॒	प	म
म										सां	
ग	–	म	ग	सा	नि़	सा	ग	म	प	नि	सांरें

● अंतरा

×			०			×			०		
सां	–	सां	नि	सां	सां	प	नि	सां	रें	सां	नि
सां	रें	सां	नि॒	प	म	ग	म	प	नि॒	प	म
ग	–	म	ग	सा	नि़	सा	ग	म	प	नि	सांरें

● तालबद्ध तानें

× ० ×
१. नि॒प सांनि रेंसां । निसां पनि॒ पम । गम पम पनि॒
०
पम गसा नि़सा ॥

× ० ×
२. पसां निसां नि॒नि॒ । पनि॒ पम गम । गसा नि़सा गम
०
पनि सां– पनि ।।

३. सांरें सांनि॒ पनि॒ । पम गम पनि॒ । पम गम पनि॒ ।
पम गसा नि़सा ।।

४. रेंसां निसां नि॒प । मप मग सा– । गम पनि गम ।
पनि गम पनि ।।

५. सांरें निसां पनि॒ । मप मग साग । मग सा–, गम ।
प,म पनि, पनि ।।

६. गम पनि सांरें । सांनि॒ पनि॒ पम । गम पनि॒ पम ।
गम गसा नि़सा ।।

७. सांनि सांरें सांनि॒ । पम पनि॒ पम । गसा गम गसा ।
नि़सा गम पनि ।।

८. गंसां गंमं गंसां । नि॒प मनि॒ पम । पम गम गसा ।
गम पनि सांरें ।।

९. सांरे निसां नि॒– । पनि पम ग–, । साग मप नि॒– ।
गम पनि सांरें ।।

१०. साग मप मग । मप निसां नि॒प । गम पनि सांरें, ।
सांनि॒ पम गसा ।। गम पनि सां । –– –– गम ।
पनि सां– ––, । ––, गम पनि ।।

राग देश

राग परिचय : ठाठ : खमाज, विकृत स्वर : अवरोह में कोमल निषाद, वर्जित स्वर : आरोह में गांधार एवं धैवत, जाति : औडव-संपूर्ण, वादी स्वर : ऋषभ, संवादी स्वर : पंचम, समय : रात्रि का प्रथम प्रहर, प्रकृति : ठुमरी-अंग में चंचल ।

आरोह : सा रे म प नि सां ।

अवरोह : सां नि॒ ध प म रे, ग नि़ सा

पकड़ : नि़ सा म ग रे, रे म प नि, ध प, म ग रे, ग नि़ सा ।

राग-चलन : सा रे म प नि, प नि सां रें नि॒ ध प, ध म ग रे, रे ग रे म ग रे, ग नि़ सा, प़ नि़ सा ।

विशेष विवरण

राग देश की उत्पत्ति खमाज ठाठ से मानी जाती है । इसके आरोह में शुद्ध निषाद व अवरोह में कोमल निषाद का प्रयोग होता है । आरोह में गांधार और धैवत स्वर वर्जित करके गाने-बजाने का प्रचलन है, इसलिए इस राग की जाति औडव-संपूर्ण होती है । किंतु कोई-कोई विद्वान् इस राग को संपूर्ण मानकर गाते-बजाते हैं । परंतु यह प्रचार में नहीं है । वादी ऋषभ तथा पंचम संवादी के स्थान पर पंचम वादी तथा ऋषभ संवादी मानते हैं । परन्तु इस प्रकार गायन-वादन का प्रचलन नाम मात्र का ही है । राग देश में ऋषभ व निषाद पर ही न्यास करना उचित है । इस प्रकार गायन-वादन से राग देश का स्वरूप एकदम स्पष्ट हो जाता है । गांधार पर न्यास करने से तिलककामोद तथा इसी से मिलते-जुलते राग सोरठ की छाया आने लगती है । इस कारण इस स्वर से राग को बचाना चाहिए । आरोह में न्यास - स्वर पंचम तथा अवरोह में न्यास-स्वर ऋषभ है । देश का स्वरूप सोरठ राग से बहुत-कुछ मिलता-जुलता है । देश के बाद सोरठ या सोरठ के बाद देश में काफी कठिनाई हो सकती है । किंतु देश में गांधार स्वर को स्पष्ट रूप से लिया जाता है, जबकि सोरठ में गांधार को बिलकुल

अल्प रखते हैं। लेकिन कुशल गायक-वादक एक दूसरे राग को भिन्न-भिन्न रूप से गाते-बजाते हैं। देश में बड़ा खयाल और छोटे खयाल के अलावा ठुमरी व भजन और धुनें भी गाई-बजाई जाती हैं। यह बहुत ही प्राचीन एवं प्रचार पाया हुआ राग है। यह बहुत ही मधुर तथा जनचित्त का शीघ्र रंजन करने वाला सुन्दर राग है।

स्वर-आलाप

रे नि़ – सा – – –, नि़ सा – – –, रे –, म ग रे – – –, ग नि़ – सा – – –, नि़ सा, रे म गरे, म ग रे – – –, ग –, नि़ सा –, रे नि़ –, सा – – – नि़ ध़ प़ – – –, म़ प़ –, नि़ नि़ रे – ग – म ग रे – सा – – –, नि़ सा – – –, रे – सा – – –, नि़ सा नि़ सा – रे म ग रे –, ग रे म ग रे, म प – म ग रे, म ग रे ग, नि़ सा – – –, रे म प ध म ग रे, म प म ग रे –, प ध म ग म रे ग नि़ रे नि़ –, सा – – –, रे म ग रे, रे म प, रे म प नि ध प, रे – प, रे नि ध नि ध प रे रे म प –, म ध प –, नि़ सा रे, सा रे म, रे म प –, रे म ध नि ध प, ध म प ध म ग रे म प नि ध प –, नि़ सा, सा रे रे म, म प, प नि ध प, म ग प नि ध नि, ध प रे म प ध म ग रे –, ग नि़ सा – – –, रे नि़ सा – – –, नि़ सा रे म प नि –, (सां) नि सां नि ध प, रे म ग रे –, म प नि नि सां – – –, रें नि सां – – – नि सां – – –, नि सां रें नि ध प –, ध म प ध, प नि ध प ध म ग रे, म ग रे नि़ ग नि़ सा – – –, रे सा – – –, सा रे नि़ सा रे रे सा नि़ सा, रे नि़ ध़ प़, म प

नि नि रें नि सां – – –, म प नि सां रें – – –, नि॒ ध प, ध म प नि॒ –, सां नि रें सां, रें नि॒ ध प, रे म प नि, सा रे म प, नि़ सा रे म प नि (सां) – – –, रें मं गं रें, गं नि सां – – –, मं गं रें मं गं रें –, नि सां – – –, नि सां –, नि सां रें सां नि॒ ध प ध, म प, म ग रे म, ग रे नि़ सा – – –, रे म प नि सां रें –, मं गं रें मं, पं मं गं रें मं गं पं मं गं रें नि॒ ध म, रे म प ध, म प नि॒ ध प, (ध) म ग रे नि़ सा – – –, नि़ सा – – –, नि़ सा रे सा – – –, नि़॒ ध़ प़ – – –, म़ प़ –, प़ नि़ नि़ सा – – –, रे नि़ सा रे नि़॒ ध़ प़ ध़ प़ नि़ सा रे, ग नि़ सा – – –, नि़ सा – – –, रे नि़ सा – – – ।

निर्बन्ध तानें

१. नि़ सा रे म ग रे, नि़ सा, रे नि़॒ ध़ प़, नि़ सा रे म ग रे म ग रे सा नि़ सा, ग रे म ग प म ग रे, म ग रे म ग रे नि़ सा, नि़ सा रे म प ध म ग रे म प म ग रे नि़ सा रे म प ध, प ध म ग, रे म ग रे, ग ग रे सा, नि़॒ ध़ प़ ध़ प़ नि़ सा, रे म प ध प नि॒ ध नि॒ प ध म म रे म प नि॒ ध प म ग म ग रे सा ।

२. नि़ सा रे म ग रे म ग रे सा नि़ सा, रे म प नि॒ ध प म ग रे म ग रे म ग रे सा नि़ सा रे, सा रे म, रेम प, नि॒ ध प म, ध प म ग रे म ग रे, नि॒ ध प म ग रे सा, सा रे नि़ सा, प ध, म प, सा रे नि़ सा, नि॒ ध प ध, म ग रे म ग रे म ग रे सा, नि़ सा रे रे सा रे नि़ सा, ध ध प ध म प, म प नि॒ ध प, प म ग रे, प म ग रे ग नि़ सा, नि़ सा म रे, प म, नि॒ ध प नि॒ ध प, म ध प म ग रे म ग म ग रे सा ।

३. नि़ सा रे म प नि सां नि॒ ध प म ग म ग रे म ग रे नि़ सा रे नि़ सा – – –, रे म प नि सां रें नि सां, नि॒ ध प ध प नि सां रें सां नि॒ प ध म ग रे सा, नि़ सा म ग रे सा, रे म प नि॒ ध प, म प नि सां नि॒ ध, प नि सां रें गं रें सां नि॒ ध प म ग रे म ग रे म ग रे सा रे नि़ सा, सा सां – नि॒ ध प म ग रे सा नि़ सा।

४. प़ नि़ सा रे सा नि़॒ ध़ प़, नि़ सा रे म ग रे म ग रे म ग नि़ सा रे सा, नि़ सा, नि़ सा, सा रे, रे म, म प प नि, नि सां सां रें नि सां नि॒ ध प ध प म ग रे म ग रे सा म रे प म ध प नि॒ ध सां नि रें सां मं गं रें सां नि॒ ध प म ग रे म ग रे सा नि़ सा रे म प ध म प नि॒ ध, प नि सां रें नि सां रें नि॒ ध प म ग रे सा, नि़ सा नि़ सा रे म सां रें सां नि॒ प नि॒ ध प म ध प म प म ग रे म ग रे म ग रे नि़ सा।

५. म ग रे, प म ग, ध प म, नि॒ ध प, म प नि सां, रें रें सां रें मं गं रें मं गं रें मं गं मं गं रें सां नि रें सां नि॒ सां नि॒ ध प म प नि॒ ध प म ग रे ग नि़ सा, प़ नि़ सा रे, पं मं गं रें नि॒ ध प म ग रे सा, नि़ सा, रे म प ध, म प नि सां रें मं गं रें मं गं पं मं गं रें नि॒ ध सां नि॒ ध प म ग रे सा रे नि़ सा, सा रे, सां रें नि॒ ध, नि़॒ ध, नि॒ ध प म ग रे, म ग रे म ग रे सा, नि़ सा रे म म ग रे सा, प म ग रे म ग रे सा रे नि़॒ ध़ प़ नि़ सा रे सा ग नि़ सा।

गत, राग देस (तीनताल)

• **स्थायी**

×	२	०	३
		रेग रेग सा रे	– म – प

×	२	०	३
सां (slur over नि सां)		प	
नि सां – रें	सां नि॒ ध प	म प नि॒ ध	प म ग रे
	रे (above सा)		
प म ग रे	ग नि़ – सा	रेग रेग सा रे	– म – प

अंतरा

×	२	०	३
		म – म म	प प नि नि
रें (above सां)	रें (above सां)	सां (above नि)	
सां – सां सां	रें नि सां –	नि सां रें मं	गं रें नि सां
रें नि॒ ध प	म ग रे –	रें नि॒ ध नि॒	प ध म प
सां नि॒ ध प	सांनि॒ धप मग रेसा		

तालबद्ध तानें

×   २   ०

१. नि़सा रेम पनि सांरें । सांनि॒ धप मग रेसा । रेम पनि सां– रेम ।

३

पनि सां– रेम पनि ॥

२. मप निसां रेंनि॒ धप । नि॒ध पम गरे सा– । गत

३. निसां रेंगं मंगं रेंसां । नि॒ध पम गरे सा– । गत

४. रेंनि सांरें नि॒ध पध । मग रे,म गरे निसा । गत

५. नि॒प पध मग रेग । गरे नि़सा प़नि़ सा– । गत

६. रेम गरे मग रेसा । रेंनि॒ धप मग रेसा । गत

×   २   ०

७. पनि सांरें मप निसां । रेम पनि सारे मप । रेम गरे मग रेसा

३

सारे म,रे मप मप ॥

× २ ०
८. ऩिसा रेग मग रेसा । रेम पनि सानि़ धप । निसां रेंगं मंगं रेंसां
३
नि॒ध पम गरे सा ।। रेम पनि सां– पनि । सां– –– नि़सा रेग ।
मग रेसा रेम पनि । सांनि॒ धप निसां रेंगं ।। मंगं रेंसां नि॒ध पम ।
गरे सा– रेम पनि । सां– पनि सां– –– । नि़सा रेग मग रेसा ।।
रेम पनि सांनि॒ धप । निसां रेंगं मंगं रेंसां । नि॒ध पम गरे सा ।
रेम पनि सां– पसां ।।

९. मग रेसा सांनि॒ धप । मंगं रेंसां नि॒ध पम । धप मग मग रेसा ।
रेम पनि सां– पनि ।। सा– सां– नि– रेम । पनि सां– पनि सां– ।
सां– नि– रेम पनि । सां– पनि सां– सां– ।।

१०. पनि सांरें सांनि॒ धप । धप मग रेसा नि़सा । रेम पनि॒ धप मप ।
पनि सां,प निसां पनि ।।

११ नि़सा मग रेसा नि़सा । रेम पनि॒ धप मप । –प –नि सां, –प ।
–नि सां –प –नि ।।

१२. सारे नि़सा पध मप । सांरें निसां पनि सांरें । नि॒ध पम गरे सा ।
नि़सा रेम पनि सां,प ।। –नि सां– सां नि़सा । रेम पनि सां,प –नि ।
सां सां नि़सा रेम । पनि साम –नि –सां ।।

१३. रेम पनि सांरें सांनि॒ । पनि॒ धप मग रेम । पम गरे सानि़ सा ।
रेम पनि सां– पनि ।। सां पनि सां रेम । पनि सां– पनि सां– ।
पनि सां रेम पनि । सां पनि सां– पनि ।।

१४. रेम पम पनि सांरें । गंरें सांरें मंगं रेंसां । रेंनि॒ धनि॒ पध मप ।
नि॒ध पम धम पध ।। मप मग रेम गरे । मग रेसा रेनि़ सा– ।

१५. रेम गरे मग रेसा । रेम पनि॒ धप मप । निसां रेंमं गंरें सांरें ।
निसां रेंनि॒ पनि॒ धप ।। नि॒प पम गरे सारे । नि़ध़ प़ध़ प़नि़ सा– ।

×   २   ०
१६. मप नि॒ध पध मप । मग रेसा रेम पनि । सांनि॒ धप मग रेसा ।
३
रेम पनि सांरें मंपं ।। मंगं रेंसां नि॒ध पम । धप मग रेसा ऩिसा ।
रेम पम पनि पनि । सां– पनि सां– पनि ।।

१७. मग रेप मग रेम । पनि सांरें सांनि॒ धप । निसां रेंनि॒ धप मप ।
रेम गरे गरे ऩिसा ।। रेऩि सारे मप निसां । सां– –– रेऩि सारे ।
मप निसां सां– –– । रेऩि सारे मप निसां ।।

१८. मग रेम गरे सा । रेम पनि॒ धप मप । निसां रेंमं गंरें सांनि॒ ।
धप मग रेसा ऩिसा ।। रेम पनि सांनि सांसां । सां –– रेम पनि ।
सांनि सांसां सां –– । रेम पनि सांनि सांसां ।।

१९. रेसा ऩिसा मग रेसा । मग रेम, धम पध । नि॒ध पध सांनि॒ धप ।
मग रेम गरे सारे ।। मप नि॒प पनि सांरें । गंरें सांनि॒ धप मग ।
रेम गरे साऩि सा । रेम गरे सारे मप ।। निसां पनि सां– रेम ।
गरे सारे मप निसां । पनि सां– रेम गरे । सारे मप निसां पनि ।।

२०. मप निसां रें– सांरें । सांरें मंगं रेंसां निसां । पनि सांरें नि॒ध पम ।
पम गरे साऩि सा ।। पऩि सारे मप निसां । रेंगं मंगं रेंसां निसां ।
रेंसां नि॒ध पम गरे । सारे मप निसां मग ।। रे पनि सां सारे ।
मप निसां मग रे– । पनि सां सारे मप । निसां मग रे– पऩि ।।

२१. पनि सांरें मंपं मंगं । मंगं रेंसां नि॒ध पम । गरे साऩि पऩि सा ।
पऩि सारे मग रेम ।। गरे सा सा पऩि । सारे मग रेम गरे ।
सा– सां– पऩि सारे । मग रेम गरे सा ।।

२२. सांरें मंपं मंगं रेंसां । नि॒ध पम गरे सा– ।   गत

२३. पऩि सारे मप निसां । रेंमं पंनिं सां नि॒धं । पंमं गंरें नि॒ध पम ।
गरे साऩि पऩि सा ।। –प –नि सां पनि । सां – –प –नि ।
सां पनि सां – । प नि सां पनि ।।

×   २   ०   ३
२४. सां निसां रेंनि धप । -नि पनि धप मग । म रेम गरे सारे ।
सारे मप निसां पनि ।। सां- सा सां सारे । मप निसां पनि सां ।
सा सां सारे मप । निसां पनि सां सा ।।

२५. निसा रेग मग रेसा । रेम पनि सांनि धप । निसां रेंगं मंगं रेंसां ।
पनि सांरें सांनि धप ।। निध पम गरे सा । रे म - म ।
प नि - नि । प नि - नि ।।

२६. मग रेसा सांनि धप । मंगं रेंसां निध पम । रेम गरे सारे मप ।
निसां रेंगं मंगं रेंसां ।। रेंनि सांरें सांनि धप । निध पम गरे सा ।
निध पम गरे सा । निध पम गरे सा- ।।

गत, राग देश (अद्धा, तीनताल)

● स्थायी

×	२	०	३
	(म)रे म	ग -रे - सा	रे म प नि
(रें)सां - - (रें)नि	ध प, (म)रे म	ग -रे - सा	- मग रे म
प नि ध प	म ग, (म)रे म	ग -रे - सा	रे म प नि
(रें)सां - - (रें)नि	ध प,		

● अंतरा

×	२	०	३
		(म)रे म - प	नि सां प नि

×				२				०				३			
रें सां	–	–	सां	रें	रें नि	सां	–	नि	सां	रें	मं	गं	रें	नि	सां
पनि	सांरें	सांनि	धप	मग	रेसा,	रे	म	ग	–रे	–	सा	रे	म	प	नि

• तालबद्ध तानें

× २ ० ३

१. रेम पनि सांनि धप । मग रेसा रे म । ग –रे – सा
रे म प नि ॥

२. पनि सांरें सांनि धप । मग रेम गरे सा– । रेम पनि सां– रेम ।
पनि सां रेम पनि ॥

३. मप निसां रेंनि धप । मग रेसा, रे म । ग –रे – सा ।
रे म प नि ॥

४. रेंनि धनि पध मप । मग रेम गरे सा– । –प –नि सां– –प ।
–नि सां –प –नि ॥

५. पनि सांरें सांनि धप । मग रेसा रेम पध । मप निसां रेंनि धप ।
मग रेम गनि़ –सा ॥ मग रेसा रेम पनि । सां – मग रेसा ।
रेम पनि सां – । मग रेसा रेम पनि ॥

६. रेंसां निसां निध पध । मग रेग मग रेसा । रेम पनि सांरें मंगं ।
रेंमं गंरें मंगं रेंसां ॥ निध पध पम पनि । सां – निध पध ।
पम पनि सां –– । निध पध पम पनि ॥

७. सां –रें सांनि धप । मग रेसा, रे म । ग –रे – सा ।
रे म प नि ॥

८. मप निसां पनि सांरें । मंपं मंगं रेंमं गंरें । निध पम गरे सा– ।
रेम गरे मप निसां ॥ पनि सांरें सां– रेम । गरे मप निसां पनि ।
सांरें सां– रेम गरे । मप निसां पनि सांरें ॥

×　　　　　　　　२　　　　　　　　०
९. सांनि़ रेंसां रेंमं गंरें । सांनि़ धप मप धप । मग रेनि़ सानि़ रेसा
३
रेम पध मप निसां ।। रें– सांरें मंगं रेंसां । नि़ध पम पनि सांनि़ ।
धप मग रेसा नि़सा । मग रे,म गरे मप ।। निसां पनि सां– मग ।
रे,म गरे मप निसां । पनि सां मग रे,म । गरे मप निसां पनि ।।

१०. रेम पध मप धम । गरे मग रेसा रेम । पनि सांरें सांनि़ धप ।
मग रेसा नि़सा रेम ।। पनि़ –प नि सां । रेम पनि़ –प –नि ।
सां सां रेम पनि़ । प नि सां सां ।।

११. गरे पम धप नि़ध । पम गरे मग रेसा । नि़सा रेम पनि सांरें ।
नि़ध पम गरे सा– ।। रेम प– मप नि– । पनि सां रे म ।
सां
ग रे – सा । रे म प नि ।।

१२. रेम पनि सांरें सांनि़ । धप मग रेसा नि़सा । नि़ध़ प़नि़ सारे मप ।
निसां रेंमं पंमं गंरें ।। सांनि़ सांरें सांनि़ धप । मप मग रेम पनि ।
धप मग रेसा नि़सा । नि़ध पम गरे सा ।। रेम पनि सां नि़ध ।
पम गरे सा रेम । पनि सां नि़ध पम । गरे सा रेम पनि ।

१३. रेंसां मंगं रेंसां नि़ध । सांनि़ धप नि़ध पम । धप मग मग रेसा ।
रेसा नि़ध़ प़नि़ सा ।। रेम रेम –प –नि । सां – रेम रेम ।
प नि सां – । रेम रेम प नि ।।

१४. रेंसां निसां निध पध । मग रेसा रे म । ग –रे – सा ।
रे म प नि ।।

१५. रेम गरे धप मग । पनि़ धप निसां रेंसां । सांनि सांरें सांनि़ धप ।
मग रेम गरे सा– ।। रेम –म पनि –नि । सां – रेम –म ।
पनि –नि सां – । रेम –म पनि –नि ।।

१६. निसां रेंमं पंमं गंरें । सांनि॒ धप मग रेसा । रेम रेम पनि सांरें ।
पनि सांप निसां पनि ।।

१७. सांरें निसां पध मप । मग रेसा रे म । ग –रे – सा ।
रे म प नि ।।

१८. नि़सा रेनि़ सारे नि़सा । मग रेसा रेम परे । मप रेम पम गरे ।
मप नि॒म पनि मप ।। नि॒ धप मग रेसा । सां – नि॒ धप ।
मग रेसा सां –– । नि॒ धप मग रेसा ।।

१९. सांरें निसां नि॒ध पध । मग रे मग रेसा । नि़॒ध़ प़ध़ प़नि़ सारे ।
मप मग रेसा नि़सा ।। रे मप नि पनि । सां – रे मप ।
नि पनि सां – । रे मप नि पनि ।।

२०. पनि सांरें निसां नि॒ध । पनि सांनि॒ धप मप । धम गरे मग रेम ।
पम गरे सानि़ सारे ।। मग रेम गरे सारे । मप नि॒ध पनि सांनि॒ ।
धप मप मग रेसा । रेम प नि पनि ।। सां– पनि सां रेम ।
प नि पनि सां । पनि सां– रेम प । नि पनि सां पनि ।।

झाला, राग देश (तीनताल)

कण, मीड़, मुर्की, खटका, गमक, जमजमा तथा तान-सहित

×				२				०				३			
सा		रे		नि़		रे		नि़				सा		रें	रे
नि़	–	सा	–	सा	–	सा	–	सा	–	सा	सा	नि़	–	सा	सा
तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऊ

× २ ० ३

सा म म रे सा रे ग सा रे

म ग रे – | ग नि़ सा – | नि़ – सा – | रे नि़ सा –

तू ऊ तू ऽ | तू ऊ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ | तू ऊ तू ऽ

नि़ सा रे ग सा सा

प़ नि़ सा रे | नि़ – ध़ प़ | म़ – प़ – | म़ प़ नि़ –

तू ऊ तू ऊ | तू ऽ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ | तू ऊ तू ऽ

नि़ रे सा म सा सा रे

सा – सा – | म ग रे – | ग नि़ सा – | नि़ – सा –

तू ऽ तू ऽ | तू ऊ तू ऽ | तू ऊ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ

सा रे म म सा सा रे सा रे

नि़ सा रे ग | म ग रे – | ग नि़ सा – | नि़ – सा –

तू ऊ तू ऊ | तू ऊ तू ऽ | तू ऊ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ

सा रे म ध ध सा

नि़ – सा – | रे – म – | प – प – | म ग रे –

तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ | तू ऊ तू ऽ

रेनि़ सारे मप नि़ध | प – प – | म – प – | म ग रे –

तूऽ ऊऊ तूऊ ऊऊ | तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ | तू ऊ तू ऽ

रे सा रे ध नि म म

ग नि़ सा – | नि़सा रेम सारे मप | प ध म ग | रे – रे –

तू तू तू ऽ | तूऊ तूऊ तूऊ ऊऊ | तू ऊ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ

× 2 0 3
सा रे म ध सा
नि़ सा रे म | प – प – | ध म ग रे | नि॒ ध नि॒ –
तू तू तू ऊ | तू ऽ तू ऽ | तू ऊ तू ऊ | तू ऊ तू ऽ

म नि़ रे रे सा रे
प ध म ग | म ग रे – | सा नि़ सा – | नि़ – सा –
तू ऊ तू ऊ | तू ऊ तू ऽ | तू ऊ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ

× 2
नि़सा रेम रेम गरे | सानि़ सारे मप नि॒ध
तूऊ ऊऊ तूऊ ऊऊ | तूऊ तूऊ तूऊ ऊऊ

0 3
पध मग रेम गरे | मग रेसा रेनि़ सा–
तूऊ ऊऊ तूऊ ऊऊ | तूऊ ऊऊ तूऊ तूऽ

× 2 0 3
सा नि़ म रे म नि़ रे सा रे
नि़ – सा – | म म रे – | म ग रे सा | ग नि़ सा –
तू ऽ तू ऽ | तू ऊ तू ऽ | तू ऊ तू ऊ | तू ऊ तू ऽ

नि़ रे सा म सां
सा – सा – | नि़ – सा – | रे म प – | नि॒ ध प –
तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ | तू ऊ तू ऽ | तू ऊ तू ऽ

रें रें सां रें नि नि
ध म ग रे | म प नि सां | नि – सां – | सां – सां –
तू ऊ तू ऊ | तू ऽ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ

×　　　　　　२　　　　　　　०　　　　　　　३

मं.　　　　　　　　　　　　　　　　नि　सां　नि　　नि
रें त्रि ध प | ध म ग रे | म – प नि | सां – सां –
तू ऊ ऊ ऊ | तू ऊ तू ऊ | तू ऽ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ

मं सां रें　　　　　　　　　　　मं सां रें　　　　सां सां
रें नि सां – | मं गं रें – | गं नि सां – | रें त्रि ध प
तू ऊ तू ऊ | तू ऊ तू ऽ | तू ऊ तू ऽ | तू ऊ तू ऊ

प नि सां　　सां रें मं　　　मं सां
म प नि सां | नि सां रें मं | गं रें नि सां | मं गं रें मं
तू ऊ तू ऊ | तू ऊ तू ऊ | तू ऽ तू ऊ | तू ऊ तू ऊ

×　　　　　　　　　　　　　२
रें　　मं　　सां　　रें
गं　　रें　　नि　　सां | रेंरें　रें,सां　सांसां　निसां
तू　　ऊ　　तू　　ऊ | तूऊ　ऊ,तू　ऊऊ　तूऊ

०　　　　　　　　　　　　३
त्रित्रि　त्रि,ध　धध,　पप | प,म　मम,　गग　गरे
तूऊ　ऊ,तू　ऊऊ,　ऊऊ | ऊ,तू　ऊऊ,　तूऊ　ऊऊ

×　　　　२　　　　　　　०　　　　　　　३
　सां रें　　　　　　　नि　　रें
म प नि सां | प नि सां रें | सां – सां – | मं गं रें –
तू ऊ तू ऊ | तू ऊ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ | तू ऊ तू ऽ

मं　　　　　　　　　　　　　　　　　　रें　नि
रें मं पं – | धं मं गं रें | मं पं निं सां | सां – सां –
तू ऊ तू ऊ | तू ऊ तू ऊ | तू ऊ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ

　रें　सां　　　　　　　　　　　　　नि रें रें
रें निं सां – | त्रिं धं पं – | मं गं रें – | सां नि सां –
तू ऊ तू ऽ | तू ऊ तू ऽ | तू ऊ तू ऽ | तू ऊ तू ऽ

×				२			
निसां	रेंमं	गंरें	निसां	पनि	सांरें	॒नि॒ध	पम
तूऊ	ऊऊ	तूऊ	ऊऊ	तूऊ	ऊऊ	तूऊ	ऊऊ

०				३			
गरे	मग	रेम	गरे	मग	रेसा	रेनि़	सा–
तूऊ	ऊऊ	तूऊ	ऊऊ	तूऊ	ऊऊ	तूऊ	तूऽ

×				२				०				३			
सां		रें		सा		रे		सां	रें	सा		सां		रें	
नि	–	सां	–	नि़	–	सा	–	नि	सां	नि़	सा	नि	–	सां	–
तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऊ	तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऽ

×				२			
रेंसां	निसां	रेसा	नि़सा	मग	रेम	मंगं	रेंमं
तूऊ	ऊऊ	तूऊ	ऊऊ	तूऊ	ऊऊ	तूऊ	ऊऊ

०				३			
गंरें	॒नि॒ध	मग	रेसा	॒नि़॒ध़	प़नि़	सानि़	सा–
तूऊ	ऊऊ	तूऊ	ऊऊ	तूऊ	ऊऊ	तूऊ	तूऽ

×				२				०				३			
रेरे	मम	रेरे	रे,म	मम,	पप,	म	प	नि	सां	रें	मं	पं	–	मं	गं
तूऊ	ऊऊ	तूऊ	ऊ,तू	ऊऊ	तूकू	तू	ऊ	तू	ऊ	तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऊ

				सां				म			म	सां			
मं	गं	रें	–	॒नि	ध	प	–	रें	नि	सां	रें	॒नि	ध	प	म
तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऊ	तू	ऊ	तू	ऊ	तू	ऊ

× २ ० ३

सा रे सा रे
ग नि़ सा रे | म ग रे – | म ग रे सा | नि़ – सा –
तू ऊ तू ऊ | तू ऊ तू ऽ | तू ऊ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ

नि़ नि़ सा सा सा सा रे सा रे
सा – सा – | नि़नि़ नि़नि़ ध़ध़ प़– | नि़ – नि़ नि़ | नि़ नि़ नि़ नि़
तू ऽ तू ऽ | तुकू तुकू तुकू तूऽ | तू ऽ तू ऊ | तू ऊ तू ऊ

सा रे रे रे नि़ सा रे
नि़ – सा – | म ग रे – | सा नि़ सा – | नि़ – सा –
तू ऽ तू ऽ | तू ऊ तू ऽ | तू ऊ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ

सा सा नि़ सा
प़ नि़ सा रे | नि़ ध़ प़ – | म ग रे – | सा रे नि़ सा
तू ऊ तू ऊ | तू ऊ तू ऽ | तू ऊ तू ऽ | तू ऊ तू ऊ

झाला-समाप्ति की तिहाई व तान

× २ ०
नि़सा रेग मग रेसा । रेम पनि सांनि़ धप । निसां रेंगं मंगं रेंसां
३
नि़ध पम गरे सा– ।। रेम पनि सां–, रेम । पनि सां– रेम पनि ।
सां–, निसां नि–, नि़सा । रेग मग रेसा रेम ।। पनि सांनि़ धप निसां ।
रेंगं मंगं रेंसां नि़ध । पम गरे सा–, रेम । पनि सां– रेम पनि ।।
सां– रेम पनि सां–, । निसां नि,– नि़सा रेग । मग रेसा रेग पनि ।
सांनि़ धप निसां, रेंसां ।। मंगं रेंसां नि़ध पम । गरे सा–, रेम पनि ।
सां–, रेम पनि सां–, । रेम पनि सां–, निसां ।।

गत, राग देश (सूल ताल)

● स्थायी

×		०		२		३		०	
								म	प
(सां)नि	–	सां	नि̲	ध	पध	मग	गरे	म	ग
(ग)रे	सा	रे	म	प	ध	पम	गरे	म	प
(सां)नि	–	सां	नि̲	ध	पध	पम	गरे	म	प

● अंतरा

×		०		२		३		०	
								म	प
(सां)नि	–	(रें)सां	नि	सां	रेंनि̲	सां	–	नि	सां
(मं)रें	मं	(मं)गं	रें	नि	सां	रें	नि̲	ध	प
ध	म	ग	रे	म	पध	पम	गरे	म	प

● तालबद्ध तानें

×　　　०　　　२　　　३

१. मग रेम । गरे नि़सा । रेम पनि । सांरें सांनि̲

०

धप मग ।। रेसा नि़सा । मग रे– । मप निसां ।
नि̲ध पम । गरे सा ।। मप नि । पनि सां ।
पनि सांसां । सां मप । नि पनि ।। पनि सांसां ।।
सां पनि । सांसां सां– । मप नि– । पनि सां ।
पनि सांसां ।।

	×	०	२	३	
२.	मप	मप । मग	रेम । गरे	नि़सा । रेम	रेम
	०				
	पम	गरे ।। मग	रेसा । रेम	पनि । सांरें	गरें ।
	सांनि	धप । मग	रेसा ।। मग	रेम । प	म ।
	प	मप । नि	मग । रेम	प ।। म	प ।
	मप	नि । मग	रेम । प	म । प	मप ।।
३.	धप	निध । सांनि	रेंसां । पनि	सांरें । सांनि	धप ।
	मग	रेसा ।। नि़ध़	प़नि़ । सारे	मप । रेम	पनि ।
	धप	मप । मप	रेसा ।। गरे	नि़सा । मग	रेम ।
	गरे	मप । नि	रेसा । नि़सा	मग ।। रेम	गरे ।
	मप	नि । रेसा	नि़सा । मग	रेम । गरे	मप ।।
४.	रेंसां	निसां । पनि	सांरें । सांनि	धप । धप	मग ।
	रेसा	नि़सा ।। मग	रेम । गरे,	सांनि । पनि	धप ।
	मंगं	रेंमं । गरें	सांनि ।। धप	मग । रेसा	नि़सा ।
	रेसा	मप । नि	मप । नि,	मप ।।	
५.	निसां	रेंमं । गरें	सांनि । पनि	सांरें । सांनि	धप ।
	मग	रेसा ।। रेम	प । नि,	– । रेम	प ।
	नि,	– । रेम	प ।।		
६.	निध	पध । सांनि	धप । मग	रेम । गरे	नि़सा ।
	रेम	रे,म ।। गरे	मप । मनि	धप । निसां	गरें ।
	सांनि	धप । मग	रेसा ।। रे	मग । रेम	पम ।
	प	मप । नि	रे । मग	रेम ।। पम	प ।
		सां ग			
	मप	नि । रे	मग । रेम	पम । प	मप ।।

×	०	२	३	
७. सां	–रें । सांत्रि	धप । म	–प । रेसा	निसा
०				
रे	म ॥ पनि	सांरें । मंगं	रेंसां । त्रिध	पम ।
गरे	मग । रेसा	निसा ॥ रे	मप । नि	मप ।
नि	मप । नि	रे । मप	नि ॥ मप	नि ।
मप	नि । रे	मप । नि	मप । नि	मप ॥
८. रेंरें	सांरें । निसां	त्रिध । पध	पम । गरे	मप ।
निसां	रेंमं ॥ पंमं	गरें । सांत्रि	धप । मग	रेम ।
गरे	मग । रेसा	पनि ॥ सारे	मप । नि	पनि ।
सारे	मप । नि	पनि । सारे	मप ॥	
९. निसां	रेंमं । गंरें	निसां । त्रिध	पत्रि । धप	मप ।
मग	रेसा ॥ मग	रें,त्रि । धप	मग । रें,त्रि	धप ।
धप	मग । रेम	पनि ॥ सांत्रि	धप । मग	रेसा ।
रे	मप । नि	सांत्रि । धप	मग ॥ रेसा	रे ।
मप	नि । सांत्रि	धप । मग	रेसा । रे,	मप ।
१०. मप	निसां । रेंनि	सांरें । मंगं	रेंमं । पंमं	पंनिं ।
सांत्रिं	धंपं ॥ मंगं	रेंसां, । रेंत्रि	धप । धम	गरे ।
सा	त्रिध । पनि	सा ॥ रे	मप । नि	–,
रे	मप । नि	– । रे	मप ॥	

गत, राग देश (एकताल)

• स्थायी

×		०		२		०		३		४	
						म	ग	रे	म	प	नि
रें		सां						म			
सां	–	त्रि	ध	प	ध	म	ग	रे	म	ग	रे

×		०		२		०		३		४	
म	ग	रे	ग	(सा)नि़	सा	म	ग	(म)रे	म	प	नि
(रें)सां	–	नि॒	ध	प	ध						

● अंतरा

×		०		२		०		३		४	
						म	ग	रे	मं	प	नि
(रें)सां	–	सां	रें	नि	(रें)सां	नि	सां	रें	मं	गं	रें
सां	नि॒	ध	प	म	ग	रे	नि॒	ध	नि॒	प	ध
म	ग	रे,	ग	नि़	(रे)सा						

● तालबद्ध तानें

	×		०		२		०	
१.	मग	रेम ।	पनि	सांरें ।	नि॒ध	पम ।	गरे	मग
	३		४					
	रेसा	नि़सा ।	रेम	पनि ।।	सां	पनि ।	सां	रेम ।
	पनि	सां ।	पनि	सां ।	रेम	पनि ।	सां	पनि ।।
२.	पनि	सारें ।	निसां	नि॒ध ।	पध	पम ।	रेम	गरे ।
	मग	रेनि़ ।	सानि़	सा ।।	नि़सा	रे,नि़ ।	सारे	नि़सा ।
	रेम	प,रे ।	मप	रेम ।	पनि	सां,प ।	निसां	पनि ।।
३.	पनि	सांरें ।	मंगं	रेंसां ।	रेंनि॒	धप ।	मग	रेम ।
	पनि॒	धप ।	धम	गरे ।।	मप	निसां ।	मप	निसां ।
	मप	निसां ।	म	ग ।	रे	म ।	प	नि ।।
४.	म	प ।	नि	सां ।	–	मंगं ।	रेंसां	निसां ।
	रें	नि॒ ।	ध	प ।।	–	मग ।	रेसा	नि़सा ।
	रेम	पनि ।	सांरें	सांनि॒ ।	धप	मग ।	रे	–म ।।

×		०		२		०	
–प	नि ।	सां	रें ।	–म	–प ।	नि	सां ।
३		४					
रे	–म ।	–प	नि ॥				

५. सांरें निसां । रेंनि॒ धप । धम पध । मग रेम ।
पनि॒ धप । मग रेसा ॥ रेनि॒ प़ । नि़सा रेम ।
गरे सा । रे, मप । नि पनि । सां पनि ॥

६. नि़सा रेग । मग रेम । पनि सांरें । मंगं रेंमं ।
गंरें नि॒ध । पम गरे ॥ गनि़ सा । रेम पनि ।
सांसां सांरें । मप निसां । सांसां रेम । पनि सांसां ॥

७. सांनि॒ रेंसां । रेंमं गंरें । सांरें मंपं । मंगं रेंसां ।
नि॒ध पध । पनि सांनि॒ ॥ धप मग । रेसा नि़सा ।
रेम पनि । सां रेम । पनि सां । रेम पनि ॥

८. पनि सांरें । सांरें निसां । पनि सांनि॒ । धप मप ।
मग रेम । गरे नि़सा ॥ प़नि़ सारे । मग रेसा ।
रे सारे । म रेम । प मप । नि पनि ॥

९. सारे मप । निसां रेंसां । रेंनि॒ धप । नि॒ध पम ।
धप मग । मग रेम ॥ पनि॒ धप । धम गरे ।
मग रेम । रेम गरे । गनि़ सा– । रेम पनि ॥
सां सा । सां रेम । पनि सां । सा सां ।
रेम पनि । सां सा ॥

१०. रेंसां गंरें । मंगं रेंसां । पनि सांरें । सांनि॒ धप ।
धप मग । रेम पनि ॥ सांरें रें,नि । सांसां नि॒ध ।
पम गरे । मग रेम । पम प । निप नि ॥
सां रेम । पम प । नि॒प नि । सां रेम ।
पम प । नि॒प नि ॥

गत, राग देश (ताल रूपक)

● स्थायी

०			×		२	
					सारे	मप
नि	–	सां	पनि	सांरें	नि़	ध
प	ध	म	ग	रे	सारे	सारेमप
सा	रे	म	रेम	गरे	ग सा	नि़ सारेमप

● अंतरा

०			×		२	
म	–	प	नि़	–	पनि	सांरें
सां	–	सां	रें	नि	सां	–
नि	सां	रें	मं	गं	रें	सां
रें	नि़	ध	प	ध	म	गरे
ग	नि़	सा	रेम	गरे	सारे	सारेमप

● तालबद्ध तानें

१. ° निसारेम पनिसांरें सांनिधप । × मगरेसा रेमपनि
२ सां–पनि सां–पसां ।।

२. रेमगरे मगरेसा रेमपनि । सांरेंसांनि़ पनिसांरें ।
सांनि़धप मगरेसा ।। नि़सारेम सारेमप निसांनि़सा ।
रेमसारे मपनिसां । नि़सारेम सारेमप ।।

०   ×
३. निसांरेंगं   मंगंरेंसां   पनिसांरें । सांनिधप   रेमगरे ।
२
मगरेसा   प़नि़सा– ।। नि़सारेम   पनिसांरें   सां–नि़सा ।
रेमपनि   सांरेंसां– । नि़सारेम   पनिसांरें ।।

४. प़नि़सारे   मपनिसां   रेंमंगंरें । मंगंरेंसां   पनिसांरें ।
सांनिधप   मगरेसा ।। नि़–प़नि़   सारेसांनि   धपमग ।
रेसानि़–   पनिसांरें । सांनिधप   मगरेसा ।।

५. रे–सारे   म–रेम   प–मप । निपनि   सांनिसां ।
रेंसांरें   मं–रेंमं ।। गरेंनिसां   निधपम   गरेसा– ।
निधपम   गरेसा– । निधपम   गरेसा– ।।

६. निसांरेंमं   गंरेंसांनि   रेंसांनिध । पधमग   रेमगरे ।
मगरेसा   रेमपनि ।। सां–पसां   नि–––   रेमपनि ।
सां–पसां   नि––– । रेमपनि   सां–पसां ।।

७. रेमगरे   मपनिसां   रेंसांनिसां । रेंनिधप   मगरे,म ।
गरेनि़सा   प़नि़सा– ।। प़नि़सारे   मपनिसां   नि–प़नि़ ।
सारेमप   निसांनि– । प़नि़सारे   मपनिसां ।।

८. प़नि़सारे   मपनिसां   रेंमंपंमं । गंरेंनिसां   रेंनिधप ।
मगरे,म   गरेनि़सा ।। रेमपनि   मपनिसां   नि,–रेम ।
पनि,मप   निसांनि,– । रेमपनि   मपनिसां ।।

९. मपनिसां   रेंगंमंगं   रेंमंपंमं । गंरेंमंगं   रेंमंगंरें ।
सांनिधप   मगरेसा ।। सारेमप   सारेमप   नि,–सारे ।
मपसारे   मपनि,– । सारेमप   सारेमप ।।

१०. प़नि़सारे   नि़सारेम   सारेमप । रेमपनि   मपनिसां ।
पनिसांरें   निसांरेंमं ।। सांरेंमंपं   निंसांरेंनिं   सांनिंधंपं ।

×　　　　　　　　　　२
मंगंरेंसां　ऩिधपम　।　गरेसाऩि़　प़ऩि़सा　॥

०
ऩि़सारेम　पनिसांरें　सांऩिधप　।　मगरेसा　नि---।
ऩि़सारेम　पनिसांरें　॥　सांऩिधप　मगरेसा　नि---।
ऩि़सारेम　पनिसांरें　।　सांऩिधप　मगरेसा ॥

०　　　　　　　　　　　　　　　×
११. मपनिसां　रेंमंगंरें　गंनिसांरें　।　ऩिधपम　गरेऩि़सा
२
रेऩि़ध़प़　म़प़ऩि़सा　॥　रेमपनि　सां–सांसां　नि,–रेम।
पनिसां–　सांसांनि–　।　रेमपनि　सां–सांसां ॥

१२. मगरे–　मपऩिध　पऩिधप　।　निसांरेंमं　गंरेंऩिध　।
पधमग　रेमगरे　॥　सारेऩि़सा　सारेमप　निसांनिसां।
सारेमप　निसांनिसां　।　सारेमप　निसांनिसां ॥

१३. मगरेम　गरेऩि़सा　मंगंरेंमं　।　गंरेंनिसां　रेंऩिधप।
ऩिधपम　धपमग　॥　पमगरे　मगरेसा　रेऩि़ध़प़।
मगरे–　सारेमप　।　सारेमप　सारेमप ॥

१४. सांनिसांरें　सांऩिधप　मपऩिध　।　पमगरे　ग–ऩि़सा।
रेमपनि　सांरेंसांऩि　॥　धपमग　रेसाऩि़सा　रेमपनि।
सां–निसां　नि---　।　निसांनि–　--निसां ॥

१५. रेमपनि　सारेमप　ऩि़सारेम　।　पनिसांरें　मपनिसां।
रेंमंगंरें　मंगंरेंसां　॥　ऩिधपम　गरेमग　रेसाऩि़सा।
रेऩि़ध़प़　ऩि़सारेऩि़　।　सारेऩि़सा　प़ऩि़सा　॥
रेमपनि　सां–रेम　पनिसां–　।　रेमपनि　सांसां,रेम　।
पनिसां–　रेमपनि　॥　सां–रेम　पनिसांसां　सां–रेम।
पनिसां–　रेमपनि　।　सां–रेम　पनिसांसां ॥

गत, राग देश (ठुमरी-अंग)

ताल दादरा

● **स्थायी**

×			०		
(सां) नि॒	ध	प	म	ग	रे
(रे) नि़	सा	रे	म	ग	रे
(रे) सा	रे	म	प	नि	सां
(रें) नि॒	ध	प	म	ग	रे

● **अंतरा**

×			०		
म	प	नि	सां	रें	नि
सां	–	सां	रें	नि	सां
नि	सां	रें	मं	गं	रें
गं	नि	सां	नि॒	ध	प
रें	नि॒	ध	नि॒	ध	ध
प	म	रे	म	ग	रेसा

राग अल्हैया बिलावल

राग-परिचय : ठाठ : बिलावल, वर्जित स्वर : आरोह में शुद्ध मध्यम, जाति : षाडव-संपूर्ण, विकृत स्वर : अवरोह में कोमल निषाद का अल्प प्रयोग, वादी स्वर : धैवत, संवादी स्वर : गांधार, प्रकृति : न चंचल और न गंभीर ही, रस : शांत-धीर, गायन-वादन समय : प्रातःकाल का प्रथम प्रहर।

विशेष विवरण

अल्हैया बिलावल की उत्पत्ति बिलावल ठाठ से सर्वमान्य है। इस राग में सभी स्वर शुद्ध लगते हैं। कोमल निषाद का प्रयोग किंचित् मात्रा में विवादी के नाते होता है। कुछ गुणीजन इसे संपूर्ण जाति का मानकर गाते-बजाते हैं। परन्तु हमारे विचार से इस राग को षाडव-संपूर्ण जाति का मानकर गाना-बजाना उचित है, क्योंकि आजकल के प्रचार में यही प्रचलित है। ग, प, ध <u>नि</u> ध प, ध ग – प – म ग, म रे सा ग प ध के साथ कोमल निषाद का संवाद श्रुति-मधुर ज्ञात होता है। बिलावल के अन्य प्रकार भी प्रचार में हैं, जैसे देवगिरि बिलावल, यमनी बिलावल, सरपरदा बिलावल, कुकुभ बिलावल तथा शुक्ल बिलावल आदि। ये राग बिलावल-ठाठ से ही उत्पन्न हुए हैं। इस राग का चलन अधिकतर तार सप्तक में ही होता है। इस दृष्टि से यह उत्तरांग-प्रधान राग कहा जाता है। अल्हैया बिलावल के आरोह में गांधार स्वर का प्रयोग वक्र रूप में किया जाता है। उदाहरणार्थ : म ग म रे, ग म, रे ग म प, म ग म रे, इन्हीं स्वरों द्वारा यह राग शीघ्र ही स्पष्ट हो जाता है। यह राग बहुत ही मधुर और लोकप्रिय है। इस राग को कर्नाटक संगीत-पद्धति में 'शंकराभरणम्' कहते हैं।

आरोह : सा रे ग प ध नि सां।

अवरोह : सां नि प ध, ध <u>नि</u> ध प, म ग म रे सा।

मुख्य अंग : ग प ध प, ध <u>नि</u> ध प, म ग म रे, सा रे सा।

राग-चलन : सा, रे ग प, म ग म रे, ग प ध <u>नि</u> ध प, म ग म रे सा रे नि़ सा, ग प ध नि सां, सां नि ध <u>नि</u> ध प ग <u>नि</u> ध प, म ग म रे, ग रे म ग, म रे सा नि़ सा।

स्वर-आलाप

१. सा– – –, नि़ सा – – –, नि़ नि़ ध़ नि़ सा – – –, ध़ नि़॒ ध़ प़ ध़ नि़ सा, नि़ सा – – –, नि़ ध़, प़ ध़, प़ ध़, प़ नि़ ध़ नि़ सा – – –, नि़ नि़ सा – – –, नि़ सा – – –, सा रे सा – – –, ग रे ग प, म ग म रे, ग नि़ सा नि़ सा – – –, नि़ सा – – –, रे ग –, सा रे ग – – –, ग म रे सा – – –, ग म ग प म ग म रे सा – – –, रे नि़ ध़ नि़ सा – – –, सा रे, रे ग, ग प, ग म, रे ग, म रे, सा रे सा – – – –।

२. सा रे सा ग रे ग, सा रे ग प – – –, म ग म, म ग म रे सा ध़, ध़ नि़॒ ध़ प़, ध़ नि़, प़ नि़ ध़ नि़ ध़ नि़ ध़ सा – – –, नि़ सा – – –, सा रे ग प – – –, म ग म रे ग रे ग प – – –, ध ग – – – म रे म ग म रे, ग नि़ –, ध़ नि़ सा – – –, नि़ सा – – –, सा रे ग प – – –, ध नि, ध ग – प – – –, सा रे, रे ग, ग प, ध ध, प म ग ध प – – ग ग, रे ग सा रे ग प – – –, म रे ग म रे – – –, सा नि़ ध़ नि़॒ ध़ प़ ध़ नि़, नि़ सा सा – – –, नि़ सा – – –, ग रे ग प –, प ध, ध नि॒ ध ग प, म ग म रे सा – – –, ग प –, ध नि॒ ध प, म ग म रे सा रे सा।

३. ग रे सा, ग प ध नि, सा रे ग प, ग प ध नि, रे सा ग रे ग प, सा रे ग प ध नि – सां ध नि सां – – –, नि सां – – –, सा रे ग प ध नि सां – रें रें सां नि सां –, ध नि॒ ध प, ग प ध नि सां नि सां नि ध नि सां – –, ध नि॒ ध प ध ग – प, म ग म रे, रे रे ग म रे, सा रे सा।

४. ग रे ग प, सा सा रे ग –, रे रे ग प, ग ग प ध, सा रे ग प ध नि नि सां – – –, सां रें सां – – –, सां ध – प, ग प ध नि सां नि ध नि॒ ध प – ग प ध नि सां – – –, मं गं मं रें, गं मं रें सां – – –, नि सां सां ध नि॒ ध प –, ग प –, प नि, ध प –, म प, ध ग –, म रे ग प, सां ध नि सां – – –, नि सां – – –, सा ध नि सां – नि ध प, ग प ध नि॒ ध प ध ग –, म – ग म रे, सा रे सा –, ध़ नि़॒ ध़ नि़॒ ध़ प़ ध़ नि़ सा – – –।

५. सा रे ग रे ग प ध प, ध नि सां नि, ग प ध नि, सा रे ग प ध नि सां –, रें गं मं गं, मं रें सां रें, गं रें गं पं, मं गं रें गं, रें मं गं पं, मं गं मं रें सां – नि सां –, सां रें ध नि॒ ध, ध ग – प, ग प नि ध नि, सां नि ध प, ध ध प म प –, म ग म रे ग प म ग म रे, सा रे सा ध़ नि़ ध़ प़, ध़ नि़ नि़, ध़ नि़ सा – – –, नि़ सा – – – सा नि़ रे सा – – – ।

निर्बन्ध तानें

१. सा, ग रे ग प म ग म रे सा –, सा रे ग रे ग प ध प म ग म रे सा रे सा –, ग प ध प म ग म रे, ग प ग ध प ध म प म ग म रे म रे, म ग रे सा, सा रे नि़ सा म ग रे ग ग प म ग, म ग म रे सा रे सा –, ध़ नि़॒ ध़ प़ ध़ नि़ सा –, ध़ नि़ सा रे ग म ग प म ग म रे सा रे सा –, रे ग प ध प म ग म ग प म ग, रे म ग रे म ग ग प म ग ग प म ग रे सा नि़ सा ध़ नि़॒ ध़ नि़ ध़ प़ ध़ नि़ सा – सा नि़ रे सा ग रे ग प म ग रे सा ।

२. सा रे ग प ग रे, ग प ध नि ध प, ध प म ग म रे, ग प म ग रे सा नि़ सा, ध़ नि़ सा नि़ ध़ प़ म़ प़ ध़ नि़ सा रे ग प ध नि ध ग – म ग रे सा –, ग रे ग प ग ध प ग म ग म रे ग म ग रे म रे सा –, सा रे ग प ग रे ग प, ग प ध नि सां नि ध प ग प ध नि ध प म प, म ग म ग रे सा नि़ सा।

३. सा रे ग प रे ग प ध, ग प ध नि सां रें सां नि ध प ध नि॒ प ध म प ग म, म ग म रे म ग रे सा – –, सा रे ग प ध नि सां रें, सां नि ध नि॒ ध प म प, सां नि ध नि॒ ध प म प सां रें सां नि ध नि॒ ध प म प ग प म ग म ग रे सा नि़ सा, सा रे ग प ध नि सां नि ध प ध नि॒ ध प म ग रे ग म ग रे सा – –, नि़ सा ध़ नि़॒ ध़ प़ म़ प़ ध़ नि़ सा – – ।

४. सा रे ग प ध नि सां रें, ग प ध नि सां रें गं रें, मं गं मं रें मं गं रें सां नि ध प म ग प म ग म ग रे सा नि़ सा –, रे रे सा रे नि़ सा, ग ग प ध म प, रें रें सां रें नि सां, गं पं मं गं रें मं

गं रें गं मं गं रें सां नि ध प ध नि सां नि ध नि ध प म रे म ग रे सा नि़ सा नि़ ध़ प़ ध़ नि़ सा, ध़ नि़ सा रे म ग म रे ग प म ग म रे सा –।

५. ग म रे ग प ध नि सां रें गं पं मं पं गं मं गं रें सां, नि ध प ध नि सां नि ध, प म प ग म ग म रे सा रे सा –, प़ ध़ नि़ सा रे ग प ध नि̱ ध प म ग प ध नि सां रें गं पं गं मं रें गं मं गं मं रें सां रें ग मं रें सां पं गं मं गं रें सां नि सां नि ध ग प ध नि̱ ध प ग प म ग म ग रे ग सा रे ग प म ग म रे, सा नि़ ध़ नि़̱ ध़ प़ म़ प़ ध़ नि़ सा रे सा नि़ सा –।

गत, राग अल्हैया बिलावल

(तीनताल)

• स्थायी

×	२	०	३
		रे ग	प नि ध नि
रें सां – – रें	सां नि ध प	ध –प –, रे ग	प नि ध नि̱
ध –प – ध	नि̱ –ध – प	म ग रे,	

• अंतरा

×	२	०	३
		ग	प नि ध नि
रें रें सां – – सां	सां रें गं मं	रें –सां – रें	सां नि ध प
ध –प – ग	नि̱ –ध – प	म ग रे,	

• तालबद्ध तानें

	×					२			
१.	गप	धनि	सांरें	सांनि	।	धनि̱	धप	मग	मरे
	०					३			
	मग	रेसा	नि़सा	–	।	गत			

×   २   ०

२. गप धनि॒ धनि सांरें। गंमं मंरें सांरें सांनि। धप मप गप धनि

३

गप धनि गप धनि ।।

३. सारे गप मग मरे। गप धनि सांनि धप। मग मरे सा–, गत

४. सारे गप गप धनि। धनि सांरें गंपं मंगं। मंगं मंरें सांरें सांनि।
धनि॒ धप मग गरे ।। सारे गप गप धनि। सां – सारे गप।
गप धनि सां –। सारे गप गप धनि ।।

५. सांरें गंरें मंगं मंरें। सांरें सांनि धनि॒ धप। मग मरे मग रेसा।
गप धनि सांरें सांनि ।। सां– धनि सां– गप। धनि सांरें सांनि सां–।
धनि सां– मप धनि। सांरें सांनि सां– धनि ।।

६. मग मरे सांनि धप। गप धनि धनि सांरें। गंमं मंगं मंगं रेंसां।
रेंसां निसां धनि॒ धप ।। मग मरे गप धनि। सां – मग मरे।
गप धनि सां –। मग मरे गप धनि ।।

७. गप धनि सांरें सांनि। सांरें गंपं मंगं रेंसां। धनि सांरें सांनि धप।
गप धप धनि धनि ।। सां – सां गप। धप धनि धनि सां।
सां सां गप ध,प। धनि धनि सां सा ।।

८. गप धनि सांरें गप। धनि सारे गप धनि। सारें सांरें गंपं मंगं।
मंरें सांरें निसां धनि ।। सांनि धनि॒ धप मग। मरे मग रेसा नि॒सा।
गप धनि सां गप। धनि सां गप धनि ।।

९. सारे गप धनि सांरें। गंपं मंगं मंगं मंरें। मंगं रेंसां निध पम।
रेम गरे मग रेसा ।। सारे गप धनि सां। सांसां सांसा रेग पध।
निसां –सां सांसां सारे। गप धनि सां– सांसां ।।

१०. –ग पनि॒ धनि॒ धप। मप मग मरे सारे। गप गप धनि सां।

३ × २
सारे गप गप धनि ।। गप धनि सां सारे । गप गप धनि गप ।
० ३
धनि सां सारे गप । गप धनि गप धनि ।।

११. धनि सांनि धप मप । गप धनि सांनि धप । मग रेसा नि़सा ग ।
प नि ध नि ।।

१२. प धनि सांरें सांनि । धप मग पम गरे । मग रेसा नि़सा ग । गत

१३. सारें गरें सांनि धप । गप धनि़ धप गप । मग मरे मग रेसा ।
धनि सां,ध निसां धनि ।।

१४. सारे गप गरे गप । धनि़ धप धनि सांरें । सांनि धप मग रेसा ।
गप धनि सां धनि ।।

१५. सांनि सांरें सांनि धप । धप मग रेसा नि़सा । गप धनि सां गप ।
धनि सां, गप धनि ।।

१६. सां रें सांनि धप । धनि़ धप मग रेसा । गप धनि सांरें सांनि ।
सां – – सां ।।

१७. साग रेग पध निसां । रेंगं पंमं गंरें सांनि । धप मग रेसा नि़सा ।
मप धनि सांरें सांनि ।। सां धनि सां गप । धनि सांरें सांनि सां ।
धनि सां गप धनि । सांरें सांनि सां धनि ।।

१८. गप धप गप धनि । पध निसां गंरें गंमं । गंरें सांनि धप मग ।
रेसा नि़सा ध़नि़ सा ।। गप धनि सां धनि । सां – गप धनि ।
सां धनि सां – । गप धनि सां धनि ।।

१९. सारे गप धनि सांरें । गप मग रेसा निध । पम गरे सा – । गत

२०. धनि सांरें सांनि धप । गंपं मंगं मंगं रेंसां । निध पम गप धनि ।
सांनि धप मग रेसा ।। निसां धनि सां, धनि । सां – नि़सा ध़नि़ ।
सा, ध़नि़ सा – । निसां धनि सां धनि ।।

गत, राग अल्हैया बिलावल (तीनताल)

• स्थायी

×	२	०	३
			– गप ध नि
रें सां – – नि	सांरें सांनि धनि धप	म ग रे सा	– ग प म
ग प ध नि	– सां रें सां	नि ध प म	– गप ध नि
सां – – नि	सांरें सांनि धनि धप	म ग रे सा	–,

• अंतरा

×	२	०	३
			– गप ध नि
सां – – सां	– नि सां रें	सां – – –	– गं पं मं
गं पं ध नि	– सां रें सां	नि ध प म	– गप ध नि
सां – – नि	सांरें सांनि धनि धप	म ग रे सा	–

• तालबद्ध तानें

×   २   ०

१. सांनि धनि सांरें सांनि । धनि धप मग मरे । मग रेसा गप धप ।

३

– गप ध नि ।।

२. सांरें गंरें सांनि धप । मग मरे मग रेसा । गप धनि सां गप ।
धनि सां गप धनि ।।

३. सांरें सां,ग पंमं गंरें । सांनि धप मग रेसा । गप धनि सां, धनि ।
सां, गप ध नि ।।

×   २   ०
४. गप मग मरे गप । धनि सांरें सांनि धप । मग रेसा गप धनि ।
३
– गप ध नि ।।

५. गं रेंगं रेंसां निध । पम गरे सानि़ ध़प़ । धनि सारे गप धप । मग मरे गरे सा ।। गप धनि सां धनि । सां – गप धनि । सां धनि सां – । गप धनि सां धनि ।।

६. सां रें सांनि धप । धप मग मग मरे । सारे गप धनि सां । – गप ध नि ।।

७. पध निसां धनि सांरें । सांरें गंपं मंगं गंरें । मंगं रेंसां निध पम । धप मग रेसा नि़सा ।। गप धनि॒ –ध –नि । सां – गप धनि॒ । ध नि सां – । गप धनि॒ –ध –नि ।।

८. प़ध़ नि़सा नि़ध़ सारे । गप गरे गप धनि॒ । धप धनि सांरें सांनि । सांरें गंमं गंरें सांनि ।। धप मग रेसा नि़सा । गप धनि सां धनि । गप धनि सां धनि । गप धनि सां धनि ।।

९. सां निसां रेंगं पंमं । गंरें सांनि धप मग । रेसा नि़सा गरे गप । – गप ध नि ।।

१०. साग रेग प धनि । सांरें निसां धनि॒ पध । मप गम गरे सा । गप धनि॒ –ध –नि ।। सां सा सां गप । धनि॒ ध नि सां । सा सां गप धनि॒ । –ध –नि सां सा ।।

झाला, राग अल्हैया बिलावल

तीनताल

×				२				०				३			
रे		रे	रे	सा	रे	रे		सा		रे		नि़		नि	
सा	नि़	सा	सा	नि़	नि़	सा	–	नि़	–	सा	–	सा	–	सा	–
तू	ऊ	तू	ऊ	तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ

×   २   ०   ३

रे   प   ध   नि़ ग
सा – ग रे | ग – प – | म ग म रे | सा रे ग –
तू ऽ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ | तू ऊ तू ऊ | तू तू ऊ ऽ

ध   म म ध   म नि   रे ग ध
प – प – | ग ग प – | ग ध प – | सा रे ग प
तू ऽ तू ऽ | तू ऊ तू ऽ | तू ऊ तू ऊ | तू ऊ तू ऊ

म सां सां   ध   म
ग नि॒ ध प | म ग प – | म ग म रे | ग – प –
तू ऊ तू ऊ | तू ऊ तू ऽ | तू ऊ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ

म ध नि सां   नि   नि   ग नि़ नि़
ग प ध नि॒ | ध – प – | म ग म रे | सा – सा –
तू ऊ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ | तू ऊ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ

ग नि़ ग   रे ग म ध   म नि   म सां
रे सा रे ग | सा रे ग प | म ध प – | ग नि॒ ध प
तू ऊ तू ऊ | तू ऊ तू ऊ | तू ऊ तू ऽ | तू ऊ तू ऊ

म   नि   नि   म ध नि सां   रें   नि
ग ध ग नि॒ | ध – प – | ग प ध नि | सां – सां –
तू ऊ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ | तू ऊ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ

सां सां सां रें   नि   सां सां रें रें   रें   रें
नि – नि नि | सां – सां – | नि नि सां सां | नि – सां –
तू ऽ तू कू | तू ऽ तू ऽ | तू कू तू कू | तू ऽ तू ऽ

× २ ० ३

नि सां रें गं नि सां रें रें नि
ध नि सां रें | सां नि सां – | गं रें मं गं | मं रें सां –
तू तू तू ऊ | तू ऊ तू ऽ | तू ऊ तू ऊ | तू ऊ तू ऽ

रें गं पं
रें गं पं – | गं – पं – | सां रें गं पं | मं गं मं रें
तू कू तू ऽ | तू ऽ तू ऽ | तू ऊ तू ऊ | तू ऊ तू ऊ

रें नि रें रें नि रें नि नि
सां – सां – | नि – सां – | सां – सां – | सां – सां –
तू ऽ तू ऽ | तू ऽ कू ऽ | तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ

पं मं रें पं नि गं पं
गं रें सां रें | गं पं मं गं | सां रें गं पं | मं गं मं रें
तू ऊ तू ऊ | तू ऊ तू ऊ | तू ऊ तू ऊ | तू ऊ तू ऊ

रें गं नि सां रें रें नि सां
सां रें सां – | ध नि सां – | ध नि॒ ध प | म ग म रे
तू ऊ तू ऽ | तू कू तू ऽ | तू ऊ तू ऊ | तू ऊ तू ऊ

प नि प रे सां नि ग नि़
ग ध प – | ग प ग नि॒ | ध प म ग | म रे सा –
तू ऊ तू ऽ | तू ऊ तू ऊ | तू ऊ तू ऊ | तू ऊ तू ऽ

सा रे सा रे नि़ सा सा सा सा रे
नि़ – सा – | नि़ – सा – | ध़ नि़॒ ध़ प़ | ध़ नि़ सा –
तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ | तू ऊ तू ऊ | तू ऊ तू ऽ

×	२	०	३
सा रे नि़ सा	नि़ रे	नि़ रे	नि़ रे
नि़ सा ध़ नि़	सा – ध़ नि़	सा – सा –	सा – सा –
तू ऊ तू ऊ	तू ऽ तू ऽ	तू ऽ तू ऽ	तू ऽ तू ऽ

×				२			
रेसा	रेग	सारे	गप	गप	धनि	सांरें	गंपं
तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ
०				३			
मंगं	मंरें	सांरें	निसां	धनि़	धप	मग	मरे
तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ

×	२	०	३
रे नि़	रे रे		नि़ सा रे
सा – सा –	नि़ – सा –	ध़ नि़ ध़ प़	ध़ नि़ सा –
तू ऽ तू ऽ	तू ऽ तू ऽ	तू ऊ तू ऊ	तू ऊ तू ऽ

×				२			
गप	धनि	सांरें	गंपं	मंगं	पंमं	रेंसां	निसां
तूऊ	ऊऊ	तूऊ	ऊऊ	तूऊ	ऊऊ	तूऊ	ऊऊ
०				३			
धनि़	धप	धनि	सांरें	सांनि	धप	मग	मरे
तूऊ	ऊऊ	तूऊ	ऊऊ	तूऊ	ऊऊ	तूऊ	ऊऊ
सासा	सा,रे	रेरे,	गप	रेरे	गप	धनि़	धप
तूऊ	ऊतू	ऊऊ	तूऊ	तूऊ	ऊऊ	तूऊ	ऊऊ
मग	मरे	गग	ग,प	पप,	धध	ध,नि	निनि
तूऊ	ऊऊ	तूऊ	ऊतू	ऊऊ	तूऊ	ऊ,तू	ऊऊ

×   २

सांसां सां,रें रेंरें, मंगं | गं,पं पंपं, मंमं मं,गं

तूऊ ऊतू ऊऊ तूऊ | ऊ,तू ऊऊ, तूऊ ऊ,तू

०   ३

गंगं, मंमं मं,रें रेंरें, | सांसां सां,नि निनि, सांसां

ऊऊ तूऊ ऊ,तू ऊऊ | तूऊ ऊ,तू ऊऊ तूऊ

×   २   ०   ३

सां रें गं नि रें सां सां रें नि

नि – सां – | रें – सां – | नि – नि नि | सां – सां –

तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ

गं पं सां रें

रें – गं – | पं – पं – | निं – सां – | सां – सां –

तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ

निं सां

धं – निं – | धं निं सां रें | सां – सां – | निं – सां –

तू ऽ तू ऽ | तू ऊ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ

निं – धं – | पं – पं – | मं गं मं रें | सां – सां –

तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ | तू ऊ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ

नि नि सां – | नि – सां – | सां – सां – | सां – सां –

तू ऊ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ

×   २

धनि सांरें सांनि धप | धनि धप मग मरे

तूऊ ऊऊ तूऊ ऊऊ | तूऊ ऊऊ तूऊ ऊऊ

०　　　　　　　　　　　　　　　　३
सारे　गप　गनि॒　धप | मग　मरे　मग　मरे
तूऊ　ऊऊ　तूऊ　ऊऊ | तूऊ　तूऊ　तूऊ　ऊऊ

×　　　　　२　　　　　　　०　　　　　　३
रे ग प – | म ग म रे | सा – नि॒ सा | ग नि॒ सा –
तू ऊ तू ऽ | तू ऊ तू ऊ | तू ऽ तू ऊ | तू ऊ तू ऽ
नि॒ – सा – | सा – सा – | रे नि॒ सा – | सा – सा –
तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ | तू ऊ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ

रे नि॒ सा सा　　　　　　　नि॒　रे　　　　नि॒　रे
नि॒ सा ध॒ नि॒ | ध॒ – प॒ – | ध॒ नि॒ सा नि॒ | सा – सा –
तू ऊ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ | तू ऊ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ

ग नि॒ प　　　　　　　　　　ग नि॒　　　रे　रे
रे सा ग रे | ग प म ग | म रे सा – | नि॒ – सा –
तू ऊ तू ऊ | तू ऊ तू ऊ | तू ऊ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ

झाला-समाप्ति की तान व तिहाई

×　　　　　　२　　　　　　　　०
रेसा रेग सारे गप। धनि सांरें गंरें गंपं। मंगं मंरें सांरें सांनि
३
धनि॒ धप मग मरे ।। सारे गप गप धनि । सां– गप धनि सां– ।
गप धनि सां– रेसा । रेग सारे गप धनि ।। सांरें गंरें गंपं मंगं ।
मंरें सांरें सांनि धनि॒ । धप मग मरे सारे । गप गप धनि सां– ।।
गप धनि सां– गप । धनि सां– रेसा रेग । सारे गप धनि सांरें ।
गंरें गंपं मंगं मंरें ।। सांरें सांनि धनि॒ धप । मग मरे सारे गप ।
गप धनि सां– गप । धनि सां– गप धनि ।।

गत, राग अल्हैया बिलावल

झप ताल

• स्थायी

×		२			०		३		
							(म) ग	प	धनि
(रें) सां	–	(सां) नि	ध	प	म	ग	म	रे	सा
(म) ग	प	ध	नि॒	ध	(सां) नि	(रें) सां	नि	ध	प
(म) ग	नि॒	ध	प	ध	प	म	रेसा	गप	धनि

• अंतरा

×		२			०		३		
							गप	धनि	सांरें
(रें) सां	–	(रें) सां	नि	सां	मं	गं	मं	रें	सां
ध	नि॒	ध	ग	प	म	ग	प	ध	नि
(रें) सां	(मं) रें	(मं) गं	मं	गं	मं	गं	मं	रें	सां
ध	(सां) नि॒	ध	प	म	ग	म	रेसा	गप	धनि

• तालबद्ध तानें

	×		२			०		३		
१.	सारे	गरे	गप	धप	धनि	सांरें	सांनि	धनि॒	धप	मग
	सारे	सा–	गप	धनि	सां–	गप	धनि	सां–	गप	धनि

	×		२			०		३		
२.	गरे	गप	सारे	गप	गरे	गप	धनि	सांरें	गंरें	मंगं
	मंरें	सांनि	धप	मग	रेसा	नि़सा	गप	ध,प	धनि,	धनि
३.	सारे	गप	धनि	सांरें	गंपं	मंगं	मंरें	सांनि	धनि	धप
	मग	मरे	नि़सा	सारे	गप	धनि	सां–	धनि	सां–	धनि
४.	गप	धनि	धप	गप	मग	मरे	सनि़	ध़प़	ध़नि़	सा–
	गप	धनि	सां–	––,	गप	धनि	सां–	––,	गप	धनि
५.	सारे	गप	धग	–प	धनि	धनि	धप	धनि	सांरें	गंपं
	मंगं	मंरें	सांनि	धप	मग	मरे	सानि़	सा–	गप	धनि
	सां–	धनि	गप	धनि	सां–	धनि	गप	धनि	सां–	धनि
६.	गप	धनि	सांरें	सांनि	धनि	धप	गप	मग	रेसा	नि़सा
	गप	धनि	सांनि	सां,ग	पध	निसां	निसां	गप	धनि	सांनि
७.	मग	मरे	सारे	गप	धनि	धप	धग	–प	धनि	सांरें
	सांरें	सांनि	धप	मग	मरे	सा–	गप	धनि	सां–	धनि
	सां–	गप	धनि	सां–	धनि	सां–	गप	धनि	सां–	धनि
८.	सारे	गप	धनि	सांरें	गंपं	मंगं	मंरें	सांनि	धप	मग
	मग	सारे	नि़सा	रेग	प–	गप	ध–	सारे	गप	धनि
९.	सारे	गप	रेग	पध	गप	धनि	सांरें	सांनि	धप	मग
	मरे	सा–	गप	धनि	सारे	गप	धनि	सारे	गप	धनि
१०.	मग	रेग	मरे	सारे	गप	धनि	धनि	धप	धनि	सांरें
	गंपं	मंगं	मंगं	रेंसां	निसां	निध	पध	पम	गप	मग

×		२			०		३		
मरे	सानि़	धप़	धनि़	सारे	नि़सा	गप	धनि	सांसां	धनि
सां–	गप	धनि	सांसां	धनि	सां–	गप	धनि	सांसां	धनि
११. धनि़	सारे	गप	धनि	सांरें	गरें	मंगं	मंरें	सांरें	निसां
धनि़	धप	धनि	सांनि	धप	मग	मरे	म–	रेसा	नि़सा
गप	धनि	सां–	सारे	गप	धनि	सां–	गप	धनि	सां–
सारे	गप	धनि	सां–	गप	धनि	सां–	सारे	गप	धनि

गत, राग अल्हैया बिलावल (एकताल)

● स्थायी

×		०		२		०		३		४	
						ग	प	ध	नि	सां	रें
रें सां	–	ध नि	ध	प	म	ग	प	सां ध	नि़	ध	प
म	ग	म		नि़	सा	ग	प	ध	नि	सां	रें
धनि	सांरें	सांनि	धप	मग	रेसा						

● अंतरा

×		०		२		०		३		४	
						ग	प	ध	नि	सां	नि
रें सां	–	सां	गं	रें	सां	गं	पं	मं	गं	रें	सां
धनि़	धप	मग	मरे	सानि़	सा						

● तालवद्ध तानें

×		०		२		०	
१. सांनि	सांरें ।	सां	मंगं ।	रेंमं	गं ।	मंगं	रेंसां

३	४	×	०	
निध	पम । गरे	सा ।। गप	धनि । सां	–
२	०	३	४	
–	गप । धनि	सां । –	– । गप	धनि ।।

२.	गप	धनि॒ । धप	धनि । सांरें	सांनि । सांरें	गंमं ।
	गरें	सांनि । धप	मग ।। मरे	सारे । गप	धनि ।
	सां	सारे । गप	धनि । सां	सारे । गप	धनि ।।
३.	गप	धनि । सांरें	गंमं । गंरें	सांनि । धप	मग ।
	मग	रेसा । गप	धनि ।। सां	सा । सां	गप ।
	धनि	सां । सा	सां । गप	धनि । सां	सा ।।
४.	सांनि	धनि॒ । धप	गप । मग	रेसा ।। गप	धनि ।
	सांरें	सांनि । धप	मग ।। सारे	ग,सा । रेग	सारे ।
	गप	ध,ग । पध	गप । धनि	सांध । निसां	धनि ।।
५.	मग	रे,प । मग	धप । मनि	धप । धनि	सांरें ।
	सांनि	धप । मग	रेसा ।। सारे	मरे । धनि	सांरें ।
	सांनि	धनि॒ । धप	गप । मग	मरे । मग	रेसा ।।
	निसां	सारे । गप	धनि । सां	सारे । गप	धनि ।
	सां	सारे । गप	धनि ।।		
६.	गप	धनि । सांरें	निसां । धनि॒	पध । मप	गम ।
	रेसा	नि़सा । गप	धनि ।। सांरें	गंपं । मंगं	मंरें ।
	सांनि॒	धप । गप	धनि । सां	धनि । सां	धनि ।।
७.	सारे	गरे । गप	धप । धनि॒	धप । धनि	सांरें ।
	सांनि	धनि । सांनि	धप ।। सांनि	धप । मग	रेसा ।
	सांनि	धप । मग	रेसा । सांनि	धप । मग	रेसा ।।

×　　　　　०　　　　　२　　　　　०

८. गरे　सारे । गप　धप । धनि　सांरें । गंरें　सांरें ।

३　　　　४

गंपं　मंगं । रेंसां　निध ॥ पम　गरे । सानि़　सा ।

गप　धनि । सां　गप । धनि　सां । गप　धनि ॥

९. ध़नि़　सारे । सानि़　सारे । गप　गरे ॥ गप　धनि॒ ।

धप　धनि । सांरें　सांनि ॥ सांरे　गंपं । मंगं　रेंसां ।

निध　पम । गरे　सानि़ । सा　ध़नि़ । सा　धनि ॥

सां　– । –　ध़नि़ । सा　ध़नि़ । सा　– ।

–　ध़नि़ । सा　धनि ॥

१०. सांरें　गंपं । मंगं　मंरें । सांनि　धप । गप　धनि ।

सांरें　सांनि । धप　मग ॥ रेसा　नि़ध़ । प़ध़　नि़सा ।

गरे　गप । धप　गप । मग　मरे । मग　रेसा ॥

सा　धनि॒ । ध　नि । सां–　सा– । सां–　– ।

–　गप । धनि॒　–ध ॥ –नि　सां । सा　सां ।

–　– । गप　धनि॒ । ध　–नि । सां,　सा ॥

गत, राग अल्हैया बिलावल

ताल रूपक

● स्थायी

०			×		२	
रें सां	रें नि	रें सां	धनि॒	धप	गप	धनि
रें सां	रें नि	रें सां	सां ध्र	नि॒	ध	प
म	ग	मरे	म ग	रे	सा नि़	रे सा
म ग	रे	ग	मग	रेसा	गप	गपधनि

● अंतरा

०			×		२	
रें	रें	रें	म			
सां	नि	सां	ग	प	धनि	सांरें
रें		रें	गं	सां	रें	
सां	–	सां	रें	नि	सां	–
	मं		गं		रें	रें
मं	गं	मं	रें	सां	नि	सां
नि॒	सां					
ध	नि॒	धप	मग	मरे	सारे	गपधनि

● तालबद्ध तानें

	०			×		२	
१.	सांनि	सांरें	सांनि	धप	धनि॒	धप	मग
	मरे	मग	रेसा	गप	ध,प	धनि,	धनि
२.	सारे	गरे	गप	धप	धनि	सांरें	सांनि
	धप	मग	रेसा	गप	धनि	सां–	धनि
३.	गरे	गप	धनि	सांरें	गंरें	सांनि	धप
	मग	रेसा	धनि	सां–	ध़नि़	सा–	धनि
४.	गप	धप	धनि॒	धप	मग	मरे	सारे
	गप	धनि	सांरें	गंपं	मंगं	रेंसां	निध
	पम	गरे	सानि़	सारे	गप	धनि	सांरें
५.	सांरें	निसां	धनि	पध	गनि॒	पध	पम
	गरे	सारे	गप	गप	धनि	धनि	सांरें
६.	सारे	गप	धनि	सांरें	गंपं	मंगं	मंरें
	मंगं	रेंसां	निध	पम	गरे	सानि़	सा–

	०			×		२	
७.	गप	धनि	सांरें	गंपं	धंनिं	सांनिं	धंपं
	मंगं	रेंसां	निध	पम	गरे	गप	धनि
८.	सारे	नि़सा	ध़नि़॒	ध़प़	ध़नि़	सारे	गप
	धनि	सांरें	गंपं	मंगं	मंरें	सांनि	धनि॒
	धप	मग	मरे	गरे	सानि़	सारे	गप
	धनि	सारे	गप	धनि	सारे	गप	धनि
९.	सारे	गप	मग	मरे	मग	रेसा	नि़सा
	गप	धनि	सां,ग	पध	निसां	गप	धनि
१०.	गप	धनि॒	धप	मग	मरे	सारे	गप
	धनि	सांरें	गंपं	मंगं	रेंसां	निसां	धनि॒
	धप	मग	मरे	मग	रेसा	गप	धनि
	सांसां	गप	धनि	सांसां	गप	धनि	सांसां
११.	सारे	गप	धनि	सांरें	गंपं	धंनिं	सांरें
	सांनिं	धंपं	मंगं	रेंसां	निसां	धनि॒	धप
	सारे	गप	धनि	सांसां	सां–,	सारे	गप
	धनि	सांसां	सां–	सारे	गप	धनि	सांसां
१२.	सारे	गप	मग	मरे	गप	धनि॒	मग
	मरे	सारे	नि़सा	ध़नि़॒	ध़प़	ध़नि़	सा–
	गप	धनि	सारे	गप	धनि	सां–	सा–

	०			×		२	
१३.	गरे	गप	मग	मरे	सारे	गप	धनि
	सांरें	मंगं	मंरें	मंगं	रेंसां	धनि॒	धप
	मग	मरे	सारे	गप	धनि	सां–	सारे
	गप	धनि	सांसां	सारे	गप	धनि	सांसां
१४.	सारे	गप	गप	मग	रेसा	रेग	पनि॒
	धप	धनि	सांरें	गंपं	मंगं	धंनिं	सांरें
	सांनि	धंपं	मंगं	रेंसां	धनि॒	धप	मग
	मग	रेसा	नि़सा	ध़नि़॒	धप़	ध़नि़	सारे
	गप	मग	मरे	मग	रेसा	नि़सा	ध़नि़
तीन बार	सारे	गप	धनि	सांरें	सां–	सारे	गप
	धनि	सांरें	सां–	सारे	गप	धनि	सांरें

राग अल्हैया बिलावल (ध्रुवपद-अंग)

चारताल

- स्थायी

×		०		२		०		३		४	
रें सां	–	सां नि	रें सां	नि ध	नि॒	ध	प	रे ग	प	नि ध	सां नि
रें सां	–	सां नि	सां	नि ध	सां नि॒	ध	प	म	ग	म	रे
ग	प	म	ग	म	रे	ग नि़	सा	ग	प	नि ध	सां नि
रें सां	–	रें नि	सां	नि॒ ध	नि॒	ध	प	ग	प	नि ध	सां नि

● अंतरा

×		०		२		०		३		४	
		रे								रें	
प	–	ग	प	–	ध	ग	प	ध	नि	सां	–,
गं	पं	मं	गं	मं	रें	सां	नि	ध	प	ध	ग
							म	प		नि	सां
–	प	म	ग	म	रे	सा	रे	ग	प	ध	नि
रें				नि॒				रे		नि	सां
सां	–	नि	सां	ध	नि॒	ध	प	ग	प	ध	नि

स्थायी, दुगुन की लयकारी में

×   ०   २   ०
सा– निसां । धनि॒ धप । गप धनि । सां– निसां
३   ४
धनि॒ धप । मग मरे ।। गप मग । मरे नि़सा ।
गप धनि । सां– निसां । धनि॒ धप । गप धनि ।।

● अंतरा

×   ०   २   ०
प– गप । –ध गप । धनि सां– । गंपं मंरें
३   ४
सांनि सांनि । धप धग ।। –प मग । मरे सारे ।
गप धनि । सां– निसां । धनि॒ धप । गप धनि ।।

स्थायी, तिगुन की लयकारी में

×   ०   २   ०
सां–नि सांधनि॒ । धपग पधनि । सां–नि सांधनि॒ । धपम गमरे
३   ४
गपम गमरे । नि़साग पधनि ।। सां–नि सांधनि॒ । धपग पधनि ।

२ ० ३ ४
सां–नि सांधनि । धपम गमरे । गपम गमरे । नि़साग पधनि

× ०
सां–नि सांधनि । धपग पधनि । सां–नि सांधनि । धपम गमरे ।

गपम गमरे । नि़साग पधनि ।।

● अंतरा

× ० २ ०
प–ग प–ध । गपध निसां– । गंपंमं गंमंरें । सांनिध पधग

३ ४
–पम गमरे । सारेग पधनि ।। सां–नि सांधनि । धपग पधनि ।

प–ग प–ध । गपध निसां– । गंपंमं गंमंरें । सांनिध पधग ।।

–पम गमरे । सारेग पधनि । सां–नि सांधनि । धपग पधनि ।

प–ग प–ध । गपध निसां– ।। गंपंमं गंमंरें । सांनिध पधग ।

–पम गमरे । सारेग पधनि । सां–नि सांधनि । धपग पधनि ।।

स्थायी, चौगुन की लयकारी में

× ० २
सां–निसां धनि़धप । गपधनि सां–निसां । धनि़धप मगमरे

० ३ ४
गपमग मरेनि़सा । गपधनि सां–निसां । धनि़धप गपधनि

सां–निसां धनि़धप । गपधनि सां–निसां । सां–निसां मगमरे ।

गपमग मरेनि़सा । गपधनि सां–निसां । धनि़धप गपधनि ।।

सां–निसां धनि़धप । गपधनि सां–निसां । धनि़धप मगमरे ।

गपमग मरेनि़सा । गपधनि सां–निसां । धनि़धप गपधनि ।

सां–निसां धनि़धप । गपधनि सां–निसां । धनि़धप मगमरे ।

गपमग मरेनि़सा । गपधनि सां–निसां । धनि़धप गपधनि ।।

● अंतरा

×		०		२	
प–गप	–धगप ।	धनिसां–	गंपंमंगं ।	मंरेंसांनि	धपधग
०		३		४	
–पमग	मरेसारे ।	गपधनि	सां–निसां ।	धन्रिधप	गपधनि
प–गप	–धगप ।	धनिसां–	गंपंमंगं ।	मंरेंसांनि	धपधग ।
–पमग	मरेसारे ।	गपधनि	सां–निसां ।	धन्रिधप	गपधनि ।।
प–गप	–धगप ।	धनिसां–	गंपंमंगं ।	मंरेंसांनि	धपधग ।
–पमग	मरेसारे ।	गपधनि	सां–निसां ।	धन्रिधप	गपधनि ।।
प–गप	–धगप ।	धनिसां–	गंपंमंगं ।	मंरेंसांनि	धपधग ।
–पमग	मरेसारे ।	गपधनि	सां–निसां ।	धन्रिधप	गपधनि ।।

ज्ञातव्य : इसी गत का चौगुन की लयकारी में दो प्रकार से वादन कर सकते हैं। प्रथम : गत की स्थायी की प्रथम पंक्ति को सिर्फ एक ही बार बजाकर समाप्त किया जा सकता है। इसी प्रकार अंतरे को भी प्रथम पंक्ति या लाइन को सिर्फ एक ही बार बजाकर समाप्त किया जा सकता है। द्वितीय स्थायी की चारों पंक्तियों को बजाकर समाप्त कर सकते हैं, जैसा कि निम्नलिखित है। इसी प्रकार से अंतरे की पंक्तियों को बजा सकते हैं। गत, राग भूपाली में आड़ (डेढ़गुन) व गत, राग हंसध्वनि में सवागुन (या सवाई लयकारी में) भी दिया गया है। उसी के आधार पर गत, राग अल्हैया बिलावल में चौताल की ध्रुवपद - अंग की गत को बजा सकते हैं। इस राग में सिर्फ ढाह (बराबर की लय में), दुगुन की लय, तिगुन की लय और चौगुन की लयकारी दी जा रही है।

राग काफी

राग-परिचय : ठाठ : काफी, जाति : संपूर्ण-संपूर्ण, विकृत स्वर : गांधार और निषाद (कोमल), वर्जित स्वर : कोई भी नहीं, वादी स्वर : पंचम, संवादी स्वर : ऋषभ, प्रकृति : चंचल, रस : श्रृंगार, समय : मध्य-रात्रि, समप्रकृति राग : भीमपलासी।

आरोह : सा रे <u>ग</u> म प ध <u>नि</u> सां।

अवरोह : सां <u>नि</u> ध प म <u>ग</u> रे सा।

पकड़ : सा रे ध <u>ग</u> रे –, सा रे, <u>ग</u> – म प म प।

राग-चलन : सा रे <u>ग</u> रे ग म प म <u>नि</u> प, म प नि सां, रें <u>गं</u> रें सां, <u>नि</u> ध प, रे <u>नि</u> ध <u>नि</u>, प ध म प, <u>ग</u> म <u>ग</u> रे, ग म प म, प, म <u>ग</u> रे सा।

विशेष विवरण

काफी राग की उत्पत्ति काफी ठाठ से ही हुई है। इस कारण राग काफी एक आश्रय राग हुआ। इस राग में गांधार और निषाद स्वर कोमल तथा शेष सभी स्वर शुद्ध लगते हैं। किंतु कुछ विद्वान् काफी राग में शुद्ध गांधार और शुद्ध निषाद का भी प्रयोग कर गाते-बजाते हैं। इस प्रकार शुद्ध गांधार और शुद्ध निषाद का इस राग में प्रयोग केवल राग की सुन्दरता को बढ़ाने के लिए ही किया जाता है। लेकिन शास्त्रानुसार ऐसा कोई नियम नहीं है। ठुमरी की दृष्टि से यह एक बहुत ही मधुर एवं आकर्षक राग है। होली (होरी) आदि के गीत भी इस राग में गाए-बजाए जाते हैं। सा रे, रे <u>ग</u> – म म प, <u>ग</u> रे –, इन स्वर-समूहों द्वारा यह राग स्पष्ट रूप से प्रकट हो जाता है। ऋषभ और पंचम पर ठहराव से यह राग अधिक मधुर एवं प्रिय लगता है। कुशल गायक इस राग की सुन्दरता बढ़ाने के लिए सप्तक के बारहों स्वरों का प्रयोग बड़ी ही चतुरता से करते हैं। यदि इस राग में शुद्ध धैवत के स्थान पर कोमल धैवत करके गाया-बजाया जाए तो यह सिंधु-काफी राग हो जाएगा, जो कि काफी का ही एक प्रकार है। काफी के कई प्रकार प्रचलित हैं; जैसे सिंधु-

काफी, जिलाकाफी आदि। यह सदियों से प्रचार पाया हुआ राग है। सर्वसाधारण में भी यह काफी लोक-प्रिय एवं प्रचलित राग है। कोई-कोई इस राग को सर्वकालिक मानते हैं। इस राग को कर्नाटक संगीत-पद्धति में खरहरप्रिया कहते हैं।

मुक्त स्वर-आलाप

१. सा –, नि़ सा – – –, नि़ ध़ सा – – –, सा रे ग़ रे

– – –, नि़ सा – – –, ग़ रे – – –, रे ग़ म ग़ रे – – –,

रे ग़ म ग़ रे सा – – –, सा नि़ सा रे ग़ रे –, सा नि़ सा – –

–, नि़ सा – – –, रे ग़ म प ग़ रे –, सा ग़ रे – सा – ध़ –,

सा

रे ग़ म प –, प ध प, रे म प ध, म प ग़ रे –, प ग़ रे सा –,

नि़ सा – – –, नि़ ध़ प़, नि़ ध़ प़ ध़ नि़ सा – – –, सा सा

रे ग़ –, म प म प –, ग़ रे –, सा रे सा, म प, म ग़ प ग़

नि़ रे

रे –, म ग म ग़ रे ग़ रे –, नि़ सा – – – –। प़ ध़ नि़ सा

रे म प ध, प ध नि़ प, नि़ ध प, म ग़ रे सा नि़ सा – – –,

नि़ – सा – – – –, रे नि़ सा – – –।

ग म

२. सा रे म प ध, ग़ रे –, रे म प ध ग़ रे, म रे प म प

ग़, सा रे म प ध, ग़ रे – रे म प ध, ग़ रे –, म रे प म प ग़,

म प ग़ रे – सा नि़ रे सा – – –, रे ग़ म प – म ध प, म प ध,

ऩि ध प ध, म प ग॒ रे –, सा रे ग॒ रे –, सा – – –, ऩि़ सा

ग
– – –, रे म प, म प ध, प ध ऩि ध, प म प, प म

सां सां
नि नि सां – – –, नि सां नि सां रें सां नि ध, रें सां – – –,

रें ऩि ध प ग॒ रे –, रे म ग॒ रे –, ग॒ रे सा – – –, ग॒ म ध प,

ग॒ रे –, म प म प नि – – –, म प नि सां – – –, रें गं॒ रें –,

सां ऩि ध प, ध म प – ऩि ध, ऩि प – ध म प ग॒ रे –, ऩि़ सा

– – –। सा रे ग॒ म. प म प – – –, ऩि ध प – – –।

शुद्ध और कोमल गांधार का प्रयोग

३. ऩि ध ऩि, सा रे ग॒ ग॒, प ग॒ रे –, प प ग म प ग म प ग॒ रे, म ग म ध प, ग॒ ग॒ रे –, रे ग॒ म ग॒ रे सा – – –, ध़ ऩि़ सा रे, नि़ सा – – –, रे ग॒ रे –, म प ध, प ध प ध ऩि, प ध ऩि सां – – –, रें गं॒ रें ऩि, सां रें गं॒ रें –, पं गं॒ मं रें गं॒ रें – – –, सां – – –, नि सां, ऩि ध, प ध प सां रें गं॒ रें –, पं गं॒ मं रें, गं॒ रें – – –, सां – – –, ऩि सां ऩि ध प ध, सां रें सां रें – गं॒ रें सां रें सां – – –, रें रें सां रें नि सां ऩि ध प ध,

प ऩि, ध ग – प ग॒ रे ग॒ सा – – –। ऩि़ सा – – –, रे ऩि़ – सा – – –, ऩि़ सा – – –,

४. नि़ सा –, रे नि़ सा – –, नि़ ध़ रे सा नि़ सा – – –, सा नि़ सा ग –, रे ग –, म म, प नि –, म पं, ध नि,

नि ध, प –, म प नि सां – – –, नि ध, गं रें, नि सां रें सां

नि ध, नि प –, ग रे, रे नि ध नि, ध प, म ग म ध प,

ग रे –, रे ग म प – सां – – –, नि सां – – –, नि ध प

म, प ग –, रे ग रे, सा रे ग रे, नि़ सा – – –, प ग –, रे ग रे, सा रे ग रे, नि़ सा – – नि़ ध़ प़, ग रे रे ग –, म ग रे सा – – –, नि़ सा – – –, नि़ ध़ सा नि़ सा – – –।

निर्बन्ध तानें

१. सा रे ग म प म प ग म ग रे सा, रे म प ध म प ग रे ग रे सा –, रे ग म प ग रे सा नि़, सा रे ग रे म ग रे सा, सा नि़ सा ग रे ग रे म प ध नि ध प म प म प ग म ग रे सा, नि़ ध़ सा –, प़ ध़ नि़ ध़ नि़ सा नि़ सा ग रे प म ग रे सा नि़ रे सा नि़ सा, म ग रे सा नि़ सा।

२. सा रे ग म म प ग – रे ग सा रे म ग रे सा सा नि़ रे सा ग रे म ग रे सा नि़ सा, रे म प ध प नि ध नि ध प म प ध म प ध प ग म ग रे सा नि़ सा, रे रे सा रे नि़ सा, रे ग रे प म ग रे प म ग रे सा नि़ सा – रे नि ध प म ग रे सा नि़ सा रे ग रे सा, म प ध नि ध प ध म ध प म ग रे ग म ग रे सा, रे ग सा रे ग म प –, नि ध नि ध प म ग रे म ग रे सा, रे ग रे ग म ग म प म प ध ध नि सां नि ध प म प ग म प ग म ग रे सा प नि़ सा।

३. ध़ नि़ सा –, सा रे रे ग म म, प ध ध म प प प म प ग रे ग म प म ग रे म ग रे सा नि़ सा, सा नि़ रे सा ग रे म ग प म ध प नि ध सां नि सां नि ध प म ध प म प म प ग नि ध प म ग रे सा नि़ ध़ नि़ सा रे सा नि़ सा –, नि़ ध़ सा रे ग म ग रे ग म ध प रे ग म ग रे सा नि़ सा। ग रे सा रे म ग रे म रे सा नि़ ध़ ध़ प़ ध़ ध़ प़ नि़ ध़ प़ नि़ ध़ सा –, म ग रे सा नि़ सा ।।

शुद्ध निषाद का अल्प प्रयोग

४. प – म प म प नि – सां रें सां नि रें सां नि सां नि ध प ध प म प ध नि ध नि प म ग रे म ग रे प ग म ग रे सा नि़ ध़ सा –, म प नि सां रें गं रें सां रें नि सां नि सां नि ध प नि ध प म ध प म ग म ग रे सा रे म प नि ध नि रें सां रें गं रें ध नि सां रें गं रें मं गं रें सां नि ध प म प ग म ग रे सा, रे ग रे म ग रे सा रे म ग रे सा नि़ सा, ग म ध प म ग म प ग रे म ग रे सा नि़ सा।

५. सा नि़ सा ग रे ग म प म प म प नि सां रें गं मं गं मं पं मं गं रें गं रें सां रें नि ध प रें नि ध नि प ध म प म ग रे सा नि़ सा, रे ग म ग रे सा नि़ सा ध नि सां नि ध प म प, रें गं मं गं रें सां नि सां रें नि सां नि सां रें सां नि ध प ध म प म प ग प म ग रे सा रे ग रे ग रे सा –, नि़ सा नि़ सा रे सा रे ग रे ग म ग म प म प ध प ध नि ध नि सां नि सां रें गं रें सां रें गं मं पं मं गं रें सां रें सां नि मं गं रें सां नि ध प म ग रे म ग रे सा नि़ सा, ध़ नि़ सा रे ग रे सा – ।

गत, राग काफी (तीनताल)

● **स्थायी**

×				२				०				३			
रे								सा							
सा	गग	रे	ग।	–	रे	सा	रे।	नि़	–सा	–	रे।	म	पध	नि	ध

×				२				०				३			
प				प		सां	रें	गं	मं						
नि	–	–,	प	म	प	नि	सां	रें	गं	रें	सां	–	नि	ध	प
सा															
म	ग	रे	सा	रेसा	रेग	सारे	गम	पध	निसां	गंरें	सांनि	धप	मग	रेसा	निसा

● अंतरा

×				२				०				३			
			म					ध				गं	सां	रें	
प	म	प	ग	–	म	प	म	प	ध	नि	सां	रें	नि	सां	–
गं	मं	सां													
रें	गं	रें	सां	–	नि	ध	प	मप	धनि	सांरें	गंरें	सांनि	धप	मग	रेसा

● तालबद्ध-तानें

× २ ०

१. पम पध पध निसां। रेंगं मंगं रेंसां निसां। निध पम गरे सा–

३

रेसा ग,रे मप निध ।।

२. पध पनि पध निसां। निध पम धप मग। पम गरे मग रेसा।
रेसा गम प– धनि ।। सां– गरे सा–, रेसा। गम प– धनि सां–।
गरे सा– रेसा गम। प– धनि सां– गरे ।।

३. सा– गरे मग पम। निध सांनि रेंसां निसां। गंरें सांगं मंगं मंपं।
मंगं रेंसां निध पम ।। धप मग रेसा निसा। साग रेग –म पम।
साग रेग –म पम। साग रेग –म पम ।।

४. सारे गरे गम धप। धनि सांरें गंरें सांरें। गंमं गंपं मंगं रेंसां।
निध पम गरे सा– ।। –म पम प–, निध। पम गरे सा– –म।
पम प–, निध पम। गरे सा– –म पम ।।

५. सारे साग सारे गम। पध निध पध मप। गम धप मप नि–।
सांनि सांरें गंरें सांनि।। धप मग रेसा निसा। सारे गम प– गम।
सारे गम प– गम। सारे गम प– गम ।।

×   २   ०

६. –ग रेग सारे नि़सा । रेनि धनि पध मप । धनि सांनि सांनि धप
३
मप मग रेग सारे ।। सारे गम प–, मप । मग रेग सारे सारे ।
गम प–, मप मग । रेग सारे सारे गम ।।

७. म– गम धप मग । रेसा रेनि धनि पध । मप मग रेसा नि़सा ।
रेसा रेग सारे गम ।। प– गम प–, रेसा । रेग सारे गम प– ।
गम प–, रेसा रेग । सारे गम प– गम ।।

८. पम पध निसां रेंसां । रेंगं मंपं मंगं रेंसां । रेंगं सांरें निसां धनि ।
पध मप मग रेसा ।। गरे सानि़ धप़ धनि़ । प़ध़ नि़सा रेनि़ सा– ।
रेग सारे गम पम । प– गम सारे गम ।। रेग सारे गम पम ।
प– गम सारे गम । रेग सारे गम पम । प– गम सारे गम ।।

९. प– मप मप धनि । पध निसां रेंगं मंगं । मंपं मंगं मंगं रेंसां ।
निध पम गरे सारे ।। –ग –म प–, निध । पम गरे सारे –ग ।
–ग प–, निध पम । गरे सारे –ग –म ।।

१०. सा– रेग म– गम । प– मप नि धनि । सांरें गंमं पंमं गंरें ।
सांनि धप मग रेसा ।। सारे गम पम गम । प– ––, सारे गम ।
पम गम प– ––, । सारे गम पम गम ।।

११. म– गम धप मप । मग रेसा रेसा रेग । सारे गम पध पम ।
गरे सारे निध पम ।। धप मग मग रेसा । रेनि धप मग रेसा ।
रेनि धप मग रेसा । रेनि धप मग रेसा ।।

१२. पम पध पनि धनि । पध निसां निध पम । गंमं पंमं गंरें सांनि ।
धप मग रेसा नि़सा ।। साग रेग –म पम । प– ––, साग रेग ।
–म पम प– ––, । साग रेग –म पम ।।

×   २   ०
१३. –ग रेग सारे साग । सारे गम पध निसां । रेंगं मंगं मंपं मंगं ।
३
रेंसां निध पम गरे ।। सानि सा– रेसा गरे । मग पम प–, रेसा ।
गरे मग पम प–, । रेसा गरे मग पम ।।

१४. सारे गम पध निसां । रेंनि धनि पध मप । सांनि धप मग रेसा ।
–ग रेग –म पम ।। सारे गम प–, –ग । रेग –म पम सारे ।
गम प–, –ग रेग । –म पम सारे गम ।।

१५. सारे गम रेसा गम । पध निध पध पम । पध निसां रेंगं रेंमं ।
पंमं गंरें सांनि धप ।। मग मग रेसा निसा । साग रेग सारे गम ।
साग रेग सारे गम । साग रेग सारे गम ।।

गत, राग काफी (तीनताल)

(इस गत में शुद्ध गांधार एवं शुद्ध निषाद का अल्प प्रयोग है ।)

• स्थायी

×				२				०				३			
			म	ग	म	ध	प	ग	–रे	–	ग	म	पध	नि	ध
(सां)नि	–	(ध)प,	म	ग	रे	सा	–	रे	ग	सा	रे	ग	म	प	ध
नि	ध	प,	म	ग	म	ध	प	ग	–रे	–	ग	म	पध	नि	ध

• अंतरा

×				२				०				३			
			म	ग	म	ध	प	म	प	नि	सां	–	रें	(मं)गं	रें
(रें)सां	–	सां	सां	रें	नि	सां	–	रें	(मं)गं	रें	सां	–	(सां)नि	ध	प

× २ ० ३

म ग़ रेसा म	ग म ध प	ग़ (म) –रें – सा	ग़म पध नि़ ध
म ग़ रेसा म	ग म ध प	ग़ (म) –रे – सा	ग़म पध नि़ ध

• तालबद्ध तानें

× २ ०

१. पध नि़ध पध मप । नि़ध पम ग़रे सा– । ग़रे सा,म ग़रे, पम
३
पध नि़,प धनि़ पध ।।

२. धनि़ सांनि़ धप मप । मग मप मग़ रेसा । रेग़ सारे मप नि़ध ।
पम ग़रे सानि़ सा– ।। गम धप ग़रे सानि़ । सा– ––, गम धप ।
ग़रे सानि़ सा– –– । गम धप नि़ध पध ।।

३. मप निसां रेंगं रेंसां । नि़ध पध पम गम । पग मग़ रेसा नि़सा ।
ग़– सारे ग़म ग़म ।। नि़ ध नि़ ग़ । सारे मप गम नि़ ।
ध नि़ ग़ सारे । मप गम नि़ ध ।।

४. पध नि़सां रेंसां नि़ध । पम ग़रे सानि़ सा । रेम पध नि़, रेम ।
पध नि़ रेम पध ।।

५. पम गम पनि़ धनि़ । सांनि़ सांरें सांनि़ धप । धनि़ पध मप गम ।
पम पग मग़ रेसा ।। रेग़ सारे मप नि़ध । नि़ – रेग़ सारे ।
मप नि़ध नि़ – । रेग़ सारे मप नि़ध ।।

६. पनि़ धनि़ पध मप । निसां रेंगं रेंसां निसां । नि़ध पम ग़रे सारे ।
सारे ग़रे ग़म पध ।। नि़सां नि़ध नि़ सारे । ग़रे गम पध नि़सां ।
नि़ध नि़ सारे ग़रे । ग़म पध नि़सां नि़ध ।।

७. सारे ग़रे ग़म पम । पध नि़ध नि़सां रेंसां । गंमं पंमं गंरें सांनि़ ।

३ × २
धप मग रेसा नि़सा ।। गरे सारे म पध । नि – गरे सारे ।

० ३
म पध नि –। गरे सारे म पध ।।

८. निध सांनि रेंसां गंरें । मंगं पंमं गरें सांनि । धप मग मग रेसा ।
गसा रेम पध निसां ।। निप निध नि गसा । रेग पध निसां निप ।
निध नि गसा रेम । पध निसां निप नि ।।

९. रेग सारे मप गम । धनि सांनि सांरें निसां । रेंगं मंगं रेंसां निसां ।
निध पम गरे सा ।। गम पध नि निध । पम गरे सा गम ।
पध नि निध पम । गरे सारे गम पध ।।

१०. सांनि धनि पध मग । रेसा नि़सा नि़ध़ प़ध़ । प़ध़ नि़सा गरे सा ।
गसा रेग सारे नि़सा ।। गरे गम प गसा । रेग सारे नि़सा गरे ।
गम प गसा रेग । सारे नि़सा गरे गम ।।

गत, राग काफी (तीनताल)

● स्थायी

×	२	०	३
म	ग रे सा नि़	सा गग रे ग	– म प म
(नि) प – –, म	प ध नि सां	नि ध प म	(म) ग – रे सा
रे नि ध नि	प ध म प	ग मम ग प	म – सा नि़
सा ग रे म	ग रे सा नि़	सा गग रे ग	– म प म
(नि) प – –, म	ग रे (नि़) सा नि़		

• अंतरा

×	२	०	३
			सां
		प – म प	– नि ध नि
रें नि रें	गं सां रें	गं मं नि	सां
सां – सां सां	रें नि सां –	रें गं रें सां	– नि ध प
		मम म	प नि
मप निसां रेंगं रेंसां	निध पम गरे सनि	सा गग रे ग	– म प म

• तालबद्ध तानें

× २ ०

१. सारे गरे गम पम । पध निसां निध पम । गरे सानि सारे गम

३

सारे गम सारे गम ।।

२. मप धनि सांरें गंरें । सांनि धप मग रेसा । सारे गम प– सारे ।
गम प–, सारे गम ।।

३. रेंनि धनि पध मप । रेग रे,ग गरे सानि । सारे गरे गम पम ।
प– गम प– गम ।।

४. मप निसां रेंगं रेंसां । निध पध निध पम । गम पम गरे सा– ।
निसा रेग सारे गम ।। गम पम प–, निसा । रेग सारे गम गम ।
पम प– निसा रेग । सारे गम गम पम ।।

५. पध निसां रेंगं मंपं । गंमं पंमं गरें सांनि । सांगं रेंसां निरें सांनि ।
पध निसां निध पम ।। गरे सानि सारे गरे । गम पम प–, सारे ।
गरे गम पम प–, । सारे गरे गम पम ।।

६. सारे गरे गप पम । पध निध पध निसां । रेंगं रेंसां रेंनि सांनि ।
धप मप मग रेसा ।। सारे गरे सारे गम । प– ––, सारे गरे ।
सारे गम प– ––, । सारे गरे सारे गम ।।

×　　　　　२　　　　　०

७. साग रेग सारे ऩिसा । रेनि धनि पध मप । निध सांनि रेंसां निसां

३

निध पम गरे सा– ।। रेसा गरे –म पम । प– ––, रेसा गरे ।

–म पम प– ––, । रेसा गरे –म पम ।।

८. रेसा रेग मप धनि । सांरें गंरें सांनि धप । मप निध पम गरे ।

साऩि ध़प़ साऩि सा– ।। रेनि धनि पध पम । प– ––, रेनि धनि ।

पध –म प– ––, । रेनि धनि पध –म ।।

९. पध निध पध निसां । रेंगं मंगं पंमं गंरें । सांरें सांनि पनि धप ।

मप मग रेसा ऩिसा ।। ऩिध़ प़ध़ प़ध़ ऩिसा । सारे गम प– गम ।

सारे गम प– गम । सारे गम प– गम ।।

१०. पध निसां रेंगं रेंसां । निसां रेंसां निध पम । गम पम गरे साऩि ।

सारे गम पध निसां ।। निध पम प–, सारे । गम पध निसां निध ।

पम प–, सारे गम । पध निसां निध पम ।।

झाला, राग काफी (तीनताल)

×				२				०				३			
सा		रे		म				सा				ऩि		रे	
ऩि	–	सा	–	ग	–	रे	–	ऩि	–	सा	–	सा	–	सा	–
तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ
सा				ऩि		ऩि		ऩि		सा		ऩि		रे	
ऩि	–	ध़	–	प़	–	प़	–	ध़	–	ऩि	–	सा	–	सा	–
तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ

× २ ० ३

सा ग नि़ म नि़ ग म
नि़ सा रे ग | रे – सा – | ग रे सा रे | ग – रे –
तू ऊ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ | तू ऊ तू ऊ | तू ऊ तू ऽ

रे नि़ नि़ ग रे
सा – सा – | नि़ – सा – | सा – सा – | रे नि़ सा –
तू ऽ कू ऽ | तू ऽ कू ऽ | तू ऽ कू ऽ | तू ऊ तू ऽ

म म सा ग नि़ रे सा
ग रे ग – | रे – रे – | सा – सा – | नि़ – सा –
तू तू तू ऊ | तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ | तू ऽ कू ऊ

नि़ ग म म नि सां ध
सा रे ग रे | ग म प म | प – प – | नि – प –
तू ऊ तू ऊ | तू ऊ तू ऊ | तू ऽ कू ऽ | तू ऽ तू ऽ

सां नि ग नि़
नि – ध – | प – प – | म – ग – | रे – सा –
तू ऽ तू ऽ | तू ऽ कू ऽ | तू ऽ कू ऽ | तू ऽ तू ऽ

नि़ ग म म नि नि ध नि
सा रे ग रे | ग म प म | प – प – | म – प –
तू कू तू कू | तू ऊ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ

म म सा रे म
ग – रे ग | रे – सा – | नि़ – सा – | ग – रे –
तू ऽ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ

× २ ० ३

ऩि ऩि रे रे ऩि
सा – सा – | ऩि – सा – | ऩिसा रेसा ऩि ध़ | प़ – प़ –
तू ऽ कू ऽ | तू ऽ तू ऽ | तूऊ तूऊ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ

ऩि सा ग म सा
म़ प़ ध़ ऩि | सा रे ग रे | ग रे सा – | ऩि – सा –
तू ऊ तू ऊ | तू कू तू ऊ | तू ऊ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ

नि ध म नि ध
सारे गरे गम पम | प – प – | म प म ध | प – प –
तूऊ तूऊ तूऊ तूऊ | तू ऽ तू ऽ | तू ऊ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ

× २
सारे गम गम पध | पध निसां गंरें सांनि
तूऊ तूऊ तूऊ तूऊ | तूऊ तूऊ तूऊ तूऊ

० ३
धप मग रेसा ऩिसा | ऩिध़ प़ध़ प़ध़ ऩिसा
तूऊ तूऊ तूऊ तूऊ | तूऊ तूऊ तूऊ तूऊ

× २ ० ३
म ऩि रे म ऩि रे
ग – रे – | सा – ऩि सा | ग म ग रे | सा – सा –
तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऊ | तू ऊ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ

रे म रे सा म नि ध
सा ग रे ग | सा रे ऩि सा | ग रे ग म | प – प –
तू कू तू कू | तू ऊ तू ऊ | तू ऊ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ

×				२				०				३			
		सां		नि				सां						ध	
म	प	नि	ध	प	–	म	प	नि	ध	प	–	म	–	प	–
तू	ऊ	तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऊ	तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ
सां		रें		मं		सां		नि		नि		सां		रें	
नि	–	सां	–	गं	–	रें	–	सां	–	सां	–	नि	–	सां	–
तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ
मं				नि		रें		नि		नि				रें	
गं	–	रें	–	सां	–	नि	सां	सां	–	सां	–	रें	नि	सां	–
तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	तू	तू	ऽ
सां				नि								नि			
नि	–	ध	–	प	–	प	–	ग	म	ध	म	प	–	प	–
तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऊ	तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऽ
								म				म	सा	नि	
गम	धप	ग	म	ग	म	ग	रे	ग	–	रे	–	ग	रे	सा	–
तूऊ	तूऊ	तू	ऊ	तू	ऊ	कू	कू	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऊ	तू	ऊ
म		म		नि				सां		रें		मं		सां	
ग	रे	ग	म	प	–	म	प	नि	–	सां	–	गं	–	रें	–
तू	ऊ	तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ
सां	सां	रें						धं							
नि	नि	सां	–	रेंनि	सांरें	गंमं	पंमं	पं	–	पं	–	मं	पं	गं	मं
तू	ऊ	तू	ऽ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऊ	तू	ऊ

×				२				०				३			
								रें							
पं	–	मं	पं	निं	–	धं	निं	सां	–	सां	–	रें	निं	सां	–
तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऊ	तू	ऽ
सां														रें	
निं	–	धं	–	पं	–	मं	धं	पं	–	पं	–	मं	–	गं	–
तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ
		नि													
रें	–	सां	–	नि	–	सां	–	नि	–	ध	–	प	–	प	–
तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	कू	ऽ	कू	ऽ

नि				म												
प	–	म	प	ग	–	रे	–	साग	रेग	सारे	निसा		गम	पम	पनि	धप
तू	ऽ	तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऽ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ

×				२			
मप	निसां	रेंगं	रेंसां	गंमं	पंमं	गंरें	सांनि
तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ
०				३			
धप	मग	रेसा	निध	पनि	धप	धनि	सा–
तूऊ	ऊऊ	तूऊ	ऊऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऽ
निसा	गरे	निसा	मग	निसा	पम	निसा	धप
तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ
निसां	निध	निसां	सांनि	गंरें	मंगं	पंमं	गंरें
तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ

× २ ० ३

नि ईं सां सां ध

सां – सां – | नि – ध – | नि ध नि प | नि – प –

तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ | तू ऊ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ

म नि रे रे

म – ग रे | ग – रे – | सा – सा – | नि – सा –

तू ऽ तू ऊ | तू ऽ कू ऽ | कू ऽ कू ऽ | तू ऽ तू ऽ

सा नि ध नि सा रे नि

नि – ध – | प – प – | ध – नि – | सा – सा –

तू ऽ तू ऽ | कू ऽ कू ऽ | तू ऽ कू ऽ | तू ऽ तू ऽ

सांगं रेंगं सांरें निसां । धनि धनि पध मप । गम गम रेग रेग ।
३
सारे सारे निसा निसा ।। रेसा रेग सारे गम । प– –– गम प– ।
––, गम प–, रेसा । रेग सारे गम प– ।। ––, गम प–, ––, ।
गम प–, रेसा रेग । सारे गम प–, –– । गम प– ––, गम ।।

यह पूरी तिहाई व तान तीनबार बजाने के बाद सम पर समाप्त होगी । इस झाले को भी कर्ण, मीड़, मुर्की, खटका तथा जमजमा के साथ बजाइए ।

गत, राग काफी (झप ताल)

● **स्थायी**

× २ ० ३

(नि प – | म ग म | –ग रेसा | –ग –म पम

ध प ध | निसां –नि धप | मग रेसा | –ग –म पम

● अंतरा

×		२			०		३		
नि॒							नि		रें
प	–	म	प	नि॰	सांनि	सांरें	सां	नि॒	सां
ग॒रें	ग॒ं मं	ग॒ं रें	सां	ग॒ं रें	रें नि॒	रें सां	सां नि॒	धप	नि॒ ध
ग					सां				
म	प	म	ग॒	रे	नि॒	ध	प	धप	ध
म	प	म	ग	म	–ग॒	रेसा	–ग॒	–म	पम

● तालबद्ध तानें

	×		२			०		३		
१.	पम	धप	ग॒रे	मग॒	रेसा	ग॒म	प	ग॒म	प	ग॒म
	पम	ग॒म	ग॒रे	मग॒	रेसा	पम	प,	पम	प	पम
२.	पध	नि॒ध	सांनि॒	धनि॒	धप	मग॒	रेसा	साग॒	रेग॒	मग॒
	पम	प,सां	ग॒म	पम	पसां	ग॒म	पम	पसां	ग॒म	पम
३.	पम	ग॒रे	मग॒	रेसा	नि॒सा	मग	धप	नि॒ध	सांनि॒	सां
	नि॒ध	पम	ग॒म	पनि॒	धप	मग॒	मप	नि॒ध	पम	ग॒म
४.	पध	नि॒ध	सांनि॒	ग॒ंरें	सांनि॒	धप	मग॒	रेसा	नि॒ध	प
	ग॒रे	म	पम	प,ग॒	रेम	–प	मप	ग॒रे	म	पम
५.	पम	ग॒म	पध	नि॒ध	सांनि॒	रेंसां	ग॒ंरें	सांनि॒	धप	मग॒
	रेसा	नि॒सा	–ग॒	–म	–प	–ग॒	–म	प	–ग॒	–म

६. मप निसां। रेंसां नि॒ध ग॒ंरें। सांनि॒ धप। मग॒ रेसा नि॒सा

	×		२			०		३		
७.	म	गम	धप	मप	निध	पध	सांनि	धनि	धप	मग
	मग	रेसा	निध	पम	प	धनि	गरे	गरे	मग	रेसा
	ग	म	प	गम	प	गम	प	ग	म	प
	गम	प	गम	प	ग	म	प	गम	प	गम
८.	गरे	सा,म	गरे	पम	गध	पम	गम	पम	गरे	सा
	गरे	गम	प	–	गरे	गम	प	–	गरे	गम
९.	पध	निसां	गंमं	पंमं	गंरें	सांनि	धप	मग	रेसा	निसा
	ग	म	प	धनि	सां	गम	प	ग	म	प
	धनि	सा,	गम	प	ग	म	प	धनि	सां	गम

गत, राग काफी (एकताल)

• स्थायी

×		०		२		०		३		४	
						(रे)सा	(ग)रे	(म)ग	म	पध	निध
(सां)नि	–	प	म	ग	रे	(रे)सा	रेम	प	(नि)ध	(सां)नि	(रें)सां
निसां	गंरें	सांनि	धप	मग	रेसा						

• अंतरा

×		०		२		०		३		४	
						म	प	(सां)नि	(रें)सां	(गं)रें	(सां)नि
(रें)सां	–	(रें)सां	(गं)रें	नि	(रें)सां	(मं)गं	रें	मं	गं	रें	सां
निध	सांनि	धप	मग	रेसा	निसा						

● तालबद्ध तानें

× ० २ ०
१. गरे सारे । मग मप । निध पध । सांनि धप
३ ४
निध पम । गरे सारे ॥ सारे गम । प – ।
–, सारे । गम प । – – । सारे गम ॥

२. पम गरे । सारे गम । पनि धनि । सांनि रेंसां ।
गंरें मंगं । पंमं गंरें ॥ सांनि धप । मग रेसा ।
नि़ध़ प । सारे नि़सा । सांरें निसां । मप गम ॥

३. पध निसां । निसां गंरें । सांनि धप । मग रेसा ॥
गम पग । मप गम ॥

४. पध पनि । धनि पध । मप गम । गरे सानि़ ।
ध़प़ म़प़ । ध़नि़ सा ॥ ध़नि़ साध़ । नि़सा ध़नि़ ।
धनि सां,ध । निसां धनि । गम पग । मप गम ।

५. नि़सा रेग । मग रेग । मप धनि । सांरें गंरें ।
सांनि धप । मग रेसा ॥ नि़सा गम । प गम ।
निसां गंमं । पं गंमं । निसा गम । प गम ॥

६. सारे गरे । गम पम । पध निध । सांनि धनि ।
रेंसां निध । पम गम ॥ गरे सा । नि़सा गम ।
पम पनि । साग मप । मप नि़सा । गम पम ॥

७. पध निसां । निध पध । पम गरे । नि़सा रेग ।
रेसा नि़सा । रेसा गम ॥

८. पम गरे । सानि़ ध़प़ । मग धप । मग रेसा ।
गम पग । मप गम ॥ प गम । पग मप ।
ग़म प । प गम । पग मप । गम पम ॥

	×		०		२		०	
९.	सारे	गम ।	गरे	रेग ।	मप	मग ।	गम	पध
	३		४					
	पम	पध ।	निसां	निध ।।	निसां	रेंगं ।	रेंसां	निध ।
	पम	गरे ।	सानि	धप ।	मप	धनि ।	सा	निसा ।।
	धनि	साध ।	निसा	धनि ।	सा	गम ।	प	धनि ।
	सांध	निसां ।	धनि	सां ।।	गम	प– ।	धनि	साध ।
	निसा	धनि ।	सा–	गम ।	प–,	गम ।	प–	गम ।।

गत, राग काफी (ताल रूपक)

● स्थायी

०			×		२	
प	म	प	मग	रेसा	सारे	गम
सां –नि	–ध	–प	–म	ध	प	म
ग	रे	ग	–रे	सा–	रेग	मप
सां नि	–	प	मग	रेसा	सारे	गम

● अंतरा

०			×		२	
प	म	प	मप	धनि	पध	निसां
रें सां	–	सां	गं रें	सां नि	रें सां	—,
गं रें	गं	रें	मं	गं	रें	सां
ध	नि	ध	पम	गरे	सारे	गम

● तालबद्ध तानें

	०			×		२	
१.	पम	गम	गरे	गरे	मग	रेसा	निसा
	गम	प	–	गम	प	–	गम

	०			×		२	
२.	सारे	गम	पध	निसां	निध	पम	गरे
	सारे	ग	–	रेग	म	–	गम
३.	धप	मप	धनि	सांनि	धप	मग	रेसा
	ध़नि़	सा	—,	धनि	सां	—,	गम
४.	गरे	सारे	गम	पम	गम	धप	मप
	धनि	सांरें	गंरें	सांनि	धप	मग	रेसा
	रेम	गरे	सा	गम	प	रेम	गरे
	सा	गम	प	रेम	गरे	सा	गम
५.	नि़सा	रेग	सारे	गम	पम	धप	मप
	निध	पध	सांनि	धनि	सांरें	गंरें	सांनि
	धप	मग	रेसा	नि़सा	रेसा	रेग	मम
६.	सारे	गम	गरे	गम	पध	पम	पध
	निसां	निध	धनि	सांरें	सांनि	धप	मग
	रेसा	नि़सा	गम	प	गम	प	गम
	प	–	गम	प	गम	प	गम
	प	–	गम	प	गम	प	गम
७.	नि़सा	रेग	रेसा	रेग	मप	धनि	सांरें
	गंमं	पंमं	गंरें	सांनि	धप	मग	रेसा

	०			×		२	
	सारे	गम	–म	पम	प	सारे	गम
	–म	पम	प–	सारे	गम	–म	पम
८.	गरे	मग	पम	धप	निध	सांनि	रेंसां
	गंरें	मंगं	रेंसां	निध	पम	गरे	सानि़
	सारे	गम	पम	गम	प	सारे	गम
	पम	गम	प	सारे	गम	पम	गम
९.	पम	गरे	सानि़	ध़प़	ध़नि़	सारे	गम
	पध	निसां	रेंगं	रेंसां	निध	पम	गरे
	मग	रेसा	–ग	–म	प	मग	रेसा
	–ग	–म	प	मग	रेसा	–ग	म
१०.	पध	निध	पध	पसां	गंरें	सारें	सांनि
	धप	मग	रेसा	नि़सा	रेग	–म	पम
	प–	——	——,	नि़सा	रेग	–म	पम
	प–	——	——,	नि़सा	रेग	–म	पम
११.	–ग	पम	गरे	साग	मप	मग	रेसा
	गम	प–	——,	गम	प–	——,	गम
१२.	गम	पम	पनि	धनि	पध	मग	रेसा
	गम	पम	प,ग	मप,	मप,	गम	पम
१३.	गम	धप	मप	निसां	रेंगं	निध	पम
	गरे	सारे	गम	सारे	गम	सारे	गम

गत, राग काफी (ठुमरी-अंग)
ताल दादरा

● स्थायी

×			०			×			०		
नि			म	ग	म	रे	ग	म			
प	म	प	ग	रे	ग	सा	रे	ग	म	प	म
ध	नि	सां	रें	सां							
प	ध	नि	सां	नि	ध	पध	पम	गरे	सानि	सारे	गम

● अंतरा

×			०			×			०		
		सां		गं	सां	रें			गं		रें
म	प	नि	सां	रें	नि	सां	–	सां	रें	नि	सा
गं	मं			सां		सां					
रें	गं	मं	गं	रें	सां	नि	धप	म	ग	रेसा	गम

● तालबद्ध तानें

१. पम गम धप। मग रेसा गम। प – गम
प – गम।

२. पम धप निध। पम गरे सा–। पध निसा धनि।
सारे सारे गम॥

३. गरे सा,म गरे,। पम ग,ध पम,। निध प,सां निध।
पम गरे सा–॥ निसा रेग सारे। ग– म– प–।
गम प– प–। गम प– प–॥

४. गरे सारे मप। निसां गंरें सांनि। धप मग रेसा।
निसा धनि सा–॥ गरे सारे सारे। गम गरे सारे।
सारे गम गरे। सारे सारे गम॥

×   ०   ×

५. गुरे सारे गुम । पम पध निध । सांनि धप मगु

०

रेसा रेगु सारे ।। म– गुम प– । रेगु सारे म– ।

गुम प– रेगु । सारे म– गुम ।।

६. गुरे सारे निसा । रेगु सारे गुम । धप मगु रेसा ।

निसा रेसा गुरे ।। सारे गुम प– । रेसा गुरे सारे ।

गुम प–, रेसा । गुरे सारे गुम ।।

७. मगु रेसा सांनि । धप मंगुं रेंसां । निध पम गुरे ।

सा– गु– सारे ।। सारे गुम प– । गु– सारे सारे ।

गुम प– गु– । सारे सारे गुम ।।

८. सा– रेगु म– । गु– पम प– । म– पध नि– ।

प– धनि सां– ।। निध पम गुरे । सा–, निध पम ।

गुरे सा–, निध । पम गुरे सा– ।।

९. पध निसां निध, । निसां गुंरें सांनि । सांरें मंगुं रेंसां ।

गुंरें सांनि रेंसां ।। निध पम गुरे । मगु रेनि सानि ।

सारे गुम सारे । गुम सारे गुम ।।

१०. पम पध मप । धनि सांरें गुंमं । पंमं गुंरें सांनि ।

धप मगु रेसा ।। सारे गुम प– । गुम सारे गुम ।

प– गुम सारे । गुम प– गुम ।।

गत, राग काफी (ध्रुवपद-अंग)

चारताल

● स्थायी

×		०		२		०		३		४	
प	–	म	प	–	म ग॒	म	प	म	ग॒	रे	सा
म	प	ध	नि॒	रें सां	–	सां नि॒	ध	प	म	ग॒	रेसा
ग	म	प	ग	म	ध	प	ग॒	रे	ग॒	रे	सा
म	प	नि	सां	–	नि॒–	ध	प	म	ग॒	रे	सा

● अंतरा

×		०		२		०		३		४	
प	–	म	प	–	नि	सां	रें	सां	नि	सां	–
रें	गं॒	–	मं	गं॒	रें	सां	नि॒	ध	प	ध	नि॒
सां	–	नि॒	ध	प	ग॒	म	ग॒	रे	सा	नि़॒	सा

ज्ञातव्य : इस गत को दुगुन, तिगुन, चौगुन अथवा आड़-कुआड़, छहगुन इत्यादि लयकारियों में बजा सकते हैं। जैसा कि राग भूपाली व हंसध्वनि में बताया गया है। यह वादक की साधना व कुशलता पर निर्भर है।

राग पीलू

राग-परिचय : ठाठ : काफी, वर्जित स्वर : आरोह में ऋषभ, विकृत स्वर : ऋषभ, गांधार, धैवत एवं निषाद, वादी स्वर : कोमल गांधार, संवादी स्वर : निषाद, जाति : षाडव-संपूर्ण, रस : करुण, प्रकृति : चंचल, गायन-वादन समय : दिन के तीसरे प्रहर से रात्रि के दूसरे प्रहर तक, समप्रकृति राग : गारा इत्यादि ।

विशेष विवरण

यह राग काफी ठाठ का जन्य राग है। स्वर्गीय भातखंडे जी ने इसे काफी ठाठ में माना है। इस राग का वादी स्वर कुछ गुणीजन कोमल गांधार तथा संवादी स्वर निषाद मानते हैं। कुछ लोगों के मतानुसार षड्ज वादी एवं पंचम संवादी है। इस राग में कई रागों की छाया प्रतीत होती है। इसमें बारहों स्वरों का कुशलतापूर्वक प्रयोग करते हैं। आरोह में प्रायः शुद्ध स्वर एवं अवरोह प्रायः वक्ररूप से कुशलतापूर्वक प्रयोग करते हैं। इसलिए इस राग की जाति षाडव - संपूर्ण मानते हैं। इस राग के आरोह में शुद्ध निषाद एवं लौटते समय क्रमानुसार दोनों धैवत का प्रयोग करते हैं। इसी प्रकार से दोनों गांधार का भी प्रयोग करते हैं। कोमल ऋषभ का प्रयोग सा <u>रे</u> नि़ सा – <u>ध़</u> प़, म म़ प़ नि़ सा <u>रे</u> सा <u>ग</u> रे सा नि़ सा –, इत्यादि ढंग से करते हैं। इसमें अधिकतर भजन, ग़ज़ल, ठुमरी, टप्पा, धुनें इत्यादि अधिकतर सुनने को मिलती हैं। सिने-संगीत में भी इस राग का अधिकाधिक प्रयोग किया गया है। गायन-वादन के लिए यह एक बहुत ही सुन्दर एवं मधुर राग है। इस राग को कर्नाटक संगीत-पद्धति में काफी कहते हैं।

आरोह : नि़ सा <u>ग</u> म प, ग म <u>ध</u> प, <u>ग</u> म प नि सां।

अवरोह : सां <u>नि</u> ध प <u>ग</u> म <u>ध</u> प <u>ग</u> रे सा नि़ सा।

पकड़ : सा ग रे ग रे सा नि़ ध़ प़ म़ प़ नि़ सा ।

राग-चलन : नि़ सा ग म, सा ग म प, ग म ध प, ग म प ध नि ध, ग म ध प ग रे सा नि़ सा ।

स्वर-आलाप

१. सा – – –, नि़ – सा – – –, ग – रे ग – – सा ग रे सा नि़ – – ध़ प़ – – –, म़ प़ नि़ सा –, ग रे सा नि़ सा – – –, ग – – –, रे ग सा रे नि़ सा – – –, ध़ प़ – – –, म़ प़ नि़ सा – – – ।

२. नि़ सा – ग – – –, रे ग – रे ग रे सा नि़ – ध़ प़ – – –, म़ प़ – – –, नि़ सा – ग – रे सा नि़ सा –, नि़ सा– – –, ग – – –, सा ग म ग – – –, म प ग – रे सा नि़ – सा रे नि़ सा – – – ग रे सा नि़ सा ।

३. सा नि़ सा ग म प – – –, ग म ग ध प – – –, ग म ध प – –, ग रे सा नि़ सा – – –, नि़ सा ग म प – – –, म ध प – – –, ग म प ध नि ध –, प – – –, ग म ग म ध प – – –, म प म ध प – – –, ग रे सा ग रे सा नि़ –, ग – रे सा नि़ सा – – –, ग म प ग –, म प ग – रे सा नि़ सा – – – ।

४. नि़ सा ग म प – – –, ग म प ध नि॒ ध प – – –, प ध ग म ग॒ –, रे सा नि़, सा ग म प – – –, ग म ग॒ – रे सा नि़ सा – – –, नि़ सा, ग॒ सा ग म, प ध नि॒ ध, ग॒ म ध॒ प –, ग म ग ध॒ प – नि़ सा ग म, सा ग म प – – –, ग म ध॒ प –, म प ग म प ध नि॒ ध प ध ग॒ – रे सा नि़ सा – – –, रे सा रे नि़ सा ग॒ – रे ग॒ – रे ग॒ – रे सा नि़ सा ग म प – – – म प – म प ग॒ – रे सा नि़ सा – – –।

५. नि़ सा ग म प – – –, म प नि – – –, सा नि़ सा ग म प – – –, म प ग म प नि – – –, सां नि॒ ध॒ प – – –, ग म प ध नि॒ ध –, म प नि – – –, प नि॒ ध प –, म प नि सां – – –, रें सां – – –, नि सां – – –, नि नि सां नि सां – – –, मं ग॒ं रें सां नि –, म प नि सां – नि – सां नि सां – – –, मं ग॒ं – रें ग॒ं – रें सां नि – ध॒ प म ध प – – –, ग म प नि, सा ग म प नि – म प नि सां नि – नि॒ ध म प नि सां रें नि सां – – –, रें ग॒ं रें ग॒ं –, सां ग॒ं रें ग॒ं रें सां नि सां मं ग॒ं – – –, रें सां नि सां नि, सां गं मं पं – – –, गं मं गं ग॒ं – रें ग॒ं – सां रें ग॒ं – – –, मं पं ग॒ं – रें॒ ग॒ं रें॒

सां – – –, नि सां – – –, नि सां रें सां नि ध प ध प – – –,

ग म ग – रे ग – सा रे नि़ –, सा ग सा नि़ सा – – – रे

नि़ सा – ध़ प़ – – –, म़ प़ नि़ –, नि़ –, सा ग – – –,

रे रे ग – – –, रे सा नि़ सा ग सा – – –।

निर्बन्ध तानें

१. ग रे सा नि़ सा ग म प ग म प म ग रे सा, रे ग सा रे नि़ सा नि़ ध़ प़ ध़ म़ प़ नि़ सा रे सा ग रे सा नि़ सा सा रे नि़ सा ग म ध प, ग म प ध नि ध प ध प नि ध प म ग रे सा, ग म ध प म प म ग म ग रे सा नि़ सा ग म प ध प नि ध प म प म ग रे सा, नि़ सा ग म सा ग म प ग म प ध नि ध प म ग रे सा, ग रे सा नि़ सा ग म प ग म प ग म ग रे सा, ग म प ध म प नि सां रें नि सां नि ध प म प ग म ग रे सा।

२. ग रे सा ग रे ग रे ग सा नि़ सा ग म प म ग रे सा नि़ सा, ग म प म ग रे सा नि़ सा ग म प म ग रे सा, नि़ सा ग म ग म प ध नि नि ध प म प नि सां रें नि सां रें सां गं रें सां गं रें सां नि ध प म ग रे सां नि सा ग रे ग सा रे नि़ सा ग म प ध नि ध प ग म प ग म ग रे सा, ग ग रे ग सा रे नि़ सा ग म प म ग रे सा – सा, ग म ग, म प नि प नि सां नि सां गं – रें सां नि ध प म प नि ध प म ग रे सा ग म प म ग रे सा।

३. रे सा नि़ सा ग रे सा ग रे ग रे ग रे नि़ सा रे ग रे सा, ग ग रे ग रे ग रे सा नि़ ध़ प़ ध़ म़ प़ नि़ सा रे नि़ सा नि़ सा नि़ ध़ प़ ध़ म़ प़ नि़ सा ग रे सा नि़ सा, ग म ग म ध प म प नि ध प ध

प म ग रे सा नि़ सा रे नि़ सा रे सा ग म प ग म प ध नि ध नि सां रें नि ध प म ग रे सा, म़ प़ नि़ सा ग म प म ग रे सा, सा नि़ सा ग म प ग म प नि म प नि सां गं रें सां नि ध प म प नि ध प ध म प ग म ग रे सा।

४. ग रे ग सा रे ग रे सा ग सा ग म प म ग रे सा नि़ सा, ग म ग प म प ग म प म प ग म ग रे सा रे सा रे ग सा रे सा ग म प ग म ध प म प नि सां नि ध प ध म प ग म प म ग रे सा नि़ सा ग रे सा, सा नि़ सा ग म प ग म प नि सां गं रें सां रें सां नि सां नि ध गं रें सां नि ध प म प म ग म ग रे सा नि़ सा रे रे सा रे ग रे सा नि़ सा ग म, ग म प, म प ध, प ध नि, ध नि सां नि सां गं रें सां नि ध प म ग रे सा नि़ सा।

५. नि़ सा नि़ ध़ प़ ध़ म़ प़ नि़ सा ग रे सा नि़ ध़ प़ म़ प़ नि़ सा ग रे सा नि़ सा ग म प म ग म ग रे सा नि़ सा नि़ ध़ प़ ध़ म़ प़ नि़ सा ग म प म प म प नि सां गं रें सां रें सां गं मं गं पं मं पं निं सां निं धं पं मं गं रें सां नि ध प म प नि ध प म ग म ध प ध प ध नि ध प म ग सा ग म प म ग नि ध प म प ग सा रे नि़ सा नि़ सा ग म ग म ग रे सा रे नि़ सा ग म प म प नि सां गं मं पं मं गं पं गं मं गं रें सां नि ध नि ध प ध म ग रे सा नि़ सा।

गत, राग पीलू (अद्धा तीनताल)
ठुमरी-अंग

ज्ञातव्य : इन्हीं स्वरों के आधार पर और भी स्वरों की उपज कर सकते हैं।

● **स्थायी**

×	२	०	३
		म ग	रे रे –सा – –नि़

×				२				०				३			
रे सा	ग̲ –	–	सा	–	नि̣नि̣	–सा	रे̣̲	नि̣सा	–ध̲̣ (नि̣)	प̣	–	म̣	प̣	नि̣	सा
–सा	रे	नि̣	सा	ग	म	ध̲	प	ग̲ (म)	रे	सा	ग̲	रेरे	–सा	–	नि̣

● अंतरा

×				२				०				३			
											ग (म)	म	प	नि (सां)	नि (सां)
सां (रें)	–	नि	सां	–	पनि	–सां	गं̲ (सां)	रें	नि	सां,	गं̲ (मं)	रें	–सां	नि	सां
नि (सां)	ध̲	प,	म	ग	म	ध̲	प	ग̲ (म)	रे	सा,	ग̲ (म)	–रे	–सा	नि̣	सा
सा (रे)	– (ग̲)	–	सा	–	नि̣नि̣	–सा	रे̲̣ (ग̲)	नि̣सा	–ध̲̣	प̣,	ग̲ (म)	–रे	–सा	नि̣	सा

● तालबद्ध तानें

× २ ० ३

१. सानि̣ सारे ग̲रे सानि̣ । ध̲̣प मप̣ ध̲̣नि̣ सारे । ग̲रे ग̲रे सा, ग̲ (म) । रे –सा – नि̣ (रे) ॥

२. नि̣सा ग̲रे सानि̣ ध̲̣प̣ । प̣ध̲̣ म̣प̣ ध̣नि̲̣ सानि̣ । साग मप ग̲रे ग̲ (म) । रे –सा – नि̣ (रे) ॥

३. सानि̣ ध̲̣प̣ म̣प̣ नि̣ध̲̣ । सानि̣ रेसा ग̲रे सानि̣ । ध̲प मग̲ रेसा, ग̲ (म) । रे –सा – नि̣ (सा) ॥

×   २   ०   म

४. नि़सा गम पम ग़ुरे । सानि़ ध़ुप़ ंगम धुप । मग़ु रेसा नि़सा, ग़ु

३   रे

रे –सा – नि़ ।।

म

५. नि़सा गम पधु मप । गम पनि सांनि धुप । गुरे सानि़ सा, गु ।

रे

रे –सा – नि़ ।।

म

६. नि़सा गम साग मप । गम धुप निसां निुध । पम गुरे सा, गु ।

रे

रे –सा – नि़ ।।

७. नि़सा गम धुप मप । गम पनि सांगुं रेंसां । निुध पम गुरे सा– ।
गम धुप गुरे सानि़ ।। सा सां सा, गम । धुप गुरे सानि़ सा ।
सां सा, गम धुप । गुरे सानि़ सा सां ।।

८. सारे़ नि़सा ध़ुप़ म़प़ । ध़नि़ु सानि़ साग मप । गम पनि गुंरें सांनि ।
धप मगु रेसा नि़सा ।। गम धुप गुरे सानि़ । सा –, गम धुप ।
गुरे सानि़ सा –, । गम धुप गुरे सानि़ ।।

९. नि़सा गुरे साग मप । गम पनि सांगं मंगुं । रेंसां निुध पम गुरे ।
सानि़ ध़ुप़ ध़नि़ु सा– ।। पधु मप गुरे सानि़ । सा –, पधु मप ।
गुरे सानि़ सा –, । पधु मप गुरे सानि़ ।।

१०. म़प़ नि़सा गम धुप । गम पध निुध पध । सांनि गुंरें सांनि धुप ।
मग मप मगु रेसा ।। गम पनि सां, सानि़ । सा –, गम पनि ।
सां सानि़ सा –, । गम पनि सां सानि़ ।।

ज्ञातव्य : राग पीलू के मध्यम स्वर को षड्ज मानकर बजाने से राग में और भी मधुरता एवं सुन्दरता आजाती है। इसलिए मध्यम स्वर को ही षड्ज मानकर बजाएँ।

झाला, राग पीलू (अद्धा तीनताल)

× २ ० ३

सा रे सा रे नि़ सा रे रे नि़
नि – नि़ नि़ | सा – सा – | नि़ – सा – | सा – सा –
तू ऽ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ

सा रे म म ग॒ म ग॒ म
नि़ – सा – | ग॒ – ग॒ – | सा – ग॒ – | रे – ग॒ –
तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ

ग॒ म ग॒ रे नि़ रे ध़ सा
रे – ग॒ – | रे सा नि़ – | सा नि़ ध़ प़ | म़ प़ नि़ सा
तू ऽ तू ऽ | तू ऊ तू ऽ | तू ऊ तू ऊ | तू ऊ तू ऊ

म सा सा रे म रे सा रे सा ग॒ रे
ग॒ रे नि़ सा | ग॒ – सा – | नि़ – नि़ नि़ | सा – सा –
तू ऊ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऊ | तू ऽ तू ऊ

रे रे म ध ध प ध म
नि़ सा ग म | प – प – | प – प – | म प ग म
तू ऊ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ | तू ऊ तू ऊ

नि म म रे रे रे
ध॒ – प – | ग॒ – रेसा नि़ | ग॒ – सा – | नि़ – (सा) –
तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तूऊ तू | तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ

रे सा नि़ प़ रे म म
नि़ – ध़ – | प़ ध़ म़ प़ | म़ प़ निं़ सा | ग॒ – ग॒ –
तू ऽ तू ऽ | तू ऊ तू ऊ | तू ऊ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ

× २ ० ३

म म म रे रे | नि़ रे रे सा रे

सारे ग – ग | रे ग रेसा नि़ | सा – सा सा | नि़ नि़ सा –

तूऊ तू ऽ तू | तू ऊ तूऊ तू | तू ऽ तू ऊ | तू ऊ तू ऽ

म नि म सा नि़ रे

ग – म – | ध – प – | ग – रे – | सा – नि़ –

तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ

म सा नि़ रे रे रे रे

ग – रे – | सा – नि़ – | साग – सा – | नि़ – सा –

तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ | तूऊ ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ

रे सा रे म नि़ रे रे

नि़नि़ सासा नि़नि़ सासा | नि़ नि़ सा – | ग रे सा – | नि़ – सा –

तुकू तुकू तुकू तुकू | तू ऊ तू ऽ | तू ऊ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ

ध सां म

नि़सा गम प– गम | प – प – | नि ध प – | ग म प ध

तुकू तुकू तूऽ तुकू | तू ऽ तू ऽ | तू ऊ तू ऽ | तू ऊ तू ऊ

सां म म नि़ रे म रे

नि ध प – | ग म ध प | ग रे सा नि़ | ग सा नि़ सा

तू ऊ तू ऽ | तू ऊ तू ऊ | तू ऊ तू ऊ | तू ऊ तू ऊ

म रे रे रे

ग – सा – | नि़ – सा – | नि़सा ग म साग मप | गम पध निनि धप

तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ | तूऊ तूऊ तूऊ तूऊ | तूऊ तूऊ तुकू तूऊ

× २ ० ३

म नि म नि़ रे ग॒ ग॒ रे सां रे
ग म ध॒ प | ग॒ रे सा नि़ | सा – सा – | नि़ नि़ सा –
तू ऊ तू ऊ | तू ऊ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ | तू ऊ तू ऽ

सा रे म प रे म प नि॒
नि़ – सा – | ग – म – | सा – ग – | म – प –
तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ

सां रें सां सां सां सां रें रें
म – प – | नि – सां – | नि नि नि नि | सां – सां –
तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ | तु कु तु कु | तू ऽ तू ऽ

मं रें सां रें नि रें रें रें
ग॒ं – सां – | नि – सां – | सां – सां – | सां – सां –
तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ | कू ऽ कू ऽ

सां ग ग नि
नि – ध॒ – | प – प – | म – म – | प – प –
तू ऽ ऊ ऽ | कू ऽ ऊ ऽ | तू ऽ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ

म म रे सा
ग म ध॒ प | म प ग म | ग॒ – रे सा | नि़ – नि़ –
तू ऊ तू ऊ | तू ऊ तू ऊ | कू ऽ तू ऊ | तू ऽ तू ऽ

नि़ नि़ नि़ नि़ सा सा रे सा रे
सा – सा – | सा – सा – | नि़ नि़ सा – | नि़ – सा –
तू ऽ ऊ ऽ | तू ऽ तू ऽ | तू ऊ तू ऽ | तू ऽ तू ऽ

×	२	०	३
रे रे म	म सां	प सां रें	रें नि
नि़ सा ग म	ग म प नि	म प नि सां	सां – सां –
तू ऊ तू ऊ	तू ऊ तू ऊ	तू ऊ तू ऊ	तू ऽ तू ऽ
सां सां रें	नि नि	नि नि	नि नि
नि नि सां –	सां – सां –	सां – सां –	सां – सां –
तू ऊ तू ऽ	तू ऽ तू ऽ	तू ऽ तू ऽ	तू ऽ तू ऽ
नि मं	गं म	प प	मं
सां रें सां गं	रें – गं –	मं – मं –	गं – रें सां
तू ऊ तू ऊ	तू ऽ तू ऽ	तू ऽ तू ऽ	तू ऽ तू ऊ
रें सां	रें सां	नि	
नि – नि –	सां – नि –	ध – प –	म – प –
तू ऽ तू ऽ	तू ऽ तू ऽ	तू ऽ तू ऽ	तू ऽ तू ऽ
	रे रे		रे सा रे
गम धप गरे सानि़	साग – सा –	नि़नि़ सासा नि़नि़ सासा	नि़ नि़ सा –
तूऊ तूऊ तूऊ तूऊ	तूऊ ऽ तू ऽ	तुकू तुकू तुकू तुकू	तू ऊ तू ऽ

×				२			
नि़सा	गम	गम	धप	मप	निसां	गंरें	सांनि
तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ
०				**३**			
धप	मग	रेसा	नि़सा	गम	धप	नि़ध	पध
तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ

×					२			
पम	गम	साग	मप	|	मप	निसां	गंमं	पंमं
तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	|	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ

०					३			
गंमं	धपं	गंरें	सांनि	|	धप	मग	रेसा	निसा
तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ	|	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ

×				२				०				३			
म	नि			रे सा	रे			नि	रे			सा	रे		
ग	–	सा	–	नि	नि	सा	–	सा	–	सा	–	नि	–	सा	–
तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ

म	नि			ग सा	रे			सा रे	रे	रे	रे सा	रे			
ग	रे	सा	–	रे	नि	सा	–	नि	सा	नि	सा	नि	नि	सा	–
तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऊ	तू	ऽ	तू	ऊ	तू	ऊ	तु	कू	तू	ऽ

×					२			
निनि	नि,सा	सासा,	गग	|	रेसा	निसा	रेसा	नि–
तूतू	तू,तू	तूतू,	कूकू	|	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऽ
०					३			
सासा	सा,ग	गग,	मम	|	गम	धप	गरे	सानि
तूतू	तू,तू	तूतू,	तूऊ	|	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ
गग	ग,म	मम,	पप	|	गम	पध	निध	पम
तूतू	तू,तू	तूतू,	तूऊ	|	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ
गरे	सानि	धनि	सा–	|	निध	पम	पध	निसा
तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऽ	|	तूऊ	तूऊ	तूऊ	तूऊ

×				२				०				३			
सा		रे		नि़		रे		सा		रे	सा	रे		गु	
गु	–	सा	–	सा	–	सा	–	नि़	सा	नि़	नि़	सा	नि़	सा	–
तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऽ	तू	ऊ	तू	ऊ	तू	ऊ	तू	ऽ

समाप्ति की तिहाई व तान

(फूँक व तत्कार से तीन बार बजाइए ।)

× २ ०
नि़सा गम साग मप । गम पध नि़ध पधु । मप निसां गुंरें सांनि
३
धुप मगु रेसा नि़सा ।। नि़सा गम प– गम । प– ––, गम धुप ।
गुरे सानि़ सा– नि़सा । गम प– गम प– ।। ––, गम धुप गुरे ।
सानि़ सा–, नि़सा गम । प– गम प– ––, । गम धुप गुरे सानि़ ।।

धुन, राग पीलू (ताल कहरवा)

- **स्थायी**

×				०				×				०			
–	पप	–प	प	म	प	म	गु	–	नि़नि़	–सा	सा	(म) गु	–	रे	सा
–	नि़नि़	–नि़	नि़	सा	ग	म	प	–	गम	–धु	प	(म) गु	–	रे	सा

- **अंतरा**

×				०				×				०			
–	मम	–प	प	(सां) नि	(सां) नि	(रें) सां	(नि) –	नि	नि	–सां	सां	(मं) गुं	–	रें	सां
–	निनि	–सां	रें	नि	सां	–धु	प	–	गम	–धु	प	(म) गु	–	रे	सा

ज्ञातव्य : इसी स्वरावली के आधार पर अपनी कल्पनानुसार और भी स्वरों की उपज कर सकते हैं । यह वादक की प्रतिभा पर निर्भर करता है ।

'संगीत कार्यालय' के प्रकाशन

■ कंठ-संगीत

बाल-संगीत-शिक्षा, ३ भागों में १२)
संगीत-किशोर ७)
गांधर्व संगीत-प्रवेशिका ६)
हिं० सं० प० क्रमिक पुस्तक मालिका भाग १ से ६ तक पूरा सैट २२४)
स्वर-मालिका १०)
संगीत-अर्चना २५)
संगीत-कादंबिनी २०)
मारिफुन्नगमात, भाग १, व ३. ५०)
अप्रकाशित राग, ३ भागों में ३७)
मधुर चीजें १५)
लक्षण-गीत अंक २०)
राग-रागिनी अंक २०)
'कल्याण ठाठ अंक' से 'भैरवी ठाठ अंक' तक नौ ठाठों के अंकों का पूरा सैट १८०)
ध्रुपद-धमार अंक २०)
तराना अंक २०)
ठुमरी-गायकी १५)
संगीत-सागर ३०)
कर्नाटक-संगीत अंक २०)
भक्ति-संगीत अंक २०)
मीरा-संगीत अंक २०)
वंदना-संगीत १०)
सूर-संगीत, भाग १ व २ ३०)
काव्य-संगीत अंक २०)
कव्वाली अंक २०)
ग़ज़ल अंक २०)
राष्ट्रीय संगीत २०)
लोक-संगीत अंक २०)
फिल्मी शास्त्रीय गीत अंक २५)
खयाल अंक २०)
संगीत-संस्मरण अंक २०)
बाल संगीत अंक २०)
घराना अंक २०)
अप्रचलित राग-ताल अंक २०)
फिल्मी गजल अंक २०)
फिल्मी प्रेम-गीत अंक २०)
फिल्मी उल्लास-गीत अंक २०)
फिल्मी विरह-गीत अंक २०)
फिल्मी युगल-गान अंक २०)
फिल्मी प्रणय-गीत अंक २०)
फिल्मी भजन अंक २०)
फिल्मी विविध गीत अंक १ २०)
फिल्मी विविध गीत अंक ३ २०)
फिल्मी सांस्कृतिक गीत अंक २०)
फिल्म-संगीत, १९७७ २०)

■ शास्त्र व इतिहास

संगीत-रत्नाकर, भाग १ ४५)
संगीत-शास्त्र ७)
संगीत-विशारद २५)
राग-कोष १५)
भातखंडेसंगीतपाठमाला, भाग१ १०)
भातखंडे-संगीतशास्त्र, भाग १, २ का मूल्य क्रमशः ३५), ४५),
संगीत-पद्धतियों का तु० अध्ययन १५)
उ.भा.संगीत का सं. इतिहास १५)
हमारे संगीत-रत्न (प्रेस में)

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ १०१, १५५, १८५, २११, २३८, २६३, २८६, ३१३, ३४०, ३६१ और ३८८ पर रूपक ताल के ताल-चिह्न इस प्रकार लगने चाहिए—

×
०　१　२

पृष्ठ २३९ पर अंतरा की प्रथम पंक्ति के स्वर इस प्रकार होंगे—

प　　सां रें
ग　प　नि । सां　नि । पनि　सांरें

पृष्ठ २६७ पर 'विशेष विवरण' की नवीं पंक्ति में 'अहीर, भोपा तथा सँपेरे' के स्थान पर 'अहीर, गोप तथा सँपेरे' पढ़ें।

पृष्ठ ३६८ पर दी हुई 'पकड़' के स्वर 'सा रे ध ग॒ रे –, – – – – –' के बजाए 'सा रे सा ग॒ रे –, – – – –' हैं।

पृष्ठ २१४ पर दिए हुए 'राग-चलन' के स्वरों '– – – – प ग रे, नि प नि़ सा' में 'नि प' भी मंद्र-सप्तक के होने चाहिए, अर्थात् इस प्रकार '– – प ग रे, नि़ प़ नि़ सा'।

पृष्ठ ३५९ पर दी हुई राग अल्हैया-बिलावल (एकताल) के स्थायी की तीसरी पंक्ति इस प्रकार समझें—म　ग । म　रे । नि़　सा ।

पृष्ठ १२८ पर तान नं० २ के स्वर '– – – – गरे सारे – –' के बजाए '– – – – गरे सारे ग –' हैं।

पृष्ठ १६८ पर प्रकाशित तान नं० ४ के स्वर 'सारे गरे मप धप – – – –' के बजाए 'सारे मरे मप धप – – –' तथा तान नं० ११ में '– – – – – रेम पध गप धसां' के स्थान पर '– – – – रेम पध मप धसां' समझें।

पृष्ठ २४६ पर दिए हुए 'राग-चलन' में '– – – – ग प ध नि॒ ध' के स्थान पर '– – – – ग म प ध नि॒ ध' स्वर होने चाहिए।

पृष्ठ १२२ पर नौ ठाठ दिए गए हैं, दसवाँ ठाठ आसावरी छपने से रह गया है, जो इस प्रकार है—

आरोह : सा रे ग॒ म प ध॒ नि॒ सां। अवरोह : सां नि॒ ध॒ प म ग॒ रे सा ॥

पृष्ठ ६२ के श्लोक का अंतिम शब्द 'समन्वित' के स्थान पर 'समन्वितः' होना चाहिए। ■■

वाद्य-वादन अंक

[जनवरी-फरवरी, १९७५ का 'संगीत'-विशेषांक]

संगीत-प्रेमियों के विशेष अनुरोध पर उपर्युक्त विशेषांक प्रकाशित किया गया है। इसमें—सितार, वायलिन, सारंगी, इसराज, मैंडोलिन, तानपूरा, बाँसुरी, क्लारनेट, शंख और घंटा, माउथ-आर्गन, प्यानो, मटकीतरंग, हारमोनियम, बुलबुलतरंग, जलतरंग, मुखचंग, तबला, मृदंग, संतूर इत्यादि वाद्यों को बजाने की सचित्र शिक्षा सरल भाषा में दी गई है। क्रियात्मक सामग्री के साथ-ही-साथ 'संगीत-वाद्यों की उत्पत्ति तथा विकास १–२', 'वाद्य-नाम : शास्त्रीय व्युत्पत्ति', 'राजस्थान के लोक-वाद्य और वादकों का परंपरागत गीत-शैलियों में स्थान', 'हिमाचलीय वाद्य-संगीत', 'वीणाओं में आधार-स्वर के क्रमिक परिवर्तन पर एक अध्ययन', 'वाद्यों से संबंधित कुछ रोचक बातें' तथा 'पाश्चात्य वाद्य-वर्गीकरण एवं कुछ प्रमुख वाद्य'–जैसे महत्त्वपूर्ण और उपयोगी लेख भी प्रकाशित किए गए हैं। इस प्रकार प्रस्तुत विशेषांक वाद्य-संगीत-प्रेमियों के लिए अत्यंत लाभकारी बन गया है। एक ही जिल्द में लगभग सभी प्रचलित भारतीय वाद्यों की जानकारी तथा शिक्षा मिलना केवल इसी प्रकाशन की विशेषता है।

आकार २०"×२६" अठपेजी, पृष्ठ-सं० १६०, मूल्य २०), डाक-व्यय पृथक्।

गिटार-मास्टर [लेखक : चिंतामणि जैन]

पाठकों के विशेष अनुरोध पर, हिंदी में गिटार-वादन की शिक्षा देने-वाला यह सर्वप्रथम ग्रंथ प्रकाशित किया गया है। इसमें गिटार के अंगों का सचित्र वर्णन, बजाने का तरीका, स्वर-ज्ञान एवं कॉर्ड बजाने से संबंधित विवरण के साथ ही क्लासीकल धुनें, नृत्य-धुनें, पाश्चात्य और फिल्मी धुनें, राष्ट्रीय धुनें तथा गांधी जी की प्रिय राम-धुन आदि की संगीत लिपियाँ दी गई हैं।

आकार १८"×२२" अठपेजी, पृष्ठ-सं० १००, मूल्य १५), डाक-व्यय पृथक्।

प्राप्ति-स्थान : संगीत कार्यालय, हाथरस–२०४ १०१ (उ. प्र.)